आचार्य श्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाळा

द्वारा आयोजीत

तत्त्वार्थसूत्र

પરિશીલન

॥ तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यगदर्शनम् ॥

(घरे बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त करानेवाला एक साल का पाठ्यक्रम)

कार्यपत्रक : १ से २०

प्रेरणा - मार्गदर्शन

परम पूज्य तपागच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्रीमद् विजय रामसूरीश्वरजी महाराजा (डहेलावाळा) के

विनेय शिष्यरत्न परम पूज्य स्वाध्यायप्रेमी आचार्य भगवंत

श्रीमद् विजय जगच्चन्द्रसूरीश्वरजी महाराज साहेब

पाठ्यक्रम निर्देशक : हितेश सवाणी

पाठ्यक्रम संचालक : अमीष अजबाणी

विद्यार्थी का नाम : ______________________________ क्रमांक : ____________

संयोजक : ___________________________ Appln Login Password : ____________

तत्त्वार्थ सूत्र परिशीलन – कार्यपत्रक जमा करने का समयपत्रक

कार्यपत्रक क्रमांक	तारीख	वार	अध्याय	सूत्र क्रमांक
१	१५/०२/२०२०	शनिवार	१	१ से ८
२	२९/०२/२०२०	शनिवार	१	९ से २०
३	१५/०३/२०२०	रविवार	१	२१ से ३५
४	३१/०३/२०२०	मंगळवार	२	१ से ३०
५	१५/०४/२०२०	बुधवार	२	३१ से ५२
६	३०/०४/२०२०	गुरुवार	३	१ से १८
७	१५/०५/२०२०	शुक्रवार	४	१ से ५३
८	३१/०५/२०२०	रविवार	५	१ से २२
९	१५/०६/२०२०	सोमवार	५	२३ से ४४
१०	३०/०६/२०२०	मंगळवार	६	१ से ८
११	१५/०७/२०२०	बुधवार	६	९ से २६
१२	३१/०७/२०२०	शुक्रवार	७	१ से ८
१३	१५/०८/२०२०	शनिवार	७	९ से १७
१४	३१/०८/२०२०	सोमवार	७	१८ से ३४
१५	१५/०९/२०२०	मंगळवार	८	१ से ९
१६	३०/०९/२०२०	बुधवार	८	१० से २६
१७	१५/१०/२०२०	गुरुवार	९	१ से ६
१८	३१/१०/२०२०	शनिवार	९	७ से २६
१९	१५/११/२०२०	रविवार	९	२७ से ४९
२०	३०/११/२०२०	सोमवार	१०	१ से ७
	जनवरी २०२१ वार्षिक परीक्षा			

विशेष सूचना

१. ऊपर दिए गए समय पर हर कार्यपत्रक के उत्तर अपलोड करने होंगे ।

२. ऊपर दी गई तिथि गुजराती पंचांग के मुताबिक हैं ।

संचालक की बात

प्रिय विद्यार्थी,

तत्त्वार्थ सूत्र परिशीलन में जुड़ने के लिए आपको अभिनन्दन। आचार्य श्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञान शाला की और से इस पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है। हमें आशा है कि आप नियमित रूप से रोजाना २-३ पन्नों का अभ्यास करेंगे जिससे आप सम्पूर्ण अभ्यास सरलता से परिपूर्ण कर पाएँगे।

यह पाठ्यक्रम तपागच्छाधिपति प. पू. आ. भ. श्री विजय रामसूरीश्वरजी म. सा. के दिव्य आशीर्वाद से और स्वाध्याय प्रेमी, आजीवन गुरुचरणोपासक प. पू. आ. भ. श्री विजय जगच्चंद्रसूरीश्वरजी म. सा. की प्रेरणा व मार्गदर्शन से आकार ले रहा है।

यह पाठ्यक्रम ऑनलाइन MCQ पद्धति से शुरू किया गया है। सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के दौरान आपको २० कार्यपत्रक ऑनलाइन भरने होंगे। विद्यार्थी सामायिक में अभ्यास कर सकें इस हेतु से कार्यपत्रक पुस्तिका स्वरूप में दिए गए है। इस पुस्तिका में कार्यपत्रक क्र. १ से २० भेजे हैं। हर १५ दिन में आपको एक कार्यपत्रक के उत्तर मोबाईल एप्लीकेशन द्वारा अपलोड करने होंगे। हर कार्यपत्रक उसकी अवधि के दौरान एप्लीकेशन में ऑनलाइन खुले रहेंगे और अवधि पूर्ण होते ही बंद किए जाएंगे। उस समय के दौरान विद्यार्थी को अपने उत्तर अपलोड कर लेने होंगे।

वार्षिक परीक्षा जनवरी २०२१ में ली जाएगी जिसमें पेपर १ - अध्याय १ से ५ व पेपर २ - अध्याय ६ से १० से रहेंगे। दोनों परीक्षा कुल ८० अंक की ली जाएगी। बाकी के २० अंक पेपर १ से ९ व पेपर १० से २० के औसत अंक के मुताबिक जोड़े जाएंगे। कम से कम १६ कार्यपत्रक भरने वाले विद्यार्थी को ही परीक्षा में प्रवेश मिलेगा।

मोबाइल व वेब एप्लीकेशन के द्वारा पेपर अपलोड करने के लिए –

१. गूगल प्लेस्टोर से Jaintatvagyanshala एप्लीकेशन डाऊनलोड करें।

२. उसमें My Profile बटन दबाकर अपनी लॉग इन ID व पासवर्ड भरें, बाद 'Login as Student' विकल्प टिक कर login करें।

३. अपनी प्रोफाइल खुलते ही Exam Paper बटन दबाकर जिस कार्यपत्रक के उत्तर अपलोड करने हैं उसे पसंद कर अपलोड करें।

वेबसाईट व एप्लीकेशन पर अन्य सुविधाएँ –

१. संस्था की वेब साईट व एप्लीकेशन पर आपको 'तत्त्वार्थाधिगम सूत्र' पीडीऍफ़ (PDF) पुस्तक, अभ्यास का क्रम, प्रश्नपत्र, सही उत्तर, तत्त्वार्थ सूत्र पर आधारित श्री चंद्रकांत महेता के प्रवचन के विडिओ तथा हर हफ्ते होने वाले श्री चंपकभाई महेता के गुजराती में व श्री शुद्धात्म प्रकाश जैन के हिंदी में प्रवचन की लिंक दी जाएगी ।

२. आपके हर उत्तर पत्र के अंक प्राप्त होंगे जिसे आप login करके जान सकते हैं ।

३. My Questions विभाग में आप पाठ्यक्रम के विषय कोई भी प्रश्न पूछ सकते हैं जिसके उत्तर संभव इतने जल्द दिए जाएंगे ।

वोट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) -

तत्त्वार्थ सूत्र मी जुडे सभी विद्यार्थी का वोट्सएप ग्रुप बनाया जाएगा । इस ग्रुप में पाठ्यक्रम सम्बंधी जानकारी व सूचना समय-समय पर पोस्ट की जाएगी । विद्यार्थी अपनी जिज्ञासा का समाधान प्राप्त करने इस ग्रुप में प्रश्न पूछ सकते हैं जिसका समाधान संस्था द्वारा नियुक्त पंडितजी द्वारा उत्तर दिए जाएँगे ।

इसके अलावा ग्रुप में बिन ज़रूरी मेसेज करने वाले विद्यार्थी को एक चेतावनी देकर ग्रुप से बाहर किया जाएगा ।

तत्त्वार्थ जिज्ञासा वर्ग –

विद्यार्थियों की सुविधा हेतु हर कार्यपत्रक का समय शुरू होते उस कार्यपत्रक के प्रवचन की विडिओ लिंक ग्रुप में पोस्ट की जाएगी

सम्पूर्ण वर्ष के दौरान आपको कोई समस्या हो तो नीचे दिए हुए किसी भी कार्यकर्ता का **SMS** या **Whatsapp** पर संपर्क कर सकते हैं ।

पाठ्यक्रम संचालक	-	**श्री अमीष अजबाणी**	-	९८२०१ ५०१५५
पी.आर.ओ. **(P.R.O.)**	-	**श्री केतन शाह**	-	९३२६३ २३२४७
पी.आर.ओ. **(P.R.O.)**	-	**श्री विरल लोलडीया**	-	९८९२९ २०१०४

आपका विश्वसनीय

– अमीष अजबाणी

(पाठ्यक्रम संचालक)

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-१	अध्याय १	सूत्र १ से ८	जमा करने की अंतिम तारीख ता. १५/०२/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक. (कुल ३० x ½ = १५ अंक)

१. बाह्य निमित्त के बिना स्वाभाविक रूप से प्राप्त होता सम्यक्त्व .... सम्यक्त्व है।
अ. निसर्ग ब. अधिगम क. उपदेश ड. अनुपम

२. हर जीव की मोक्ष पाने की निजी योग्यता यह .... है।
अ. भव्यत्व ब. तथाभव्यत्व क. अभव्यत्व ड. जातिभव्यत्व

३. मिथ्यात्व कर्म के दलिको के बिना की अंतर्मुहुर्त प्रमाण स्थिति यानी ....
अ. यथाप्रवृत्तकरण ब. अपूर्वकरण क. अनिवृत्तिकरण ड. अंतरकरण

४. .... के द्वारा जीव उदयक्षण से अंतर्मुहुर्त तक की मिथ्यात्व की स्थिति के उपर अंतर्मुहुर्त काल प्रमाण अंतरकरण करता है।
अ. यथाप्रवृत्तकरण ब. अपूर्वकरण क. अनिवृत्तिकरण ड. अंतरकरण

५. जीव .... कारण से राग द्वेष की ग्रंथी को भेदता है।
अ. दूरभव्यता ब. निकट भव्यता क. अनिवृत्तिकरण ड. अंतरकरण

६. भव्य जीवों में कुछ जीव मोक्ष पा नहीं सकते. ऐसे जीवों को .... कहते हैं।
अ. अभव्य ब. जातिभव्य क. दूरभव्य ड. निकटभव्य

७. अंतरकरण का काल समाप्त होते अगर सम्यक्त्व मोहनीय का उदय हो तो जीव .... सम्यक्त्व पाता है।
अ. क्षायिक ब. औपशमिक क. क्षायोपशमिक ड. पारिणामिक

८. कार्मग्रंथिक मत के मुताबिक जीव सुप्रथम .... सम्यक्त्व पाता है।
अ. क्षायिक ब. औपशमिक क. क्षायोपशमिक ड. औदेयिक

९. अर्धशुद्ध पुंज का अर्थात मिश्र मोहनीय का उदय हो तो जीव .... सम्यक्त्व पाता है।
अ. क्षायिक ब. औपशमिक क. क्षायोपशमिक ड. मिश्र

१०. दु:ख के उपचार रूप प्राप्त होता सुख .... से प्राप्त होता है।
अ. पुण्य ब. पाप क. मोक्ष ड. नियति

११. .... यानी तत्त्व भूत जीवादि पदार्थों के विषय में श्रद्धा ।
अ. मिथ्यात्व ब. सम्यग्दर्शन क. सम्यग्ज्ञान ड. सम्यक्चारित्र

१२. ...... यानी जीवादि पदार्थों का यथार्थ बोध ।
अ. मिथ्यात्व ब. सम्यग्दर्शन क. सम्यग्ज्ञान ड. सम्यक्चारित्र

१३. .... यानी यथार्थ ज्ञानपूर्वक असत्क्रिया से निवृत्ति और सत्क्रिया में प्रवृत्ति ।
अ. मिथ्यात्व ब. सम्यग्दर्शन क. सम्यग्ज्ञान ड. सम्यक्चारित्र

१४. सयोगी केवली में मोक्ष के सम्यग्ज्ञानादि तीनों साधन परिपूर्ण होने पर भी उनका मोक्ष होने में ..... कर्म का उदय प्रतिबंधक है ।
अ. अघाती ब. मोहनीय क. अंतराय ड. घाती

१५. ...... यानी सभी कर्मों का क्षय ।
अ. संयोगी केवली ब. अयोगी केवली क. स्वर्ग ड. मोक्ष

१६. चार पुरुषार्थों में ..... पुरुषार्थ ही प्रमुख / श्रेष्ठ है ।
अ. धर्म ब. अर्थ क. काम ड. मोक्ष

१७. .... सुख की इच्छा करते हैं, दु:ख नहीं ।
अ. केवल मनुष्य ब. केवल देव और मनुष्य
क. केवल देव, मनुष्य और पशु ड. संसार के सभी जीव

१८. .... सुख नहीं देता / देते, किंतु जगी हुई अरति का केवल प्रतिकार करता है ।
अ. शब्दादि साधन ब. सम्यग्ज्ञान क. सम्यग्दर्शन ड. सम्यक्चारित्र

१९. अत्याधिक प्यास लगने के बाद ही मटके का शीतल जल आनंद देता है. ठंड में उसी प्यास के अभाव से वह जल ऐसा आनंद नहीं देता. यह दृष्टान्त ..... का है ।
अ. अंतर वाले सुख ब. अनित्य सुख क. दु:खमिश्रित सुख ड. मोक्ष सुख

२०. हर जीव ने संसार में परिभ्रमण करते असंख्य द्वीप और असंख्य समुद्र जितना आहार किया है, असंख्य समुद्रों से भी अधिक जलपान किया है, फिर भी आहार तृप्ति हुई नहीं । देव और युगलिक भव में असंख्य वर्षों तक विविध भौतिक सुख भोगने पर भी तृप्ति हुई नहीं. इसलिए भौतिक सुख ...... है ।
अ. दु:खमिश्रित ब. अंतर वाला क. अपूर्ण ड. अनित्य

२१. भौतिक सुख को भोगने की ईच्छा करने मात्र से भोग नहीं सकते क्योंकि भौतिक सुख भोगने के लिए अशक्त शरीर, ईन्द्रिय, धन इत्यादि अनेक वस्तुओं की ज़रुरत पडती है । यह सभी वस्तु पुण्योदय हो तो ही मिल सकती है । इसलिए भौतिक सुख ...... है ।
अ. स्वाधीन ब. पराधीन क. अंतर वाला ड. अपूर्ण

२२. भौतिक सुख भोगने में हिंसा आदि अनेक पाप होते हैं। उन पापों से पाप कर्म का बंध होता है। उनका का भविष्य में उदय हो तब दुःख भोगना पड़ता है। इसलिए भौतिक सुख को .... कहा है।

अ. अनित्य ब. अपूर्ण क. पराधीन ड. दुःख फलक

२३. भौतिक सुख से प्राप्त होता दुःख एक-दो भवों में भोगा नहीं जाता, किंतु उसकी परंपरा चलती है, क्योंकि भौतिक सुख भोगने में होती आसक्ति और क्लिष्ट परिणाम से होने वाले पाप अनेक भवों में भोगने योग्य पाप कर्मों का बंध कराता है। इसलिए भौतिक सुख को ..... कहां है।

अ. दुःखानुबंधी ब. अनित्य क. अपूर्ण ड. पराधीन

२४. तत्त्वरूप जीवादि पदार्थों की ...... यानी जीवादि पदार्थ जिस स्वरूप में हैं उस स्वरूप में मानना।

अ. अश्रद्धा ब. विपरीत श्रद्धा क. श्रद्धा ड. कुश्रद्धा

२५. मिथ्यात्व मोहनीय कर्म के क्षय, उपशम या क्षयोपशम से प्रगट हुए शुद्ध आत्मपरिणाम, यह ..... सम्यक्त्व है।

अ. क्षायिक ब. क्षायोपशमिक क. औपशमिक ड. मुख्य

२६. .... का उपचार कर तत्त्वार्थ श्रद्धा को सम्यक्त्व कहा जाता है।

अ. कार्य में कार्य ब. कारण में कारण क. कार्य में कारण ड. कारण में कार्य

२७. बाह्य साधन से प्राप्त होता सुख ..... है. इसलिए बाह्य साधन अधिकतर सुख तो नहीं देते, बल्कि दुःख का अनुभव कराते हैं।

अ. कृत्रिम = सांयोगिक ब. कृत्रिम = असांयोगिक

क. अकृत्रिम = सांयोगिक ड. अकृत्रिम = असांयोगिक

२८. अन्नादि के परिभोग या विषय सेवन से, उत्पन्न हुए क्षुधादि दुःख की निवृत्ति के द्वारा, स्वस्थता प्राप्त होती है जब कि ..... स्वाभाविक स्वस्थता रही है। क्योंकि वहाँ अस्वस्थता के = क्षुधादि दुःख के कारण, कर्म या ईच्छादि का अभाव है। इससे वहाँ अन्नादि के उपभोग की ज़रुरत ही नहीं है।

अ. स्वर्ग में ब. ईन्द्र को देवलोक में

क. युगलिक मनुष्यों को अकर्म भूमि में ड. मोक्ष में

२९. तत्त्वार्थ श्रद्धा प्रगट हो तब .... कर्म के क्षयोपशम आदि से प्रगट होता शुभ आत्मपरिणाम अवश्य होता है।

अ. मोहनीय ब. नाम क. गोत्र ड. वेदकीय

३०. आत्मा का स्वाभाविक, नित्य सुख प्राप्त कराने वाला .... है।

अ. अर्थ पुरुषार्थ ब. काम पुरुषार्थ क. धर्म पुरुषार्थ ड. मोक्ष पुरुषार्थ

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१. ...... दोनों युगलिक मनुष्य की भांति सदा साथ ही उत्पन्न होते हैं, साथ रहते हैं और विनाश पायें तो साथ ही पाते हैं ।

अ. सम्यग्दर्शन और सम्यक् चारित्र ब. सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र

क. सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान ड. सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र

३२. ..... मोक्ष को प्रत्यक्ष देख रहे हैं, इसलिए मोक्ष प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध है ।

अ. सुज्ञ = संपूर्ण ज्ञानी भगवंत ब. सुज्ञ = संपूर्ण ज्ञानी भगवंत और देव

क. सुज्ञ = संपूर्ण ज्ञानी भगवंत, देव और १४ पूर्वधर - श्रुत केवली भगवंत

ड. केवल अरिहंत = केवल तीर्थंकर भगवंत

३३. ...... का विधान होने से आगम प्रमाण से भी मोक्ष सिद्ध होता है ।

अ. अनाप्तप्रणीत आगमों में मोक्ष ब. आप्तप्रणीत आगमों में मोक्ष

क. आप्तप्रणीत आगमों में स्वर्ग ड. अनाप्तप्रणीत आगमों में स्वर्ग

३४. जीव सुख पाने और दुःख दूर करने हेतु ..... का सेवन करते हैं । फिर भी वे दुःख दूर कर नहीं सकते और संपूर्ण सुख पा नहीं सकते ।

अ. सुदेव, सुगुरू और सुधर्म ब. सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र

क. अर्थ और काम यह दो पुरूषार्थ ड. धर्म और मोक्ष यह दो पुरूषार्थो

३५. जब विषयोपभोग होता है तब विषयोपभोग की उत्सुकता के कारण जगी ..... अभाव होता है ।

अ. अरति का हमेशा के लिए ब. रति का हमेशा के लिए

क. अरति का थोड़े समय के लिए ड. रति का थोड़े समय के लिए

३६. ..... मोक्ष का मार्ग है ।

अ. केवल सम्यग्दर्शन ब. केवल सम्यग्ज्ञान क. केवल सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान

ड. सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र यह तीनों सम्मिलित

३७. ...... का भी अभाव हो तो मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती ।

अ. सम्यग्दर्शन और सम्यक् चारित्र ब. सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र

क. सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान

ड. सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र इन तीनों में से किसी भी एक

३८. ..... होता ही है ऐसा नियम नहीं, हो अथवा न भी हो ।

अ. सम्यग्ज्ञान और सम्यग्दर्शन हो तब सम्यक् चारित्र

ब. सम्यक्चारित्र हो तब सम्यग्ज्ञान और सम्यग्दर्शन

क. सम्यक् चारित्र हो तब सम्यग्ज्ञान

ड. सम्यक्चारित्र हो तब सम्यग्दर्शन

३९. ..... अवश्य होता है ।
अ. सम्यक्चारित्र हो तब सम्यग्ज्ञान और सम्यग्दर्शन
ब. सम्यग्ज्ञान और सम्यग्दर्शन हो तब सम्यक्चारित्र
क. सम्यग्दर्शन हो तब सम्यक्चारित्र
ड. सम्यग्दर्शन हो तब सम्यक्चारित्र

४०. सिद्धो में ..... रूप चारित्र होता है ।
अ. साधन - योग की स्थिरता ब. साध्य - योग की अस्थिरता
क. साध्य - योग की स्थिरता ड. साधन - योग की अस्थिरता

४१. ..... प्रमाण से मोक्ष की सिद्धि होती है ।
अ. केवल युक्ति-अनुमान ब. केवल आगम
क. केवल युक्ति-अनुमान और आगम यह दो
ड. प्रत्यक्ष, युक्ति-अनुमान और आगम यह तीन

४२. शब्दादि से उत्पन्न होता सुख ..... है ।
अ. वास्तविक सुख ब. औपचारिक सुख है, वास्तविक तो यह सुख-दुःख उभय रूप
क. औपचारिक दुःख ड. औपचारिक सुख है, वास्तविक तो यह दुःख रूप ही

४३. खुजली आने पर खुजालना .... है ।
अ. दुख के अभाव में सुख का उपचार ब. सुख के अभाव में दुःख का उपचार
क. सच्चा सुख पाने का तरीका ड. दुःख दूर करने का सही मार्ग

४४. लगातार भोजन करना संभव नहीं । लगातार संभोग कर नहीं सकते क्योंकि....
अ. भौतिक सुख अंतर वाला है. ब. मोक्ष का सुख अंतर वाला है.
क. भौतिक सुख दुःख मिश्रित है. ड. मोक्ष का सुख दुःख-मिश्रित है.

४५. द्रव्य निक्षेप यानी?
अ. वस्तु को जो नाम दिया जाए वह ब. वस्तु का आकार
क. वस्तु की भूत या भविष्य कालीन अवस्था ड. वस्तु की वर्तमान अवस्था

४६. भाव निक्षेप यानी?
अ. वस्तु को जो नाम दिया जाए वह ब. वस्तु का आकार
क. वस्तु की भूत या भविष्य कालीन अवस्था ड. वस्तु की वर्तमान अवस्था

४७. नाम निक्षेप यानी?
अ. वस्तु को जो नाम दिया जाए वह ब. वस्तु का आकार
क. वस्तु की भूत या भविष्य कालीन अवस्था ड. वस्तु की वर्तमान अवस्था

४८. स्थापना निक्षेप यानी?
अ. वस्तु को जो नाम दिया जाए वह ब. वस्तु का आकार
क. वस्तु की भूत या भविष्य कालीन अवस्था ड. वस्तु की वर्तमान अवस्था

४९. नीचे दिए गए वाक्यों में से सही वाक्य चुनें ।
अ. गुरु उपदेश बिना सम्यग्दर्शन की प्राप्ति संभव ही नहीं ।
ब. अपेक्षा से पुण्य हेय भी है और उपादेय भी है ।
क. जहाँ सम्यक चारित्र है वहाँ सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान संभव नहीं ।
ड. अंतरंग निमित्त के बिना सम्यग्दर्शन प्राप्त हो सकता है पर बाह्य निमित्त के बिना सम्यग्दर्शन प्राप्त होता ही नहीं ।

५०. महापुरूष भव्य जीवों को किसका उपदेश देते हैं? किस लिए?
अ. काम भोगों का क्योंकि उससे जीव को सुख की - आनंद की अनुभूति होती है ।
ब. धन-अर्थ का क्योंकि उससे जीव को मान-सन्मान इत्यादि मिलता है ।
क. मोक्ष मार्ग का क्योंकि जग में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष यह चार पुरूषार्थों में मोक्ष पुरुषार्थ ही उत्तम है ।
ड. स्वर्ग का क्योंकि वहाँ जीव को बहुत सुख मिलता है. ।

५१. प्रथम मोक्ष का उपदेश देना चाहिए फिर भी यहाँ तत्त्वार्थाधिगम सूत्र में ग्रंथकार महर्षि प्रथम मोक्ष मार्ग का उपदेश देते हैं, उसमें पहला हेतु क्या है?
अ. प्रेक्षापूर्वकारी (विचारपूर्वक प्रवृत्ति करने वाले) बुद्धिमान पुरुष पहले कार्य का ही स्वीकार करते हैं ।
ब. प्रेक्षापूर्वकारी (विचारपूर्वक प्रवृत्ति करने वाले) बुद्धिमान पुरुष पहले कारण का ही स्वीकार करते हैं ।
क. सर्व दर्शनकारों के सामान्यत: मोक्ष के विषय में एक विचार हैं । मोक्ष में दु:ख की अत्यधिक निवृत्ति होती है । पर इसमें सभी दर्शनकार की मान्यता भिन्न भिन्न है इसलिए ।
ड. मोक्ष के उपदेश से मोक्ष मार्ग का उपदेश अधिक सरल है इसलिए ।

५२. प्रथम मोक्ष का उपदेश देना चाहिए । फिर भी तत्त्वार्थाधिगम सूत्र में ग्रंथकार महर्षि प्रथम मोक्षमार्ग का उपदेश देते है, उसमें दूसरा हेतु क्या है?
अ. प्रेक्षापूर्वकारी (विचारपूर्वक प्रवृत्ति करने वाले) बुद्धिमान पुरुष पहले कार्य का ही स्वीकार करते हैं ।
ब. प्रेक्षापूर्वकारी (विचारपूर्वक प्रवृत्ति करने वाले) बुद्धिमान पुरुष पहले कारण का ही स्वीकार करते हैं ।

क. सर्व दर्शनकारों के सामान्यत: मोक्ष के विषय में एक विचार हैं। मोक्ष में दु:ख की अत्यधिक निवृत्ति होती है। पर इसमें सभी दर्शनकारों की मान्यता भिन्न भिन्न है इसलिए।

ड. मोक्ष के उपदेश से मोक्ष मार्ग का उपदेश अधिक सरल है इसलिए।

५३. सुख वह है .....

अ. जो हमेशा रहे, जिसका अनुभव करने में जरा भी भय न हो, जो ईच्छा करने पर प्राप्त हो, जिसे प्राप्त करने के लिए बाह्य किसी साधन की ज़रूरत नहीं।

ब. जो हमेशा रहे, जिसका अनुभव करने में जरा भी भय न हो, जो इच्छा किए बिना ही प्राप्त हो, जिसे प्राप्त करने के लिए बाह्य किसी साधन की ज़रूरत नहीं।

क. जो हमेशा न रहे, जिसका अनुभव करने में जरा भी भय हो, जो इच्छा किए बिना ही प्राप्त हो, जिसे प्राप्त करने के लिए बाह्य किसी साधन की ज़रूरत नहीं।

ड. जो थोड़ी देर रहे, जिसका अनुभव करने में जरा भय हो, जो ईच्छा करने पर प्राप्त हो, जिसे प्राप्त करने के लिए बाह्य किसी साधन की ज़रूरत नहीं।

५४. तत्त्वार्थश्रद्धा

अ. कारण है और शुभ आत्मपरिणाम कार्य।

ब. कार्य है और शुभ आत्मपरिणाम कारण।

क. कारण है और मन का शुभ परिणाम कार्य।

ड. कारण है और काया का शुभ परिणाम कार्य।

५५. स्वादिष्ट आहार में भी सच्ची भूख के बिना स्वाद आता नहीं, भूख अधिक हो वैसे स्वाद अधिक। इससे ही मजदूर को छाछ-रोटी जितने मीठे लगते हैं उतने मीठे पकवान भी गद्दी-तकिये पर बैठने वाले सेठ को लगते नहीं. इसलिए...

अ. पहले भूख का सुख फिर भोजन का सुख।

ब. पहले भूख का सुख फिर भोजन का दु:ख।

क. पहले भूख का दुःख फिर भोजन का दु:ख।

ड. पहले भूख का दुःख फिर भोजन का सुख।

५६. निर्जरा यानी?

अ. कर्म के पुद्गलों का आत्मा के साथ एक रूप बनने के कारण भूत आत्मा के अध्यवसाय।

ब. कर्म का आत्मा की ओर आगमन रोकने के कारण भूत आत्मा के अध्यवसाय।

क. कर्म के पुद्गलों का आत्मप्रदेशो से अलग होने के कारण भूत आत्मा के अध्यवसाय।

ड. कर्म के पुद्गलों का आत्मप्रदेशो में से संपूर्ण क्षय के कारण भूत आत्मा के अध्यवसाय।

५७. सम्यग्दर्शन यानी ?

अ. आत्मा से जुड़े सभी कर्मों का क्षय हुई अवस्था।

ब. तत्त्वभूत जीवादि पदार्थों का यथार्थ बोध।

क. यथार्थ ज्ञान युक्त असत्क्रिया से निवृत्ति और सत्कार्य में प्रवृत्ति ।
ड. तत्त्वभूत जीवादि पदार्थों में यथार्थ श्रद्धा ।

५८. सम्यक ज्ञान यानी ?
अ. तत्त्वभूत जीवादि पदार्थों का यथार्थ बोध ।
ब. तत्त्वभूत जीवादि पदार्थों में यथार्थ श्रद्धा ।
क. आत्मा से जुड़े सभी कर्मों का क्षय हुई अवस्था ।
ड. यथार्थ ज्ञानयुक्त असत्क्रिया से निवृत्ति और सत्कार्य में प्रवृत्ति ।

५९. भौतिक .... वियोग होता है ।
अ. वस्तुओं का केवल मनुष्य भव में ही ।
ब. वस्तुएं हमें छोड़ के चली जाए ऐसे एक ही तरह से ।
क. वस्तुओं को जीव छोड़ कर चला जाए ऐसे एक ही तरह से ।
ड. वस्तुएं हमें छोड़ के चली जाए अथवा वस्तुओं को जीव छोड़ कर चला जाए ऐसे दो तरह से ।

६०. .... यह सभी शब्द एक अर्थ वाले हैं ।
अ. अश्रद्धा, श्रद्धान, सम्यग्दर्शन, मिथ्यात्व, समकित ।
ब. श्रद्धा, श्रद्धान, सम्यग्दर्शन, मिथ्यात्व, समकित ।
क. श्रद्धा, श्रद्धान, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्त्व, समकित ।
ड. श्रद्धा, श्रद्धान, सम्यग्दर्शन, सम्यक्त्व, समकित ।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक. (कुल १५ x २ = ३० अंक)

६१. तत्त्वों का ज्ञान सत् आदि आठ द्वारों से हो सकता है. उनमें निम्नलिखित चार विकल्पों में से कौन सा विकल्प सम्यग्दर्शन गुणकी विचारणा में गलत नहीं ?
(प्रत्येक विकल्प में क्षेत्र तथा स्पर्शना द्वार सूचिकी अपेक्षा से और स्पर्शना छद्मस्थ जीवों के आश्रय से समझना)
अ. क्षेत्र - एक जीव की अपेक्षा से सम्यग्दर्शन का क्षेत्र उत्कृष्ट से ८ राज होता है ।
अंतर - अनेक जीवों की अपेक्षा से उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।
स्पर्शना - एक जीव की अपेक्षा से उत्कृष्ट ८ राज स्पर्शना होती है ।
काल - अनेक जीवों की अपेक्षा से उत्कृष्ट सुकाल होता है ।
ब. अंतर - एक जीव की अपेक्षा से जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है ।
स्पर्शना - अनेक जीवों की अपेक्षा से उत्कृष्ट स्पर्शना १२ राज होता है ।
काल - एक जीव की अपेक्षा से जघन्य काल ६६ सागरोपम है ।

क्षेत्र - अनेक जीवों की अपेक्षा से उत्कृष्ट क्षेत्र १२ राज है ।

क. स्पर्शना - एक जीव की अपेक्षा से जघन्य ८ राज स्पर्शना होती है ।
काल - अनेक जीवों की अपेक्षा से उत्कृष्ट ६६ सागरोपम साधिक है ।
क्षेत्र - एक जीव की अपेक्षा से उत्कृष्ट १२ राज क्षेत्र है ।
अंतर - अनेक जीवों की अपेक्षा से सम्यग्दर्शन गुण अंतर रहित है ।

ड. काल - एक जीव की अपेक्षा से जघन्य काल अंतर्मुहूर्त है ।
क्षेत्र - अनेक जीवों की अपेक्षा से उत्कृष्ट ८ राज क्षेत्र है ।
अंतर - एक जीव की अपेक्षा से उत्कृष्ट अंतर देशोन अर्धपुद्गल परावर्त है ।
स्पर्शना - अनेक जीवों की अपेक्षा से उत्कृष्ट ८ राज स्पर्शना है ।

६२. सम्यक्त्व के तीन प्रकार की अपेक्षा से निम्नलिखित विकल्पों में कौन सा विकल्प अल्पबहुत्व के लिए सही हैं ?

अ. औपशमिक सम्यक्त्व वाले जीव सबसे अल्प हैं, क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन वाले जीव उनसे अनंतगुना हैं क्षायिक सम्यक्त्वी जीव उनसे अनंतगुना हैं ।

ब. क्षायोपशमिक सम्यक्त्व वाले जीव सबसे अल्प हैं, औपशमिक सम्यक्त्वी जीव उनसे असंख्यगुना हैं, क्षायिक सम्यक्त्वी जीव उनसे अनंतगुना हैं ।

क. क्षायिक सम्यक्त्वी जीव सबसे अधिक हैं, वे क्षायोपशमिक सम्यक्त्व वाले जीवों से अनंतगुना हैं और क्षायोपशमिक सम्यक्त्व वाले जीव औपशमिक सम्यक्त्व वाले जीवों से असंख्यगुना हैं ।

ड. क्षायिक सम्यक्त्वी जीव सबसे अधिक हैं, वे क्षायोपशमिक सम्यक्त्व वाले जीवों से असंख्यगुना हैं और औपशमिक सम्यक्त्वी जीव सबसे अल्प हैं ।

६३. जीव और अजीव द्रव्य के लिए निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं हैं ?

अ. भाव प्राण सभी जीवों को होते हैं, द्रव्य प्राण मात्र संसारी जीव को होते हैं ।

ब. पांच इन्द्रिय, नोइन्द्रिय, तीन योग और आयुष्य यह दस द्रव्य प्राण हैं तथा ज्ञान-दर्शनादि भाव प्राण हैं ।

क. रूपी द्रव्य स्थूल परिणामी हो तो उसे चक्षु आदि इन्द्रियों से जान सकते है और सूक्ष्म परिणामी हो तो इन्द्रियों से नहीं जान सकते हैं ।

ड. मन-वचन-काया की प्रवृत्ति से उत्पन्न होने वाले जीव के परिणाम भाव आस्रव हैं ।

६४. तत्वों का स्पष्ट ज्ञान जैसे निक्षेप से होता है वैसे ही प्रमाण और नय से भी होता है. अत: प्रमाण-नय-निक्षेप के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से कौन सा विकल्प सही है ?

अ. प्रमाण से वस्तुका पूर्ण बोध होता है जब की नय से अपूर्ण बोध होता है इसलिए प्रमाण नय का एक अंश है ।

ब. दूध की अपेक्षा से दहीं द्रव्य निक्षेप के अंतर्गत है किंतु श्रीखंड की अपेक्षा से भाव विक्षेप

के अंतर्गत है ।

क. समवसरण में बिराजित महावीर स्वामी भाव तीर्थंकर थे तथा जिनालय में बिराजित महावीर स्वामी भगवान की प्रतिमा द्रव्य तीर्थंकर है ।

ड. वर्तमान काल में महावीर स्वामी प्रभु द्रव्य तीर्थंकर तथा सीमंधर स्वामी प्रभु भाव तीर्थंकर हैं ।

६५. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं है?

अ. अविरत सम्यग्दृष्टि जीव उपर अनुत्तर विमान में जाते हुए सात राज तथा नीचे छठी नरक में जाते हुए पांच राज की स्पर्शना करता है ।

ब. पूर्व कोटि आयु वाला मनुष्य आठ वर्ष की वय में सम्यक्त्व पाकर विजयादि अनुत्तर विमान में उत्पन्न हो, वहाँ उत्कृष्ट स्थिति पूर्ण कर, पुन: मनुष्य भव में आकर पुन: विजयादि अनुत्तर विमान में उत्पन्न हो, वहाँ से च्युत होकर मनुष्य गति प्राप्त कर अवश्य मोक्ष प्राप्त करे। इस प्रकार क्षायोपशमिक सम्यक्त्व की उत्कृष्ट स्थिति साधिक ६६ सागरोपम घटित होती है ।

क. सहस्रार देवलोक का कोई सम्यग्दृष्टि देव एक रूप से उपर अच्युत कल्प में जाए तथा दुसरे रूप से नीचे तीसरी नरक तक जाए, तब सहस्रार देवलोक से उपर एक राज तथा नीचे सात राज स्पर्शना होने से सम्यक्त्व की कुल स्पर्शना ८ राज होती है ।

ड. सहस्रार तक के देव मित्र नारकी की वेदना को भोगने के लिए अथवा शत्रु नारक की वेदना को बढ़ाने के लिए तीसरी नरक तक जाते हैं। उससे उपर वाले देव शक्ति होने पर भी नरक में जाते नहीं। सीताजी का जीव अच्युतेन्द्र चौथी नरक में लक्ष्मणजी को मिलने गया था। ऐसा क्वचित् होने से विवक्षित नहीं है ।

६६. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य गलत है?

अ. कुछ जीवों को बाह्य निमित्त बिना ही सम्यग्दर्शन प्राप्त होता है, इसे निसर्ग सम्यग्दर्शन कहते हैं किंतु अंतरंग निमित्त के बिना किसी भी जीव को सम्यक्त्व प्राप्त नहीं होता ।

ब. जिन जीवों में मोक्ष प्राप्ति की योग्यता है, वे भव्य जीव कहलाते हैं। मोक्ष की योग्यता होने पर जिन जीवों को सामग्री न मिलने से कभी मोक्ष नहीं होता, वे जाति भव्य कहलाते हैं। यह भव्यत्व, अभव्यत्व आदि सभी क्षायिक भाव के भेद हैं क्योंकि कर्म के सम्पूर्ण क्षय से ही मोक्ष होता है ।

क. सभी जीवों को सम्यग्दर्शनादि गुण भिन्न-भिन्न हेतु से प्राप्त होते हैं। अत: सभी जीवों की योग्यता भिन्न-भिन्न है। इसमें उन जीवों का तथाभव्यत्व ही कारण है ।

ड. स्वरूप से सभी जीव समान है परंतु मोक्ष गमन की योग्यता के आधार पर दो भेद है - भव्य और अभव्य. जिन जीवों में मोक्ष गमन की योग्यता सर्वथा नहीं, वे जीव अभव्य हैं।

६७. ज्ञानी भगवंत कहते है के भौतिक वस्तुओं में सुख नहीं तो भी जीव को भौतिक वस्तुओं के भोग-उपभोग से सुख का अनुभव होता है क्योंकि...
अ. भौतिक वस्तु पुण्य के उदय से प्राप्त होती है ।
ब. इन वस्तुओं के भोगोपभोग से शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है ।
क. इन वस्तुओं के भोगोपभोग से आत्मा तृप्त होती है तथा इन्द्रियाँ पुष्ट होती है ।
ड. उपर्युक्त में से कोई नहीं ।

६८. निम्नलिखित कोष्ठक में संसार के सुख और मोक्ष के सुख में भेद दर्शाए गए हैं । इनमें से कौन सा विकल्प सही नहीं है?

	संसार का सुख:		मोक्ष का सुख:
अ.	भौतिक साधनों से उत्पन्न होने के कारण और उनसे कभी भी तृप्ति न होने के कारण अपूर्ण है ।	अ.	यह सुख बाह्य पदार्थ के निमित्त के बिना तथा सदा काल रहने वाला होने से नित्य है।
ब.	इस सुख से पहेले दु:ख होना आवश्यक है तथा उसके पश्चात् भी वियोग से मन में क्लेश होने के कारण दु:ख रूप ही है ।	ब.	सुख स्वाधीन होने के कारण तथा इस में कोई प्रकार का भय न होने से यह सच्चा सुख है।
क.	तीव्र इच्छा होने पर भी इसे लगातार भोग नहीं सकते, बीच में अंतर रखना ही पड़ता है।	क.	यह सुख संसार का उद्वेग दूर होने से दु:ख के प्रतीकार रूप है. दु:ख का अभाव होने से यह सुख का अनुभव होता है ।
ड.	यह सुख नित्य, अंतर रहित तथा दु:ख के अंश से भी रहित नहीं है ।	ड.	जैसे ज्ञान आत्मा का गुण है, वैसे ही मोक्ष में इच्छादि का अभाव होने से यह स्वाभाविक सुख है ।

६९. सम्यग्दर्शन के लिए निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य गलत नहीं है?
अ. तत्त्वार्थ श्रद्धा कार्य है तथा सम्यग्दर्शन कारण है, अत: कारण में कार्य का उपचार कर तत्त्वार्थ श्रद्धा को सम्यग्दर्शन कहा है ।
ब. सम्यक्त्व के चिह्न-लक्षण इस क्रम से प्राप्त होते हैं - शम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा, आस्तिक्य ।
क. शम=शांति, संवेग=संसार से वैराग्य, निर्वेद=मोक्ष की इच्छा, अनुकंपा=करुणा, आस्तिक्य=वीतराग वचन पर श्रद्धा ।
ड. जीवादि पदार्थ जिस स्वरूप में हैं, उसी स्वरूप में उन्हें स्वीकारना सम्यग्दर्शन है. मोहनीय कर्म के क्षय आदि से होने वाला शुभ आत्मपरिणाम रूप सम्यक्त्व विग्रह गति में भी होता है ।

७०. मोक्ष मार्ग विषयक निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं है?

अ. सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र, यह तीनों सम्मिलित रूप में ही मोक्षमार्ग है, तीन में से एक का भी अभाव होने पर मोक्ष प्राप्त नहीं होता ।

ब. सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के बाद सम्यग्ज्ञान प्राप्त होता है तथा इन दोनों की प्राप्ति के बाद ही सम्यक्चारित्र प्राप्त होता है. इस विशेषता को दर्शाने के लिए सूत्र में 'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्ग:' ऐसा क्रम रखा गया है ।

क. केवली भगवंत में मोक्ष के तीनों कारण विद्यमान होने पर भी अघाती कर्म का उदय प्रतिबंधक होने से वे मोक्ष में जाते नहीं ।

ड. जीवादि पदार्थों का यथार्थ बोध सम्यग्ज्ञान है तथा उन पर श्रद्धा सम्यग्दर्शन है ।

७१. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य गलत नहीं है?

अ. सम्यक् चारित्र याने असत्क्रिया से निवृत्ति और सत्क्रिया में प्रवृत्ति । यह चारित्र सिद्ध भगवंतो में नहीं होने के कारण उनका मोक्ष नहीं होता ।

ब. जैसे पहेले औषध का ज्ञान होता है, फिर उसकी श्रद्धा होती है; वैसे ही जीव में पहला सम्यग्ज्ञान प्रकट होता है, फिर सम्यग्दर्शन प्रकट होता है । ज्ञान की प्रधानता को दर्शाने के लिए सूत्र में 'ज्ञान' को बीच में रखा गया है ।

क. सुज्ञ भगवंतों ने मोक्ष को प्रत्यक्ष देखकर उसका उपदेश दिया । उनके उपदेश का संकलन आगम के रूप में किया गया । अत: इन आगमों में मोक्ष का विधान होने से मोक्ष प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध होता है ।

ड. जो वस्तु सत् है उसकी जीव को इच्छा होती है । जो असत् है उसकी इच्छा किसी को नहीं होती । अत: मोक्ष की इच्छा होने से मोक्ष सिद्ध होता है ।

७२. जीव को प्रथम बार सम्यक्त्व प्राप्ति के विषय में दो मत है । निम्नलिखित विकल्पों में से कौन सा विकल्प गलत नहीं है?

अ. सैद्धान्तिक मत से जीव यदि पहेली बार क्षायोपशमिक सम्यक्त्व प्राप्त करे तो अपूर्वकरण में ही शुद्ध आदि तीन पुंज करता है तथा अंतर्मुहूर्त बाद शुद्ध पुंज ही उदय में लाता है ।

ब. कार्मग्रंथिक मत से यदि पहेली बार क्षायोपशमिक सम्यक्त्व प्राप्त हो तो सम्यक्त्व के बाद सम्यक्त्व मोहनीय, मिश्र मोहनीय अथवा मिथ्यात्व मोहनीय तीनों में से कोई भी एक प्रकृति का उदय होता है ।

क. एक बार सम्यक्त्व से पतित होने के बाद कार्मग्रंथिक मत से तीन पुंज की प्रक्रिया पुन: नहीं करनी पड़ती । तथा सैद्धान्तिक मत से उत्कृष्ट स्थिति का बंध नहीं होता पर उत्कृष्ट रस का बंध होता है ।

ड. दोनों मत से जीव पहेली बार औपशमिक सम्यक्त्व प्राप्त करता है तथा सैद्धान्तिक मत से क्षायोपशमिक सम्यक्त्व भी प्राप्त करता है किन्तु इसके अंतर्मुहूर्त बाद पुन: मिथ्यात्व में अवश्य जाता है ।

७३. संसारी सुख के लिए निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं है?

अ. तीव्र इच्छा होने पर भी भौतिक सुख को लगातार नहीं भोग सकते, बीच-बीच में विक्षेप करना ही पड़ता है । अत: संसार का सुख अनित्य है ।

ब. भौतिक सुख का बहुत अनुभव करने पर भी वह कम ही लगता है, उससे कभी तृप्ति नहीं होती । अत: संसार का सुख अपूर्ण है ।

क. भौतिक सुख के साधन मात्र इच्छा से प्राप्त नहीं होते, उन्हें प्राप्त करने के लिए पुण्य चाहिए तथा साधन प्राप्त होने के बाद भी भोगने के लिए भी पुण्य चाहिए । अत: यह सुख पराधीन है ।

ड. भौतिक सुख की आसक्ति और क्लिष्ट परिणाम से होने वाले पापों की परंपरा अनेक भवों तक चलने से यह सुख दु:खानुबंधी है ।

७४. तत्त्वों का ज्ञान हमें निक्षेप से, प्रमाण और नय से, निर्देश आदि छ द्वारों से एवं सत् आदि आठ द्वारों से हो सकता है । इन द्वारों के लिए निम्नलिखित में से कौन सा वाक्य सही नहीं है?

अ. निर्देश द्वार में तत्त्व के स्वरूप का तथा सत् द्वार में तत्त्व की विद्यमानता का निरूपण किया है ।

ब. अधिकरण द्वार में तत्त्व के अधिकरण का तथा क्षेत्र द्वार में उस तत्त्व के स्वामी के क्षेत्र का भी वर्णन किया जाता है ।

क. द्रव्य निक्षेप में वस्तु की वर्तमान अवस्था की तथा भाव निक्षेप में वस्तु की भूत काल या भविष्य काल की अवस्था की प्ररूपणा की जाती है ।

ड. प्रमाण से वस्तु के अनेक धर्मों का निर्णयात्मक बोध होता है तथा नय से वस्तु के किसी भी एक धर्म का किसी एक अपेक्षा से बोध होता है ।

७५. तत्त्वों के अपेक्षा से दो, पांच, सात और नौ भेद होते है । निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य गलत नहीं है?

अ. कर्म का बंध होता है तो निर्जरा अवश्य होती है । अत: बंध का निर्जरा तत्त्व में समावेश हो जाता है ।

ब. पुण्य, पाप, आस्रव और बंध जीव को ही होने से उनका समावेश जीव तत्त्व में करने पर दो ही तत्त्व होते हैं - जीव और अजीव ।

क. संवर-निर्जरा-मोक्ष उपादेय तत्त्व हैं तथा आस्रव-बंध हेय तत्त्व हैं । पाप सर्वथा हेय है । आध्यात्मिक विकास में आवश्यक पुण्य उपादेय है, बाकी निश्चय से तो सर्वथा हेय है ।

ड. जीव में अजीव का आस्रव होने पर दोनों एकमेक हो जाते हैं । यह आस्रव ही दु:ख का कारण है । अत: निर्जरा से आस्रव को रोकना चाहिए तथा तप से कर्म का क्षय करना चाहिए ।

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-२	अध्याय १	सूत्र ९ से २०	जमा करने की अंतिम तारीख ता. २९/०२/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक. **(कुल ३० x ½ = १५ अंक)**

१. मति और श्रुत यह दो .... ज्ञान हैं ।

अ. प्रत्यक्ष ब. परोक्ष क. व्यवहारिक ड. पारमार्थिक

२. पांच प्रकार के ज्ञान .... प्रमाण रूप हैं ।

अ. प्रत्यक्ष परोक्ष प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष क. प्रत्यक्ष और परोक्ष ड. उभय

३. अवग्रह, इहा, अपाय और धारणा यह .... ज्ञान का विषय हैं ।

अ. मति ब. श्रुत क. अवधि ड. मन:पर्याय

४. मन .... कहलाता है ।

अ. अनिन्द्रिय ब. अतिन्द्रिय क. विकलेन्द्रिय ड. बाह्येन्द्रिय

५. बहु, बहुविध, क्षिप्र, निश्रित, असंदिग्ध और ध्रुव और उन सबके विपरीत यह .... के विषय हैं ।

अ. अवग्रहादि ब. श्रुतज्ञान क. अवधिज्ञान ड. मन:पर्याय

६. औत्पातिकी, वैनेयिकी, कार्मिकी और पारिणामिकी भेद यह .... मतिज्ञान के हैं।

अ. श्रुत निश्रित ब. अश्रुतनिश्रित क. श्रुत मिश्रित ड. अश्रुत मिश्रित

७. श्रुतनिश्रित और अश्रुतनिश्रित मतिज्ञान के कुल .... भेद हैं ।

अ. ३४० ब. ४३० क. ३५० ड. ५३०

८. अंग बाह्य के .... भेदो हैं ।

अ. बारह ब. दो क. ग्यारह ड. तीन

९. अंग प्रविष्ट के भेदो .... हैं ।

अ. बार ब. दो क. ग्यारह ड. तीन

१०. श्रुतज्ञान के अंग बाह्य और अंग प्रविष्ट यह दो भेद .... की अपेक्षा से हैं ।
अ. श्रोता ब. वक्ता क. ज्ञानी ड. श्रोता और वक्ता उभय

११. इन्द्रिय और विषय का संबंध होते 'कुछ है' ऐसा अव्यक्त बोध होता है उसे .... कहते हैं ।
अ. अवग्रह ब. ईहा क. अपाय ड. धारणा

१२. सोई हुई व्यक्ति को 'कोई मुझे ही बुलाता है' ऐसा निर्णय होता है उसे .... कहते हैं ।
अ. अवग्रह ब. ईहा क. अपाय ड. धारणा

१३. चिंता .... काल के विषय को ग्रहण करता है ।
अ. भूतब. ब. वर्तमान क. भविष्य ड. तीनों

१४. मति .... काल के विषय को ग्रहण करता है ।
अ. भूत ब. वर्तमान क. भविष्य ड. तीनों

१५. स्मृति .... काल के विषय को ग्रहण करता है ।
अ. भूत ब. तीनों क. भविष्य ड. भूत और वर्तमान

१६. संज्ञा .... काल के विषय को ग्रहण करता है ।
अ. भूत ब. वर्तमान क. भूत और वर्तमान ड. तीनों

१७. .... यह सर्व प्रकार के मतिज्ञान के लिए सर्व सामान्य शब्द है ।
अ. मति ब. स्मृति क. संज्ञा ड. अभिनिबोध

१८. मतिज्ञान .... की सहायता से होता है ।
अ. इन्द्रिय ब. अनिन्द्रिय क. इन्द्रिय और अनिन्द्रिय ड. केवल मन

१९. मतिज्ञान के कुल .... भेद बताए हैं ।
अ. ३३६ ब. ४३६ क. २३६ ड. २८६

२०. जिस शास्त्र में बार बार एक समान पाठ आते हैं उसे .... श्रुत कहते है ।
अ. सादि ब. सम्यक् क. गमिक ड. अंग बाह्य

२१. उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी में तीसरे आरे का कुछ काल व्यतीत होते .... ज्ञान का प्रारंभ होता है ।
अ. मति ब. श्रुत क. अवधि ड. मन:पर्याय

२२. एक जीव के आश्रय से श्रुतज्ञान .... है ।
अ. अनादी सांत ब. सादि अनंत क. सादि सांत ड. अनादि अनंत

२३. एक जीव के आश्रय से श्रुतज्ञान .... है ।
अ. सादि सांत ब. सादि अनंत क. अनादि सांत ड. अनादि अनंत

२४. सम्यग्दृष्टि द्वारा रचित श्रुत यह .... श्रुत है ।
अ. द्रव्यसम्यक् ब. भावसम्यक् क. द्रव्यभाव उभय सम्यक् ड. सम्यक् सम्यक्

२५. सम्यग्दृष्टि द्वारा रचित श्रुत यदि मिथ्यादृष्टि पढ़े तो उसे .... बोध होता है ।
अ. सम्यक् ब. मिथ्या क. सम्यक् अथवा मिथ्या ड. सम्यक् और मिथ्या

२६. मिथ्यादृष्टि द्वारा रचित श्रुत यदि सम्यग्दृष्टि पढ़े तो उसे .... बोध होता है ।
अ. सम्यक् ब. मिथ्या क. सम्यक् अथवा मिथ्या ड. सम्यक् और मिथ्या

२७. .... अवग्रह हो तो ही .... अवग्रह होता ऐसा नियम है । (क्रम से शब्द लेने हैं)।
अ. व्यंजन अर्थ ब. अर्थ व्यंजन क. सामान्य विशेष ड. विशेष सामान्य

२८. अपाय की दृष्टि से अर्थावग्रह .... ज्ञान है वब कि व्यंजन अवग्रह की दृष्टि से .... ज्ञान है । (क्रम से शब्द लेने हैं)
अ. व्यक्त अव्यक्त ब. व्यक्त व्यक्त क. अव्यक्त अव्यक्त ड. अव्यक्त व्यक्त

२९. .... संयोग बिना ही अपने विषय का बोध कर लेते हैं ।
अ. कर्ण और काया ब. काया और चक्षु क. मन और चक्षु ड. मन और कर्ण

३०. स्पर्शेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय द्वारा व्यंजनावग्रह .... प्रकारे होते हैं ।
अ. एक ब. दो क. चार ड. पांच

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१. मतिज्ञान यानी?
अ. मन और इन्द्रियों की सहायता से आत्मा को होता, शब्द - अर्थ के संबंध बिना ही विषय का ज्ञान ।
ब. मन और इन्द्रियों की सहायता से शब्द और अर्थ के पर्यालोचन (विचारणा / समीक्षा) पूर्वक का आत्मा को होता बोध ।
क. मन और इन्द्रियों की सहायता के बिना आत्मा को रूपी पदार्थों का होता सीमित बोध।
ड. ढाई द्विप में रहेते संज्ञि पंचेन्द्रिय जीवों के मन के विचारों का होता बोध ।

३२. श्रुत ज्ञान यानी?
अ. मन और इन्द्रियों की सहायता से आत्मा को होता, शब्द - अर्थ के संबंध बिना ही विषय का ज्ञान ।
ब. मन और इन्द्रियों की सहायता से शब्द और अर्थ के पर्यालोचन (विचारणा / समीक्षा) पूर्वक का आत्मा को होता बोध ।

क. मन और इन्द्रियों की सहायता बिना आत्मा को रूपी पदार्थों का होता सीमित बोध ।

ड. ढाई द्विप में रहेते संज्ञि पंचेन्द्रिय जीवों के मन के विचारो का होता बोध ।

३३. अवधिज्ञान यानी ?

अ. मन और इन्द्रियों की सहायता से आत्मा को होता, शब्द - अर्थ के संबंध बिना ही विषय का ज्ञान ।

ब. मन और इन्द्रियों की सहायता से शब्द और अर्थ के पर्यालोचन (विचारणा / समीक्षा) पूर्वक का आत्मा को होता बोध ।

क. मन और इन्द्रियों की सहायता बिना आत्मा को रूपी पदार्थों का होता सीमित बोध ।

ड. ढाई द्विप में रहेते संज्ञि पंचेन्द्रिय जीवों के मन के विचारो का होता बोध ।

३४. केवलज्ञान यानी ?

अ. मात्र ढाई द्विपके तीनों काल के सर्व द्रव्यों के सर्व पर्यायों का भेद रहित शुद्ध और संपूर्ण बोध ।

ब. मन और इन्द्रियों की सहायता के बिना आत्मा को सर्व काल के रूपी पदार्थों का होता सीमित बोध ।

क. ढाई द्विप में रहेते सर्व संज्ञि पंचेन्द्रिय जीवों के मन के विचारों का होता बोध ।

ड. तीनों काल के सर्व द्रव्यों के सर्व पर्यायों का भेद रहित शुद्ध और संपूर्ण बोध ।

३५. व्यंजन अवग्रह यानी ?

अ. उपकरण इन्द्रिय और विषय के संयोग से होता अत्यंत अव्यक्त बोध ।

ब. पदार्थ के गुणरूप अर्थ का और गुणयुक्त द्रव्यरूप अर्थ का व्यक्त बोध ।

क. 'कुछ है' ऐसा बोध होने के बाद 'वह क्या है' उसका निर्णय करने के लिए होती विचारणा।

ड. विशेष चिह्नों द्वारा पदार्थ का निर्णयात्मक ज्ञान ।

३६. अर्थावाग्रह यानी ?

अ. उपकरण इन्द्रिय और विषय के संयोग से होता अत्यंत अव्यक्त बोध ।

ब. पदार्थ के गुणरूप अर्थ का और गुणयुक्त द्रव्यरूप अर्थ का व्यक्त बोध ।

क. 'कुछ है' ऐसा बोध होने के बाद 'वह क्या है' उसका निर्णय करने के लिए होती विचारणा।

ड. विशेष चिह्नों द्वारा पदार्थ का निर्णयात्मक ज्ञान ।

३७. ईहा यानी ?

अ. उपकरण इन्द्रिय और विषय के संयोग से होता अत्यंत अव्यक्त बोध ।

ब. पदार्थ के गुणरूप अर्थ का और गुणयुक्त द्रव्यरूप अर्थ का व्यक्त बोध ।

क. 'कुछ है' ऐसा बोध होने के बाद 'वह क्या है' उसका निर्णय करने के लिए होती विचारणा।
ड. विशेष चिह्नों द्वारा पदार्थ का निर्णयात्मक ज्ञान ।

३८. अपाय यानी ?
अ. उपकरण इन्द्रिय और विषय के संयोग से होता अत्यंत अव्यक्त बोध ।
ब. पदार्थ के गुणरूप अर्थ का और गुणयुक्त द्रव्यरूप अर्थ का व्यक्त बोध ।
क. 'कुछ है' ऐसा बोध होने के बाद 'वह क्या है' उसका निर्णय करने के लिए होती विचारणा।
ड. विशेष चिह्नों द्वारा पदार्थ का निर्णयात्मक ज्ञान ।

३९. धारणा यानी ?
अ. 'कुछ है' ऐसा बोध होने के बाद 'वह क्या है' उसका निर्णय करने के लिए होती विचारणा।
ब. विशेष चिह्नों द्वारा पदार्थ का निर्णयात्मक ज्ञान ।
क. अपाय से हुए निर्णय के बाद उसका उपयोग स्थिर रहना ।
ड. भूतकाल में जाने हुए (पूर्व अनुभूत) पदार्थ का वर्तमान में स्मरण होना ।

४०. स्मृति यानी ?
अ. विशेष चिह्नों द्वारा पदार्थ का निर्णयात्मक ज्ञान ।
ब. अपाय से हुए निर्णय के बाद उसका उपयोग स्थिर रहना ।
क. भूतकाल में जाने हुए (पूर्व अनुभूत) पदार्थ का वर्तमान में स्मरण होना ।
ड. उपकरण इन्द्रिय और विषय के संयोग से होता अत्यंत अव्यक्त बोध ।

४१. संज्ञा यानी ?
अ. भूतकाल में जाने हुए (पूर्व अनुभूत) पदार्थ को वर्तमान के विषय से जोड़ता ज्ञान जिसके द्वारा यह विषय 'भूतकाल में जाना है वही है' ऐसा होता ज्ञान ।
ब. चिह्न देखकर ऐसे चिह्न वाला जरूर होना चाहिए ऐसी तर्कपूर्ण विचारणा ।
क. भूतकाल में जाने हुए (पूर्व अनुभूत) पदार्थ का वर्तमान में स्मरण होना ।
ड. उपकरण इन्द्रिय और विषय के संयोग से होता अत्यंत अव्यक्त बोध ।

४२. चिंता यानी ?
अ. भूतकाल में जाने हुए (पूर्व अनुभूत) पदार्थ को वर्तमान के विषय से जोड़ता ज्ञान जिसके द्वारा यह विषय 'भूतकाल में जाना है वही है' ऐसा होता ज्ञान ।
ब. चिह्न देखकर ऐसे चिह्न वाला जरूर होना चाहिए ऐसी तर्कपूर्ण विचारणा ।
क. भूतकाल में जाने हुए (पूर्व अनुभूत) पदार्थ का वर्तमान में स्मरण होना ।
ड. उपकरण इन्द्रिय और विषय के संयोग से होता अत्यंत अव्यक्त बोध ।

४३. अभिनिबोध यानी ?

अ. भूतकाल में जाने हुए (पूर्व अनुभूत) पदार्थ को वर्तमान के विषय से जोड़ता ज्ञान जिसके द्वारा यह विषय 'भूतकाल में जाना है वही है' ऐसा होता ज्ञान ।

ब. चिह्न देखकर ऐसे चिह्न वाला जरूर होना चाहिए ऐसी तर्कपूर्ण विचारणा ।

क. भूतकाल में जाने हुए (पूर्व अनुभूत) पदार्थ का वर्तमान में स्मरण होना ।

ड. उपकरण इन्द्रिय और विषय के संयोग से होता अत्यंत अव्यक्त बोध ।

४४. प्रत्यक्ष ज्ञान यानी ?

अ. मन और इन्द्रियों की सहायता से आत्मा को होता, शब्द - अर्थ के संबंध बिना ही विषय का ज्ञान ।

ब. मन और इन्द्रियों की सहायता से शब्द और अर्थ के पर्यालोचन (विचारणा / समीक्षा) पूर्वक का आत्मा को होता बोध ।

क. मन और इन्द्रिय की सहायता के बिना साक्षात् आत्मा को होता ज्ञान ।

ड. आत्मा से पर ऐसे मन और इन्द्रिय की सहायता से आत्मा को होता ज्ञान ।

४५. परोक्ष ज्ञान यानी ?

अ. मन और इन्द्रियों की सहायता के बिना आत्मा को होता, शब्द - अर्थ के संबंध बिना ही विषय का ज्ञान ।

ब. मन और इन्द्रियों की सहायता के बिना शब्द और अर्थ के पर्यालोचन (विचारणा / समीक्षा) पूर्वक का आत्मा को होता बोध ।

क. मन और इन्द्रिय की सहायता के बिना साक्षात् आत्मा को होता ज्ञान ।

ड. मन और इन्द्रिय की सहायता से आत्मा को होता ज्ञान ।

४६. नीचे दिए गए वाक्यों में सही वाक्य बताएं ।

अ. श्रुत ज्ञान यह मतिज्ञान के पूर्व होता है ।

ब. शब्द और उसके अर्थ के बिना का ज्ञान वह श्रुत ज्ञान है ।

क. चक्षु द्वारा होता मतिज्ञान में व्यंनावग्रह होता नहीं ।

ड. चक्षु और मन प्राप्यकारी और बाकी की ४ इन्द्रियां अप्राप्यकारी कहलाती हैं ।

४७. मन:पर्याय ज्ञान यानी ?

अ. मात्र ढाई द्विप के तीनों काल के सर्व द्रव्यों के सर्व पर्यायों का भेद रहित शुद्ध और संपूर्ण बोध ।

ब. मन और इन्द्रियों की सहायता के बिना आत्मा को सर्व काल के रूपी पदार्थों का होता सीमित बोध ।

क. ढाई द्विप में रहेते सर्व संज्ञि पंचेन्द्रिय जीवों के मन के विचारो का होता बोध ।

ड. तीनों काल के सर्व द्रव्यों के सर्व पर्यायों का भेद रहित शुद्ध और संपूर्ण बोध ।

४८. अविच्युति यानी ?

अ. निर्णय होने के बाद उस वस्तु का उपयोग स्थिर रहना ।

ब. धारणा से आत्मा में उस विषय के संस्कार टिके रहना ।

क. विशिष्ट अवसर उपस्थित होते उस अवसर को पार पहुँचाने में एकाएक उत्पन्न होती मति।

ड. गुरु आदि की सेवा से प्राप्त होती मति ।

४९. वासना यानी ?

अ. निर्णय होने के बाद उस वस्तु का उपयोग स्थिर रहना ।

ब. धारणा से आत्मा में उस विषय के संस्कार टिके रहना ।

क. विशिष्ट अवसर उपस्थित होते उस अवसर को पार पहुँचाने में एकाएक उत्पन्न होती मति।

ड. गुरु आदि की सेवा से प्राप्त होती मति ।

५०. औत्पातिकी मति यानी ?

अ. निर्णय होने के बाद उस वस्तु का उपयोग स्थिर रहना ।

ब. धारणा से आत्मा में उस विषय के संस्कार टिके रहना ।

क. विशिष्ट अवसर उपस्थित होते उस अवसर को पार पहुँचाने में एकाएक उत्पन्न होती मति।

ड. गुरु आदि की सेवा से प्राप्त होती मति ।

५१. वैनेयिकी मति यानी ?

अ. विशिष्ट अवसर उपस्थित होते उस अवसर को पार पहुँचाने में एकाएक उत्पन्न होती मति।

ब. गुरु आदि की सेवा से प्राप्त होती मति ।

क. अभ्यास करते करते प्राप्त होती मति ।

ड. समय जाते अनुभव से प्राप्त होती बुद्धि ।

५२. कार्मिकी मति यानी ?

अ. विशिष्ट अवसर उपस्थित होते उस अवसर को पार पहुँचाने में एकाएक उत्पन्न होती मति।

ब. पूर्व में जाना होने पर भी व्यवहारकाल में उसके उपयोग के बिना उत्पन्न होती मति ।

क. पूर्व में जाना नहीं हो तो भी विशिष्ट प्रकार के मतिज्ञान के क्षयोपशम से उत्पन्न होती मति ।

ड. समय जाते अनुभव से प्राप्त होती बुद्धि ।

५३. पारिणामिकी मति यानी ?

अ. विशिष्ट अवसर उपस्थित होते उस अवसर को पार पहुँचाने में एकाएक उत्पन्न होती मति।

ब. गुरु आदि की सेवा से प्राप्त होती मति ।

क. अभ्यास करते करते प्राप्त होती मति ।

ड. समय जाते अनुभव से प्राप्त होती बुद्धि ।

५४. अंग बाह्य यानी ?

अ. विशुद्ध बोधवाले आचार्यों द्वारा मंद मति के व्यक्ति के अनुग्रह के लिए रचे जाने वाला श्रुत ज्ञान ।

ब. गणधर भगवंतो द्वारा रचे जाने वाला श्रुत ज्ञान ।

क. समाचार पत्र आदि से प्राप्त होता ज्ञान ।

ड. आगम के अलावा बहार का ज्ञान ।

५५. श्रुतनिश्रित मतिज्ञान यानी ?

अ. विशिष्ट अवसर उपस्थित होते उस अवसर को पार पहुँचाने में एकाएक उत्पन्न होती मति।

ब. पूर्व में जाना हो फिर भी व्यवहार काल में उसके उपयोग के बिना उत्पन्न होती मति।

क. पूर्व में जाना नहीं हो तो भी विशिष्ट प्रकार के मतिज्ञान के क्षयोपशम से उत्पन्न होती मति ।

ड. समय जाते अनुभव से प्राप्त होती बुद्धि ।

५६. अश्रुतनिश्रित मतिज्ञान यानी ?

अ. विशिष्ट अवसर उपस्थित होते उस अवसर को पार पहुँचाने में एकाएक उत्पन्न होती मति।

ब. पूर्व में जाना हो फिर भी व्यवहार काल में उसके उपयोग के बिना उत्पन्न होती मति।

क. पूर्व में जाना नहीं हो तो भी विशिष्ट प्रकार के मतिज्ञान के क्षयोपशम से उत्पन्न होती मति ।

ड. समय जाते अनुभव से प्राप्त होती बुद्धि ।

५७. नीचे दिए गए वाक्यों में गलत वाक्य चुनें ।

अ. अवधिज्ञान का विषय सर्व द्रव्य है ।

ब. केवलज्ञान का विषय सर्व द्रव्य है ।

क. अवधिज्ञान को द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की सीमा है ।

ड. केवलज्ञान को कोई भी सीमा नहीं ।

५८. नीचे दिए गए वाक्यों में सही वाक्य बताएं ।

अ. ग्रंथ में मतिज्ञान के पांच भेद बताए है ।

ब. ग्रंथ में श्रुतज्ञान के मुख्य दो भेद, उन दो के अनेक और बारह भेद बताए है ।

क. ग्रंथ में श्रुतज्ञान के मुख्य बारह भेद और गौण रूप से दो और अनेक भेद बताए है ।
ड. ग्रंथ में श्रुतज्ञान के मुख्य बारह भेद उन बारह के अनेक और दो भेद बताए है ।

५९. निचे दिए गए वाक्यों में सही वाक्य बताएं ।
अ. मति, श्रुत, स्मृति, संज्ञा, चिंता एकार्थक शब्द हैं ।
ब. अवग्रहादि के बहु, बहुविध, क्षिप्र, अनिश्रित, असंदिग्ध और ध्रुव ऐसे ६ भेद बताए हैं।
क. चक्षु को अवग्रह नहीं होता ।
ड. अवग्रह के अर्थ और व्यंजन ऐसे दो भेद हैं ।

६०. नीचे दिए गए वाक्यों में गलत वाक्य चुनें ।
अ. मति और श्रुत यह प्रत्यक्ष ज्ञान है ।
ब. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान यह तीन मिल के ही प्रत्यक्ष ज्ञान होते हैं ।
क. केवलज्ञान यह आत्मा का गुण होने से यह एक ही प्रत्यक्ष ज्ञान होता है ।
ड. अवधि, मन:पर्याय और केवल यह तीन ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान है ।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक. (कुल १५ x २ = ३० अंक)

६१. निम्नलिखित कोष्ठक में मति-श्रुत ज्ञान में भेद दिए गए हैं, इनमें से कौन सा विकल्प सही नहीं है ?

श्रुतज्ञान	मतिज्ञान
(अ) यह तीनों काल के विषय को ग्रहण करता है तथा व्यवधान वाले पदार्थों को भी जान सकता है ।	(अ) यह मात्र वर्तमान कालीन विषयों को ग्रहण करता है, तथा मन-इन्द्रियकी सहायता से ही होता है ।
(ब) इसमें शब्द अर्थ का पर्यालोचन होता है ।	(ब) इसमें इन्द्रियो से प्रत्यक्ष विषयों का ग्रहण होता है ।
(क) यह ज्ञान मतिमान बिना होता नहीं, ऐसा नहीं है ।	(क) यह ज्ञान श्रुतज्ञान बिना होता नहीं, ऐसा नहीं है ।
(ड) इस ज्ञान में आप्त पुरुष का उपदेश आवश्यक नहीं है, ऐसा नहीं है ।	(ड) इस ज्ञानमें आप्त पुरुष का उपदेश आवश्यक है, ऐसा नहीं है ।

६२. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य गलत नहीं ?
अ. आध्यात्मिक दृष्टि से मन:पर्याय ज्ञान परोक्ष प्रमाण है, क्योंकि वह मन की सहायता से होता है ।
ब. आध्यात्मिक दृष्टि से मतिज्ञान को सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष भी कहा जाता हैं ।

क. लौकिक दृष्टि से श्रुतज्ञान परोक्ष प्रमाण है, क्योंकि वह मति ज्ञान पूर्वक होता है, जबकि मतिज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण है, क्योंकि वह इन्द्रिय जन्य है ।

ड. अवधिज्ञान परोक्ष प्रमाण है, क्योंकि वह रूपी द्रव्य की सहायता से होता है ।

६३. निम्नलिखित विकल्पो में से कौन सा विकल्प मति ज्ञान के पर्यायवाची शब्दो के लिए गलत नहीं है ?

अ. चिंता भूतकाल के विषय को ग्रहण करता है ।

ब. अभिनिबोध शब्द मति ज्ञान, चिंता ज्ञान आदि सर्व प्रकारो के लिए सामान्य संज्ञा है ।

क. इन्द्रिय या मन के द्वारा वर्तमान में विद्यमान विषय का बोध संज्ञा ज्ञान है ।

ड. भूतकाल के विषय को वर्तमान काल का विषय बनाना वह स्मृति ज्ञान है ।

६४. विषय का इन्द्रिय के साथ संबंध होंने पर इन्द्रिय के साथे जुड़े ज्ञान तंतु मन को तथा मन आत्मा को विषय का ज्ञान कराते हैं । मति ज्ञान की इस प्रक्रिया के लिए निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प गलत नहीं है ?

अ. अपाय - इन्द्रिय का विषय के साथे संबंध होने पर 'कुछ है' ऐसा बोध ।
इहा - 'कुछ है' बोध होने के बाद 'क्या है', ऐसी जिज्ञासा ।
अवग्रह - विचारणा के पश्चात् निर्णय होना ।

ब. अवग्रह - इन्द्रिय का विषय के साथे संबंध होने पर व्यक्त बोध होना ।
धारणा - विचारणा के बाद निर्णय होना ।
अपाय - जिज्ञासा की संतुष्टि के लिए विचारणा करना ।

क. इहा - जिज्ञासा की संतुष्टि के लिए विचारणा करना ।
अवग्रह - इन्द्रिय के साथे विषय का संबंध होने पर व्यक्त बोध होना ।
धारणा - निर्णय होने के बाद उसी विषय का उपयोग स्थिर रहना ।

ड. अपाय - विचारणा के बाद निर्णय होना ।
इहा - जिज्ञासा की संतुष्टि के लिए विचारणा करना ।
धारणा - निर्णय होने के बाद उसी विषय का उपयोग स्थिर रहना ।

६५. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं है ?

अ. मति ज्ञान के चारों भेदों की क्रमशः प्रवृत्ति होने पर भी अतिशीघ्रता के कारण हमें वह भेद ख्याल में नहीं आते ।

ब. पूर्वजन्म में कोई कार्य तीव्र उपयोग के साथ किए होंगे तो ऐसी अविच्युति धारणा से आत्मा में उस विषय के तीव्र संस्कार संगृहीत होंगे । यदि उस कार्य का इस भव में कोई निमित्त मिले तो उस संस्कार रूपक वासना से वह पुनः याद आ सकता है, इसे ही स्मृति धारणा कहा जाता है ।

क. इस जन्म में कोई क्रिया कलाप तीव्र उपयोग से करने पर उस उपयोग रूप वासना से आत्मा में तीव्र संस्कार रूप अविच्युति संगृहीत होगी । आगामी भव में निमित्त मिलने पर पुन: उसका स्मृति ज्ञान हो सकता है ।

ड. पूर्वानुभूत वस्तु या घटना का स्मरण स्मृति धारणा है । इस स्मृति का कारण संस्कार है । जिस वस्तु या घटना के संस्कार आत्मा में नहीं, उस वस्तु या घटना का कभी स्मरण नहीं होता ।

६६. 'अ' नाम के व्यक्ति शिक्षक है । वे कर्मग्रंथ, न्यायादि अनेक शास्त्र पढ़ाते हैं, किन्तु कर्मग्रंथ में उनका विशेष प्रभुत्व है । उनके दो छात्र हैं - 'ब' और 'क' । 'ब' छात्र किसी पदार्थ को एक बार समझने के बाद पुन: उसे उसी स्वरूप में समज लेता है, किन्तु वह पदार्थ का ज्ञान जल्दी नहीं कर सकता । 'क' छात्र पदार्थ का ज्ञान जल्दी कर लेता है किन्तु एक बार समझने के बाद पुन: उसे वह पदार्थ उसी स्वरूप में समझ नहीं आता । कक्षा पूर्ण होने के बाद 'ब' छात्र को उस विषय में अधिक शंकाएं नहीं होती, किन्तु 'क' छात्र दूसरे दिन कक्षा में पुन: उसी विषय में बहुत शंकाएं 'अ' शिक्षक को पूछता है ।

इन तीनों के लिए मति ज्ञान के बहु-बहुविध आदि भेदों के निम्नलिखित चार विकल्प दिए गए है । इनमें से कौन सा विकल्प सही है ?

	'ब' छात्र	'क' छात्र	'अ' शिक्षक
अ.	असंदिग्ध, ध्रुव, अक्षिप्र	संदिग्ध, अध्रुव, क्षिप्र	अबहु, कर्मग्रंथमें बहुविध
ब.	संदिग्ध, ध्रुव, क्षिप्र	अक्षिप्र, अध्रुव असंदिग्ध	बहु, न्यायमें अबहुविध
क.	असंदिग्ध, ध्रुव, अक्षिप्र	अध्रुव, क्षिप्र, संदिग्ध	बहु, न्यायमें अबहुविध
ड.	अध्रुव, क्षिप्र, संदिग्ध	असंदिग्ध, अक्षिप्र, ध्रुव	बहु, कर्मग्रंथमें बहुविध

६७. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही है ?

अ. उत्सर्पिणी में तीसरे आरे का तथा अवसर्पिणी में चौथे आरे का कुछ काल व्यतीत होने के बाद श्रुतज्ञान का प्रारंभ होता है ।

ब. अवसर्पिणी में चौथे आरे का कुछ काल व्यतीत होने के बाद तथा उत्सर्पिणी में पांचवें आरे के अंत में श्रुतज्ञान का अंत होता है ।

क. उत्सर्पिणी - अवसर्पिणी में श्रुतज्ञान का प्रारंभ समान आरे में होता है, किन्तु अंत अलग-अलग आरे में होता है ।

ड. उत्सर्पिणी - अवसर्पिणी में श्रुतज्ञान का अंत समान आरे में होता है, किन्तु प्रारंभ अलग-अलग आरे में होता है, इसलिए काल से श्रुत सादि-सांत है ।

६८. निम्नलिखित वाक्यों में श्रुतज्ञान की द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से विचारणा की गई है । इनमें से कौन सा विकल्प सही नहीं है ?

अ. भाव से क्षायोपशमिक सम्यक्त्व की प्राप्ति के समये श्रुत का प्रारंभ होता है, तथा सम्यक्त्व का वमन होने पर श्रुत का अंत होता है, इसलिए श्रुत सादि-सांत है ।

ब. क्षेत्र से महाविदेह में तीर्थ की स्थापना से तीर्थ विच्छेद तक श्रुत होता है, इसलिए श्रुत सादि सांत है ।

क. काल से उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल की अपेक्षा से श्रुत सादि-सांत है, तथा नोउत्सर्पिणी-नोअवसर्पिणी काल की अपेक्षासे अनादि-अनंत है ।

ड. द्रव्य से एक जीव के द्रव्य की अपेक्षा से श्रुत सादि-सांत तथा अनेक जीव द्रव्य की अपेक्षा से श्रुत अनादि-अनंत है ।

६९. जैसे पानी का परिणाम पात्र के अनुसार होता है, वैसे ज्ञान भी पात्र के अनुसार परिणत होता है । निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य सम्यक् और मिथ्या श्रुत के लिए गलत नहीं है ?

अ. गणधर भगवंतों द्वारा रचित द्वादशांगी भाव सम्यक् श्रुत है तथा उस द्वादशांगी से मिथ्या दृष्टि जीवों को होने वाला बोध द्रव्य से सम्यक् श्रुत है ।

ब. मिथ्यादृष्टि द्वारा रचित शास्त्र पढ़कर सम्यग्दृष्टि जीवों को होने वाला बोध द्रव्य से सम्यक् श्रुत है, तथा सम्यग्दृष्टि रचित शास्त्रों से मिथ्यादृष्टि जीवों को होने वाला बोध भाव से मिथ्याश्रुत है ।

क. मिथ्यादृष्टि द्वारा रचित शास्त्र द्रव्य से मिथ्याश्रुत है तथा इन शास्त्रों से सम्यग्दृष्टि जीवों को होने वाला बोध भाव से मित्याश्रुत है ।

ड. सम्यग्दृष्टि जीव द्वारा रचित शास्त्र द्रव्य से सम्यक्श्रुत है तथा इन शास्त्रों से मिथ्यादृष्टि जीवों को होने वाला बोध भाव से मिथ्याश्रुत है ।

७०. कर्मग्रंथ में निर्दिष्ट श्रुतज्ञान के चौदह भेदों के लिए कौन सा विकल्प सही है ?

अ. असंज्ञिश्रुत - दीर्घकालिकी संज्ञा वाले जीवों का श्रुत ।
गमिकश्रुत - जिस शास्त्र में बार-बार समान पाठ आते हैं ।
अंगबाह्यश्रुत - आचार्य द्वारा द्वादशांगी के आधार पर रचित श्रुत ।

ब. अगमिक श्रुत - जिस शास्त्र में समान पाठ बार-बार नहीं आते ।
संज्ञिश्रुत - दीर्घकालिकी संज्ञावाले जीवों का श्रुत ।
अनक्षरश्रुत - अक्षर रहित, इशारा, खांसी आदि संकेत से होने वाला ज्ञान ।

क. गमिकश्रुत - जिस शास्त्र में बार-बार समान पाठ आते है ।
अंगप्रविष्ट श्रुत - द्वादशांगी के आधार पर रचित श्रुत ।
अपर्यवसित श्रुत - अंतहीन अनंत श्रुत ।

ड. सादिश्रुत - जिस श्रुत के आदि तथा अंत हो ।
संज्ञिश्रुत - एकेन्द्रियादि जीवों का श्रुत ।
अंगप्रविष्ट श्रुत - गणधर भगवंत द्वारा रचित द्वादशांगी ।

७१. अक्षरश्रुत के तीन प्रकार हैं । निम्नलिखित विकल्पों में से कौन सा विकल्प गलत नहीं है ?

अ. लिखे हुए तथा बोले हुए अक्षर भाषा वर्गणा के पुद्गल होने से जड़ हैं ।

ब. लिखे हुए अक्षर संज्ञाक्षर हैं तथा बोले हुए अक्षर लब्धि अक्षर हैं ।

क. संज्ञाक्षर और वंयजनाक्षर अज्ञान रूप हैं, किन्तु लब्धि अक्षर का कारण होने से कार्य में कारण का उपचार कर इन्हें भी श्रुत ज्ञान कहा जाता है ।

ड. विविध लिपियों में लिखना संज्ञाक्षर है । शब्दों को सुनकर या पढ़कर होने वाला अर्थबोध लब्धि अक्षर है । अक्षर के बिना इशारे आदि से होने वाला बोध अनक्षरश्रुत है ।

७२. श्रुतज्ञान, मतिज्ञान पूर्वक ही होता है । निम्नलिखित विकल्पों में से किस विकल्प में मतिज्ञान के बाद श्रुतज्ञान होने की संभावना नहीं है ?

अ. बारह वर्ष के चैत्य को आम्र फल का स्मरण हुआ । स्मरण से आम्र फल की सुगंध, आकार आदि आंख के सामने आए ।

ब. एक नवजात शिशु ने घड़ा देखा तथा उसकी आकृति की छाप उसके मन पर अंकित हुई ।

क. सुगंधी कमल की गंध के पुद्गलों का भ्रमर की घ्राणेन्द्रिय के साथ संपर्क हुआ ।

ड. १६ वर्षीय युवान तत्त्वार्थ सूत्र के पाठ में प्रतिदिन पढ़ने जाता है । वहाँ अध्यापक द्वारा बोले हुए शब्द उसके कर्ण पटल पर टकराते हैं ।

७३. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं है ?

अ. व्यंजनावग्रह होने पर ही अर्थावग्रह होता है, किन्तु व्यंजनावग्रह होने के बाद अर्थावग्रह होता ही है ऐसा नियम नहीं है ।

ब. मतिज्ञान के कुल ३४० भेद हैं और श्रुतज्ञान के मुख्य दो भेद हैं, इन दो भेदों के भी पुन: अनेक और बारह भेद हैं ।

क. चक्षु इन्द्रिय का विषय के साथ संपर्क होने पर व्यंजनावग्रह आदि इतनी शीघ्रता से प्रवृत्त होते हैं की हमें सीधे अपाय ही ध्यान में आता है ।

ड. श्रुत से संस्कारित मति श्रुतनिश्रित है जबकि पूर्व में कभी ज्ञात न किए गए विषय का ज्ञान होना अश्रुतनिश्रित है ।

७४. निम्नलिखित विकल्पों में से कौन सा विकल्प अवग्रहादि भेद के लिए गलत नहीं है ?

अ. तात्त्विक दृष्टि से तो इन्द्रिय और मन द्रव्य का ग्रहण नहीं कर सकते, गुण और पर्यायों का ही ग्रहण करते हैं, किन्तु गुण और पर्याय द्रव्य से अभिन्न होने से द्रव्य का भी ज्ञान हो जाता है ।

ब. शब्द दीवार के आरपार भी सुनाई देने से कर्णेन्द्रिय अप्राप्यकारी है, किन्तु दीवार के पीछे रही वस्तु दिखाई न देने से चक्षु प्राप्यकारी है ।

क. इन्द्रिय और विषय के संबंध को व्यंजनावग्रह कहते हैं, तथा संबंध होने पर प्रगट होने वाले अव्यक्त ज्ञान को अर्थावग्रह कहते हैं ।

ड. व्यंजनावग्रह की अपेक्षा से अर्थावग्रह अव्यक्तज्ञान है, किन्तु अपाय के दृष्टि से व्यक्त ज्ञान है क्योंकि अर्थावग्रहमें 'कुछ है' ऐसा सामान्य बोध होता है ।

७५. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प श्रुतनिश्रित और अश्रुतनिश्रित मतिज्ञान के लिए सही नहीं है ?

अ. समय व्यतीत होने पर अनुभवों से प्राप्त होने वाली बुद्धि पारिणामिकी बुद्धि कही जाती है, जैसे की वज्रस्वामी के मति ।

ब. जिस मतिज्ञान में श्रुतज्ञान के संस्कार हैं तथा व्यवहारकाल में उसका उपयोग है, वह श्रुत निश्रित एवं जिसमें श्रुत के संस्कार नहीं है वह अश्रुतनिश्रित मतिज्ञान है ।

क. अभ्यास से प्राप्त होने वाली बुद्धि कार्मिकी बुद्धि है तथा विशिष्ट अवसर आने पर उस घटना को पार पहुँचाने में अचानक उत्पन्न होने वाली मति औत्पातिकी बुद्धि है ।

ड. पूर्व में कभी न जाना हो ऐसे विषय में विशिष्ट क्षयोपशम से उत्पन्न होने वाला मतिज्ञान अश्रुतनिश्रित है । इसके चार भेद हैं ।

▮

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-३	अध्याय-१	सूत्र २१-३५	जमा करने की अंतिम तारीख ता. १५/०३/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक । (कुल ३० x ½ = १५ अंक)

१. परमावधि ज्ञान वह है जिसके बाद अंतर्मुहुर्त में अवश्य .... होता/होती है ।
अ. मोक्ष ब. केवलज्ञान क. कमी ड. मन:पर्यायज्ञान

२. मनुष्य और तिर्यंच को .... प्रत्यय अवधिज्ञान होता है ।
अ. क्षयोपशम ब. भव क. वर्धमान ड. हीयमान

३. क्षयोपशम प्रत्यय अवधिज्ञान के .... भेद हैं ।
अ. चार ब. पांच क. छ ड. सात

४. नारकों को जघन्य अवधि क्षेत्र से आधा .... अधिक उत्कृष्ट अवधि क्षेत्र होता है ।
अ. हाथ ब. धनुष क. गाउ ड. योजन

५. नारकों और देवों को .... प्रत्यय अवधिज्ञान होता है ।
अ. क्षयोपशम ब. भव क. वर्धमान ड. हीयमान

६. इनमें से कौन सा शब्द एकार्थक नहीं ।
अ. अपेक्षा ब. अभिप्राय क. नय ड. प्रमाण

७. मनुष्य और तिर्यंच जिस भव में अवधिज्ञान हो उस भव में अतीत और अनागत .... भव तह देख सकते हैं ।
अ. दो ब. नौ क. दो से नौ ड. सात से आठ

८. अवधिज्ञान के .... भेद के स्थान पर अनवस्थित भेद भी आता है ।
(अनवस्थित यानी अनियत, कम हो, बढ़े, चला भी जाए, फिर उत्पन्न हो)
अ. वर्धमान ब. हीयमान क. प्रतिपाती ड. अप्रतिपाती

९. .... अवधिज्ञान का दूसरा नाम अवस्थित है ।
अ. प्रतिपाती ब. अनुगामी क. वर्धमान ड. अप्रतिपाती

१०. परमावधि ज्ञान में अलोक में भी लोक प्रमाण .... खंडों को देखने का सामर्थ्य होता है।
अ. संख्यात ब. असंख्यात क. अनंत ड. कुछ

११. मन:पर्यव ज्ञान से .... में रहे संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों के विचार जान सकते हैं ।
अ. तिर्छा लोक ब. अढीद्वीप क. चौदह राजलोक ड. अलोक

१२. विपुलमति और ऋजुमति यह .... ज्ञान के भेद हैं ।
अ. मति ब. मन:पर्यव क. अवधिज्ञान ड. केवलज्ञान

१३. .... मन:पर्यवज्ञान उत्पन्न होने के बाद अवश्य केवलज्ञान उत्पन्न होता है ।
अ. विपुलमति ब. ऋजुमति क. राजीमति ड. केवलमति

१४. अवधिज्ञान से मन:पर्यवज्ञान .... विशुद्ध होता है ।
अ. कम ब. अधिक क. समान ड. पर्याय

१५. मन:पर्यवज्ञान के क्षेत्र से अवधिज्ञान का क्षेत्र .... होता है ।
अ. कम ब. अधिक क. विशुद्ध ड. समान

१६. अवधिज्ञान .... गति में रहे सम्यग्दृष्टि या मिथ्यादृष्टि जीवों को जन्म से होता है ।
अ. मनुष्य ब. चारों क. तिर्यंच ड. नरक

१७. .... ज्ञान मनुष्य गति में सातवें गुणस्थान में रहे संयमी जीवों को ही उत्पन्न होता है और ६ से १२ गुणस्थान तक होता है ।
अ. अवधि ब. मति क. मन:पर्यव ड. केवल

१८. विशुद्धि, क्षेत्र, स्वामी, विषय यह चार हेतुओं से .... ज्ञान में विशेषता (भेद) है ।
अ. मति और श्रुत ब. श्रुत और अवधि क. अवधि और मन:पर्यव ड. मति और अवधि

१९. मति और श्रुतज्ञान का विषय .... है ।
अ. सर्व द्रव्य कुछ पर्याय ब. कुछ द्रव्य सर्व पर्याय क. सर्व द्रव्य सर्व पर्याय ड. कुछ द्रव्य कुछ पर्याय

२०. अनुत्तर देव भगवान ने द्रव्य मन से दिए उत्तर को .... ज्ञान से जान सकते हैं ।
अ. मति ब. मन:पर्यव क. अवधि ड. श्रुत

२१. चौदह पूर्व धर भी जो भाव और पर्याय द्वादशांगी में नहीं बुने हों तथा जिन भावों के लिए शब्द नहीं ऐसे .... भावों को जान नहीं सकते ।
अ. संख्यात ब. असंख्यात क. अनंत ड. अल्प

२२. अवधिज्ञान का विषय पर्याय युक्त .... द्रव्य है ।
अ. रूपी ब. अरूपी क. रूपी अथवा अरुपी ड. रूपी और अरूपी

२३. उत्कृष्ट अवधिज्ञानी भी .... द्रव्यों को ही जान सकते हैं ।
अ. रूपी ब. अरूपी क. रूपी अथवा अरुपी ड. रूपी और अरूपी

२४. .... ज्ञान की ज्ञान शक्ति सर्व द्रव्य और सर्व पर्यायों में होती है ।
अ. मति ब. अवधि क. केवल ड. मन:पर्यव

२५. एक जीव को एक साथ उत्कृष्ट से .... ज्ञान हो सकते हैं ।
अ. दो ब. तीन क. चार ड. पांच

२६. मिथ्यादृष्टि का आध्यात्मिक ज्ञान .... रूप ही होता है ।

अ. अज्ञान ब. विशेष ज्ञान क. सामान्य ज्ञान ड. संपूर्ण ज्ञान

२७. सम्यग्दृष्टि का भौतिक ज्ञान हेय /उपादेय के विवेक रूप होने से .... रूप है ।

अ. अज्ञान ब. विशेष ज्ञान क. सामान्य ज्ञान ड. ज्ञान

२८. नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द यह पांच .... हैं ।

अ. प्रमाण ब. नय क. ज्ञान ड. नय और प्रमाण उभय

२९. .... नय के सामान्य और विशेष ऐसे दो भेद हैं ।

अ. शब्द ब. नैगम क. संग्रह ड. व्यवहार

३०. .... नय के सांप्रत / समभीरूढ / एवंभूत यह तीन भेद हैं ।

अ. नैगम ब. शब्द क. संग्रह ड. व्यवहार

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१. भव प्रत्यय अवधिज्ञान यानी ?

अ. भव की प्रधानता से अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से इन्द्रियों द्वारा आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

ब. भव की प्रधानता से अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

क. पुरुषार्थ अथवा शास्त्रोक्त निमित्त से अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

ड. भव की प्रधानता से अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता अरूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

३२. क्षयोपशम प्रत्यय अवधिज्ञान यानी ?

अ. पुरुषार्थ अथवा शास्त्रोक्त निमित्त से अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता अरूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

ब. पुरुषार्थ अथवा शास्त्रोक्त निमित्त से अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

क. भव की प्रधानता से अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

ड. पुरुषार्थ अथवा शास्त्रोक्त निमित्त से अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से इन्द्रियों द्वारा आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

३३. वर्धमान अवधिज्ञान यानी ?

अ. उत्पन्न होने के बाद क्रमश: कम होता रहे ऐसा अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

ब. उत्पन्न होने के बाद क्रमश: कम होता रहे ऐसा अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से इन्द्रियों द्वारा आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

क. उत्पन्न होने के बाद लगातार बढ़ता रहे ऐसा अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सम्पूर्ण ज्ञान ।

ड. उत्पन्न होने के बाद लगातार बढ़ता रहे ऐसा अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

३४. हीयमान अवधिज्ञान यानी ?

अ. उत्पन्न होने के बाद क्रमश: कम होता रहे ऐसा अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

ब. उत्पन्न होने के बाद लगातार बढ़ता रहे ऐसा अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

क. उत्पन्न होने के बाद क्रमश: कम होता रहे ऐसा अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता अरूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

ड. उत्पन्न होने के बाद क्रमश: कम होता रहे ऐसा अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से इन्द्रियों द्वारा आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

३५. अनुगामी अवधिज्ञान यानी ?

अ. धारण करने वाला जीव जहाँ जाए वहाँ साथ रहता अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

ब. धारण करने वाला जीव जहाँ जाए वहाँ साथ रहता अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता अरूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

क. धारण करने वाला जीव जहाँ जाए वहाँ साथ न रहता अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

ड. धारण करने वाला जीव जहाँ जाए वहाँ साथ रहता अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता अरूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

३६. अननुगामी अवधिज्ञान यानी ?

अ. अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान जो उत्पन्न होने के बाद चला भी जाए ।

ब. धारण करने वाला जीव जहाँ जाए वहाँ साथ न रहता अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

क. धारण करने वाला जीव जहाँ जाए वहाँ साथ न रहता अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का असीमित ज्ञान ।

ड. धारण करने वाला जीव जहाँ जाए वहाँ साथ न रहता अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से इन्द्रियों द्वारा आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान ।

३७. प्रतिपाती अवधिज्ञान यानी ?

अ. अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान जो उत्पन्न होने के बाद जाता नहीं ।

ब. अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता अरूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान जो उत्पन्न होने के बाद चला भी जाए ।

क. अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता सर्व द्रव्य का संपूर्ण ज्ञान जो उत्पन्न होने के बाद चला भी जाए ।

ड. अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान जो उत्पन्न होने के बाद चला भी जाए ।

३८. अप्रतिपाती अवधिज्ञान यानी ?

अ. अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान जो उत्पन्न होने के बाद कभी चला न जाए, साथ ही रहे ।

ब. अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता अरूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान जो उत्पन्न होने के बाद कभी चला न जाए, साथ ही रहे ।

क. अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता सभी द्रव्य का संपूर्ण ज्ञान जो उत्पन्न होने के बाद कभी चला न जाए, साथ ही रहे ।

ड. अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता रूपी द्रव्य का सीमित ज्ञान जो उत्पन्न होने के बाद चला भी जाए ।

३९. ऋजुमति मन:पर्यवज्ञान यानी ?

अ. ढाई द्विप में रहे संज्ञि पंचेन्द्रिय जीवों के मन के विकल्पों को दर्शाने वाला मतिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता अविशुद्ध और प्रतिपाती ज्ञान ।

ब. ढाई द्वीप में रहे संज्ञि पंचेन्द्रिय जीवों के मन के विकल्पों को दर्शाने वाला मन:पर्यवज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता अविशुद्ध और अप्रतिपाती ज्ञान ।

क. ढाई द्वीप में रहे संज्ञि पंचेन्द्रिय जीवों के मन के विकल्पों को दर्शाने वाला मन:पर्यवज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता विशुद्ध और अप्रतिपाती ज्ञान ।

ड. ढाई द्वीप में रहे संज्ञि पंचेन्द्रिय जीवों के मन के विकल्पों को दर्शाने वाला मन:पर्यवज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता अविशुद्ध और प्रतिपाती ज्ञान ।

४०. विपुलमति मन:पर्यवज्ञान यानी ?

अ. बारहवें स्वर्गलोक तक रहे संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों के मन के विकल्पों को दर्शाने वाला मन:पर्यवज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता विशुद्ध और अप्रतिपाती ज्ञान ।

ब. लोकाकाश में रहे संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों के मन के विकल्पों को दर्शाने वाला मन:पर्यवज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता विशुद्ध और अप्रतिपाती ज्ञान ।

क. ढाई द्वीप में रहे संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों के मन के विकल्पों को दर्शाने वाला मन:पर्यवज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता विशुद्ध और अप्रतिपाती ज्ञान ।

ड. ढाई द्वीप में रहे संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों के मन के विकल्पों को दर्शाने वाला मति ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता विशुद्ध और अप्रतिपाती ज्ञान ।

४१. केवलज्ञान यानी ?

अ. केवलज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से इन्द्रिय और मन द्वारा आत्मा को प्रगट होता सर्व द्रव्यों के सर्व पर्यायों का ज्ञान ।

ब. केवलज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता सर्व द्रव्यों के सर्व पर्यायों का ज्ञान ।

क. केवलज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता कुछ द्रव्यों के सर्व पर्यायों का ज्ञान ।

ड. केवलज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से साक्षात् आत्मा को प्रगट होता सर्व द्रव्यों के सर्व पर्यायों का आंशिक ज्ञान ।

४२. व्यवहार नय यानी ?

अ. स्थूल, बाह्य या उपचार दृष्टि से विचार कर वस्तु के एक धर्म का होता निर्णयात्मक बोध ।

ब. सूक्ष्म अथवा तत्त्व दृष्टि से विचार कर वस्तु के एक धर्म का होता निर्णयात्मक बोध ।

क. स्थूल, बाह्य या उपचार दृष्टि से विचार कर को वस्तु के सर्व धर्म का होता निर्णयात्मक बोध ।

ड. सूक्ष्म या तत्त्व दृष्टि से विचार कर वस्तु के सर्व धर्म का होता निर्णयात्मक बोध ।

४३. निश्चय नय यानी ?

अ. स्थूल, बाह्य अथवा उपचार दृष्टि से विचार कर वस्तु के एक धर्म का होता निर्णयात्मक बोध ।

ब. सूक्ष्म अथवा तत्त्व दृष्टि से विचार कर वस्तु के एक धर्म का होता निर्णयात्मक बोध ।

क. स्थूल, बाह्य अथवा उपचार दृष्टि से विचार कर वस्तु के सभी धर्मों का होता निर्णयात्मक बोध ।

ड. सूक्ष्म अथवा तत्त्व दृष्टि से विचार कर वस्तु के सभी धर्मों का होता निर्णयात्मक बोध ।

४४. नैगम नय यानी ?

अ. अनेक वस्तु में रहे विशेष गुण धर्मों को एक रूप से (सामान्य रूप से) संग्रह कर वस्तु का होता आंशिक बोध ।

ब. वस्तु में रहे विशेष गुण धर्मों के आधार से वस्तुओं को एक दूसरे से अलग रूप कराता आंशिक बोध ।

क. अनेक वस्तु में रहे विशेष गुण धर्मों को एक रूप से (सामान्य रूप से) संग्रह कर वस्तु का होता संपूर्ण बोध ।

ड. व्यवहार में लोक मान्यता के उपचार पूर्वक की दृष्टि से वस्तु का होता आंशिक बोध ।

४५. संग्रह नय यानी ?

अ. वस्तु में रहे विशेष गुण धर्मों के आधार से वस्तुओं को एक दूसरे से अलग रूप कराता आंशिक बोध ।

ब. अनेक वस्तु में रहे विशेष गुण धर्मों को एक रूप से (सामान्य रूप से) संग्रह कर वस्तु का होता आंशिक बोध ।

क. व्यवहार में लोक मान्यता की उपचार पूर्वक की दृष्टि से वस्तु का होता आंशिक बोध ।

ड. वस्तु की वर्तमान अवस्था को (पर्याय को) ध्यान में रख कर वस्तु का होता आंशिक बोध।

४६. व्यवहार नय यानी ?

अ. वस्तु में रहे विशेष गुण धर्मों को आधार से वस्तुओं को एक दूसरे से अलग रूप कराता आंशिक बोध ।

ब. अनेक वस्तु में रहे विशेष गुण धर्मों को एक रूप से (सामान्य रूप से) संग्रह कर वस्तु का होता आंशिक बोध ।

क. व्यवहार में लोक मान्यता के उपचार पूर्वक की दृष्टि से वस्तु का होता आंशिक बोध ।

ड. वस्तु की वर्तमान अवस्था को (पर्याय को) ध्यान में रख कर वस्तु का होता आंशिक बोध।

४७. ऋजुसूत्र नय यानी ?

अ. वस्तु की वर्तमान अवस्था को (पर्याय को) ध्यान में रख कर वस्तु का होता आंशिक बोध।

ब. वस्तु में रहे विशेष गुण धर्मों को आधार से वस्तुओं को एक दूसरे से अलग रूप कराता आंशिक बोध ।

क. वस्तु की वर्तमान अवस्था को (पर्याय को) ध्यान में रख कर वस्तु का होता संपूर्ण बोध।

ड. वस्तु में रहे विशेष गुण धर्मों को आधार से वस्तुओं को एक दूसरे से अलग कराता संपूर्ण बोध।

४८. शब्द नय यानी ?

अ. शब्द के उपयोग में लिंग, काल, वचन, कारक, आदि भेद में अर्थ भेद कराता वस्तु का आंशिक बोध ।

ब. शब्द भेद से अर्थ भेद मानकर वस्तु का होता आंशिक बोध ।

क. शब्द के व्युत्पत्ति रूप से अर्थ का निश्चय कराता वस्तु का आंशिक बोध ।

ड. शब्द के उपयोग में लिंग, काल, वचन, कारक, आदि भेद से अर्थ भेद कराता वस्तु का संपूर्ण बोध ।

४९. समभिरूढ नय यानी ?

अ. शब्द के उपयोग में लिंग, काल, वचन, कारक, आदि भेद से अर्थ भेद कराता वस्तु का आंशिक बोध ।

ब. शब्द भेद से अर्थ भेद मानकर वस्तु का होता आंशिक बोध ।

क. शब्द के व्युत्पत्ति रूप से अर्थ का निश्चय कराता वस्तु का आंशिक बोध ।

ड. शब्द भेद से अर्थ भेद मानकर वस्तु का होता संपूर्ण बोध ।

५०. एवंभूत नय यानी ?

अ. शब्द के उपयोग में लिंग, काल, वचन, कारक, आदि भेद से अर्थ भेद कराता वस्तु का आंशिक बोध ।

ब. शब्द भेद से अर्थ भेद मानकर वस्तु का होता आंशिक बोध ।

क. शब्द के व्युत्पत्ति रूप से अर्थ का निश्चय कराता वस्तु का आंशिक बोध ।

ड. शब्द भेद से अर्थ भेद मानकर वस्तु का होता संपूर्ण बोध ।

५१. नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य चुनें ।

अ. मतिज्ञान और श्रुतज्ञान की उत्कृष्टता गणधर भगवंत और चौदह पूर्वधर में होती है ।

ब. मतिज्ञान इन्द्रियों तथा मन से होता है ।

क. श्रुतज्ञान से रूपी और अरूपी दो प्रकार के विषयों का बोध हो सकता है ।

ड. मतिज्ञान का विषय सर्व द्रव्य, रूपी हो या अरूपी, और उनके सर्व पर्याय है ।

५२. नीचे दिए वाक्यों में सही वाक्य चुनें ।

अ. जग में कोई ऐसी वस्तु या भाव नहीं जो केवलज्ञानी जान नहीं सकते ।

ब. केवलज्ञान में वस्तु के पर्यायों का ज्ञान वस्तु प्रत्यक्ष हो तभी होता है ।

क. केवलज्ञानी को 'सर्वज्ञ यानी के सर्व न जानने वाला' कहते हैं ।

ड. जग में कोई ऐसी वस्तु या भाव नहीं जो मतिज्ञान से जान नहीं सकते ।

५३. नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य चुनें ।

अ. सम्यग्दृष्टि जीव को सदा आत्मा के आध्यात्मिक विकास का लक्ष होता है ।

ब. सम्यग्दृष्टि जीव को लगातार हेय और उपादेय का विवेक होता है ।

क. सम्यग्दृष्टि जीव की प्रवृत्ति और लक्षमें आत्मा की उन्नति होता है ।

ड. सम्यग्दृष्टि जीवों को अगर आध्यात्मिक ज्ञान अल्प हो तो वे आत्मा की उन्नति नहीं कर सकते ।

५४. नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य चुनें ।

अ. मिथ्यादृष्टि जीव की स्थिति अपनी मति कल्पना के मुताबिक ही अर्थ करने की होने से वह सत् और असत् की विशेषता जानने असमर्थ होता है ।

ब. तीर्थंकर परमात्मा प्रत्येक वस्तु में सत् और असत् की उपस्थिति बताते हैं ।

क. प्रत्येक वस्तु पर रूप से सत् और और स्व रूप से असत् होती है ।

ड. मिथ्यादृष्टि जीव कुछ वस्तु सत् ही है अथवा असत् ही है, कुछ वस्तु विशेष ही है ऐसा दुराग्रह रखते हैं ।

५५. नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य चुनें ।

अ. अपेक्षा, अभिप्राय, दृष्टि, दृष्टिकोण ये सब नय के एकार्थक शब्द हैं ।

ब. किसी भी वस्तु की अनेक दृष्टिकोण से विचारणा हो सकती है ।

क. वस्तु के अनेक अंशों को ग्रहण करने वाला ज्ञान नय कहलाता है ।

ड. एक वस्तु में विद्यमान परस्पर विरोधी धर्म में अविरोध दर्शाने वाला सिद्धांत यानी अनेकांतवाद।

५६. नीचे दिए वाक्यों में सही वाक्य चुनें ।

अ. नारकों को पुरुषार्थ द्वारा ही अवधिज्ञान प्रगट होता है ।

ब. अवधिज्ञान में सभी द्रव्य के सभी पर्याय जान सकते है ।

क. केवल छठे गुणस्थान में रहे मनुष्य को ही अवधिज्ञान प्रगट होता है ।

ड. केवल अवधिज्ञान ही विपरीत यानी अज्ञान रूप होता है ।

५७. नीचे दिए वाक्यों में सही वाक्य चुनें ।

अ. मनुष्य के अवधिज्ञान का क्षेत्र से उत्कृष्ट विषय संपूर्ण लोक और अलोक में लोक प्रमाण असंख्यात खंड है ।

ब. तिर्यंच के अवधिज्ञान का क्षेत्र से उत्कृष्ट विषय १.५ गाउ है ।

क. पहली नरक के जीवों का अवधिज्ञान का उत्कृष्ट क्षेत्र ३.५ गाउ है ।

ड. दूसरी नरक के जीवों का अवधिज्ञान का उत्कृष्ट क्षेत्र ३ गाउ है ।

५८. नीचे दिए गए दृष्टान्त में कौन सा सही है ?

अ. इलेक्ट्रिक बल्ब के प्रकाश की भांति साथ न आने वाला ज्ञान - अननुगामी अवधिज्ञान ।

ब. बिजली के चमकारे की तरह उत्पन्न हो के चला जाए वह - अननुगामी अवधिज्ञान ।

क. हमेशा साथ रहने वाला, जीवन के अंत तक रहेने वाला अथवा केवलज्ञान तक साथ रहे वह - वर्धमान अवधिज्ञान ।

ड. उत्पन्न होने के बाद क्रमश: कम होता जाए वह - प्रतिपाती अवधिज्ञान ।

५९. द्रव्यार्थिक नय यानी ?

अ. वस्तु किस द्रव्य से बनी है उसकी विचारणा ।

ब. वस्तु की भिन्न भिन्न अवस्थाओं की विचारणा ।

क. जो मुख्य रूप से द्रव्य को वस्तु माने वह ।

ड. जो द्रव्य का संपूर्ण बोध कराए वह ।

६०. पर्यायार्थिक नय यानी ?

अ. पदार्थ के विशेष अंश का बोध कराए वह ।

ब. पदार्थ का संपूर्ण बोध कराए वह ।

क. वस्तु की भिन्न भिन्न अवस्थाओं का संपूर्ण बोध कराए वह ।

ड. पदार्थ के सामान्य अंश का बोध कराए वह ।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक । (कुल १५ x २ = ३० अंक)

६१. नारक जीवों के अवधिज्ञान का पाँचवी नरक में उत्कृष्ट क्षेत्र, दूसरी नरक में जधन्य क्षेत्र, चौथी नरक में जधन्य क्षेत्र और तीसरी नरक में उत्कृष्ट क्षेत्र क्रमशः इतना है, सही विकल्प चुनें । (गाउ में)

अ. ३, २, ३, २$^1/_2$ ब. ३, २$^1/_2$, २$^1/_3$, ३

क. २, ३, २, ३ ड. २, २$^1/_2$, २, २$^1/_2$

६२. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प अवधिज्ञान के लिए सही है ?

अ. भवप्रत्यय अवधिज्ञान के दो भेद हैं तथा क्षयोपशमप्रत्यय अवधिज्ञान छह प्रकार का होता है ।

ब. तीर्थंकर भगवंत पूर्व भव के देव सम्बंधित अवधिज्ञान सहित उत्पन्न होते हैं । अतः उनका अवधिज्ञान भवप्रत्यय होता है ।

क. प्रत्यय यानि निमित्त। मात्र भव रूपी निमित्त से होनेवाला अवधिज्ञान भवप्रत्यय अवधिज्ञान है। इसमें क्षयोपशम की आवश्यकता नहीं है ।

ड. भव प्रत्यय और क्षयोपशम प्रत्यय, दोनों अवधिज्ञान अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से होते है ।

६३. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प क्षयोपशम प्रत्यय अवधिज्ञान के लिए गलत नहीं है ?

अ. अप्रतिपाती = जो अवधिज्ञान एक बार प्रगट होने के बाद जीवन तक रहता है ।
हीयमान = जो ज्ञान प्रगट होने के बाद पुनः नष्ट हो जाता है ।

ब. अननुगामी = जो ज्ञान जीव के साथ एक स्थल से दूसरे स्थल पर नहीं जाता ।
अप्रतिपाती = जिस ज्ञान के अंतर्मुहूर्त बाद अवश्य केवलज्ञान हो ।

क. वर्धमान = प्रगट होने के बाद जो ज्ञान बढता जाए ।
अनुगामी = जीव कहीं भी जाए, इस ज्ञान का उपयोग प्रवृत्त हो सकता है ।

ड. प्रतिपाती = जो ज्ञान प्रगट होने के बाद क्रमशः हीन हो ।
अननुगामी = यह ज्ञान जीव के साथ-साथ दूसरे स्थल पर नहीं जाता।

६४. 'X' हाथी को वन में विशिष्ट क्षयोपशम उत्पन्न हुआ तब उसे ढाई (२½) द्वीप ज्ञान में दिख रहे थे किंतु अंतर्मुहूत बाद उसे मात्र जंबूद्वीप का ही ज्ञान हो रहा था। वह घूमता हुआ ग्राम के समीप आया तब विशिष्ट ज्ञान के उपयोग का प्रवर्तन बंद हो गया। वह वन में गया तब पुनः उपयोग का प्रवर्तन हुआ किंतु ज्ञान का क्षेत्र न्यून होते-होते ज्ञान संपूर्ण नष्ट हो गया ।

'Y' मुनि को स्वाध्याय भूमि में विशिष्ट ज्ञान के क्षयोपशम से तैजस और कार्मण वर्गणा के स्कंध दिखने लगे। वे विहार करते हुए वसति में पहुँचे तब तक उन्हें औदारिक आदि वर्गणा यावत् सूक्ष्मतम परमाणु भी ज्ञान में दिखने लगा ।

'Z' मुनि को सातवें गुणस्थानक के संयमकंडको में आरोहण करते समय विशिष्ट क्षयोपशम से २½ द्वीप में रहे संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों के मन द्वारा छोड़े गए मनोवर्गणा के पुद्गलों के आकार दिखने लगे। उन आकारों से वे जीव द्वारा विचारे गए पदार्थों को विशेष से जान सकते हैं । दोनों मुनि को अंतर्मुहूत के बाद केवलज्ञान उत्पन्न होता है ।

तत्त्वार्थ सूत्र के चार विद्यार्थियों (अ,ब,क,ड) ने उपर्युक्त विशिष्ट ज्ञान का अध्ययन कर निम्नलिखित रिपोर्ट तैयार की किंतु चारों की रिपोर्ट अलग-अलग है। अतः किस विद्यार्थी की रिपोर्ट सही है?

'Y' मुनि	'X' हाथी	'Z' मुनि
अ. हीयमान, अननुगामी, प्रतिपाती अवधिज्ञान	अ. अप्रतिपाती, वर्धमान, अनुगामी अवधिज्ञान	अ. ऋजुमति मनः पर्यवज्ञान
ब. वर्धमान, प्रतिपाती, अनुगामी तथा परमावधिज्ञान	ब. हीयमान, अननुगामी, प्रतिपाती, अवधिज्ञान	ब. विपुलमति मनः पर्यवज्ञान
क. अनुगामी, वर्धमान, अप्रतिपाती अवधिज्ञान	क. अननुगामी, अप्रतिपाती, अवधिज्ञान	क. परमावधिज्ञान
ड. अप्रतिपाती, अनुगामी, वर्धमान अवधिज्ञान तथा परमावधिज्ञान	ड. प्रतिपाती, हीयमान, अननुगामी अवधिज्ञान	ड. विपुलमति मनःपर्यवज्ञान

६५. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य अवधिज्ञान के विषय के लिए गलत नहीं है ?

अ. तिर्यंच द्रव्य से उत्कृष्ट वैक्रिय वर्गणा के पुद्गल द्रव्य जान सकते हैं तथा मनुष्य क्षेत्र से उत्कृष्ट असंख्य द्वीप-समुद्र पर्यंत जान सकते हैं ।

ब. मनुष्य भाव से जघन्य एक द्रव्य के आश्रय से असंख्य पर्याय देख सकते हैं तथा तिर्यंच काल से उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग जान सकते हैं ।

क. तिर्यंच भाव से उत्कृष्ट अनेक द्रव्य की अपेक्षा से अनंत पर्याय जान सकते हैं तथा मनुष्य द्रव्य से उत्कृष्ट सूक्ष्म या बादर सभी पुद्गल द्रव्य को जान सकते हैं ।

ड. मनुष्य काल से जधन्य पुद्गल द्रव्य का आवलिका के असंख्यातवें भाग जितना काल भूत और भविष्य में जान सकते हैं तथा तिर्यंच क्षेत्र से जधन्य असंख्य द्वीप-समुद्र में रहे पुद्गल द्रव्य जान सकते हैं ।

६६. निम्नलिखित विकल्पों में से कौन-सा विकल्प मनुष्य-तिर्यंच के अवधिज्ञान के लिए सही है ?

अ. जिस मनुष्य के पल्योपम के असंख्यातवें भाग जितने काल में १५ भव हुए हैं, वह मनुष्य उत्कृष्ट अवधिज्ञान द्वारा २ से ९ भव ही देख सकता है, उससे अधिक नहीं ।

ब. परमावधिज्ञान से अलोक में भी लोकप्रमाण असंख्य खंड देख सकते हैं। इस सामर्थ्य का फल यह है कि इससे अलोक में रहे पुद्गल तो दिखते ही हैं किंतु लोक में रहे पुद्गल भी अधिक सूक्ष्म दिखते हैं ।

क. तिर्यंच उत्कृष्ट अवधिज्ञान द्वारा २ से ९ भव तक देख सकता है तथा यदि पूर्वभव में भी अवधिज्ञान हुआ हो तो उस अवधिज्ञान द्वारा वह उससे भी अधिक भूतकाल देख सकता है ।

ड. जिस तिर्यंच के पल्योपम के असंख्यातवें भाग में १३ भव हुए है, वह उत्कृष्ट अवधिज्ञान द्वारा ९ भव तक ही देख सकता है तथा जो तिर्यंच पूर्व भव में २ पल्योपम आयुष्य वाला चतुष्पद था, वह उत्कृष्ट अवधिज्ञान द्वारा एक भव का असंख्यातवाँ भाग ही देख सकता है ।

६७. निम्नलिखित विकल्पों में से कौन-सा विकल्प गलत नहीं है ?

अ. मनःपर्यवज्ञान का क्षेत्र अंगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर ढ़ाई द्वीप तक है जबकि अवधिज्ञान का क्षेत्र अंगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर अलोक में भी है ।

ब. अवधिज्ञान का विषय सभी रूपी द्रव्य हैं जबकि मनःपर्यायज्ञान का विषय मात्र मनोवर्गणा के पुद्गल हैं जो सभी रूपी द्रव्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।

क. मनःपर्यवज्ञान छह से बारह गुणस्थानक में रहे मनुष्यों को ही उत्पन्न होता है जबकि चारों गति में अवधिज्ञान के स्वामी है ।

ड. परमावधिज्ञान के अंतर्मुहूर्त बाद जीव को अवश्य केवलज्ञान उत्पन्न होता है जबकि विपुलमति मनः पर्यवज्ञान वाले जीव को उसी भव में केवलज्ञान प्रगट होता है। अवधिज्ञान से मनःपर्यवज्ञान की विशुद्धि अधिक है ।

६८. निम्नलिखित विकल्पों में पाँच ज्ञान के विषय दिए हैं। इनमें से कौन-सा विकल्प सही नहीं है ?

अ. अवधिज्ञान का विषय सभी रूपी द्रव्य हैं, अरूपी द्रव्य नहीं ।

ब. मनः पर्यायज्ञान का विषय ढ़ाई द्वीप में रहे सभी मनोवर्गणा पुद्गलों की सभी पर्यायें हैं।

क. मति-श्रुतज्ञान का विषय रूपी - अरूपी सभी द्रव्यों की कुछ पर्यायें हैं ।

ड. केवलज्ञान का विषय तीनों काल के सभी द्रव्य की सभी पर्यायें हैं ।

६९. गणधर भगवंतों के ज्ञान का मूल तीर्थंकर भगवंत द्वारा दिया गया उपदेश है। निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प उनके ज्ञान के लिए गलत नहीं है ?

अ. तीर्थंकर भगवंत केवलज्ञान से जितने भाव जानते हैं, उनका अनंतवाँ भाग ही शब्दों से व्यक्त किया जा सकता है। अतः गणधर भगवंत इस अनंतवें भाग जितने भाव ही श्रुतज्ञान से जान सकते हैं ।

ब. तीर्थंकर भगवंत जितने भाव (पर्याय) जानते हैं, उतने भाव चौदह पूर्वधर श्रुतज्ञान से भी जान सकते हैं, अतः उन्हें 'श्रुतकेवली' कहा जाता है ।

क. जिन भावों के लिए शब्द नहीं हैं, उन भावों के अलावा अन्य सभी भावों को चौदह पूर्वी जानते हैं, इसलिए उन्हें श्रुतकेवली कहा जाता है। उत्कृष्ट मति-श्रुतज्ञान उन्हें ही होता है।

ड. जिन भावों को तीर्थंकर भगवंत शब्द से व्यक्त करते हैं, उनके भी अनंतवें भाग जितने ही भावों को चौदह पूर्वी सूत्रित कर सकते हैं। तथापि तीर्थंकर सदृश देशना देने से वे 'श्रुतकेवली' कहे जाते हैं ।

७०. भरत चक्रवर्ती को अरीसा भवन में गृहस्थावस्था में ही केवलज्ञान प्राप्त हुआ, फिर देवों ने उन्हें मुनिवेश अर्पण किया। भरत चक्रवर्ती के लिए निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य गलत नहीं है ?

अ. केवलज्ञान होने पर मुनिवेश की प्राप्ति के पहले और बाद में निश्चय-व्यवहार दोनों नय से वे मुनि हैं ।

ब. केवलज्ञान प्राप्त होने पर मुनिवेश की प्राप्ति के बाद निश्चय नय उन्हें मुनि कहेगा और मुनिवेश की प्राप्ति के पहले व्यवहार नय से वे गृहस्थ हैं ।

क. केवलज्ञान प्राप्त होने पर मुनिवेश की प्राप्ति के पहले व्यवहार नय से वे मुनि हैं किंतु मुनिवेश की प्राप्ति के बाद दोनों नय उन्हें मुनि कहेंगे ।

ड. केवलज्ञान प्राप्त होने पर मुनिवेश की प्राप्ति के बाद दोनों नय उन्हें मुनि कहेंगे जबकि मुनिवेश की प्राप्ति के पहले निश्चय नय से वे गृहस्थ हैं ।

७१. निम्नलिखित कोष्ठक में ज्ञान नय और क्रिया नय में भेद दर्शाए गए हैं। इनमें कौन-सा भेद सही नहीं है ?

क्रिया नय	ज्ञान नय
(अ) जैसे नगर का ज्ञान होने पर भी गमन क्रिया बिना इष्टस्थान प्राप्त नहीं होता वैसे क्रिया बिना ज्ञानमात्र से मोक्ष नहीं होता।	(अ) अंध पुरुष गमन क्रिया से इष्ट स्थान पर नहीं पहुँच सकता वैसे ज्ञान बिना केवल क्रिया से मोक्ष नहीं होता।
(ब) औषध के सेवन के बिना मात्र औषध के ज्ञान से आरोग्य नहीं होता।	(ब) हेय का त्याग और उपादेय का स्वीकार भी ज्ञानपूर्वक करने से ही फलदायक होता है।
(क) 'गीयत्थो य विहारो...' शास्त्र में गीतार्थ युक्त विहार की आज्ञा होने से विहार रूप क्रिया की प्रधानता सिद्ध होती है।	(क) 'पठमं नाणं तओ दया' पहले ज्ञान, फिर दया इत्यादि शास्त्र वचनों से ज्ञान की महत्ता सिद्ध होती है।
(ड) केवलज्ञान के बाद भी सर्वसंवर रूप चारित्र के बिना मुक्ति नहीं होती।	(ड) कठोर चारित्र पालन करने वाले भी केवलज्ञान के बिना सिद्ध नहीं होते।

७२. निम्नलिखित कोष्ठक में नय, उनके विषय एवं दृष्टांत दिए गए हैं। इनमें से कौन-सा विकल्प सही नहीं है ?

	नय	विषय	दृष्टान्त
अ.	व्यवहार	विशेष अंश	जीव के दो भेद हैं - त्रस और स्थावर।
ब.	शब्द	लिंग, काल आदि के भेद से अर्थभेद	मनुष्य, मनुज, मानव आदि शब्दों का अर्थ एक ही है।
क.	नैगम	सामान्य, विशेष, उपचार	राजकुमार भविष्य में राजा बनेगा अतः उसे वर्तमान में राजा कह सकते हैं।
ड.	एवंभूत	व्युत्पत्ति भेद से अर्थभेद	राजा राजचिह्नों से शोभत हो तब उसे राजा, भूप, नृप कहते हैं।

७३. इनमें से कौन-सा विकल्प गलत नहीं है ?

	नय	विषय	दृष्टान्त
अ.	समाभिरूढ	व्युत्पत्तिभेद से अर्थभेद	सूर्य, आदित्य, अंशुमाली, सहस्रकिरण आदि शब्दों के अर्थ अलग-अलग हैं।
ब.	ऋजुसूत्र	विशेष अंश	जो वर्तमान में सेठ हो, उसे ही शेठ कहते हैं।
क.	संग्रह	सामान्य अंश	नगर में रहते पुरुष, स्त्री, बालकों, पशुओं के लिए 'नगर में मनुष्य रहते हैं' ऐसा कहना।
ड.	नैगम	मात्र वर्तमान कालीन द्रव्य	सिंहासन पर बैठे राजा को राजा कहना।

७४. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य गलत नहीं है ?

अ. नैगम वस्तु के सामान्य अंश और विशेष अंस दोनों का स्वीकार करनेवाला हो से वह नय भी है और प्रमाण भी है ।

ब. ऋजुसूत्र नय मात्र वर्तमानकाल को स्वीकारता है तथा एवंभूत नय भी व्युत्पत्तिसिद्ध अर्थ वर्तमान में ही घटित करता है, अतः दोनों के विषय समान हैं ।

क. नैगमादि सात नयों में से प्रथम चार नयों में अर्थ की प्रधानता होने से वे अर्थनय हैं, जबकि अंतिम चार नयों की दृष्टि विशेष अंश की ओर होने से वे पर्यायार्थिक नय हैं ।

ड. ऋजुसूत्र नय लिंगादि के भेद से अर्थभेद नहीं मानता तथा चारों निक्षेप का स्वीकार करता है, जबकि शब्द नय लिंगादि के भेद से अर्थभेद मानता है और मात्र द्रव्य निक्षेप का ही स्वीकार करता है ।

७९. निम्नलिखित विकल्पों में से कौन-सा विकल्प सही नहीं है ?

अ. सभी वस्तु सत् भी है-असत् भी है, नित्य भी है-अनित्य भी है, सामान्य भी है - विशेष भी है ।

ब. मिथ्यादृष्टि का बौध प्रमाणशास्त्र की दृष्टि से अयथार्थ होने के कारण वह अज्ञान स्वरूप ही है। सम्यग्दृष्टि का भौतिक ज्ञान भी विवेकयुक्त होने से वह ज्ञानस्वरूप ही है ।

क. सर्वज्ञ भगवंत ही सत्य-असत्य को पूर्णरूप से जान सकते हैं। अतः उनके उपदेश से ही सत्य-असत्य का निर्णय हो सकता है, स्वमतिकल्पना से नहीं ।

ड. मनःपर्यवज्ञान और केवलज्ञान में कभी भी विपरीत बोध नहीं होता, क्योंकि वे सम्यग्दृष्टि जीव को ही प्रगट होते हैं ।

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-४	अध्याय-२	सूत्र १-३०	जमा करने की अंतिम तारीख ता. ३१/०३/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक. (कुल ३० x ½ = १५ अंक)

१. जीव में रहे अनेक धर्मों के कारण .... हैं।
अ. दो ब. चार क. पांच ड. सात

२. जीव को कम से कम .... भाव होते हैं।
अ. दो ब. तीन क. चार ड. पांच

३. सिद्ध जीवों को .... भाव होते हैं।
अ. एक ब. दो क. तीन ड. चार

४. पांच भाव के कुल भेद .... हैं।
अ. ४५ ब. ५० क. ५३ ड. ५५

५. उपशम मात्र......... कर्म का ही होता है।
अ. ज्ञानावरणीय ब. दर्शनावरणीय क. मोहनीय ड. अंतराय

६. उपशम सम्यक्त्व या उपशम चारित्र अधिक से अधिक .... काल तक ही रहता है।
अ. अंतर्मुहूर्त ब. एक समय क. एक भव ड. एक मुहूर्त

७. अनाकारोपयोग .... प्रकार का होता है।
अ. २ ब. ४ क. ८ ड. १२

८. चार में से .... शब्द पर्यायवाची नहीं।
अ. साकारोपयोग ब. अनाकारोपयोग क. ज्ञानोपयोग ड. सविकल्पोयोग

९. चार में से .... शब्द पर्यायवाची नहीं।
अ. दर्शनोपयोग ब. अनाकारोपयोग क. साकारोपयोग ड. अविकल्पोयोग

१०. मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी आदि बारह कषायों का क्षयोपशम .... क्षयोपशम कहलाता है ।
अ. शुद्ध ब. अशुद्ध क. अधर्शुद्ध ड. मिश्र

११. मतिज्ञान आदि का क्षयोपशम .... क्षयोपशम कहलाता है ।
अ. उदयानुविद्ध ब. शुद्ध क. अशुद्ध ड. रसानुविद्ध

१२. तीन संज्ञा में से यहाँ .... संज्ञा के आश्रय से संज्ञा कही गई है ।
अ. द्रष्टवादोपदेशिकी ब. हेतुवादोपदेशिकी क. दीघर्कालिकी ड. लघुकालिकी

१३. विग्रहगति में......... काय योग होता है ।
अ. औदारिक ब. वैक्रय क. आहारक ड. कार्मण

१४. .... जीव में योग का अभाव होने से क्रिया होती नहीं ।
अ. संसारी ब. सिद्ध क. मात्र पंचेन्द्रिय ड. मात्र त्रस

१५. तीन योग के कुल भेद .... हैं ।
अ. ७ ब. ८ क. १५ ड. २१

१६. अविग्रह गति में जीव को .... भव के शरीर के योग की सहाय होती है ।
अ. पूर्व ब. पर क. पूर्व और पर को ड. पूव अथवा पर

१७. सिद्ध होते जीव की गति .... होती है ।
अ. मात्र सरल ब. मात्र वक्र क. दोनों ड. नहीं

१८. हर प्रकार की वक्र गति में प्रथम समय की गति तो .... ही होती है ।
अ. अवक्र ब. वक्र क. मिश्र ड. वक्र अथवा अवक्र

१९. .... यानी द्रव्य का अपना स्वरूप ।
अ. उदय ब. उपशम क. क्षय ड. परिणाम

२०. .... यानी कर्म के फल का अनुभव ।
अ. उदय ब. उपशम क. क्षय ड. परिणाम

२१. .... माटी के जीव पृथ्वीकाय हैं ।
अ. सचित्त ब. अचित्त क. मिश्र ड. केवल सचित्त लाल

२२. .... जीव को भाव मन होता है, द्रव्य मन नहीं होता ।
अ. त्रस हर ब. केवल स्थावर क. संज्ञी ड. एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक हर

२३. गति करने वाले हर प्राणी को .... कहते हैं ।
अ. स्थावर ब. त्रस क. भव्य ड. संस्कारी

२४. औपशमिक आदि पांच भावो के कुल .... भेद ग्रंथकारने बताए हैं ।
अ. २२ ब. ६७ क. ५३ ड. ९३

२५. .... जीवों को द्रव्य और भाव दोनों प्रकार के मन का अभाव है ।
अ. त्रस ब. स्थावर क. संसारी ड. सिद्ध

२६. जो जीव अपनी इच्छा से हिलने में समर्थ नहीं उसे .... कहते हैं ।
अ. त्रस ब. स्थावर क. प्रमादी ड. अभव्य

२७. श्रोत्रेन्द्रिय .... योजन दूर से आयी मेघ गर्जना आदि शब्द को सुन सकती है ।
अ. बारह सौ ब. बारह क. बारह हजार ड. बारह लाख

२८. चक्षुरिन्द्रिय .... दूर रही वस्तु को देख सकती है ।
अ. एक लाख योजन ब. एक हजार योजन
क. एक लाख योजन से कुछ अधिक ड. दो योजन

२९. मन रूप परिणमित पुद्‌गल द्रव्यों के आलंबन वाले चिंतन स्वरूप जीव का व्यापार .... हैं ।
अ. लब्धि मन ब. भाव मन क. द्रव्य मन ड. उपकरण मन

३०. तैजस शरीर के सहज और .... दो भेद हैं ।
अ. लब्धि प्रत्यय ब. द्रव्य प्रत्यय क. भाव प्रत्यय ड. उपकरण प्रत्यय

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१. नीचे दिए वाक्यों में से सही वाक्य कहें ।
अ. उपयोग के मुख्य चार भेद हैं - १. साकारोपयोग २. अनाकारोपयोग ३. ज्ञानोपयोग ४. दर्शनोपयोग ।
ब. जिस स्थान में निवृत्ति द्रव्येन्द्रिय है उसी स्थान में उपकरण द्रव्येन्द्रिय है ।
क. दीर्घकालिकी संज्ञा में त्रिकाल की जो विचारणा होती है । वह मोक्षमार्गानुसारी होती है, इसलिए सर्वोत्कृष्ट है ।
ड. हर जीव को पांच भाव होते ही हैं ऐसा नियम है ।

३२. औपशमिक भाव यानी ?
अ. आत्मा के विद्यमान कर्मों के क्षय से प्रगट होते आत्मिक गुण ।
ब. आत्मा में कर्म विद्यमान होने पर भी थोड़े समय के लिए उनके उदय के अभाव के कारण प्रगट होते आत्मिक गुण ।
क. कर्मों के उदय से प्रगट होते आत्मिक गुण ।
ड. आत्मा में विद्यमान कुछ कर्मों के क्षय और कुछ कर्मों के थोड़े समय के लिए उदय के अभाव के कारण प्रगट होते आत्मिक गुण ।

३३. क्षायिक भाव यानी ?

अ. आत्मा में कर्म विद्यमान होने पर भी उदय के अभाव के कारण प्रगट होते आत्मिक गुण।

ब. आत्मा के विद्यमान कर्मों के क्षय से प्रगट होते आत्मिक गुण ।

क. कर्मों के उदय से प्रगट होते आत्मिक गुण ।

ड. आत्मा में विद्यमान कर्मों के क्षय और उदय के अभाव के कारण प्रगट होते आत्मिक गुण।

३४. क्षायोपशमिक भाव यानी ?

अ. आत्मा के विद्यमान कर्मों के क्षय से प्रगट होते आत्मिक गुण ।

ब. आत्मा में कर्म विद्यमान होने पर भी थोड़े समय के लिए उनके उदय के अभाव के कारण प्रगट होते आत्मिक गुण ।

क. कर्मों के उदय से प्रगट होते आत्मिक गुण ।

ड. आत्मा में विद्यमान कुछ कर्मों के क्षय और कुछ कर्मों के थोड़े समय के लिए उदय के अभाव के कारण प्रगट होते आत्मिक गुण ।

३५. औदयिक भाव यानी ?

अ. आत्मा के विद्यमान कर्मों के क्षय से प्रगट होते आत्मिक गुण ।

ब. आत्मा में कर्म विद्यमान होने पर भी थोड़े समय के लिए उनके उदय के अभाव के कारण प्रगट होते आत्मिक गुण ।

क. कर्मों के उदय से प्रगट होते आत्मिक गुण ।

ड. आत्मा में विद्यमान कुछ कर्मों के क्षय और कुछ कर्मों के थोड़े समय के लिए उदय के अभाव के कारण प्रगट होते आत्मिक गुण ।

३६. पारिणामिक भाव यानी ?

अ. आत्मा के विद्यमान कर्मों के क्षय से प्रगट होते आत्मिक गुण ।

ब. आत्मा में विद्यमान कर्मों के क्षय थोड़े समय के लिए उदय के अभाव के कारण प्रगट होते आत्मिक गुण ।

क. कर्मों के उदय से प्रगट होते आत्मिक गुण ।

ड. आत्मा के स्वाभाविक परिणाम से प्रगट होते आत्मिक गुण ।

३७. साकार उपयोग यानी ?

अ. ज्ञेय वस्तु को विशेष रूप से जानने के लिए आत्मा का होता व्यापार ।

ब. ज्ञेय वस्तु को सामान्य रूप से जानने के लिए आत्मा का होता व्यापार ।

क. ज्ञेय वस्तु को सामान्य अथवा विशेष रूप से जानने के लिए आत्मा का होता व्यापार ।

ड. ज्ञेय वस्तु को सामान्य और विशेष उभय रूप से जानने के लिए आत्मा का होता व्यापार।

३८. अनाकार उपयोग यानी ?

अ. ज्ञेय वस्तु को सामान्य रूप से जानने के लिए आत्मा का होता व्यापार ।

ब. ज्ञेय वस्तु को विशेष रूप से जानने के लिए आत्मा का होता व्यापार ।

क. ज्ञेय वस्तु को सामान्य अथवा विशेष रूप से जानने के लिए आत्मा का होता व्यापार ।

ड. ज्ञेय वस्तु को सामान्य और विशेष उभय रूप से जानने के लिए आत्मा का होता व्यापार।

३९. दर्शन सप्तक यानी ?

अ. सात बार देरासर में जाकर दर्शन करना ।

ब. गुरु को सात बार वंदन करना ।

क. मोहनीय कर्म के चार प्रकार और अनंतानुबंधी तीन कषाय जो आत्मा के दर्शन गुण का घात करते हैं वह दर्शन सप्तक ।

ड. मोहनीय कर्म के तीन प्रकार और अनंतानुबंधी चार कषाय जो आत्मा के दर्शन गुण का घात करते हैं वह दर्शन सप्तक ।

४०. लक्षण यानी ?

अ. वस्तु के असाधारण गुण यानी जो गुण लक्ष्य के अलावा अन्य वस्तु में न हों ।

ब. वस्तु के साधारण गुण यानी जो गुण लक्ष्य के अलावा अन्य वस्तु में भी हों ।

क. व्यक्ती के शरीर के ऊपर मिलता विशेष प्रकार का चिह्न ।

ड. अंगोपांग और निर्माण नाम कर्म से बनता इन्द्रियों का आकार ।

४१. स्वरूप यानी ?

अ. वस्तु के असाधारण गुण यानी जो गुण लक्ष्य के अलावा अन्य वस्तु में न हों ।

ब. वस्तु के साधारण गुण यानी जो गुण लक्ष्य के अलावा अन्य वस्तु में भी हों ।

क. व्यक्ती के शरीर के ऊपर मिलता विशेष प्रकार का चिह्न ।

ड. अंगोपांग और निर्माण नाम कर्म से बनता इन्द्रियों का आकार ।

४२. निवृत्ति द्रव्येन्द्रिय यानी ?

अ. अंगोपांग और निर्माण नाम कर्म से बनता इन्द्रियों का आकार ।

ब. इन्द्रियों को इस्तेमाल से निवृत्त करना ।

क. इन्द्रिय किस द्रव्य से बनी हैं उसकी विचारणा.

ड. पांचों प्रकार की इन्द्रियों की कार्य से निवृत्ति ।

४३. उपकरण द्रव्येन्द्रिय यानी ?

अ. जगत के द्रव्य जो उपकरण रूप से इस्तेमाल होते हैं ।

ब. इन्द्रियों को उपकरण रूप से इस्तेमाल करना ।

क. अंगोपांग और निर्माण नाम कर्म से बनता इन्द्रियों का आकार ।

ड. निवृत्ति द्रव्येन्द्रिय में रही अत्यंत सूक्ष्म पुद्गलों से बनी शक्ति ।

४४. बाह्य निवृत्ति द्रव्येन्द्रिय यानी ?

अ. पांचों प्रकार की इन्द्रियों की कार्य से निवृत्ति ।

ब. बाह्य इन्द्रिय किस द्रव्य से बनी हैं उसकी विचारणा ।

क. इन्द्रियों का बाह्य रूप से दिखता आकार ।

ड. अंगोपांग और निर्माण नाम कर्म से बनता इन्द्रियों का आकार ।

४५. अभ्यंतर निवृत्ति द्रव्येन्द्रिय यानी ?

अ. बाह्य निवृत्ति द्रव्येन्द्रिय के अंदर रहा इन्द्रियों का आकार ।

ब. इन्द्रियों का बाह्य रूप से दिखता आकार ।

क. आंतरिक इन्द्रियों की कार्य से निवृत्ति.

ड. आंतरिक इन्द्रिय किस द्रव्य से बनी हैं उसकी विचारणा ।

४६. लब्धि भावेन्द्रिय यानी ?

अ. ज्ञानावरणीयकर्म के क्षयोपशम से ज्ञान के लाभ के लिए प्राप्त शक्ति ।

ब. ज्ञानावरणीयकर्म के क्षयोपशम से प्राप्त ज्ञानशक्ति का ज्ञेय को जानने के लिए होता व्यापार।

क. इन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त होती लब्धि ।

ड. उत्तम भाव हो तब इन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त होती लब्धि ।

४७. उपयोग भावेन्द्रिय यानी ?

अ. इन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त होती लब्धि का इस्तेमाल ।

ब. उत्तम भाव हो तब होता इन्द्रियों का इस्तेमाल ।

क. ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से प्राप्त ज्ञानशक्ति का ज्ञेय को जानने के लिए होता व्यापार ।

ड. ज्ञानावरणीयकर्म के क्षयोपशम से ज्ञान के लाभ के लिए प्राप्त शक्ति ।

४८. संज्ञी यानी ?

अ. जिनको मन हो ऐसे पंचेन्द्रिय जीवो ब. व्याकरण में जो संज्ञा पढ़ते हैं वह

क. जिनको मन हो ऐसे एकेन्द्रिय जीव ड. मन जिनको हो ऐसे दो-इन्द्रिय जीव

४९. अनुश्रेणी यानी ?

अ. जीव की अपांतराल काल समय में सीधी रेखा के अनुसार होती गति ।

ब. जीव की आध्यात्मिक मार्ग में प्रगति ।

क. तीर्थंकर परमात्मा के उपदेश के अनुसार किया कार्य ।

ड. जीवों की इन्द्रियों की श्रेणी के अनुसार होती व्यवस्था ।

५०. दीर्घ कालिकी संज्ञा यानी ?

अ. लम्बे समय का विचार ।

ब. तीनों काल के आश्रयी से आत्मा का दीर्घ कालिक हित / अहित का विचार करने की शक्ति।

क. ज्ञेय वस्तु का विशेष रूप से होता बोध ।

ड. ज्ञेय वस्तु का लम्बे समय तक विशेष रूप से होता बोध ।

५१. चक्षुदर्शन यानी ?

अ. चक्षु द्वारा होता रूपी वस्तु का सामान्य बोध ।

ब. चक्षु द्वारा होता अरूपी वस्तु का सामान्य बोध ।

क. चक्षु द्वारा होता रूपी और अरूपी, दोनों वस्तु का सामान्य बोध ।

ड. चक्षु द्वारा होता रूपी अथवा अरूपी वस्तु का सामान्य बोध ।

५२. अचक्षु दर्शन यानी ?

अ. चक्षु के सिवा इन्द्रियों द्वारा होता रूपी वस्तु का सामान्य बोध ।

ब. चक्षु के सिवा इन्द्रियों द्वारा होता अरूपी वस्तु का सामान्य बोध ।

क. चक्षु के सिवा इन्द्रियों द्वारा होता रूपी और अरूपी, दोनों वस्तु का सामान्य बोध ।

ड. चक्षु के सिवा इन्द्रियों द्वारा होता रूपी अथवा अरूपी वस्तु का सामान्य बोध ।

५३. अवधिदर्शन यानी ?

अ. इन्द्रियों की सहायता के बिना केवल रूपी पदार्थों का होता सामान्य बोध ।

ब. इन्द्रियों की सहायता के बिना केवल अरुपी पदार्थों का होता सामान्य बोध ।

क. इन्द्रियों की सहायता के बिना रूपी और अरूपी, दोनों पदार्थों का होता सामान्य बोध ।

ड. इन्द्रियों की सहायता के बिना केवल रूपी पदार्थों का होता विशेष बोध ।

५४. केवलदर्शन यानी ?

अ. इन्द्रियों की सहायता के बिना केवल रूपी पदार्थों का होता सामान्य बोध ।

ब. इन्द्रियों की सहायता के बिना केवल अरूपी पदार्थों का होता सामान्य बोध ।

क. इन्द्रियों की सहायता के बिना रूपी और अरूपी, उभय पदार्थों का होता सामान्य बोध ।

ड. इन्द्रियों की सहायता के बिना केवल रूपी पदार्थों का होता विशेष बोध ।

५५. नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य कहें ।

अ. चार ज्ञान, तीन अज्ञान, तीन दर्शन, पांच लब्धि. सम्यक्त्व, सर्व विरति चरित्र, संयमासंयम चरित्र ऐसे क्षयोपशम भाव के अठारह भेद हैं ।

ब. चार गति, चार कषाय, दो लिंग, मिथ्यादर्शन, अज्ञान, संयम, असंयम, अव्रत, असिद्धत्व और छ लेश्या ऐसे औदेयिक भाव के कुल २१ भेद हैं ।

क. परिणामिक भाव के मुख्य जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व, अस्तित्व ऐसे अनेक भेद हैं ।

ड. औपशमिक भाव के उपशम सम्यक्त्व, क्षायिक सम्यक्त्व और मिश्र सम्यक्त्व ऐसे तीन भेद हैं ।

५६. क्षायोपशमिक चारित्र, अनंतानुबंधी आदि बारह कषायों के .... के सर्वथा अभाव से प्रगट होता है । अनंतानुबंधी बारह कषायों का मात्र .... होता है । (क्रम निभाना ज़रूरी है)

अ. रसोदय प्रदेशोदय ब. प्रदेशोदय रसोदय क. प्रदेशोदय उदय ड. रसोदय सर्वोदय

५७. देशविरति रूप क्षयोपशम भाव में आठ कषाय के .... का सर्वथा अभाव तथा प्रत्याख्यानावरण कषायों के सर्वघाती - देशघाती स्पर्धकों का और संज्वलन कषाय के देशघाती स्पर्धकों का ..... होता है । (क्रम जालववो जरूरी है ।)

अ. रसोदय प्रदेशोदय ब. प्रदेशोदय रसोदय क. प्रदेशोदय उदय ड. रसोदय उदय

५८. तेउकाय जीव गतिशील होने की अपेक्षा से .... है । और 'त्रस नामकर्म के उदय से इष्ट पाने गति करते हैं' इस व्याख्या की अपेक्षा से .... हैं । (क्रम निभाना ज़रूरी है)

अ. त्रस स्थावर ब. स्थावर त्रस क. त्रस त्रस ड. स्थावर स्थावर

५९. नीचे दिए गए इन्द्रियों के क्रम में कौनसा विकल्प सही है ?

अ. स्पर्श-रस-घ्राण-चक्षु-श्रोत्र ब. स्पर्श-घ्राण-चक्षु-रस-श्रोत्र

क. स्पर्श-घ्राण-रस-चक्षु-श्रोत्र ड. स्पर्श-चक्षु-घ्राण-रस-श्रोत्र

६०. नीचे के वाक्यों में गलत वाक्य बताएं ।

अ. क्षायोपशमिक भाव की उत्पत्ति और विनाश में औपशमिक भाव और क्षायिक भाव एक साथ एक ही समय उत्पन्न होते हैं ।

ब. औपशमिक और क्षयोपशमिक भाव मिलकर क्षायिक भाव का कारण बनते हैं ।

क. औदेयिक और पारिणामिक भाव जीव और अजीव दोनों में होते हैं ।

ड. औदेयिक भाव जहाँ होता वहाँ पारिणामिक भाव होता ही है ।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक. (कुल १५ x २ = ३० अंक)

६१.

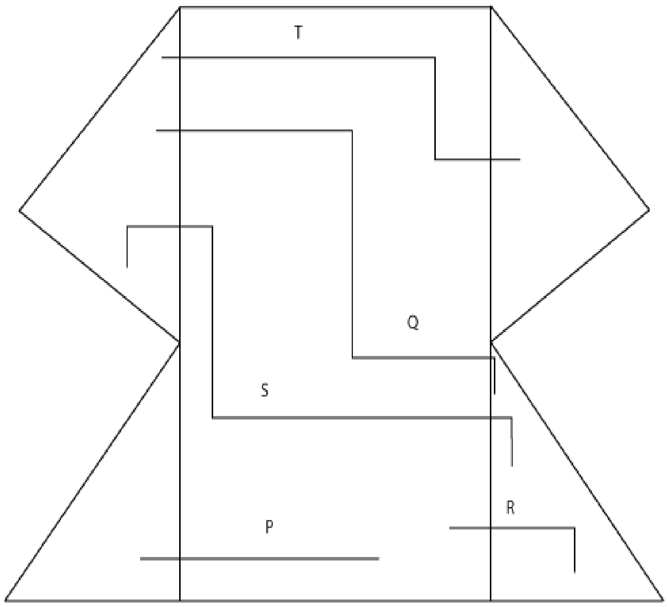

प्रस्तुत रेखाचित्र में पाँच जीवों (P, Q, R, S, T) की एक स्थान से दूसरे स्थान की गति दर्शाई गई है। निम्नलिखित विकल्पों में से कौन सा विकल्प इन गति के लिए सही है ?

(अ) P - ऋजुगति, एक समय; Q - त्रिवक्रा, तीन समय

(ब) S - चतुर्वक्रा, चार समय; R - एकवक्रा, दो समय

(क) Q - त्रिवक्रा, दो समय; T - द्वि वक्रा, तीन समय

(ड) R - एक वक्रा, दो समय; S - चतुर्वक्रा, पांच समय

६२. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य एक स्थान से दूसरे स्थान पर उत्पत्ति के लिए जाते हुए जीव की अंतराल गति के लिए सही नहीं है ?

(अ) वक्रगति में जीव को मुड़ते हुए आनुपूर्वी नामकर्म का उदय होता है।

(ब) त्रस से त्रसकाय में उत्पन्न होने वाले जीव को त्रिवक्रा गति संभव नहीं है।

(क) त्रिवक्रा गति तीन समय की तथा द्विवक्रा गति दो समय की होती है।

(ड) त्रस से स्थावर में अथवा स्थावर से त्रस में उत्पन्न होने वाले जीवों को चार समय, तीन समय, दो समय थवा एक समय लग सकता है।

त्रसनाड़ी के बाहर स्थित कोई जीव ऊर्ध्वलोक की दिशा में से त्रसनाड़ी के बाहर अधोलोक की विदिशा में उत्पन्न होता है तब प्रथम समय समश्रेणि से त्रसनाड़ी में प्रवेश करता है, दुसरे समय समश्रेणि से अधोलोक में जाता है तथा तीसरे समय समश्रेणि से त्रासनाड़ी के बाहर दिशा में जाता है।

उपर्युक्त पंक्तियाँ पढ़कर निम्नलिखित ६३, ६४, ६५ प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

६३. उपर्युक्त पंक्तियों में वर्णित गति का समय और वक्र क्रमशः यह हैं -

(अ) ३, २ (ब) ४, ३ (क) ५, ४ (ड) ३, ४

६४. निम्नलिखित विकल्पों में से किस विकल्प में उपर्युक्त गति संभव है ?

(अ) त्रस से स्थावर में उत्पन्न होने वाला जीव।

(ब) स्थावर से त्रस में उत्पन्न होने वाला जीव।

(क) त्रस से त्रस में उत्पन्न होने वाला जीव।

(ड) स्थावर से स्थावर में उत्पन्न होने वाला जीव।

६५. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा समय सही नहीं है ?

(अ) त्रसनाड़ी के बाहर ऊर्ध्वलोक की विदिशा से कोई जीव अधोलोक की विदिशा में उत्पन्न होता है तब चतुर्वक्रा गति होती है।

(ब) जब जीव मृत्युस्थान से समश्रेणि में ही उत्पन्न होता है तब वह एक ही समय में ऋजुगति से उत्पन्न होता है।

(क) ऊर्ध्वलोक की पूर्वदिशा में मृत्यु पाकर अधोलोक की पश्चिमदिशा में जन्म लेने वाले जीव की एकवक्रा गति होती है।

(ड) त्रसनाड़ी के बाहर स्थित जीव ऊर्ध्वलोक की दिशा से त्रसनाड़ी के बाहर अधोलोक की दिशा में उत्पन्न होने वाले जीव की त्रिवक्रा गति होती है।

६६. निम्नलिखित विकल्पों में से कौन सा विकल्प गलत नहीं है ?

(अ) विग्रहगति से परभव में जाते हुए जीव को कार्मणकाययोग होता है तथा अविग्रहगति से परभव में जाते हुए जीव को नए भव के शरीर का योग होता है।

(ब) अविग्रहगति गति में जीव को मन और वचन योग होते हैं, जबकि विग्रहगति से परभव जाते हुए जीव को मन और वचन योग नहीं होते।

(क) जीव या पुद्गल की वक्रगति परप्रयोग से ही होती है तथा परप्रयोग के बिना श्रेणी के अनुसार ही गति होती है।

(ड) सिद्ध होते हुए जीव की ऋजु और वक्र दोनों गति होती है, किंतु जीव की गति श्रेणि के अनुसार ही होती है।

६७. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य संज्ञी-असंज्ञी जीवों के परिप्रेक्ष्य में सही नहीं है ?

(अ) गर्भज पंचेंद्रिय जीवों को द्रव्यमन होने से हेतुवादोपदेशिकी संज्ञा होती है, अतः वे समनस्क जीव हैं।

(ब) जो मनुष्य दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा से हित-अहित का विचार करते हैं, वे ही जीव संज्ञी हैं।

(क) एकेन्द्रिय जीव भावमन से मनोवर्गणा के पुद्गल ग्रहण कर सकते हैं किंतु द्रव्यमन नहीं होने से विचार नहीं कर सकते।

(ड) उपर्युक्त सभी।

६८. निम्नलिखित विकल्पों में से इंद्रिय की अपेक्षा विषम विकल्प कौन सा है ?

(अ) शंख, मछली, मेंढक, कछुआ

(ब) तेउकाय, वायुकाय, अप्काय, अशोक वृक्ष

(क) मच्छर, मक्खी, भ्रमर, बिच्छु

(ड) कबूतर, हाथी, नारक, सौधर्मेन्द्र

६९. निम्नलिखित विकल्पों में से कौन सा विकल्प गलत नहीं है ?

(अ) चींटी को तीन इंद्रियाँ होती हैं - स्पर्शेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और चक्षुरिन्द्रिय तथा शंख को स्पर्शेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय होती हैं।

(ब) मछली को पाँचों इन्द्रियाँ होती हैं तथा वटवृक्ष को भाव से पाँचों इन्द्रियाँ होती हैं तथापि मछली पंचेंद्रिय है किंतु वटवृक्ष एकेन्द्रिय हैं।

(क) मच्छर स्वयं के पंख फड़फड़ाने की आवाज सुन सकता है, लेकिन कबूतर की आवाज बहुत तेज होने से नहीं सुन सकता।

(ड) पृथ्वीकाय और वनस्पति को मात्र स्पर्शेन्द्रिय है, जबकि तेउकाय और अप्काय को क्रमशः रसनेन्द्रिय और श्रोत्रेन्द्रिय है।

७०. निम्नलिखित विकल्पों में क्रमशः इंद्रिय के प्रमाण शक्ति और अभ्यंतर निवृत्ति के आकार दिए गए हैं। इनमें कौन सा विकल्प सही है ?

(अ) रसन = उस्तरा, जिह्वाप्रमाण, ९ योजन।
चक्षु = अंगुल का असंख्यातवाँ भाग, लाख योजन, चंद्र।

(ब) श्रोत्र = २-९ अंगुल, ९ योजन, चंपा फूल।
घ्राण = अंगुल का असंख्यातवाँ भाग, १२ योजन, अतिमुक्तक फूल।

(क) स्पर्श = शरीर प्रमाण, ९ योजन, अनेक आकर
चक्षु = अंगुल का असंख्यातवाँ भाग, लाख योजन, मसुर दाल।

(ड) श्रोत्र = अंगुल का असंख्यातवाँ भाग, १२ योजन, चंपाफूल।
रसन = ९ योजन, २-९ अंगुल, उस्तरा।

७१. निम्नलिखित विकल्पों में से कौन सा विकल्प इन्द्रिय के परिप्रेक्ष्य में सही नहीं है ?

(अ) अंगोपांग तथा निर्माण नामकर्म से रचा जानेवाला इन्द्रियों का बाह्य आकार बाह्य निवृत्ति इन्द्रिय है तथा अभ्यंतर निवृत्ति की विषय को ग्रहण करने की शक्ति उपकरणेन्द्रिय है।

(ब) इन्द्रियों से मतिज्ञान और द्रव्यश्रुतज्ञान होता है जबकि मन से मतिज्ञान और भावश्रुतज्ञान होता है।

(क) लब्धि और उपयोग इन्द्रिय तो ज्ञानस्वरूप होने पर भी दोनों को कार्य में कारण के उपचार से इन्द्रिय कहा जाता है।

(ड) आत्मा को पहचानने का चिह्न इन्द्रिय है तथा ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से ज्ञान की शक्ति प्राप्त होना लब्धि इन्द्रिय है।

७२. इन्द्रियों के कुल ४ भेद होते हैं - निवृत्ति द्रव्येन्द्रिय, उपकरण द्रव्येन्द्रिय, लब्धि भावेन्द्रिय और उपयोग भावेन्द्रिय। निम्नलिखित विकल्पों में से कौन सा विकल्प इन चार भेदों के लिए गलत नहीं है ?

(अ) उपकरण इन्द्रिय के बिना निवृत्ति इन्द्रिय नहीं हो सकती, किंतु उपयोग हो सकता है।

(ब) निवृत्ति इन्द्रिय के बिना उपकरणेन्द्रिय नहीं होती है, किंतु उपकरणेन्द्रिय के बिना निवृत्ति इन्द्रिय हो सकती है।

(क) उपयोग निवृत्ति आदि तीन इन्द्रिय के बिना हो सकता है, क्योंकि शेष तीन इन्द्रिय होने पर भी उपयोग इन्द्रिय के बिना ज्ञान नहीं होता।

(ड) निवृत्ति इन्द्रिय के बिना लब्धि इन्द्रिय नहीं हो सकती तथा उपकरण इन्द्रिय लब्धि इन्द्रिय के बिना नहीं हो सकती।

७३. शास्त्रों में त्रस और स्थावर जीवों की दो व्याख्याएँ की गई हैं। निम्नलिखित विकल्पों में से कौन सा विकल्प सही है ?

(अ) अप्काय के जीव त्रस हैं, क्योंकि वे भी प्रवाह में हवा की तरह ही बहते रहते हैं।

(ब) जो-जो जीव गतिशील होते हैं, उन्हें त्रस नामकर्म का उदय होता है, जबकि स्थितिशील जीवों को स्थावर नामकर्म का उदय होता है।

(क) वायुकाय के जीव गतिशील होने पर भी वे अपने इष्ट स्थान को प्राप्त नहीं करत सकते। अतः वे स्थावर जीव हैं।

(ड) चींटी जब चलती है तब त्रस जीव होती है, किंतु जब एक ही स्थान पर रहती है तब स्थावर जीव के भेद में उसका समावेश होता है।

७४. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य जीव के पाँच भावों के परिप्रेक्ष्य में गलत नहीं है ?

(अ) जैसे जल में कचरा नीचे बैठ जाने पर जल निर्मल दिखता है, वैसे ही कर्मों का क्षय होने से आत्मा निर्मल हो जाता है।

(ब) जीव के अनेक धर्मों के पाँच कारण हैं, उनमें से कर्मों के उपशम से प्रगट होने वाले भाव क्षायोपशमिक कहलाते हैं। उपशम यानि कर्मों के उदय का अभाव होना।

(क) पारिणामिक भाव जीव मं किसी भी निमित्त के बिना ही होते हैं। कर्मों के उदय से अजीव में औदयिक भाव तथा उपशम से औपशमिक भाव होता है।

(ड) औपशमिक और क्षायिक भाव के स्वामी की अपेक्षा क्षायोपशमिक भाव के स्वामी अधिक हैं तथा औदयिक और पारिणामिक भाव अजीव में भी होते हैं।

७५. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं है ?

(अ) चारित्रमोहनीय के २५ भेद हैं। इनमें सें सात प्रकृतियों के उपशम से उपशम सम्यकत्व तथा शेष प्रवृत्तियों के उपशम से उपशम चारित्र प्रगट होता है।

(ब) अज्ञान औदयिक भाव है तथा ज्ञान-दर्शन क्षायोपशमिक भाव हैं। सम्यकत्व और चारित्र औपशमिक तथा क्षायोपशमिक भाव हैं।

(क) मिथ्यात्व मोहनीय के क्षयोपशम में रसोदय नहीं होता है, इसलिए वह शुद्ध क्षयोपशम है, जबकि मतिज्ञानावरणीय का क्षयोपशम उदय के साथ ही होता है इसलिए वह उदयानुविद्ध क्षयोपशम है।

(ड) साकारोपयोग यानि ज्ञानोपयोग। अनाकारोपयोग यानि दर्शनोपयोग। दर्शनोपयोग में पदार्थ का सामान्य बोध होन से सम्यक्-मिथ्या भेद नहीं होता।

▮

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-५	अध्याय-२	सूत्र ३१-५२	जमा करने की अंतिम तारीख ता. १५/०४/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक. (कुल ३० x ½ = १५ अंक)

१. .... से अधिक जितने समय लगे उतने समय तक जीव अनाहारक - आहार रहित होता है ।
अ. एक ब. दो क. तीन ड. चार

२. .... शरीर के पुद्‌गल अन्य सभी शरीर के पुद्‌गलों से अधिक स्थूल होते हैं ।
अ. औदारिक ब. वैक्रिय क. आहारक ड. तैजस

३. .... शरीर के भव प्रत्यय और लब्धि प्रत्यय यह दो भेद हैं ।
अ. औदारिक ब. वैक्रिय क. आहारक ड. तैजस

४. खाए हुए खुराक को पचाने में कारण भूत शरीर .... है ।
अ. औदारिक ब. तैजस क. कार्मण ड. वैक्रिय

५. एक जीव को एक साथ .... शरीर हो सकते हैं ।
अ. दो ब. चार क. दो से चार ड. पांच

६. 'नारक संमूर्च्छिनो नपुंसकानि' (२-५०) सूत्र में वेद का प्रतिपादन .... वेद की दृष्टि से हैं।
अ. द्रव्य ब. भाव क. द्रव्य और भाव ड. द्रव्य अथवा भाव

७. संमूर्च्छिम असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों को पुरुष तथा स्त्री; यह दो .... वेद होते हैं ।
अ. द्रव्य ब. भाव क. द्रव्य और भाव ड. द्रव्य अथवा भाव

८. आयुष्य की अपवर्तना होने का कारण यह है कि आयुष्य बंध के समय आयुष्य कर्म के दलिकों का बंध .... होता है ।
अ. शिथिल ब. मजबूत क. हलका ड. भारी

९. तैजस शरीर के सहज और .... ऐसे दो भेद हैं ।
अ. लब्धि प्रत्यय ब. उष्ण प्रत्यय क. तेज प्रत्यय ड. लेश्या प्रत्यय

१०. .... में मोक्ष मार्गानुसारी त्रिकालकी विचारणा होती है, अंत: वह सर्वोत्कृष्ट है ।
अ. हेतुवादोपदेशिकी ब. दीर्घकालिकी क. दृष्टिवादोपदेशिकी ड. लघुकालिकी

११. .... द्रव्य गतिशील है ।
अ. जीव ब. आकाश क. काल ड. धर्मास्तिकाय

१२. सोमिल ब्राह्मण .... के कारणे मृत्यु को पाया ।
अ. भय ब. विष क. अग्नि ड. विजातीय स्पर्श

१३. .... उपनिषद में ऋषि उद्दालक ने अपने पुत्र को 'वनस्पति में जीव है' ऐसा कहा है ।
अ. मांडुकय ब. छांदोग्य क. तैत्रीय ड. प्रश्न

१४. .... संज्ञा के आश्रय से जीव संज्ञी ऐसा कहा जाता है ।
अ. हेतुवादोपदेशिकी ब. दीर्घकालिकी क. दृष्टिवादोपदेशिकी ड. लघुकालिकी

१५. जीव या पुद्गल की वक्र गति .... से ही होती है ।
अ. परप्रयोग ब. विश्रसाप्रयोग क. आत्मप्रयोग ड. हस्त प्रयोग

१६. .... उपक्रमों से आयुष्य की स्थिति का ह्रास होने से मृत्यु होती है ।
अ. चार ब. पांच क. सात ड. आठ

१७. पांच शरीर में से सबसे अधिक प्रदेश / स्कंध .... शरीर के हैं ।
अ. तैजस ब. औदारिक क. कार्मण ड. वैक्रिय

१८. .... उपक्रम के राग, स्नेह और भय यह तीन भेद हैं ।
अ. निरध्यवसान ब. अध्यवसान क. अनध्यवसान ड. कुअध्यवसान

१९. .... यानी गर्भाशय में जीव के उपर रही मांस और रक्त की जाली ।
अ. जरायु ब. अंड क. पोत ड. मल

२०. .... शरीर का संबंध जीव के साथ अनादि काल से है ।
अ. कार्मण ब. वैक्रिय क. आहारक ड. औदारिक

२१. .... गति क्वचित् ही होने से सूत्र में उसका निर्देश किया नहीं है ।
अ. द्विवक्र ब. त्रिवक्र क. एकवक्र ड. चतुर्वक्र

२२. चौदह पूर्वधर मुनि भगवंत ही .... शरीर बना सकते हैं ।
अ. कार्मण ब. वैक्रिय क. आहारक ड. औदारिक

२३. योनी के कुल .... प्रकार बताए हैं ।
अ. तीन ब. छ क. नौ ड. बारह

२४. सिद्ध होते जीवों की .... गति होती है ।

अ. विग्रह ब. अविग्रह क. तिर्च्छी ड. धीमी

२५. .... शरीर अप्रतिघाती यानी कोई भी वस्तु उसे रोक नहीं सकती तथापि संपूर्ण लोक में गति कर सके ऐसा होता है ।

अ. कार्मण ब. वैक्रिय क. आहारक ड. औदारिक

२६. .... शरीर उपपात् रूप निमित्त से होता है ।

अ. कार्मण ब. वैक्रिय क. आहारक ड. औदारिक

२७. नारक और संमुर्च्छिम जीवों को .... वेद होता है ।

अ. पुरुष ब. स्त्री क. नपुंसक ड. तीनों

२८. उपक्रम लगने से जीव बाकी रहे आयुष्य कर्म के दलिकों को .... में ही भोग सकता है ।

अ. अंतर्मुहूर्त ब. दो घंटे क. एक घंटे ड. एक समय

२९. इनमें से किसका अनपवर्त्य आयुष्य नहीं होता...

अ. औपपातिक ब. चरमदेही क. उत्तमपुरुष ड. संख्यात वर्ष आयुष्य वाले

३०. जीव परभव में .... गति से जाता है ।

अ. केवल विग्रहगति ब. केवल अविग्रहगति

क. विग्रहगति और अविग्रहगति ड. धीमी

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१. अनाहारक यानी ?

अ. जिस समय जीव शरीर के योग्य आहार ग्रहण न करें ।

ब. उत्पत्ति क्षेत्र में आते ही नये भव के स्थूल देह के योग्य पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण ।

क. स्त्री और पुरुष के संबंध के बिना नये औदारिक शरीर के योग्य पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण।

ड. स्त्री पुरुष के संयोग से शुक्र-शोणित के पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण ।

३२. जन्म यानी ?

अ. स्त्री पुरुष के संयोग से शुक्र-शोणित के पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण ।

ब. उत्पत्ति क्षेत्र में आते ही नये भव के स्थूल देह के योग्य पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण ।

क. स्त्री और पुरुष के संबंध के बिना नये औदारिक शरीर के योग्य पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण।

ड. उत्पत्ति के स्थान में रहे वैक्रिय पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण ।

३३. सम्मुर्च्छन जन्म यानी ?

अ. स्त्री पुरुष के संयोग से शुक्र-शोणित के पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण ।

ब. उत्पत्ति क्षेत्र में आते ही नये भव के स्थूल देह के योग्य पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण ।

क. स्त्री और पुरुष के संबंध के बिना नये औदारिक शरीर के योग्य पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण।

ड. उत्पत्ति के स्थान में रहे वैक्रिय पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण ।

३४. गर्भ जन्म यानी ?

अ. स्त्री पुरुष के संयोग से शुक्र-शोणित के पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण ।

ब. उत्पत्ति क्षेत्र में आते ही नये भव के स्थूल देह के योग्य पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण ।

क. स्त्री और पुरुष के संबंध के बिना नये औदारिक शरीर के योग्य पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण।

ड. उत्पत्ति के स्थान में रहे वैक्रिय पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण ।

३५. उपपात जन्म यानी ?

अ. उत्पत्ति क्षेत्र में आते ही नये भव के स्थूल देह के योग्य पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण ।

ब. स्त्री पुरुष के संयोग से शुक्र-शोणित के पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण ।

क. उत्पत्ति के स्थान में रहे वैक्रिय पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण ।

ड. स्त्री और पुरुष के संबंध के बिना नये औदारिक शरीर के योग्य पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण।

३६. अपवर्त्य यानी ?

अ. जिस आयुष्य कर्म को उपक्रम लगे या न लगे अर्थात् निमित्त मिले या न मिले उसकी स्थिति का ह्रास न हो वह ।

ब. जिस आयुष्य कर्म को उपक्रम ज़रूर लगे अर्थात् निमित्त ज़रूर मिले और तब उसकी स्थिति का ह्रास हो वह ।

क. आयुष्य की स्थिति का ह्रास न हो उसमें निमित्त मिले ऐसी स्थिति ।

ड. आयुष्य की स्थिति का ह्रास हो उसमें निमित्त न मिले ऐसे स्थिति ।

३७. सचित्त योनी यानी ?

अ. जिस स्थान में जीवों की उत्पत्ति संभव हो ऐसा स्थान ।

ब. जो जीव सहित हो और जहाँ जीवों की उत्पत्ति संभव हो वह स्थान ।

क. जहाँ ठंड हो और जहाँ जीवों की उत्पत्ति संभव हो वह स्थान ।

ड. जो ढंका हो और जहाँ जीवों की उत्पत्ति हो वह स्थान ।

३८. शीत योनी यानी ?

अ. जिस स्थान में जीवों की उत्पत्ति संभव हो ऐसा स्थान ।

ब. जो जीव सहित हो और जहाँ जीवों की उत्पत्ति संभव हो वह स्थान ।

क. जहाँ ठंड हो और जहाँ जीवों की उत्पत्ति संभव हो वह स्थान ।

ड. जो ढंका हो और जहाँ जीवों की उत्पत्ति हो वह स्थान ।

३९. संवृत योनी यानी ?

अ. जिस स्थान में जीवों की उत्पत्ति संभव हो ऐसा स्थान ।

ब. जो जीव सहित हो और जहाँ जीवों की उत्पत्ति संभव हो वह स्थान ।

क. जहाँ ठंड हो और जहाँ जीवों की उत्पत्ति संभव हो वह स्थान ।

ड. जो ढंका हो और जहाँ जीवों की उत्पत्ति हो वह स्थान ।

४०. जरायुज यानी ?

अ. गर्भाशय में प्राणी के ऊपर रहे मांस और रक्त के पडल से उत्पन्न होने वाले जीव ।

ब. अंडे में से उत्पन्न होने वाले जीव ।

क. गर्भाशय में किसी भी प्रकार के आवरण रहित हो व और योनी से बाहर आते ही चलने की आदत वाले जीव ।

ड. स्त्री पुरुष के संयोग से शुक्र-शोणित के पुद्गलों से उत्पन्न होने वाले जीव ।

४१. अंडज यानी ?

अ. गर्भाशय में प्राणी के ऊपर रहे मांस और रक्त के पडल से उत्पन्न होने वाले जीव ।

ब. स्त्री पुरुष के संयोग से शुक्र-शोणित के पुद्गलों से उत्पन्न होने वाले जीव ।

क. गर्भाशय में किसी भी प्रकार के आवरण रहित हो व और योनी से बाहर आते ही चलने की आदत वाले जीव ।

ड. अंडे में से उत्पन्न होने वाले जीव ।

४२. पोतज यानी ?

अ. गर्भाशय में प्राणी के ऊपर रहे मांस और रक्त के पडल से उत्पन्न होने वाले जीव ।

ब. अंडे में से उत्पन्न होने वाले जीव ।

क. गर्भाशय में किसी भी प्रकार के आवरण रहित हो व और योनी से बाहर आते ही चलने की आदत वाले जीव ।

ड. स्त्री पुरुष के संयोग से शुक्र-शोणित के पुद्गलों से उत्पन्न होने वाले जीव ।

४३. औदारिक शरीर यानी ?

अ. उदार पुद्गलों से बना स्थूल शरीर ।

ब. जिस शरीर के द्वारा छोटे से बड़ा, बड़े से छोटा, एक से अनेक, अनेक से एक स्वरूप बना सकें वह ।

क. सूक्ष्म तत्त्वज्ञान की जिज्ञासा आदि निमित्त से चौदह पूर्वधर प्रमत्त मुनि भगवंत एक हाथ प्रमाण स्फटिक समान सुंदर शरीर की रचना करें वह ।

ड. खाए हुए खुराक को पचाने हेतु जठर में अग्नि रूप में रही गर्मी या विशिष्ट रूप से उत्पन्न होती तेजोलब्धि ।

४४. वैक्रिय शरीर यानी ?

अ. खाए हुए खुराक को पचाने हेतु जठर में अग्नि रूप में रही गर्मी या विशिष्ट रूप से उत्पन्न होती तेजोलब्धि ।

ब. सूक्ष्म तत्त्वज्ञान की जिज्ञासा आदि निमित्त से चौदह पूर्वधर प्रमत्त मुनि भगवंत एक हाथ प्रमाण स्फटिक समान सुंदर शरीर की रचना करें वह ।

क. जिस शरीर के द्वारा छोटे से बड़ा, बड़े से छोटा, एक से अनेक, अनेक से एक स्वरूप बना सकें वह ।

ड. उदार पुद्गलों से बना स्थूल शरीर ।

४५. आहारक शरीर यानी ?

अ. जिस शरीर के द्वारा छोटे से बड़ा, बड़े से छोटा, एक से अनेक, अनेक से एक स्वरूप बना सकें वह ।

ब. उदार पुद्गलों से बना स्थूल शरीर ।

क. खाए हुए खुराक को पचाने हेतु जठर में अग्नि रूप में रही गर्मी या विशिष्ट रूप से उत्पन्न होती तेजोलब्धि ।

ड. सूक्ष्म तत्त्वज्ञान की जिज्ञासा आदि निमित्त से चौदह पूर्वधर प्रमत्त मुनि भगवंत एक हाथ प्रमाण स्फटिक समान सुंदर शरीर की रचना करें वह ।

४६. तैजस शरीर यानी ?

अ. उदार पुद्गलों से बना स्थूल शरीर ।

ब. जिस शरीर के द्वारा छोटे से बड़ा, बड़े से छोटा, एक से अनेक, अनेक से एक स्वरूप बना सकें वह ।

क. सूक्ष्म तत्त्वज्ञान की जिज्ञासा आदि निमित्त से चौदह पूर्वधर प्रमत्त मुनि भगवंत एक हाथ प्रमाण स्फटिक समान सुंदर शरीर की रचना करें वह ।

ड. खाए हुए खुराक को पचाने हेतु जठर में अग्नि रूप में रही गर्मी या विशिष्ट रूप से उत्पन्न होती तेजोलब्धि ।

४७. कार्मण शरीर यानी ?

अ. आत्मा के साथ क्षीरनीर समान एकमेक हुए कर्मो का समूह ।

ब. खाए हुए खुराक को पचाने हेतु जठर में अग्नि रूप में रही गर्मी या विशिष्ट रूप से उत्पन्न होती तेजोलब्धि ।

क. जिस शरीर के द्वारा छोटे से बड़ा, बड़े से छोटा, एक से अनेक, अनेक से एक स्वरूप बना सकें वह ।

ड. उदार पुद्गलों से बना स्थूल शरीर ।

४८. भव प्रत्यय यानी ?

अ. भव की प्रधानता से उत्पन्न हो वह ।

ब. विशिष्ट प्रकार की लब्धि रूपक निमित्त से उत्पन्न हो वह ।

क. संसार में परिभ्रमण करते नए नए भव लेना वह ।

ड. विशिष्ट प्रकार के भव पाने में सफल होना वह ।

४९. लब्धि प्रत्यय यानी ?

अ. विशिष्ट प्रकार की लब्धियां पाने में असफल होना वह ।

ब. विशिष्ट प्रकार की लब्धि रूपक निमित्त से उत्पन्न हो वह ।

क. भव की प्रधानता से उत्पन्न हो वह ।

ड. संसार में परिभ्रमण करते नए नए भव लेना वह ।

५०. द्रव्य वेद यानी ?

अ. नामकर्म के उदय से शरीर के आकार में जो लिंग सूचक आकार मिले वह ।

ब. मोहनीय कर्म के उदय से मैथुन सेवन की उत्पन्न होती ईच्छा ।

क. मैथुन सेवन की इच्छा उत्पन्न होते अच्छे भाव उत्पन्न होना ।

ड. बहुत सुंदर द्रव्यों के साथ वेद का अभ्यास करना ।

५१. भाव वेद यानी ?

अ. नामकर्म के उदय से शरीर के आकार में जो लिंग सूचक आकार मिले वह ।

ब. नाम कर्म के उदय से मैथुन सेवन के भाव उत्पन्न होना ।

क. मैथुन सेवन की इच्छा उत्पन्न होते अच्छे भाव उत्पन्न होना ।

ड. मोहनीय कर्म के उदय से मैथुन सेवन की उत्पन्न होती ईच्छा ।

५२. अनपवर्त्य यानी ?

अ. जिस आयुष्य कर्म को उपक्रम लगे या न लगे अर्थात् निमित्त मिले या न मिले उसकी स्थिति का ह्रास न हो वह ।

ब. जिस आयुष्य कर्म को उपक्रम ज़रूर लगे अर्थात् निमित्त ज़रूर मिले और तब उसकी स्थिति का ह्रास हो वह ।

क. आयुष्य की स्थिति का ह्रास न हो उसमें निमित्त मिले ऐसी स्थिति ।

ड. आयुष्य की स्थिति का ह्रास हो उसमें निमित्त न मिले ऐसे स्थिति ।

५३. सोपक्रम यानी ?

अ. जिस आयुष्य कर्म को उपक्रम लगे या न लगे अर्थात् निमित्त मिले या न मिले उसकी स्थिति का ह्रास न हो वह ।

ब. जिस आयुष्य कर्म को उपक्रम लगे अर्थात् निमित्त मिले तो उसकी स्थिति का ह्रास हो वह।

क. आयुष्य की स्थिति का ह्रास होने में निमित्त मिलना ।

ड. आयुष्य की स्थिति का ह्रास होने में निमित्त न मिलना ।

५४. निरुपक्रम यानी ?

अ. आयुष्य की स्थिति का ह्रास होने में निमित्त मिले वह स्थिति ।

ब. जिस आयुष्य कर्म को उपक्रम लगे अर्थात् निमित्त मिले तो उसकी स्थिति का ह्रास हो वह।

क. जिस आयुष्य कर्म को उपक्रम लगे या न लगे अर्थात् निमित्त मिले या न मिले उसकी स्थिति का ह्रास न हो वह ।

ड. आयुष्य की स्थिति का ह्रास होने में निमित्त न मिलना ।

५५. नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य बताएं ।

अ. देव और नारक के सिवा सभी जीवों का मूल शरीर आहारक होता है ।

ब. आहारक लब्धि वाले कोई मनुष्य या तिर्यंच को लब्धि प्रत्यय शरीर होता है ।

क. कार्मण शरीर द्वारा व्यक्त रूप से जरा सा (अल्प) भी सुख-दु:ख का अनुभव, कर्म बंध, कर्म का अनुभव तथा कर्म निर्जरा नहीं होता ।

ड. गर्भज और सम्मूर्च्छिम जीवों को औदारिक शरीर ही होता है ।

५६. नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य बताएं ।

अ. मात्र गर्भज मनुष्य को लब्धि प्रत्यय वैक्रिय शरीर होता है ।

ब. संख्यात वर्ष आयुष्य वाले जीवों का आयुष्य अनपवर्त्य होता है ।

क. जिस समय जीव शरीर के योग्य आहार ग्रहण न करें तब वे अनाहारक कहलाते हैं ।

ड. उत्पत्ति के स्थान में रहे वैक्रिय पुद्गलों का सर्वप्रथम ग्रहण वह गर्भ जन्म ।

५७. नीचे के वाक्योंमां से गलत वाक्य बताएं ।

अ. जरायुज जन्म में जीव गर्भाशय में रहे मांस और रक्त के आवरण से गुंथा हुआ होता है ।

ब. जरायुज जीव जन्म लेते ही चलते हैं ।

क. पोतज जन्म में जीव गर्भाशय में रहे मांस और रक्त के आवरण से गुंथा नहीं होता ।

ड. पोतज जन्म में जीव जन्म लेते ही चलने की आदत वाले होते हैं ।

५८. नीचे के वाक्योंमां से गलत वाक्य बताएं ।

अ. जीव को एक साथ कम से कम दो और अधिक से अधिक चार शरीर हो सकते हैं ।

ब. जीव को अपांतराल गति में कार्मण और तैजस ऐसे दो शरीर होते हैं ।

क. जीव को जब तीन शरीर हो तब कार्मण, तैजस और औदारिक अथवा कार्मण, तैजस और वैक्रियक शरीर होते हैं ।

ड. जीव को जब चार शरीर हो तब कार्मण, तैजस, औदारिक और वैक्रिय शरीर ही होता है ।

५९. नीचे के वाक्योंमां से गलत वाक्य बताएं ।

अ. अचित्त योनी देव और नारकों को होती है ।

ब. गर्भज प्राणीओं को मिश्र (सचित्ताचित्त) योनी होती है ।

क. देव और गर्भज मनुष्य-तिर्यंचों को शीतोष्ण योनी होती है ।

ड. सर्व जीवों को तीन प्रकार की यानी कि सचित्त, अचित्त और सचित्ताचित्त योनी होती है।

६०. नीचे के वाक्यों में से गलत वाक्य बताएं ।

अ. तैजस शरीर की शक्ति बराबर हो तो खुराक का पाचन बराबर होता है ।

ब. विशेषावश्यक भाष्य की टीका में बताया है कि जीव के अपवर्तनीय आयुष्य को उपक्रम लगता ही है, ऐसा नियम नहीं ।

क. तत्त्वार्थ सूत्र के भाष्य में अपवर्तनीय आयुष्य को उपक्रम अवश्य लगता है पर आयुष्य नहीं घटता, ऐसा बताया है ।

ड. तत्त्वार्थ सूत्र के भाष्य के मुताबिक अपवर्तनीय आयुष्य सोपक्रम ही होता है, निरुपक्रम नहीं होता ।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक. (कुल १५ x २ = ३० अंक)

६१.

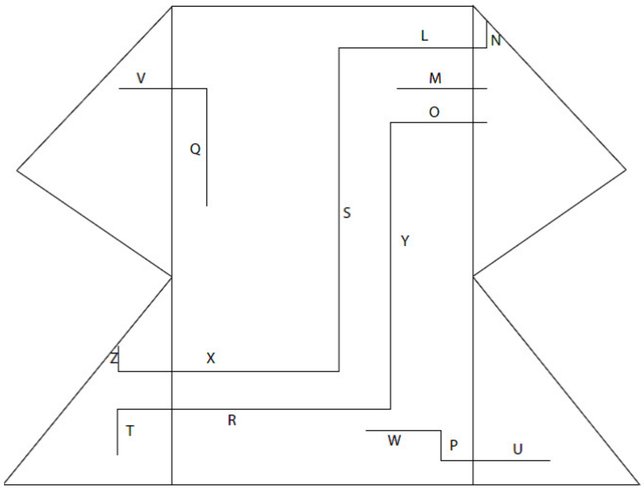

उपर्युक्त चित्र में जीवों की भवांतर में जाने हेतु होनेवाली गति दर्शाई गई है । इसमें उन सभी गति के समयों को `L' लेकर `Z' तक की संज्ञा दी गई है । तत्त्वार्थ सूत्र के चार विद्यार्थियों (A,B,C,D) ने निम्नलिखित कोष्ठक में इन समयों को आहारक एवं अनाहारक रूप में विभाजित किया है । जीव जिन समयों में आहार लेता है, उन समयों को 'आहारक' column में तथा जिन समयों में जीव अनाहारक होता है उन समयों को 'अनाहारक' column में रखा है । चार में से किस विद्यार्थी का विभागीकरण सही है ?

	अनाहारक	आहारक
अ.	P, L, S, Q, Y. U	M, V, W, T, O Z, N, X, R
ब.	X, R, Y, T, N, V	Q, W, O, M, U, Z, L, P, S
क.	L, R, S, Y, X, P	W, T, Z, U, V, N, Q, O, M
ड.	L, X, S, Y, Q, W	U, O, N, V, Z, M, P, R

६२. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य जीवों के जन्म के परिप्रेक्ष्य में सही नहीं है ?

अ. देवों तथा नारकों का जन्म क्रमशः कुंभी और शय्या में होता है । दोनों स्वयं के शरीर की ऊँचाई आदि के साथ संपूर्ण तैयार होकर अंतर्मुहूर्त में उत्पन्न होते हैं ।

ब. स्त्री-पुरुष के संयोग बिना योग्य स्थान पर जीव शरीर योग्य पुद्‌गलों को ग्रहण कर मनुष्य बन जाए, यह मनुष्य का संमूर्च्छिम जन्म हुआ ।

क. जो जीव गर्भाशय में किसी भी आवरण से रहित होता है तथा जन्म लेते ही चलने लगता है, वह पोतज कहलाता है, जैसे-नेवला ।

ड. स्त्री-पुरुष के संयोग के बाद अंडे से उत्पन्न होने वाले प्राणी अंडज कहलाते हैं । जैसे-पक्षी ।

६३. निम्नलिखित विकल्पों में निर्दिष्ट जीव के साथ उसकी योनि का प्रकार रखा गया है । कौन-सा विकल्प सही है ?

(शेष जीव से देव-नारक, गर्भज तिर्यंच और गर्भज मनुष्य के अलावा एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और संमूर्च्छिम पंचेन्द्रिय जीव समझना)

	जीव	शीत–उष्ण–मिश्र	सचित–अचित–मिश्र	संवृत–तिवृत–मिश्र
अ.	गर्भज मनुष्य	मिश्र	सचित्त	संवृत
	देव	मिश्र	अचित्त	संवृत
ब.	शेष जीव	शीत, उष्ण, मिश्र,	सचित, अचित्त, मिश्र,	विवृत
	नारक	मिश्र	अचित्त	संवृत
क.	देव	मिश्र	अचित	संवृत्त
	गर्भज तिर्यंच	शीत, उष्ण	सचित, अचित	मिश्र
ड.	नारक	शीत, उष्ण	अचित्त	संवृत
	गर्भज मनुष्य	मिश्र	मिश्र	मिश्र

६४. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा शरीर के संदर्भ में गलत नहीं है ?

अ. अत्यंत स्थूल पुद्गलों से बना शरीर औदारिक है तथा अप्रमत्त चौदह पूर्वधर मुनि द्वारा रचा जाने वाला शरीर आहारक है ।

ब. जीव के बँधे हुए कर्मों का समूह ही कार्मण शरीर है तथा जिस शरीर को विविध स्वरूप में रचा जा सकता है, वह वैक्रिय शरीर है ।

क. भोजन को पचाने का कार्य करनेवाला लब्धिप्रत्यय तैजस शरीर है तथा आहारक लब्धिवाले चौदह पूर्वी मुनि द्वारा रचा जाने वाला शरीर आहारक है ।

ड. वैक्रिय लब्धिवाले मुनि द्वारा रचा जानेवाला एक हाथ प्रमाण दिव्य शरीर आहारक है तथा उष्ण तैजस लब्धि और शीत तैजस लब्धि के उपयोग से अन्य जीव पर क्रमशः अपकार और उपकार होता है ।

६५. निम्नलिखित विकल्पों में से कौन-सा विकल्प जीवों के ५ शरीरों के परिप्रेक्ष्य में सही नहीं है ?

अ. तैजस शरीर औदारिक शरीर से सूक्ष्म है किन्तु उसमें औदारिक शरीर से अनंतगुना प्रदेश अधिक है ।

ब. वैक्रिय शरीर कार्मण शरीर की अपेक्षा से अधिक घन नहीं है किंतु कार्मण शरीर में वैक्रिय शरीर से अनंतगुना प्रदेश हैं ।

क. तैजस शरीर में आहारक शरीर की अपेक्षा से असंख्य गुना प्रदेश हैं किंतु तैजस शरीर आहारक शरीर की अपेक्षा से सूक्ष्म है ।

ड. औदारिक शरीर की अपेक्षा से आहारक शरीर अधिक सूक्ष्म है तथापि आहारक शरीर में औदारिक शरीर से असंख्य गुना प्रदेश हैं ।

६६. \`P' जीव ने लब्धि से एक विशिष्ट शरीर का निर्माण किया, जिससे दूसरों पर उपकार होता है। \`Q' जीव गर्भाशय में किसी भी आवरण से रहित था। इस जीव ने स्वयं की लब्धि का उपयोग कर एक हाथ प्रमाण ऐसे दिव्य शरीर की रचना की, जिससे वह एक साथ अनेक रूप धारण कर सकता है।

\`R' जीव ने लब्धि से एक हाथ प्रमाण दिव्य शरीर की रचना कर उस शरीर को महाविदेह क्षेत्र में विचरते तीर्थंकर के पास स्वयं की जिज्ञासा की संतुष्टि के लिए भेजा।

\`S' जीव ने संवृत योनि में उत्पन्न होकर अंतर्मुहूर्त में शरीर की संपूर्ण ऊँचाई प्राप्त की। यह जीव स्वयं की लब्धि से एक विशिष्ट शरीर का निर्माण करता है किंतु पाप की प्रबलता से इसे अतिशय कष्ट होता है।

निम्नलिखित कोष्ठक में इन जीवों की पहचान और निर्मित शरीर का प्रकार लिखे हुए हैं। तत्त्वार्थ सूत्र का मेधावी विद्यार्थी निम्नलिखित चार विकल्पों में से किस सही विकल्प को पसंद करेगा?

	P	Q	R	S
अ.	गर्भज मनुष्य शीत तेजोलेश्या	गर्भज मनुष्य वैक्रिय शरीर	चौदह पूर्वधर प्रमत्त मुनि-आहारक शरीर	देव उत्तर वैक्रिय शरीर
ब.	गर्भज मनुष्य उष्ण तेजोलेश्या	चौदह पूर्वधर प्रमत्त मुनि-आहारक शरीर	गर्भज मनुष्य वैक्रिय शरीर	नारक- उत्तर वैक्रिय शरीर
क.	गर्भज तिर्यंच शीत तेजोलेश्या	गर्भज मनुष्य वैक्रिय शरीर	चौदह पूर्वधर अप्रमत्त मुनि-आहारक शरीर	देव - उत्तर वैक्रिय शरीर
ड.	गर्भज मनुष्य शीत तेजोलेश्या	गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर	चौदह पूर्वधर प्रमत्त मुनि-आहारक शरीर	नारक- उत्तर वैक्रिय शरीर

६७. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प संसारी जीव को एक साथ संभव नहीं है ?

अ. तैजस-कार्मण-औदारिक-वैक्रिय ब. कार्मण-औदारिक-आहारक

क. तैजस-कार्मण-वैक्रिय-आहारक ड. कार्मण-औदारिक-वैक्रिय

६८. मेरा मूल शरीर औदारिक है। मैं लब्धि से वैक्रिय शरीर का निर्माण भी कर सकता हूँ लेकिन वह लब्धि मुझे तप के सेवन से नहीं किंतु स्वाभाविक रूप से ही प्राप्त हुई है। पहचानो मैं कौन हूँ?

अ. अप्काय ब. तेउकाय क. वायुकाय ड. देव और नारक।

६९. निम्नलिखित विकल्पों में से कौन-सा विकल्प वेद के लिए सही नहीं है ?

अ. देवों में द्रव्य और भाव, दोनों अपेक्षा से नपुंसक वेद नहीं होता।

ब. गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्यों में भाव से तीनों वेद होते हैं।

क. नारक नपुंसक ही होते हैं तथा संमूर्च्छिम जीव द्रव्य से स्त्री-पुरुष होते हैं।

ड. पुरुष के साथ विषयसेवन की इच्छा पुरुष वेद है तथा स्त्री के साथ विषय सेवन की अभिलाषा स्त्री वेद है।

७०. आहार न मिलने के कारण तथा अधिक आहार के कारण मृत्यु होने में क्रमशः .... और ..... उपक्रम हैं -

अ. निमित्त, आहार ब. आहार, आहार क. वेदना, निमित्त ड. वेदना, पराघात

७१. निम्नलिखित विकल्पों में से कौन-सा विकल्प आयुष्य के संबंध में गलत नहीं है ?

अ. औपपातिक जीवों का सोपक्रम अनपवर्तनीय आयुष्य है क्योंकि नारक जीव को छेदन-भेदन आदि अनेक उपक्रम होते हैं ।

ब. असंख्य वर्ष की आयुष्य वाले जीवों का आयुष्य निरुपक्रम अपवर्तनीय होता है क्योंकि उन्हें कभी कोई उपक्रम उपस्थित नहीं होता ।

क. चरमदेही पुरुषों का आयुष्य सोपक्रम ही होता है क्योंकि उन्हें कर्मनिर्जरा के लिए उपक्रम अवश्य लगता है ।

ड. अनपवर्तनीय आयुष्य को उपक्रम प्राप्त हो या न हो किंतु अपवर्तनीय आयुष्य को तो उपक्रम अवश्य प्राप्त होता है ।

७२. निम्नलिखित में से किस विकल्प द्वारा देवलोक के दिव्य सुखों का अनुभव किया जा सकता है?

अ. औदारिक-वैक्रिय-आहारक ब. कार्मण-वैक्रिय

क. वैक्रिय-उत्तर वैक्रिय ड. तैजस-कार्मण-वैक्रिय

७३. सौ वर्ष का आयुष्य हो ऐसे व्यक्ति को ५० वर्ष की आयु में उपक्रम लगे और बाकि रहे ५० वर्ष के आयुष्य कर्म के दलिकों को कैसे अंतर्मुहूर्त में भोगे जा सकते हैं उसके दृष्टान्त नीचे दिए हैं, उनमें से कौनसा दृष्टान्त सही नहीं है?

अ. एक व्यक्ति चलते हुए रास्ता काटता है वह उसी रस्ते को बस में काटे तो जल्दी से गंतव्य स्थान पर पहुँच जाता है ।

ब. पत्नी की मृत्यु का समाचार पाते ही व्यक्ति आघात से मृत्यु पाता है ।

क. गठरी को जलाने में समय अधिक लगता है जब कि घास को अलग से जलाने में जल्दी जलता है ।

ड. आम को पेड़ पे पकने को अधिक समय लगता है जब कि घास में रखने से जल्दी पकता है ।

७४. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य चौदह पूर्वधर मुनि के संदर्भ में गलत नहीं है ?

अ. चौदह पूर्वधर मुनि वैक्रिय शरीर की रचना के समय प्रमत्त होते हैं तथा आहारक शरीर के उपभोग के समय प्रमत्त होते हैं ।

ब. चौदह पूर्वधर मुनि जब आहारक शरीर की रचना करते हैं तब प्रमत्त होते हैं किंतु वैक्रिय शरीर के उपभोग के समय अप्रमत्त होते हैं ।

क. चौदह पूर्वधर वैक्रिय शरीर की रचना के समय प्रमत्त होते हैं तथा आहारक शरीर के उपभोग के समय अप्रमत्त होते हैं ।

ड. चौदह पूर्वधर आहारक शरीर की रचना के समय अप्रमत्त तथा वैक्रिय शरीर के उपभोग के समय प्रमत्त होते हैं ।

७५. निम्नलिखित दृष्टान्त में से कौन सा दृष्टान्त अनपवर्तनीय आयुष्य का है ?

अ. गजसुकुमाल मुनि की हत्या करने वाला सौमिल ब्राह्मण ।

ब. अष्टापद पर्वत पर एक समय में १०७ जीव के साथ सिद्ध होने वाले ऋषभ देव भगवन ।

क. संप्रति महाराजा का जीव (पूर्व भव में) ।

ड. नाथूराम गोडसे के हाथों से मृत हुए महात्मा गाँधी ।

▮

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-६	अध्याय-३	सूत्र १-१८	जमा करने की अंतिम तारीख ३०/०४/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक. **(कुल ३० x ½ = १५ अंक)**

१. हम .... प्रभा पृथ्वी पर हैं ।
अ. रत्न ब. शर्करा क. वालुका ड. पंक

२. सात नारक पृथ्वी क्रमशः एक के नीचे एक हैं और क्रमशः .... चौड़ी है ।
अ. अधिक अधिक ब. कम कम क. अधिक कम ड. कम अधिक

३. हर नरकावास की ऊँचाई .... हजार योजन है ।
अ. दो ब. तीन क. चार ड. पांच

४. प्रथम नरक में आया पहला सीमंतक नामक इंद्रक नरकावास .... लाख योजन लम्बा - चौड़ा है ।
अ. एक ब. ढाई क. ४५ ड. असंख्य

५. सातवीं नरक में आया अंतिम अप्रतिष्ठान नामक इंद्रक नरकावास .... लाख योजन लम्बा - चौड़ा है ।
अ. एक ब. ढाई क. ४५ ड. असंख्य

६. कभी .... का अर्थ आधार में आधेय के उपचार से नरक का जीव भी होता है ।
अ. वालुका ब. शर्करा क. नरक ड. नारक

७. .... नरक तक के नारक संकलष्ट असुरों से (परमाधामी से) भी दुःख पाते हैं ।
अ. दूसरी ब. तीसरी क. चौथी ड. पांचवी

८. रत्नप्रभा पृथ्वी का सबसे .... भाग तिच्छार्लोक है ।
अ. ऊपर का ब. नीचे का क. मध्य का ड. अच्छा

९. तिर्च्छालोक में प्रथम एक द्वीप बाद समुद्र, पुनः एक द्वीप बाद समुद्र, ऐसे क्रमशः .... द्वीप और समुद्र रहे हैं ।
अ. १० कोटा कोटि ब. संख्यात क. असंख्य ड. अनंत

१०. जगत में ...... पदार्थों के जितने नाम हैं, उन सब नाम के द्वीप और समुद्र हैं ।
अ. शुभ ब. अशुभ क. सफेद ड. सुंदर

११. .... नाम वाला एक भी द्वीप या समुद्र नहीं है ।
अ. शुभ ब. अशुभ क. निजी ड. शुभ अथवा अशुभ

१२. द्वीप समुद्र पूर्व-पूर्व के द्वीप-समुद्र से .... चौड़े हैं ।
अ. दो गुना ब. तीन गुना क. ढाई गुना ड. दस गुना

१३. जंबुद्वीप .... लाख योजन चौड़ा है ।
अ. एक ब. दस क. ढाई ड. ४५

१४. .... समुद्र का पानी खारा है ।
अ. लवण ब. स्वयंभूरमण क. कालोदधि ड. हर

१५. मेरुपर्वत में .... कांड हजार योजन का है । वह शुद्ध मिट्टी, पत्थर, वज्र और रेत का बना है ।
अ. नीचे का ब. बीच का क. ऊपर का ड. उत्तर का

१६. मेरुपर्वत में .... कांड ६३००० योजन का है । वह रजत, सुवर्ण, स्फटिक रत्न और अंक रत्न का बना है ।
अ. उत्तर का ब. नीचे का क. बीच का ड. ऊपर का

१७. मेरुपर्वत में .... कांड ३६००० योजन का है । वह सुवर्ण का बना है ।
अ. नीचे का ब. उत्तर का क. बीच का ड. ऊपर का

१८. .... वन में चार दिशाओं में चार शिलाओं के ऊपर रहे सिंहासन के ऊपर जिनेश्वर भगवंतो का जन्माभिषेक होता है ।
अ. पांडुक ब. नंदन क. सौमनस ड. भद्रशाल

१९. भरत क्षेत्र से .... दिशा में हैमवत आदि छ क्षेत्र क्रमशः आए हैं ।
अ. पूर्व ब. पश्चिम क. उत्तर ड. दक्षिण

२०. भरत क्षेत्र के .... पर्वत के ९ कूटो में विद्याधरों के आवास, इंद्र के लोकपाल देव के सेवकों के आवास, व्यंतरों की क्रीड़ा का स्थान हैं ।
अ. वैताढ्य ब. हिमवंत क. महाहिमवन् ड. नील

२१. वैताढ्य पर्वत में पूर्व की ओर .... नाम की गुफा है ।
अ. खंडप्रपात ब. तमिस्रा क. उत्तरप्रपात ड. नंदनप्रपात

२२. भरत क्षेत्र में .... पर्वत के समीप दक्षिण में गंगा और सिंधु के बीच ऋषभ कूट पर्वत है।
अ. वैताढ्य ब. हिमवंत क. महाहिमवन् ड. नील

२३. 'मागध तीर्थ' शब्द में तीर्थ यानी .... में उतरने का मार्ग ।
अ. नदी ब. कुएं क. तालाब ड. समुद्र

२४. भरत क्षेत्र में कुल .... बिल हैं ।
अ. ९ ब. ३६ क. ५६ ड. ७२

२५. ५६ अंतर्द्वीप .... समुद्र के अंदर होने से अंतर्द्वीप कहलाते हैं ।
अ. लवण ब. कालोदधि क. स्वयंभूरमण ड. नंदन

२६. .... पर्वत के ऊपर पद्मद्रह में पृथ्वीकाय के बने बड़े कमल की कर्णिका में लक्ष्मीदेवी का भवन है ।
अ. वैताढ्य ब. हिमवंत क. महाहिमवन् ड. नील

२७. महाविदेह क्षेत्र में कुल .... विजय हैं ।
अ. ८ ब. १६ क. ३२ ड. ६४

२८. धातकी खंड और पुष्करवर द्वीप के आधे हिस्से में क्षेत्र और पर्वत जंबुद्वीप से .... हैं।
अ. डेढ़ गुना ब. दो गुना क. तीन गुना ड. चार गुना

२९. .... द्वीप के बराबर मध्य में मानुषोत्तर पर्वत किले की तरह वलयाकार से गोल हैं ।
अ. जंबु ब. पुष्करावर्त क. अर्धपुष्करावर्त ड. नंदीश्वर

३०. एक .... की १९ कला होती हैं ।
अ. धनुष ब. गाउ क. योजन ड. समुद्र

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१. इंद्रक नरकावास यानी?
अ. बराबर मध्य में गोलाकार में रहे नरकावास ।
ब. दिशा/विदिशा में रहे त्रिकोण, चोरस या गोल पंक्तिबद्ध नरकावास ।
क. बिछे हुए पुष्पों की तरह बिखरे बिखरे और अलग अलग अशुभ आकार में रहे नरकावास।
ड. वैताढ्य पर्वत में आए नरकावास ।

३२. पंक्ति नरकावास यानी?
अ. दिशा/विदिशा में रहे त्रिकोण, चोरस या गोल पंक्तिबद्ध नरकावास ।
ब. बराबर मध्य में गोलाकार में रहे नरकावास ।
क. हिमवंत और महाहिमवन् पर्वत में आए नरकावास ।
ड. बिछे हुए पुष्पों की तरह बिखरे-बिखरे और अलग-अलग अशुभ आकार में रहे नरकावास।

३३. पुष्पावकीर्ण नरकावास यानी?
अ. बराबर मध्य में गोलाकार में रहे नरकावास ।
ब. महाहिमवन् पर्वत में आए नरकावास ।
क. बिछे हुए पुष्पों की तरह बिखरे बिखरे और अलग अलग अशुभ आकार में रहे नरकावास।
ड. दिशा/विदिशा में रहे त्रिकोण, चोरस या गोल पंक्तिबद्ध नरकावास ।

३४. वर्षधर यानी?
अ. क्षेत्र की सीमा धारण करें वह । ब. एक वर्ष तक जो धरती को धारण कर रखें वह।
क. एक वर्ष तक सीमा धारण करें वह । ड. क्षेत्र की सीमा धारण न करें वह ।

३५. आर्य यानी?
अ. शिष्टलोक के अनुकूल श्रेष्ठ आचरण न करें वह ।
ब. शिष्टलोक के अनुकूळ श्रेष्ठ आचरण करें वह ।

क. क्षेत्र की सीमा धारण करें वह ।
ड. क्षेत्र की सीमा धारण न करें वह ।

३६. मलेच्छ यानी?
अ. क्षेत्र की सीमा धारण करें वह ।
ब. क्षेत्र की सीमा धारण न करें वह ।
क. शिष्टलोक के अनुकूल श्रेष्ठ आचरण न करें वह ।
ड. शिष्टलोक के अनुकूळ श्रेष्ठ आचरण करें वह ।

३७. भव स्थिति यानी?
अ. वतर्मान भव के आयुष्य की स्थिति ।
ब. जिस भव में पुन: पुन: निरंतर जितने काल तक उत्पत्ति हो सके वह ।
क. भव भव के आयुष्य की स्थिति ।
ड. भविष्य के भव के आयुष्य की स्थिति ।

३८. कायस्थिति यानी?
अ. भव भव के आयुष्य की स्थिति ।
ब. जिस भव में पुन: पुन: निरंतर जितने काल तक उत्पत्ति हो सके वह ।
क. वतर्मान भव के आयुष्य की स्थिति ।
ड. भविष्य के भव के आयुष्य की स्थिति ।

३९. नीचे के वाक्यों में गलत वाक्य बताएं ।
अ. लंबाई - चौड़ाई में नरकावास असंख्यात योजन के हैं ।
ब. नरक में परस्पर युद्ध मिथ्यादृष्टि नारक ही करते हैं, सम्यग्दृष्टि नहीं । सम्यग्दृष्टि नारक तो समता भाव से सहन करते हैं ।
क. वैक्रिय लिब्ध से मनुष्य तथा तिर्यंच नरक में जा सकते हैं ।
ड. मनुष्य और तिर्यंच दोनों की जघन्य और उत्कृष्ट आयु समान हैं ।

४०. नीचे के वाक्यों में गलत वाक्य बताएं ।
अ. जघन्य कायस्थिति मनुष्य और तिर्यंच की अंतर्मुहूर्त है ।
ब. जैन शास्त्र की दृष्टि से पृथ्वी का आकार अंडे के समान है ।
क. जैन शास्त्र की दृष्टि से पृथ्वी स्थिर और सूर्य/चन्द्र मेरूपर्वत के आसपास परिभ्रमण करते हैं ।
ड. सभी संमूर्च्छिम जीवों का उत्कृष्ट आयुष्य अंतर्मुहूर्त नहीं ।

४१. नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य बताएं ।
अ. नरकगति को सब प्रत्यक्ष प्रमाण से जान सकते हैं ।
ब. तिर्च्छालोक में जंबुद्वीप, लवण आदि नाम के अशुभ द्वीप और समुद्र आए हैं ।
क. कालोदधि समुद्र का पानी खारा हैं ।
ड. मनुष्य और तिर्यंच गति में सदैव दुःख नहीं होता, सुख और दुःख दोनों होते हैं ।

४२. नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य बताएं ।
   अ. नारक मर के दोबारा नारक रूप में जन्म ले सकते हैं ।
   ब. नरक गति के बंध के कारण बहुआरंभ और बहुपरिग्रह हैं ।
   क. नरक से निकलकर जीव मनुष्य के रूप में जन्म ले सकते हैं ।
   ड. वैक्रिय लब्धि वाले जीव नरक के अलावा समग्र लोक में प्रवर्त हो सकते हैं ।

४३. नीचे के वाक्यों में से गलत वाक्य बताएं ।
   अ. नरक में मांस आदि नहीं होते, पर वहाँ की पृथ्वी के परिणाम मांस जैसे होते हैं ।
   ब. सभी नारक एक दूसरे को दुःख देते हैं ।
   क. परमाधामी देव नारकों को दुःख देने में आनंद पाते हैं ।
   ड. नारकों को अशुभ देह, अशुभ वेदना, अशुभ द्रव्य लेश्या होती है ।

४४. अंब जाति के परमाधामी देवों का कार्य क्या है?
   अ. नारकों में भय उत्पन्न करना और भयभीत नारकों के पीछे पड़ना ।
   ब. नारकों को मूर्छित करना और मूर्छित हुए नारकों के शरीर के टुकड़े करना ।
   क. नारकों के अंगोपांग छेदना और उन्हें गेंद की तरह उछालना ।
   ड. नारकों की अंतड़ी और मांस बाहर निकाल उसी नारक को उसके दर्शन कराना ।

४५. अंबरिस जाति के परमाधामी देवों का कार्य क्या है?
   अ. नारकों के शरीर में त्रिशूल आदि पिरोना और उन्हें अग्नि में धकेलना ।
   ब. दुःख से रोते नारकों को पकड़कर उनके अंगोपांग छेदना ।
   क. नारकों की अंतड़ी और मांस बाहर निकाल उसी नारक को उसके दर्शन कराना ।
   ड. नारकों को मूर्छित करना और मूर्छित हुए नारकों के शरीर के टुकड़े करना ।

४६. श्याम जाति के परमाधामी देवों का कार्य क्या है?
   अ. नारकों को मूर्छित करना और मूर्छित हुए नारकों के शरीर के टुकड़े करना ।
   ब. नारकों के पास एक दूसरे के शरीर की चमड़ी छिलवाना ।
   क. नारकों के अंगोपांग छेद कर गेंद की तरह फेंकना ।
   ड. नारकों की अंतड़ी और मांस बाहर निकाल उसी नारक को उसके दर्शन कराना ।

४७. शबल जाति के परमाधामी देवों का कार्य क्या है?
   अ. दुःख से रोते नारकों को पकड़कर उनके अंगोपांग छेदना ।
   ब. नारकों को मूर्छित करना और मूर्छित हुए नारकों के शरीर के टुकड़े करना ।
   क. नारकों के अंगोपांग छेदना और उन्हें गेंद की तरह उछालना ।
   ड. नारकों की अंतड़ी और मांस बाहर निकाल उसी नारक को उसके दर्शन कराना ।

४८. रुद्रजाति के परमाधामी देवों का कार्य क्या है?
   अ. नारकों में भय उत्पन्न करना और भयभीत नारकों के पीछे पड़ना
   ब. नारकों के शरीर में त्रिशूल आदि पिरोना और उन्हें अग्नि में धकेलना ।
   क. नारकों के अंगोपांग छेदना और उन्हें गेंद की तरह उछालना ।
   ड. नारकों की अंतड़ी और मांस बाहर निकाल उसी नारक को उसके दर्शन कराना ।

४९. वालुक जाति के परमाधामी देवों का कार्य क्या है?
 अ. दुःख से रोते नारकों को पकड़कर उनके अंगोपांग छेदना ।
 ब. नारकों की अंतड़ी और मांस बाहर निकाल उसी नारक को उसके दर्शन कराना ।
 क. नारकों को चने की तरह सेंकना ।
 ड. नारकों को मूर्छित करना और मूर्छित हुए नारकों के शरीर के टुकड़े करना ।

५०. वैतरणी जाति के परमाधामी देवों का कार्य क्या है?
 अ. दुःख से रोते नारकों को पकड़कर उनके अंगोपांग छेदना ।
 ब. नारकों को अत्याधिक तपे लोहे की नाव में बिठाना ।
 क. नारकों को चने की तरह सेंकना ।
 ड. दुःख से रोते नारकों को पकड़कर उनके अंगोपांग छेदना ।

५१. नीचे दिए वाक्यों में से सही वाक्य कहें ।
 अ. मेरुपर्वत के कुल ४ कांड बताएं हैं ।
 ब. मेरुपर्वत का नीचे का प्रथम कांड १ लाख योजन का है ।
 क. मेरुपर्वत का द्वीतीय कांड ६३००० योजन का शुद्ध मिट्टी और पत्थर से बना है।
 ड. मेरुपर्वत का तीसरा कांड सुवण का बना है, जो ३६००० योजन का है ।

५२. नीचे दिए वाक्यों में से कौन सा वाक्य मेरुपर्वत की अपेक्षा से सही नहीं?
 अ. वह तीनों लोक में उपस्थित है, अधोलोक में १०० योजन, मध्यलोक में १८०० योजन और ऊध्वर्लोक में ९८१०० योजन ।
 ब. उसकी कुल ऊंचाई एक लाख योजन है, जिसमें ऊपर का प्रथम कांड १००० योजन, मध्य का दूसरा कांड ६३००० योजन और नीचे का तीसरा कांड ३६००० योजन हैं ।
 क. समभूतला पृथ्वी के ऊपर उसकी चारों ओर भद्रशाल नाम का वन है । और वहाँ से ५०० योजन ऊपर चारों ओर नंदनवन है ।
 ड. मेरु की चौड़ाई नीचे जमीन में १००९०(१०/११) योजन, समभूतला पर १०००० योजन और ऊपर के भाग में १००० योजन है ।

५३. नीचे दिए जंबुद्वीप के वर्णन में कौन सा वाक्य गलत है?
 अ. उसकी चारों ओर फिरती जगती नामक वज्रमणिमय दीवार है, जिसकी ऊँचाई आठ योजन है ।
 ब. उसके बराबर मध्य में एक हजार योजन ऊँचाई वाला मेरुपर्वत आया हैं ।
 क. उसकी चौड़ाई एक लाख योजन है ।
 ड. उसका आकार थाली जैसा गोल है ।

५४. किस संघयण वाले जीव कौन सी नरक तक जा सकते हैं वह नीचे दिया गया है । उसमें एक विकल्प गलत है, वह बताएं ।
 अ. कीलिका संघयण - तीसरी नरक तक
 ब. सेवार्त संघयण - दूसरी नरक तक

क. अर्धनाराच संघयण - चौथी नरक तक

ड. ऋषभनाराच संघयण - सातवीं नरक तक

५५. नीचे दिए कौन से समुद्र का पानी कैसा है उन विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

अ. वारुणीवर - स्वाभाविक जल ब. पुष्करवर - दारुसमान जल

क. स्वयंभूरमण - स्वाभाविक जल ड. कालोदधी - गन्ने समान मधुर जल

५६. कौन सी नरक में आयुष्य की क्या उत्कृष्ट स्थिति होती है उस में नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

अ. सातवीं नरक - १ सागरोपम ब. छठी नरक - ३ सागरोपम

क. पाँचवीं नरक - ७ सागरोपम ड. चौथी नरक - १० सागरोपम

५७. कौन सी नरक में कौन सा जीव जा सकता है उसमें नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही नहीं है?

अ. गर्भज भुजपरिसर्प - तीसरी नरक तक

ब. सिंह - चौथी नरक तक

क. सर्प - पाँचवीं नरक तक

ड. असंज्ञी पयाप्त तिर्यंच पंचेन्द्रिय - पहली नरक तक

५८. कौन सी नरक में कौन सी लेश्या होती है उसमें नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही नहीं है?

अ. पहेली, दूसरी और तीसरी नरक के जीवों में कापोत लेश्या होती है ।

ब. चौथी नरक में नील लेश्या होती है ।

क. छठी नरक में कृष्ण लेश्या होती है ।

ड. सातवीं नरक में छठी नरक से अधिक अशुभ कृष्ण लेश्या होती है ।

५९. नीचे दिए नरक की पृथ्वी के वर्णन में कौन सा विकल्प सही है?

अ. रत्नप्रभा - मोटाई १८०००० योजन, ऊंचाई एक रज्जु, प्रतर संख्या - ११

ब. वालुकप्रभा - मोटाई १३२००० योजन, ऊंचाई ढाई रज्जु, प्रतर संख्या - ११

क. तम:प्रभा - मोटाई १२८००० योजन, ऊंचाई एक रज्जु, प्रतर संख्या - ९

ड. तम:तम:प्रभा - मोटाई १८०००० योजन, ऊंचाई सात रज्जु, प्रतर संख्या - १

६०. जंबुद्वीप के सात क्षेत्रों के नाम नीचे दिए हैं । उनमें कौन सा विकल्प दक्षिण से उत्तर क्रमशः सही है?

अ. भरत, हैमवत, हरिवर्ष, विदेह, हैरण्यवत, रम्यक, ऐरावत.

ब. भरत, हैमवत, हरिवर्ष, विदेह, रम्यक, हैरण्यवत, ऐरावत.

क. भरत, हैमवत, हरिवर्ष, हैरण्यवत, विदेह, रम्यक, ऐरावत.

ड. भरत, हैमवत, विदेह, हरिवर्ष, हैरण्यवत, रम्यक, ऐरावत.

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक. (कुल १५ x २ = ३० अंक)

६१. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य नरक के परिप्रेक्ष्य में सही नहीं है ?

अ. प्रत्येक पृथ्वी में इन्द्रक नरकावास गोल हैं, पंक्तिगत नरकावास त्रिकोण आदि आकारवाले हैं ।

ब. प्रत्येक नरकावास की ऊँचाई तीन हजार योजन तथा लंबाई-चौड़ाई संख्यात अथवा असंख्य योजन है ।

क. सातों पृथ्वी में ऊपर-नीचे एक-एक हजार योजन छोड़कर मध्य में नरकावास हैं । जैसे तमः तमः प्रभा में मध्य के १०६००० यो. में नरकावास हैं ।

ड. सातवी पृथ्वी और पहली पृथ्वी के इन्द्रक नरकावास क्रमशः तिर्च्छालोक में जंबूद्वीप और मनुष्यक्षेत्र जितने प्रमाण वाले हैं ।

६२. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य नरक की अशुभता के संदर्भ में गलत नहीं है ?

अ. पाँचवी नरक के ऊपर वाले प्रतरों में नारकों को नीललेश्या तथा नीचेवाले प्रतरों में कृष्ण लेश्या सातवीं पृथ्वी के नारकों की अपेक्षा अधिक अशुभ होती है ।

ब. सातवीं नरक के नारकों की अपेक्षा से तीसरी नरक के नारकों की वेदना अधिक होती है क्योंकि सातवीं नरक में परमाधामी देव नहीं होते ।

क. दूसरी नरक पृथ्वी के नारकों को करुण शब्द सदा नहीं सुनाई देते किन्तु छठ्ठी नरक के जीवों को अधिक पीड़ा से करुण शब्द निरंतर सुनाई देते हैं ।

ड. नारकों को हुंडक संस्थान होता है तथा वैक्रिय शरीर देवों जैसा शुभ नहीं होता । वे शुभ शरीर बनाने की प्रवृत्ति करते हैं तो भी पापोदय से अशुभ ही बनता है ।

६३. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य सही नहीं है ?

अ. नरक में वैतरणी नदी शाश्वत होती है जिसमें खून, चर्बी, पस, हड्डी आदि अशुचि पदार्थ तैरते रहते हैं।

ब. दो नारक परस्पर जिन शस्त्रों से युद्ध करते हैं, वे शस्त्र क्षेत्र के प्रभाव से उत्पन्न होते हैं । उन्हें परमाधामी देव नहीं बनाते हैं ।

क. परमाधामी देव आनंद के अनेक साधन होने पर भी पापानुबंधी पुण्य से नारकों को दुःख देकर आनंदित होते हैं ।

ड. महाकाल नामक परमाधामी नारकों को उनके ही शरीर का माँस काटकर खिलाते हैं ।

६४. ग्रन्थ में दिए गए अधोलोक के चित्र को देखें । उसमें सात नरक पृथ्वियाँ तथा उनका क्रम दर्शाया गया है । उस चित्र को ध्यान में रखकर निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनें।

अ. पहली पृथ्वी का नाम रत्नप्रभा है । इसमें नारकों की उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम है । इस पृथ्वी में परमाधामी कृत वेदना भी होती है । इस पृथ्वी में ३० लाख नरकावास हैं।

चौथी पृथ्वी का नाम पंकप्रभा है । यह पृथ्वी १२०००० योजन गहरी तथा चार राज विस्तृत है । इसमें सात प्रतर हैं । इस पृथ्वी के नारकों को नील लेश्या होती है ।

ब. दूसरी पृथ्वी का नाम शर्कराप्रभा है । इस पृथ्वी में २५ लाख नरकावास हैं तथा ११ प्रतर हैं । इस पृथ्वी में परमाधामी कृत वेदना भी होती है । इस पृथ्वी के नारकों की उत्कृष्ट स्थिति ३ सागरोपम है ।

पाँचवी पृथ्वी का नाम धूमप्रभा है । इस पृथ्वी अधिकतर नारकों को शीत तथा कुछ नारकों को उष्ण वेदना होती है । इस पृथ्वी की गहराई और चौड़ाई क्रमशः ११८००० यो. और ६ राज है ।

क. छठ्ठी पृथ्वी का नाम तमः प्रभा है । इस पृभ्वी में परमाधामीकृत वेदना होती है । इस पृथ्वी में ९९९९५ नरकावास और ३ प्रतर हैं । इस पृथ्वी के नारकों को कृष्ण लेश्या होती है ।

तीसरी पृथ्वी वालुकाप्रभा है । इस पृथ्वी का विस्तार ४ राज तथा गहराई १२८००० योजन है । इस पृथ्वी के नारकों की उत्कृष्ट स्थिति ७ सागरोपम है ।

ड. सातवी पृथ्वी तमः तमः प्रभा है । इस पृथ्वी में १ प्रतर तथा ५ नरकावास हैं । इस पृथ्वी में परमाधामी कृत वेदना नहीं होती । इस पृथ्वी के नारकों को शीत वेदना होती है ।

पाँचवी पृथ्वी का नाम धूमप्रभा है । इस पृथ्वी का विस्तार ११८००० योजन तथा गहराई ५ राज है । इस पृथ्वी में ऊपर की प्रतरों में नारकों का नील लेश्या तथा नीचे की प्रतरों में कृष्ण लेश्या होती हैं ।

६५. ग्रन्थ में दिए गए मेरु पर्वत के चित्र को ध्यान से देखें । उसमें मेरु पर्वत से संबंधित चार वनों को निचे से ऊपर क्रमश: P,Q,R,S संज्ञा दी गई है । निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प ढूँढें ।

अ. `Q' वन का नाम नंदनवन है । यह समभूतला पृथ्वी से ५०० योजन नीचे है ।

`S' वन का नाम सोमनस वन है । यह वन नंदनवन से ९८५०० योजन है ।

ब. `P' पांडुकवन है । यह वन सोमनस वन से ६३००० योजन नीचे है ।
`R' नंदनवन है । यह वन पंडुक वन से ३६००० योजन नीचे है ।

क. `S' पांडुकवन है । यह सोमनस वन से ३६००० योजन ऊपर है ।
`R' सोमनस है । यह नंदनवन से ६२५०० योजन ऊपर है ।

ड. `P' भद्रशालवन है । यह वन सोमनस वन से ६३००० योजन नीचे है ।
`Q' नंदनवन है । यह वन पंडुक वन से ३६००० योजन नीचे है ।

६६. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य गलत है ?

अ. दूसरी नरक से आया हुआ जीव अरिहंत बन सकता है तथा पाँचवी नरक में से आया हुआ जीव देशविरति श्रावक हो सकता है ।

ब. खरस्वर परमाधामी नारकों को शाल्मलि वृक्ष पर चढ़ाते हैं, अतः नरक में वनस्पति होती है।

क. नारक मृत्यु पाकर पुनः नरक में उत्पन्न नहीं होते तथा देव भी नहीं बनते क्योंकि उन्हें उन आयुष्य के कारणभूत आस्रवों का अभाव होता है ।

ड. भवनपति और व्यंतर देव प्रथम नरक तथा वैमानिक देव तीसरी अथवा चौथी नरक तक जा सकते हैं । मनुष्य और तिर्यंच भी नरक में जा सकते हैं ।

६७. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य द्वीप-समुद्रों के लिए गलत नहीं है ?

अ. आगे-आगे वाले समुद्र पूर्व-पूर्व के समुद्र से तथा आगे-आगे वाले द्वीप पूर्व-पूर्व के द्वीप से दो-दो गुना बड़े हैं ।

ब. नंदीश्वर द्वीप नंदीश्वर समुद्र से दो गुना विस्तृत है तथा ईक्षुवर समुद्र से आधे विस्तार वाला है ।

क. लवण समुद्र में खारा पानी, क्षीरवर समुद्र में दूध, धृतवर समुद्र में घी, स्वयंभूरमण समुद्र में स्वाभाविक जल है ।

ड. लवण समुद्र को धातकीखंड ने, वारुणीवर द्वीप को वारुणीवर समुद्र ने तथा कालोदधि समुद्र को पुष्करवर द्वीप ने घेरा हुआ है । सबसे अंतिम स्वयंभूरमण समुद्र है ।

६८. निम्नलिखित स्थानों में से किस स्थान पर व्यंतर देव क्रीड़ा नहीं करते हैं ?

अ. पांडुक वन की शिलाओं पर ।

ब. जंबूद्वीप की जगती के गवाक्ष में

क. वैताढ्य पर्वत के बगीचे और क्रीड़ापर्वत पर

ड. जंबूद्वीप की जगती के लतागृह-कदलीगृह आदि ।

६९. गर्भज जलचर की उत्कृष्ट भवस्थिति, अप्काय की जघन्य कायस्थिति, संमूर्च्छिम मनुष्यों की उत्कृष्ट भवस्थिति तथा साधारण वनस्पति की उत्कृष्ट कायस्थिति क्रमशः निम्नलिखित है ।

अ. तीन पल्योपम, ७ हजार वर्ष, तीन पल्योपम, संख्यात हजार वर्ष ।

ब. पूर्व करोड़ वर्ष अंतर्मुहूर्त, अंतर्मुहूर्त, अनंत उत्सर्पिणी अवसर्पिणी ।

क. पूर्व करोड वर्ष, ७ हजार वर्ष, अंतर्मुहूर्त, असंख्य उत्सर्पिणी अवसर्पिणी ।

ड. अंतर्मुहूर्त, अंतर्मुहूर्त, तीन पल्योपम, अनंत उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी ।

७०. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य मनुष्य के संबंध में गलत नहीं है ?

अ. मात्र कर्मभूमि में ही गर्भज मनुष्य उत्पन्न होते हैं, शेष भूमि में संमूर्च्छिम मनुष्य ही उत्पन्न होते हैं ।

ब. मात्र कर्मभूमि में ही चक्री, वासुदेव आदि का जन्म होता है; शेष भूमि में युगलिक मनुष्यों का ही जन्म होता है ।

क. मात्र कर्मभूमि में ही आर्य मनुष्यों का जन्म होता है; शेष भूमि में उत्पन्न मनुष्य अनार्य होते हैं ।

ड. ढ़ाई द्वीप के बाहर तिर्यंचों का जन्म-मरण होता है तथा ढ़ाई द्वीप में भी तिर्यंचों का जन्म-मरण होता है ।

७१. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य सही नहीं है ?

अ. वर्तमानकाल में जंबूद्वीप में २० विहरमान तीर्थंकर हैं ।

ब. जंबूद्वीप के लाख योजन के विष्कम्भ (व्यास) के १९० खंड करने पर १ खंड ५२६ योजन और ६ कला प्रमाण होता है । महाविदेह क्षेत्र ६४ खंड प्रमाण है ।

क. वैताढ्य पर्वत और गंगा-सिंधु नदी से भरत क्षेत्र के ६ खंड होते हैं । इनमें दक्षिणार्थ के मध्य खंड में ही तीर्थंकर आदि उत्तम पुरुष होते हैं ।

ड. अंतर्द्वीप लवण समुद्र में हैं । वहाँ युगलिक मनुष्यों का जन्म होता है, जिनकी ऊँचाई ८०० धनुष होती है ।

७२. निम्नलिखित में से कौन-सी वस्तु ढ़ाई द्वीप के बाहर संभव है ?

अ. मनुष्य ब. अग्नि क. चंद्र-सूर्य का परिभ्रमण ड. उपर्युक्त में से कोई नहीं ।

७३. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य आर्य-अनार्य मनुष्यों के लिए सही नहीं है ?

अ. आर्य क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाले मनुष्य क्षेत्र आर्य हैं । १५ कर्मभूमियों का कुछ भाग ही आर्य क्षेत्र है ।

ब. मानव जीवन में आवश्यक कला से आजीविका चलानेवाले मनुष्य कर्म आर्य हैं । जैसे - कुम्हार, बुनकर आदि ।

क. अनार्य मनुष्य अत्यंत पापी, क्रूर तथा पाप की जुगुप्सा से रहित होने से घृणा रहित होते हैं । 'धर्म' शब्द वे स्वप्न में भी नहीं जान सकते ।

ड. ३० अकर्मभूमि तथा ५६ अंतर्द्वीप में उत्पन्न होने वाले मनुष्य क्षेत्र से अनार्य हैं क्योंकि वे सभी क्षेत्र अनार्य हैं ।

७४. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य जंबूद्वीप की नदियों और पर्वतों के लिए गलत नहीं है ?

अ. सिंधु नदी लघुहिमवंत पर्वत पर रहे पद्म द्रह से पश्चिम दिशा में निकलकर हैमवत क्षेत्र में प्रवाहित होकर लवण समुद्र को मिल जाती है ।

ब. महाहिमवंत पर्वत महाविदेह क्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र के मध्य में है स्थित है । यह पर्वत २०० योजन ऊँचा तथा ५० योजन भूमि में अवगाढ़ है ।

क. सीतोदा और सीता नदी क्रमशः निषध और नीलवंत पर्वत पर रहे केशरी और तिगिच्छ द्रह से उत्तर और दक्षिण में निकलकर पश्चिम और पूर्व दिशा में लवण समुद्र को प्राप्त होती हैं ।

ड. शिखरी पर्वत जातिवंत सुवर्णमय है । यह १०० योजन ऊँचा तथा २५ योजन भूमि में अवगाढ़ है । इस पर्वत पर ११ कूट हैं । यह पर्वत ऐरावत क्षेत्र तथा हैरण्यवत क्षेत्र के मध्य में स्थित है ।

७५. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य गलत नहीं है ?

अ. रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे घनोदधि २०००० योजन तथा घनवात-तनुवात असंख्य योजन प्रमाण है । नीचे-नीचे की पृथ्वी में इन तीनों की गहराई (उंडाई) बढ़ती जाती है ।

ब. हम रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर हैं । नीचे सातों पृथ्वी में मनुष्य, तिर्यंच, भवनपति-व्यंतरदेव तथा नारक, इस तरह चारों प्रकार के जीव हैं ।

क. ऊपर से नीचे जाने पर सबसे पहले रत्नप्रभा पृथ्वी है, वह घनांबु (घनोदधि) आधारित है । इसके नीचे घनवात तथा तनुवात हैं । तनुवात आकाश पर आधारित है । आकाश के नीचे पुनः शर्कराप्रभा पृथ्वी है । अतः आकाश उस पृथ्वी पर आधारित है ।

ड. उपर्युक्त में से कोई नहीं ।

■

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-७	अध्याय-४	सूत्र १-५३	जमा करने की अंतिम तारीख १५/०५/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक. (कुल ३० x ½ = १५ अंक)

१. चौथे अध्याय में .... संबन्धी अनेक विषयों का प्रतिपादन है ।
अ. नारक ब. तिर्यंच क. मनुष्य ड. देव

२. नव ग्रैवेयक और पांच अनुत्तर देव .... होने से वहाँ इन्द्र आदि भेद नहीं है ।
अ. कल्पोपपन्न ब. कल्पातीत क. मिथ्यादृष्टि ड. सम्यग्दृष्टि

३. असुरकुमार ज्यादातर .... में रहते हैं, कभी .... में भी रहते हैं ।
(क्रम निभाना ज़रूरी है)
अ. भवन आवास ब. भवन भवन क. आवास भवन ड. आवास आवास

४. नागकुमार और अग्निकुमार यह .... निकाय के देव हैं ।
अ. भवनपति ब. व्यंतर क. ज्योतिष्क ड. वैमानिक

५. यक्ष, राक्षस, भूत और पिशाच यह .... निकाय के देव हैं ।
अ. भवनपति ब. व्यंतर क. ज्योतिष्क ड. वैमानिक

६. समभूतला पृथ्वी से सबसे नजदीक .... हैं ।
अ. तारें ब. सूर्य क. चन्द्र ड. नक्षत्र

७. पांचो प्रकार के ज्योतिष्क विमान .... लोक में सदा मेरुपर्वत की प्रदक्षिणा करते परिभ्रमण करते हैं ।
अ. मनुष्य ब. तिर्च्छा क. उर्ध्व ड. तीनों

८. ढाईद्वीप में सूर्य या चन्द्र की संख्या कुल मिलाकर .... है ।
अ. १२ ब. ३२ क. ६७ ड. १३२

९. .... अधिक ऋद्धिमान और पुण्यशाली हैं ।
अ. चन्द्र से सूर्य ब. चन्द्र सूर्य से क. चन्द्र ग्रहों से ड. चन्द्र से ग्रहें

१०. ज्योतिष्क विमानों में .... की गति सब से न्यून और .... की गति सब से अधिक है । (क्रम निभाना ज़रूरी है)
अ. सूर्य चन्द्र ब. चन्द्र ग्रह क. ग्रह नक्षत्र ड. चन्द्र तारों

११. ज्योतिष्क विमानों की गति से .... का विभाग (गिनती) होता है ।
अ. द्रव्य ब. क्षेत्र क. काल ड. भाव

१२. .... के बाहर सब ज्योतिष्क विमान अवस्थित यानी स्थिर हैं ।
अ. जंबुद्वीप ब. लवण समुद्र क. मनुष्य लोक ड. पुष्करवर द्वीप

१३. मनुष्य लोक के बाहर मनुष्य क्षेत्र के ज्योतिष विमान से .... प्रमाण के विमान होते हैं।
अ. आधे ब. डेढ़ गुना क. दो गुना ड. तीन गुना

१४. मनुष्य लोक के बाहर सूर्य की किरणें .... होती हैं ।
अ. शीत ब. उष्ण क. शीतोष्ण ड. तेजस्वी

१५. मनुष्यलोक के बाहर चन्द्र की किरणें .... होती हैं ।
अ. शीत ब. उष्ण क. शीतोष्ण ड. तेजस्वी

१६. भवनपति, व्यंतर और ज्योतिष्क यह तीन निकाय के देव तो .... ही हैं ।
अ. कल्पोपपन्न ब. कल्पातीत क. सम्यग्दृष्टि ड. मिथ्यादृष्टि

१७. वैमानिक निकाय में ही .... देव हैं ।
अ. कल्पोपपन्न ब. कल्पातीत क. सम्यग्दृष्टि ड. मिथ्यादृष्टि

१८. देवलोक में भाव लेश्या .... होती हैं ।
अ. पीत, पद्म, शुक्ल ब. छ हों प्रकार की क. केवल शुक्ल ड. केवल पीत और पद्म

१९. जिस देव को जितने .... की स्थिति हो उतने पक्ष के एक श्वासोश्वास और उतने हजार वर्ष बाद आहार होता है ।
अ. हजार वर्ष ब. लाख वर्ष क. पल्योपम ड. सोगरोपम

२०. देवों को लगातार शुभ वेदना ...... तक होती है ।
अ. छ मास ब. एक वर्ष क. १० वर्ष ड. १०० वर्ष

२१. देवों को अशुभ वेदना अधिक में अधिक .... तक ही रहती है ।
अ. एक समय ब. एक मुहूर्त क. एक दिन ड. अंतर्मुहूर्त

२२. .... के पूर्व कल्प यानी की पूज्य-पूजक भाव आदि सीमाएं होती हैं ।
अ. ग्रैवेयक ब. अनुत्तर क. सर्वार्थ सिद्ध ड. वैजयंत

२३. लोकांतिक देवों का स्थान .... है ।
अ. ब्रह्मलोक ब. लोक का अंत क. अनुत्तर ड. सर्वार्थसिद्ध

२४. विज्यादि चार विमान में .... बार जाने वाले देव चरम शरीरी होते हैं ।
अ. एक ब. दो क. तीन ड. बारह

२५. वैमानिक देव में .... के बाद के देवलोक में अपने-अपने पूर्व के देवलोक की उत्कृष्ट स्थिति के समान जघन्य स्थिति है ।
अ. माहेन्द्र ब. बह्म क. लांतक ड. महाशुक्र

२६. .... नरक तक पूर्व के नरक की उत्कृष्ट स्थिति बाद के नरक की जघन्य स्थिति है ।
अ. दूसरी से सातवीं ब. तीसरी से सातवीं क. चौथी से सातवीं ड. दूसरी से चौथी

२७. नरक में सब से जघन्य स्थिति .... है ।
अ. हजार वर्ष ब. १० हजार वर्ष क. एक पल्योपम ड. एक सागरोपम

२८. .... देवों की उत्कृष्ट स्थिति वैमानिक देवों की जघन्य स्थिति जितनी है ।
अ. भवनपति ब. व्यंतर क. ज्योतिष्क ड. वैमानिक

२९. भवनपति आदि चारों निकाय में देव-देवीओं की जघन्य स्थिति .... ।
अ. समान हैं ब. समान नहीं
क. उत्कृष्ट स्थिति जितनी ही है ड. उत्कृष्ट स्थिति जैसी भी होती है

३०. भवनपति आदि चारों निकाय में ईन्द्रों और ईन्द्राणीओं की स्थिति .... ।
अ. समान हैं ब. समान नहीं
क. उत्कृष्ट स्थिति जितनी ही है ड. उत्कृष्ट स्थिति जैसी भी होती है

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१. वैमानिक निकाय का अवस्थान व्यंतर निकाय की तरह .... नहीं है तथा ज्योतिष्क की तरह .... भी नहीं, किन्तु .... है । (क्रम निभाना ज़रूरी है)
अ. अव्यवस्थित, ऊपर ऊपर, तिर्च्छा ब. ऊपर ऊपर, अव्यवस्थित, तिर्च्छा
क. अव्यवस्थित, तिर्च्छा, ऊपर ऊपर ड. अवस्थित, तिर्च्छा, ऊपर ऊपर

३२. नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य बताएं ।
अ. जंबुद्वीप में एक सूर्य और एक चन्द्र है ।
ब. वैमानिक निकाय के विमानों में इन्द्रक नाम के विमान मध्य में होते हैं ।
क. देवों के चारों निकाय में २-२ इन्द्र होते हैं ।
ड. सौधर्म तक के देव काया से मैथुन सेवन करते हैं ।

३३. नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य बताएं ।
अ. नौ से बारहवें देवलोक के देव मात्र मन के संकल्प से कामवासना शांत करते हैं ।
ब. समभूतला पृथ्वी से ७९० योजन ऊपर चन्द्र आया है ।
क. जघन्य स्थिति (१०००० वर्ष आयुष्य) वाले देव नौ नौ स्तोक में एक बार श्वासोश्वास लेते हैं ।
ड. ऊपर ऊपर के देवलोक में देवों के शरीर का प्रमाण बड़ा होते जाता है ।

३४. नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य बताएं ।
अ. श्रेणिगत विमान पुष्पप्रकीर्णक विमान के अंतराल में आते हैं ।
ब. प्राय: गुफा में रहने वाले व्यंतर देव ४ प्रकार के होते हैं ।
क. ढाई द्वीप में कुल २५६ सूर्य होते हैं ।
ड. चन्द्र, सूर्य, तारों के परिभ्रमण की गति क्रमश: अधिक होती है ।

३५. नीचे के विकल्पों में से सही विकल्प बताएं ।

अ. ८ यवमध्य = १ प्रमाणांगुल ब. १ प्रमाणांगुल = १०००० उत्सेधांगुल

क. १ योजन = ८ गाउ ड. १ गाउ - २ माईल

३६. कौन से जीव किस देवलोक तक उत्पन्न हो सकते हैं वह नीचे दिया है । उनमें कौन सा विकल्प गलत हैं ?

अ. अन्य तीर्थिक (जैनेतर तीर्थिक) - पहले सौधर्म देवलोक तक

ब. द्रव्य चारित्रलिंगी मिथ्यादृष्टि - ग्रैवेयक तक

क. सम्यग्दृष्टि संयत - सौधर्म से सर्वार्थसिद्ध तक

ड. चौदह पूर्वधर - ब्रह्मलोक से सर्वार्थसिद्ध तक

३७. परिषद्य देव यानी ?

अ. इन्द्र को सलाह देने वाले मंत्री या शांतिक-पौष्टिक कर्म द्वारा प्रसन्न रखने वाले पुरोहित समान देव ।

ब. इन्द्र की सभा के देव जो इन्द्र के मित्र हों ।

क. इन्द्र की रक्षा हेतु उनके पीछे कवच धारण कर शस्त्र सहित खड़े रहने वाले देव

ड. इन्द्र समान ऋद्धिवाले देव जो इन्द्र को पूजनीय हों ।

३८. लोकपाल देव यानी ?

अ. इन्द्र की रक्षा हेतु उनके पीछे कवच धारण कर शस्त्र सहित खड़े रहने वाले देव

ब. चौकीदार या पुलीस समान देव ।

क. इन्द्र की सेना के सेनापति देव ।

ड. लोक के नियमों का पालन करने वाले देव ।

३९. अनीक देव यानी ?

अ. प्रजा के समान रहने वाले देव ब. इन्द्र की सेना के सेनापति देव ।

क. नौकर की भांति रहने वाले देव ड. क्षुद्र समान देव ।

४०. भवन पति देव कहाँ बसते हैं ?

अ. रत्नप्रभा पृथ्वी के १८०००० योजन पींड में से ऊपर और नीचे ना ५०-५० हजार योजन छोड़कर मध्य के ८०००० योजन में ।

ब. रत्नप्रभा पृथ्वी के १८०००० योजन पींड में से ऊपर और नीचे के २-२ हजार योजन छोड़कर बाकी के १७६००० योजन में ।

क. रत्नप्रभा पृथ्वी के १८०००० योजन पींड में से ऊपर और नीचे के १-१ हजार योजन छोड़कर बाकी के १७८००० योजन में ।

ड. रत्नप्रभा पृथ्वी के १८०००० योजन पींड में से ऊपर और नीचे के १०-१० हजार योजन छोड़कर बाकी के १६०००० योजन में ।

४१. ज्योतिष देव कहाँ बसते हैं ?
   अ. समभूतला पृथ्वी से ऊपर ७८० योजन बाद ११० योजन प्रमाण विस्तार में ।
   ब. समभूतला पृथ्वी से ऊपर ७८० योजन बाद ११० गाउ प्रमाण विस्तार में ।
   क. समभूतला पृथ्वी से ऊपर ८७० योजन बाद ११० योजन प्रमाण विस्तार में ।
   ड. समभूतला पृथ्वी से ऊपर ७८० योजन बाद १२० योजन प्रमाण विस्तार में ।
४२. व्यंतर देव कहाँ बसते हैं ?
   अ. रत्न प्रभा पृथ्वी के ऊपर के १००० योजन के विस्तार में ऊपर और नीचे के २०-२० योजन विस्तार छोड़कर मध्य के ६० योजन में ।
   ब. रत्न प्रभा पृथ्वी के ऊपर के १००० योजन के विस्तार में ऊपर १० और निचे के २० योजन विस्तार छोड़कर मध्य के ७० योजन में ।
   क. रत्न प्रभा पृथ्वी के ऊपर के १००० योजन के विस्तार में ऊपर और नीचे के १०-१० योजन विस्तार छोड़कर मध्य के ८० योजन में ।
   ड. रत्न प्रभा पृथ्वी के प्रथम १००० योजन के विस्तार में ऊपर के १० योजन विस्तार छोड़कर बाकी के ९० योजन में ।
४३. भवनपति देव अपने उत्पत्ति स्थान के अलावा कहाँ-कहाँ रहते हैं ?
   अ. लवण समुद्र आदि स्थल में आए निवासों में, जंबुद्विप की जगती के ऊपर आयी वेदिका के ऊपर ।
   ब. लवण समुद्र आदि स्थल में आए निवासों में, जंबुद्विप की जगती के नीचे आयी वेदिका के ऊपर ।
   क. मध्यलोक में जंबुद्विप से असंख्य द्वीप समुद्र बाद आए आवासों मां ।
   ड. मध्यलोक में जंबुद्विप से संख्यात द्वीप समुद्र बाद आए आवासों में ।
४४. ज्योतिष्क देवों को शारीरिक वर्ण रूप लेश्या और अध्यवसाय रूप लेश्या कौन सी होती है ?
   अ. शारीरिक वर्ण रूप - पीत, अध्यवसाय रूप - कृष्ण
   ब. शारीरिक वर्ण रूप - तेजोलेश्या, अध्यवसाय रूप - छ हों
   क. शारीरिक वर्ण रूप - पद्म, अध्यवसाय रूप - छ हों
   ड. शारीरिक वर्ण रूप - तेजोलेश्या, अध्यवसाय रूप - पीत
४५. समभूतला पृथ्वी से क्रमानुसार दूर-दूर ज्योतिष्क विमान कौन से हैं ?
   अ. बुध, शुक्र, गुरु, शनि, मंगल, चन्द्र, सूर्य, तारा नक्षत्र
   ब. चन्द्र, सूर्य, तारा, नक्षत्र, बुध, शुक्र, गुरु, शनि, मंगल
   क. तारा, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, बुध, शुक्र, गुरु, मंगल, शनि
   ड. तारा, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि

४६. जंबुद्विप में नक्षत्र आदि की संख्या कितनी है ?
   अ. १७६ नक्षत्र, ५६ गृह, १३३९५० कोटा कोटि तारे
   ब. ५६ नक्षत्र, १७६ गृह, १३३९५० कोटा कोटि तारे
   क. १३३९५० कोटा कोटि नक्षत्र, १७६ गृह, ५६ तारे
   ड. ५६० नक्षत्र, १७६० गृह, १३३९५० कोटा कोटि तारे
४७. नीचे के विकल्पों में से कौन सा विकल्प सही हैं ?
   अ. चन्द्र से सूर्य अधिक ऋद्धिमान और पुण्यशाली हैं ।
   ब. सूर्य से चन्द्र अधिक ऋद्धिमान और पुण्यशाली हैं ।
   क. सूर्य और चन्द्र समान ऋद्धिमान और पुण्यशाली हैं ।
   ड. कभी सूर्य से चन्द्र तो कभी चन्द्र से सूर्य अधिक ऋद्धिमान और पुण्यशाली होते हैं।
४८. नीचे दिए विकल्पों में से कौन सा विकल्प गलत है ?
   अ. सारस्वत, आदित्य, वह्नी, अरुण, गर्दतोय, आदि - लोकांतिक देव ।
   ब. असुरकुमार, नागकुमार, विद्युतकुमार, सुवर्णकुमार, आदि - भवनपति देव ।
   क. यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच, आदि - व्यंतर देव ।
   ड. सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, तारे, - ज्योतिष्क देव ।
४९. तीन अंगुल के प्रमाण से क्या-क्या नाप सकते हैं, उनमें नीचे दिए विकल्पों में गलत विकल्प कौन सा है ?
   अ. उत्सेधांगुल से सब प्राणीओं के शरीर की ऊंचाई ।
   ब. प्रमाणांगुल से द्वीप-समुद्र-पर्वत आदि शाश्वत पदार्थ ।
   क. आत्मांगुल से आकाश-पाताल के बावड़ी-तालाब ।
   ड. आत्मांगुल से बावड़ी-तालाब आदि अशाश्वत पदार्थ ।
५०. लोकान्तिक देव संबंधी दिए गए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है ?
   अ. जब तीर्थंकर भगवंत का निर्वाण काल होता है तब वे उनके पास आकर 'जय जय नंदा, जय जय भद्दा' ऐसे स्तुतिपूर्वक 'हे भगवंत ! तीर्थ स्थापना करो' इस प्रकार विनति करते हैं ।
   ब. लोक के अंत में रहने वाले होने से वे लोकांतिक देव कहलाते हैं ।
   क. ब्रह्मलोक के अंत में चार दिशा में चार, चार विदिशा में चार विमान में लोकांतिक देव होने से उनके आठ भेद हैं ।
   ड. लोकांतिक देव अवश्य लघु कर्मी ही होते हैं और निकट में ही मोक्ष पाने वाले हैं ।
५१. भवनपति देवों के कुल भेद कितने और कैसे हैं ?
   अ. पूर्व तथा उत्तर दिशा की और के भवनों में रहने वाले दस-दस ऐसे कुल २० भवनपति देव हैं ।
   ब. वायव्य तथा ईशान दिशा की ओर के भवनों में रहने वाले दस-दस ऐसे कुल २० भवनपति देव हैं ।

क. दक्षिण तथा उत्तर दिशा की ओर के भवनों में रहने वाले दस-दस ऐसे कुल २० भवनपति देव हैं ।

ड. दक्षिण तथा ईशान दिशा की और के भवनों में रहने वाले दस-दस ऐसे कुल २० भवनपति देव हैं ।

५२. देवों में परिग्रह शब्द से क्या अभिप्रेत है ?

अ. देवों की परिग्रहिता, अपरिग्रहिता आदि देवियां ।

ब. देवों के भवन, उद्यान, समृद्धि आदि ।

क. देवों के विमानों का परिवार ।

ड. देवों के रत्न, मणी, माणेक के अलंकार ।

५३. देवों की लब्धि के विषय में ग्रंथ में क्या बताया है ?

अ. देवों में अणिमादि लब्धिओं का प्रभाव ऊपर-ऊपर के देवों में घटता जाता है ।

ब. देवों में अणिमादि लब्धिओं का प्रभाव ऊपर-ऊपर के देवों में अधिक होता है, अंत: ऊपर-ऊपर के देव नीचे के देवों के ऊपर अधिक प्रभाव धराते हैं ।

क. देवों में अणिमादि लब्धिओं का प्रभाव अधिक-अधिक होने पर भी प्रायः उनका उपयोग न्यूनतम होता है ।

ड. देवों में अणिमादि लब्धिओं का प्रभाव होता ही नहीं है ।

५४. दिगंबरों में ग्रैवेयक के विषय में क्या मान्यता है ?

अ. दिगंबर ९ की जगह १६ ग्रैवेयक, जो एक के ऊपर एक होते हैं, ऐसा मानते हैं ।

ब. दिगंबर ग्रैवेयक एक के ऊपर एक नौ हैं ऐसा न मानते, १६ कल्प मानते हैं जो दो-दो के जोड़ो में समश्रेणी में हैं ।

क. श्वेताम्बर और दिगंबर मान्यता एक समान है ।

ड. दिगंबर ग्रैवेयक दो-दो के जोड़े से समश्रेणी में एक के ऊपर एक ऐसे आठ और उनके ऊपर नौवां कल्प मानते हैं ।

५५. ईशित्व लब्धि वाले क्या कर सकते हैं ?

अ. वासुदेव-बलदेव-चक्रवर्ति आदि की ऋद्धि विकुर्व सकते हैं ।

ब. चक्रवर्ति का सैन्य, मेरु पर्वत आदि विकुर्व सकते हैं ।

क. तिर्थंकर, ईन्द्र आदि की ऋद्धि विकुर्व सकते हैं ।

ड. समरसरण, वन, जंगल, भवनों आदि विकुर्व सकते हैं ।

५६. माहेन्द्र बाद ऊपर के देवलोक में जघन्य स्थिति कितनी है ?

अ. माहेन्द्र बाद ऊपर के देवलोक में उनके पूर्व के देवलोक की जो उत्कृष्ट स्थिति है वही उनकी जघन्य स्थिति है ।

ब. माहेन्द्र बाद ऊपर के देवलोक में अपने बाद के देवलोक की उत्कृष्ट स्थिति है उसी समान उनकी जघन्य स्थिति है ।

क. माहेन्द्र बाद ऊपर के देवलोक में अपने बाद के देवलोक की जघन्य स्थिति है उसी समान उनकी जघन्य स्थिति है ।

ड. माहेन्द्र बाद ऊपर के देवलोक में हर देवलोक की जघन्य स्थिति समान है ।

५७. असुरकुमार देवों की उत्कृष्ट स्थिति क्या है उसके दिए विकल्पों में गलत विकल्प बताएं ।

अ. दक्षिण के देवों की १ सागरोपम ब. उत्तर के देवों की - साधिक १ सागरोपम

क. उत्तर के देवों की साधिक २ सागरोपम ड. दक्षिण में देवियों की ३ पल्योपम

५८. तीन प्रकार के विमानों के आकारों का सही वर्णन कौन सा हैं ?

अ. ईन्द्रक विमान बराबर मध्य में होते हैं । पंक्तिगत विमान क्रम से त्रिकोण, चोरस और गोल होते हैं । पुष्पप्रकीर्णक विमान पूर्व दिशा छोड़कर पुष्प की तरह बिखरे होते हैं ।

ब. ईन्द्रक विमान बराबर मध्य में होते हैं । पंक्तिगत विमान क्रम से त्रिकोण, चोरस और गोल होते हैं । पुष्पप्रकीर्णक विमान पूर्व दिशा में पुष्प की तरह बिखरे होते हैं ।

क. ईन्द्रक विमान बराबर मध्य में होते हैं । पंक्तिगत विमान क्रम से त्रिकोण, चोरस और गोले होते हैं । पुष्पप्रकीर्णक विमान पूर्व दिशा छोड़कर तीन दिशा में अंतर से पुष्प की तरह बिखरे होते हैं ।

ड. ईन्द्रिक विमान सभी गोल होते हैं । पंक्तिगत विमान क्रम से त्रिकोण, चोरस और गोल होते हैं । पुष्पप्रकीर्णक विमान पूर्व दिशा छोड़कर तीन दिशाओं में पंक्तिगत विमानो के अंतर में पुष्प की तरह बिखरे होते हैं ।

५९. देवों के शरीर के प्रमाण के लिए नीचे दिए विकल्पों में से गलत विकल्प बताएं ।

अ. पहले-दूसरे देवलोक के देव ७ हाथ प्रमाण होते हैं ।

ब. नौ ग्रैवेयक के देव २ हाथ प्रमाण होते हैं ।

क. १२वें देवलोक के देव ३ अंगुल प्रमाण होते हैं ।

ड. ९वें देवलोक के देव ३ हाथ प्रमाण होते हैं ।

६०. काल संबंधी नीचे के वाक्यों में गलत वाक्य बताएं ।

अ. एक नियत स्थान से सूर्य की गति के प्रारंभ को सूर्योदय और नियत स्थान पर पहुँचते सूर्यास्त कहते हैं ।

ब. एक वर्ष में छ ऋतु होती हैं ।

क. एक दिवस-रात में ४८ मुहूर्त होते हैं ।

ड. एक अयन बराबर छ मास होते हैं ।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक. (कुल १५ x २ = ३० अंक)

६१. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य सही है ?

अ. यद्यपि जगत् में असंख्य इन्द्र हैं किंतु ज्योतिष विमानों के जाति की अपेक्षा से दो ही इन्द्रों का ग्रहण करने पर ६४ इन्द्र होते हैं ।

ब. पाँच अनुत्तर विमान में इन्द्र नहीं होते । इन्द्र से अन्य नौ प्रकार के देव वहाँ होने से उन्हें कल्पातीत कहा जाता है ।

क. व्यंतर और ज्योतिष निकाय में त्रायस्त्रिंश और लोकपाल से अन्य आठ ही भेद होते हैं। इनमें प्रत्येक भेद में दो-दो इन्द्र होते हैं ।

ड. नौ ग्रैवेयक देव इन्द्र न होने से मर्यादा रहित आचरण करते हैं । अतः उन्हें मर्यादा (कल्प) से रहित अर्थात् कल्पातीत कहा जाता है ।

६२. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य सही नहीं है ?

अ. पहले-दूसरे देवलोक के देव काया से, नौवें-दसवें देवलोक के देव शब्द से तथा ग्यारहवें-बारहवें देवलोक के देव मन से मैथुन सेवन करते हैं ।

ब. नौ ग्रैवेयक और पाँच अनुत्तर विमान के देव मैथुन सेवन के बिना भी सुख का अनुभव करते हैं क्योंकि मैथुन क्षणिक प्रतिकार रूप है ।

क. देवियों का जन्म प्रथम दो देवलोक तक ही होता है । उससे ऊपर अपरिगृहीता देवी उन देवों के संकल्प से जाती है ।

ड. किल्बिषिक देव पहले-दूसरे देवलोक, सनत्कुमार और लांतक, के नीचे रहते हैं । अन्य देव इन्हें तुच्छ दृष्टि से देखते हैं ।

६३. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य ज्योतिष्क देवों की अपेक्षा से गलत नहीं है ?

अ. सूर्य हम से चन्द्र की अपेक्षा से अधिक दूर है तथा बुध ग्रह (Mercury Planet) सूर्य की अपेक्षा हमारे अधिक समीप है ।

ब. सूर्य अग्नि का पिंड है तथा हमारी पृथ्वी से बहुत बड़ा है । चन्द्र पृथ्वी का उपग्रह है तथा पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है ।

क. जंबूद्वीप में दो, लवणसमुद्र में चार सूर्य हैं । इस प्रकार सूर्य-चन्द्र की संख्या आगे-आगे वाले द्वीपों में पूर्व-पूर्व के द्वीप की अपेक्षा से विस्तार की तरह दो-दो गुना होती है ।

ड. जंबूद्वीप तथा २½ द्वीप के सभी सूर्य-चन्द्र जंबूद्वीप के ही मेरु की प्रदक्षिणा करते हैं, अपने स्वयं के द्वीप के मेरु पर्वत की नहीं ।

६४. निम्नलिखित विकल्पों में से कौन-सा विकल्प ज्योतिष्क विमानों की अपेक्षा से सही नहीं है ?

अ. गति की अधिकता का क्रम - चंद्र-सूर्य-गृह-नक्षत्र-तारा

ब. विमान के प्रमाण की हीनता का क्रम - चन्द्र-सूर्य-ग्रह-नक्षत्र-तारा

क. ऊँचाई की अधिकता का क्रम - तारा-सूर्य-चन्द्र-ग्रह-नक्षत्र

ड. ऋद्धि की अधिकता का क्रम - तारा-नक्षत्र-ग्रह-सूर्य-चन्द्र

६५. काल की न्यूनतम ईकाई (unit) जैन दर्शनानुसार समय है । निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य इस एक समय के लिए सही नहीं है ?

अ. मात्र केवलज्ञानी ही इस काल को दो भाग में विभाजित कर सकते हैं ।

ब. सबसे जघन्य गति वाले परमाणु की एक आकाश प्रदेश से लोकांत तक की गति में जितना काल व्यतीत होता है, वह काल एक समय है ।

क. मात्र केवलज्ञानी ही इस काल को जान सकते हैं तथा कह सकते हैं ।

ड. उपर्युक्त सभी ।

६६. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य मनुष्य लोक के बाहर वाले द्वीप-समुद्रों के लिए सही नहीं है ?

अ. मनुष्यलोक के बाहर जहाँ प्रकाश है, वहाँ सदा प्रकाश है तथा जहाँ अंधकार है, वहाँ सदा अंधकार होता है।

ब. वहाँ सूर्य तथा चन्द्र की किरणें क्रमशः अति उष्ण तथा अति शीत होने से अत्यधिक गर्मी तथा अत्यधिक ठंड होती है ।

क. वहाँ सूर्यादि ज्योतिष्क विमान मनुष्यलोक के ज्योतिष्क विमानों की अपेक्षा आधे प्रमाण वाले होते हैं ।

ड. वहाँ कभी मनुष्य का जन्म-मरण नहीं होता किंतु विद्याधरादि मनुष्य वहाँ जा सकते हैं।

६७. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य वैमानिक देवों के लिए गलत नहीं है ?

अ. तिर्यंचों का जन्म सभी कल्पोन्न देवों में हो सकता है लेकिन कल्पातीत देव तो पूर्वभव में अवश्य मनुष्य ही होते हैं ।

ब. लोक पुरुष की ग्रीवा के आभरण रूप होने से नौ विमान ग्रैवेयक तथा इनसे ऊपर वाले देव सर्वथा, अप्रधान देव होने से अनुत्तर कहलाते हैं ।

क. ज्योतिष्क चक्र से असंख्य योजन ऊपर उत्तर दिशा में सौधर्म तथा दक्षिण में ईशान कल्प हैं । ब्रह्मलोक कल्प सनत्कुमार और माहेन्द्रकल्प से ऊपर मध्य में है ।

ड. बहुलसंसारी जीव देवों में उत्पन्न हो सकता है किंतु अनुत्तर विमान में तो अल्पसंसारी जीव ही उत्पन्न होते हैं । सर्वार्थसिद्ध विमान के देव एक भव में ही सिद्ध होते हैं ।

६८. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य सही नहीं है ?

अ. ऊपर-ऊपर वाले देवों में विमान आदि का परिग्रह क्रमशः हीन होता है तथापि सुख बढ़ता है ।

ब. नीचे-नीचे वाले देवों के शरीर तथा स्थिति क्रमशः हीन और अधिक होते हैं । यावत् भवनपति से लेकर ईशान देवलोक तक सात हाथ प्रमाण शरीर होता है ।

क. ऊपर-ऊपर वाले देवों में गति की शक्ति अधिक-अधिक होती है किंतु वे देव उदासीन होने से गति न्यून करते हैं । यावत् कल्पातीत देव तो विमान से बाहर भी नहीं निकलते।

ड. नीचे-नीचे वाले देवों में प्रभाव-अवधिज्ञान-इन्द्रिय की पटुता क्रमशः से हीनतर होती है किंतु अभिमान अधिक-अधिक होता है ।

६९. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सी घटना लोकस्थिति के कारण नहीं होती ?

अ. ज्योतिष्क देवों का परिभ्रमण

ब. विमान-सिद्धशिला आदि की आधाररहित स्थिति

क. सात पृथ्वियों का घनोदधि-घनवात-तनुवात पर स्थिर रहना ।

ड. तिर्यंच जीवों का आठवें देवलोक तक ही उपपात ।

७०. अनुभाव सम्बंधी कौन सा वाक्य सही है ?

अ. विमान तथा सिद्धशिला किसी भी आधार के बिना आकाश में रहे हैं । इसमें लोकस्थिति नहीं किंतु आत्मा की अचिंत्य शक्ति ही कारण है ।

ब. विमान और सिद्धशिला तथा भगवान के जन्माभिषेक, केवलज्ञानोत्पत्ति, महासमवसरण की रचना तथा कल्याणक के समय इंद्र के सिंहासन कंपित होना आदि अनेक बातें जगत में ऐसी हैं जो लोकस्वभाव से ही सिद्ध होती हैं ।

क. विमान तथा सिद्धशिला किसी भी आधार के बिना आकाश में रहे हैं उसमें तीर्थंकर की धर्मविभूति ही कारण है ।

ड. विमान तथा सिद्धशिला तीर्थंकर नाम कर्म से उदय हुई असाधारण धर्मविभूति ही हों सकती है ।

७१. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य सही नहीं है ?

अ. अनुत्तर विमानवासी देवों के पूर्वभव में यदि अंतर्मुहूर्त आयुष्य अधिक होता अथवा छट्ठ तप जितनी निर्जरा अधिक होती तो वे मोक्ष को प्राप्त हो जाते ।

ब. लोकांतिक देव तीर्थंकर भगवंत के प्रव्रज्या काल में प्रभु को तीर्थ का प्रवर्तन करने की बिनती करते हैं । वे अवश्य लघुकर्मी होते हैं तथा विषयसुखों से विमुख होते हैं ।

क. लोकांतिक देवों के परिणाम कभी भी कषाय से युक्त नहीं होते क्योंकि उन्हें पद्म लेश्या होती है तथा कृष्ण लेश्या वाले व्यंतर देव के परिणाम सदा कलुषित रहते हैं ।

ड. वृक्ष, अग्नि, जल, मिट्टी, रत्न व. सचित्त एकेन्द्रिय तथा मच्छर, भ्रमरादि विकलेन्द्रिय जीवों का समावेश तिर्यंच योनि में होता है क्योंकि वे नारक, देव और मनुष्यों से भिन्न हैं ।

७२. निम्नलिखित विकल्पों में से कौन-सा विकल्प देवों की स्थिति के लिए सही है ?

	देव-देवी	स्थिति
अ.	परिगृहीता देवी	उत्कृष्ट - ९ सागरोपम
	ब्रह्मलोक कल्प	उत्कृष्ट - १० सागरोपम
	सूर्य देव	उत्कृष्ट - १००० वर्ष + १ पल्योपम
ब.	भवनपति देव	जघन्य - १०००० वर्ष
	ग्रह	जघन्य - १/८ पल्योपम
	९वाँ ग्रैवेयक	जघन्य - ३० सागरोपम
क.	व्यंतर देवी	जघन्य - १०००० वर्ष
	तारा देवी	उत्कृष्ट - साधिक १/८ पल्योपम
	सर्वार्थसिद्ध विमान	जघन्य - ३२ सागरोपम
ड.	अच्युत कल्प	उत्कृष्ट - २२ सागरोपम
	अपरिगृहीता देवी	जघन्य - साधिक १ पल्योपम
	भवनपति देव	उत्कृष्ट - साधिक १ सागरोपम

७३. अनुभाव सम्बंधी कौन सा वाक्य सही है ?

अ. विमान तथा सिद्धशिला किसी भी आधार के बिना आकाश में रहे हैं । इसमें लोकस्थिति नहीं किंतु आत्मा की अचिंत्य शक्ति ही कारण है ।

ब. विमान और सिद्धशिला तथा भगवान के जन्माभिषेक, केवलज्ञानोत्पत्ति, महासमवसरण की रचना तथा कल्याणक के समय इंद्र के सिंहासन कंपित होना आदि अनेक बातें जगत में ऐसी हैं जो लोकस्वभाव से ही सिद्ध होती हैं ।

क. विमान तथा सिद्धशिला किसी भी आधार के बिना आकाश में रहे हैं उसमें तीर्थंकर की धर्मविभूति ही कारण है ।

ड. विमान तथा सिद्धशिला तीर्थंकर नाम कर्म से उदय हुई असाधारण धर्मविभूति ही हों सकती है ।

७४. ऊपर-ऊपर के देव अधिक सुखी क्यों होते हैं ? सही विकल्प चुनें ।

अ. ऊपर-ऊपर के देवों में सुन्दर स्थान, परिवार, सामर्थ्य, अवधिज्ञान, इन्द्रियशक्ति, विभूति, शब्दादि विषयों की समृद्धि अधिक-अधिक होने पर भी अभिमान, विषयासक्ति अल्प होने से अधिक सुखी हैं ।

ब. ऊपर-ऊपर के देवों में सुन्दर स्थान, परिवार, सामर्थ्य, अवधिज्ञान, इन्द्रियशक्ति, विभूति, शब्दादि विषयों की समृद्धि अधिक-अधिक होने पर भी अभिमान अधिक होने से ऊपर-ऊपर के देव अधिक सुखी हैं ।

क. ऊपर-ऊपर के देवों में सुन्दर स्थान, परिवार, सामर्थ्य, अवधिज्ञान, इन्द्रियशक्ति, विभूति, आदि अधिक-अधिक होने से वे क्रीड़ा में मस्त रहते होने से अधिक सुखी हैं ।

ड. ऊपर-ऊपर के देव नृत्य-गान, संगीत में मस्त होने से उन्हें दुःख का अनुभव होता नहीं इसलिए वे अधिक सुखी हैं ।

७५. कल्पोपपन्न व कल्पातीत देवों की विशेषता में कौन सा विकल्प सही है ?

अ. प्रथम बारह देवलोक में छोटे बड़े की मर्यादा होने से उनमें उत्पन्न हुए देव कल्पोपपन्न और तत्पश्चात नौ लोकंतिक और पाँच अनुत्तर विमानों में उत्पन्न हुए देव कल्पातीत हैं।

ब. प्रथम बारह देवलोक में छोटे बड़े की मर्यादा होने से उनमें उत्पन्न हुए देव कल्पोपपन्न और तत्पश्चात नौ ग्रैवेयक और विजयादि पाँच अनुत्तर विमानों में उत्पन्न हुए देवों में छोटे बड़े की मर्यादा न होने से वे कल्पातीत हैं ।

क. प्रथम बारह देवलोक में स्वामी - सेवक भाव होने से वे कल्पोपपन्न और नौ ग्रैवेयक और पाँच देवलोक के देव कल्पातीत होते हैं ।

ड. प्रथम बारह देवलोक + भवनपति आदि तीन में उत्पन्न हुए देव में छोटे बड़े का आचार होने से कल्पोपपन्न तथा नौ ग्रैवेयक और पांचवे देवलोक में छोटे बड़े का व्यवहार न होने से कल्पातीत देव होते हैं ।

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-८	अध्याय-५	सूत्र १-२२	जमा करने की अंतिम तारीख ता. ३१/०५/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक । (कुल ३० x ½ = १५ अंक)

१. पांचवे अध्याय में .... तत्त्व का वर्णन किया गया है ।
अ. जीव ब. अजीव क. आस्रव ड. संवर

२. पांच द्रव्यो में केवल .... रूपी हैं ।
अ. पुद्गल ब. जीव क. आकाश ड. जीव अने पुद्गल

३. एक जीव को जितने असंख्यात प्रदेश हैं .... असंख्यात प्रदेश दूसरे को, तीसरे को ऐसे सभी जीवों को होते हैं ।
अ. उतने ही ब. उससे हीन क. उससे अधिक ड. उससे हीन अथवा अधिक

४. पुद्गल द्रव्य के............ प्रदेश हैं ।
अ. संख्यात ब. असंख्यात क. अनंत ड. संख्यात, असंख्यात अथवा अनंत

५. धर्मास्तिकाय आदि चार द्रव्य............ रहे हैं ।
अ. अलोकाकाश में ब. लोकाकाश अथवा अलोकाकाश में
क. स्वप्रतिष्ठित ड. लोकाकाश में

६. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाश द्रव्य .... हैं ।
अ. एक ब. संख्यात क. असंख्यात ड. अनंत

७. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय के प्रदेश .... हैं ।
अ. एक ब. संख्यात क. असंख्यात ड. अनंत

८. हर जीव की अवगाहना का क्षेत्र .... होता है ।
अ. एक ब. भिन्नभिन्न क. मर्यादित ड. अमर्यादित

९. आकाश का उपकार .... प्रदान करना है ।

अ. अवगाहना ब. गति क. स्थिति ड. अवगाहना अथवा गति

१०. स्पर्श, रस, गंध, वर्ण यह .... द्रव्य के लक्षण हैं ।

अ. जीव ब. पुद्गल क. आकाश ड. धर्मास्तिकाय

११. भाषा और श्वासोच्छवास........... होते हैं ।

अ. अपौद्गलिक ब. पौद्गलिक और अपौद्गलिक

क. पौद्गलिक अथवा अपौद्गलिक ड. पौद्गलिक

१२. सुख देना यह पुद्गल का .... कारणरूप उपकार हैं ।

अ. निमित्त ब. उपादान क. द्रव्य ड. भाव

१३. काल के उपकार परत्व और अपरत्व एक दूसरे से .... हैं ।

अ. सापेक्ष ब. निर्पेक्ष क. सापेक्ष अथवा निर्पेक्ष ड. सापेक्ष और निर्पेक्ष, दोनों

१४. .... अनंत प्रदेशोंवाला हैं ।

अ. आकाश ब. जीव क. धर्मास्तिकाय ड. अधर्मास्तिकाय

१५. प्रदेश से परमाणु का कद .... होता है ।

अ. छोटा ब. बड़ा क. समान ड. असमान, यानी के छोटा या बड़ा

१६. जिन द्रव्यों........... न होंवे नित्य ।

अ. का परावर्तन ब. मेंरूप का अभाव क. का विनाश ड. का प्रमाण कमया अधिक

१७. आकाश, धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय .... हैं जब कि पुद्गल और जीव .... हैं।

अ. अनंत, एक ब. एक, अनंत क. एक, संख्यात ड. अनंत, असंख्यात

१८. .... के प्रदेश नहीं होते ।

अ. पुद्गल ब. आकाश क. परमाणुं ड. जीव

१९. .... द्रव्य लोकाकाश के एक प्रदेश से शुरू होकर लोकाकाश प्रमाण असंख्य प्रदेश तक रहेते हैं।

अ. धर्मास्तिकाय ब. अधर्मास्तिकाय क. जीव ड. पुद्गल

२०. पुद्गल और जीव दोनों का संकोच-विस्तार पाने का स्वभाव होनेपर भी पुद्गल कीतरह जीव एक प्रदेश में रह नहीं पाता । जीव का न्युनतम अवगाहना क्षेत्र .... है ।

अ. चार आकाश प्रदेश ब. अंगुल का संख्यातवां भाग आकाश प्रदेश

क. संख्यात आकाश प्रदेश ड. अंगुल का असंख्यातवां भाग आकाश प्रदेश

२१. अधर्मास्तिकाय का उपकार .... है ।
अ. निमित्त कारणरूप गति में सहायता ब. उपादान कारणरूप गति में सहायता
क. निमित्त कारणरूप स्थिति में सहायता ड. उपादान कारणरूप स्थिति में सहायता

२२. धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल द्रव्य........... हैं ।
अ. अजीवकाय ब. जीवकाय क. नोकाय ड. परमाणुं

२३. जीव .... के समूह रूप होने से अस्तिकाय हैं ।
अ. प्रदेश ब. परमाणुं क. स्कंध ड. देश

२४. जिसके धर्मों का परावर्तन यानी संक्रमण न हों उसको........... कहते हैं ।
अ. नित्य ब. अस्थिर क. अनवस्थित ड. अवस्थित

२५. जैन दर्शन वस्तु को मात्र पर्यायो की अपेक्षा से........... रूपमानता है ।
अ. उत्पाद-व्यय ब. ध्रुव-उत्पाद क. ध्रुव-व्यय ड. ध्रुव

२६. जीवों का संकोच विस्तार .... शरीर के अनुसार होता है ।
अ. कार्मण ब. तैजस क. वैक्रिय ड. कार्मण और वैक्रिय

२७. तत्त्वार्थ सूत्र में उपग्रह का अर्थ .... है ।
अ. हित ब. निमित्त क. उपकार ड. अपकार

२८. विचार मेंसहायक मन रूप से परिणमित मनोवर्गणा के पुदगल.......... हैं ।
अ. उपयोग मन ब. भाव मन क. द्रव्य मन ड. लब्धि मन

२९. भवस्थिति में कारण आयुष्य कर्म के उदयसे प्राण का टिके रहना वह........... हैं ।
अ. सुख ब. जीवन क. निमित्त ड. कारण

३०. अपनी सत्ता का त्याग किए बिना द्रव्य में होते बदलाव को.........कहते हैं ।
अ. वर्तना ब. परिणाम क. क्रिया ड. परत्व

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१. नीचे दिए कोष्ठक में सही जोड़ वाला विकल्प कहें ।

द्रव्य	उपकार
१ जीव	अ परिणामकरने वाला
२ पुद्गल	आ स्थिति सहायक
३ अधर्मास्तिकाय	इ अरूपी
४ काल	ई शरीर देनेवाला

अ. १-अ २-आ ३-इ ४-ई ब. १-ई २-इ ३-आ ४-अ
क. १-इ २-ई ३-आ ४-अ ड. १-ई २-आ ३-अ ४-इ

३२. प्रदेश यानी?

अ. वस्तु के साथ प्रतिबद्ध हो ऐसा वस्तु का निर्विभाज्य अंश ।

ब. वस्तु से अलग हुआ वस्तु काविभाज्य अंश ।

क. वास्तु का अपूर्ण अंश ।

ड. वस्तु से अलग हुआ वस्तु का निर्विभाज्य अंश ।

३३. उपादान कारण यानी?

अ. जो कारण स्वतः ही कार्यरूप बनें वह उपादान कारण ।

ब. जो कारण स्वतंत्र रूप से अलग रहकर कार्य होने में सहाय करे वह उपादान कारण ।

क. काल का एक प्रकार जो काल को द्रव्यरूप बनाता है वह उपादान कारण ।

ड. अपनी सत्ता का त्याग किएबिना द्रव्य में होता बदलाव वह उपादान कारण ।

३४. वर्तना यानी?

अ. जो कारण कार्य में परिवर्तित हो वह वर्तना ।

ब. प्रति समय उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य रूप अपनी सत्ता से युक्त द्रव्य का होना वह वर्तना ।

क. जो कारण स्वतंत्र रूप से अलग रहकर कार्य होने में सहाय करे वह वर्तना ।

ड. जो कार्य व्यक्ति के बरताव में बदलाव लाए वह वर्तना ।

३५. नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य कहें ।

अ. प्रदेश से परमाणु कद में छोटा है ।

ब. आकाश, पुद्गल और जीव इन तीनों में प्रथम दो द्रव्य रूपी और जीव द्रव्य अरूपी है।

क. पुद्गल के अनंत प्रदेशी स्कंध भी एक आकाश प्रदेश में रह सकते हैं ।

ड. शब्द अरूपी हैं ।

३६. नीचे के वाक्यों में से गलत वाक्य कहें ।

अ. एक जीव के जितने असंख्यात प्रदेश हैं उतने ही असंख्यात प्रदेश धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और लोकाकाश के भी हैं ।

ब. पुद्गल द्रव्य के स्कंधों के प्रदेशों की संख्या अनियत है, अतः एक ही स्कंध में कभी संख्यात तो कभी असंख्यात तो कभी अनंत प्रदेश होते हैं ।

क. लोकाकाश के एक प्रदेश से शुरू होकर लोकाकाश प्रमाण असंख्य प्रदेशों तक पुद्गल द्रव्य रहते हैं और लोकाकाश के अंगुल के असंख्यात में अंत से शुरू होकर लोकाकाश संपूर्ण लोकाकाश तक जीव द्रव्य रहते हैं ।

ड. 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' सूत्र में उपकार का अर्थ अन्य का हित' ऐसा है

३७. नीचे दिए गए कोष्ठक में जीव और पुद्‌गल केभेद बताए हैं । उन में कौन सा विकल्प गलत है?

	जीव	पुद्‌गल
अ	जीव चेतन और अरूपी द्रव्य है ।	पुद्‌गल जड़ और रूपी द्रव्य है.
ब	हर जीव के अनंत प्रदेश हैं ।	पुद्‌गल स्कंध के संख्यात, कभी असंख्यात तो कभी अनंत प्रदेश हैं ।
क	जीव के प्रदेश मूल द्रव्य से अलग नहीं होते	पुद्‌गल के प्रदेश मूल द्रव्य से अलग हों सकते हैं ।
ड	लोकाकाश के अंगुल के असंख्यातवें भाग के प्रदेश से लेकर संपूर्ण लोकाकाश में जीव द्रव्य रहते हैं ।	लोकाकाश के एक प्रदेश से लेकर असंख्य प्रदेशो तक पुद्‌गलद्रव्य रहते हैं ।

३८. यहाँ चार वाक्य दिए हैं । उनमें नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही हैं ।

(१) जीव जब बोलता है तब पहेले आकाश में रहे मनोवर्गणा के पुदगल ग्रहण करता है और उनको भाषा रूप में परिवर्तित करता है ।

(२) दीवार पर लिखे शब्द आप देख सकते हैं इसलिए शब्द चक्षुग्राह्य पुद्‌गल हैं ऐसा कह सकते हैं।

(३) भाषा को अरूपी मानने से 'अरूपी वस्तु रूपी द्रव्य से जान नहीं सकते' इस नियम में विरोध आएगा क्यों कि शब्द श्रोत्रेन्द्रिय की मदद से जान सकते हैं ।

(४) रूपी पदार्थ अरूपी पदार्थ को प्रेरणा नहीं कर सकते ।

अ. १ और २ सही हैं, ३ और ४ गलत हैं ।

ब. २ और ३ सही हैं, १ और ४ गलत हैं।

क. १ और २ गलत हैं, ३ और ४ सही हैं ।

ड. १, २, ३ गलत है और ४ सही है ।

३९. नीचे के वाक्यों में से गलत वाक्य बताएं ।

अ. एक सोनी ने बाजार में से सोने की लगडी खरीदी और उसमें से एक अंगूठी और एक हार बनाया । इसमें सोनी निमित्त कारण और सोना उपादान कारण कहलाएगा ।

ब. सोने केगहनेशरीरको विभूषित करते हैं । इस द्रष्टि से सोना निमित्त कारण बनताहैं ।

क. दो शत्रु एक दूसरे के प्रतिबैर भाव रखकर परस्पर उपकार करते हैं ऐसा कहने में 'उपकार यह एक दूसरे के हित-अहित में निमित्त बनना' यह अर्थ हैं ।

ड. बालक का जीवन मातापिता का उपकार है, पुद्‌गल का नहीं ।

४०. नीचे दिए गए अजीव द्रव्य के पश्चानुपूर्वी क्रम के विकल्पों में कौन सा विकल्प सही हैं?

अ. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, पुद्‌गलास्तिकाय, आकाशास्तिकाय

ब. पुद्‌गलास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, धर्मास्तिकाय

क. आकाशास्तिकाय, पुद्‌गलास्तिकाय । अधर्मास्तिकाय, धर्मास्तिकाय

ड. अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्‌गलास्तिकाय । धर्मास्तिकाय

४१. निम्नलिखित वाक्यों में से सही वाक्य बताएं ।

अ. जो अकेला पुद्‌गल उसके स्कंध से नहीं उसे परमाणु कहते हैं ।

ब. जो अकेला पुद्‌गल उसके स्कंध से अलग हो उसे परमाणु कहते हैं ।

क. जो पुद्‌गल स्कंध से अलग हो उसे प्रदेश कहते हैं ।

ड. १०० पुद्‌गल के स्कंध में से अलग पड़ा एक पुद्‌गल ५० पुद्‌गल के स्कंध में जुड़ जाए वह परमाणु का नाम धारण करता हैं ।

४२. द्रव्य के चार प्रकार हैं, स्कंध, देश, प्रदेश, परमाणु । नीचे दिए गए वाक्यों में से कौन सा वाक्य इन चार प्रकार के लिए गलतहै ।

अ. परमाणु और प्रदेश का कद समान हैं ।

ब. प्रदेश वस्तु का अंतिम निर्विभाज्य अंश हैं ।

क. प्रदेश वस्तु का निर्विभाज्य अंश हैं क्यों कि वह स्कंध से अलग पड़ सकता है ।

ड. वस्तु का सविभाज्य अंश जो वस्तु के साथ प्रतिबद्ध हो तो उसे देश और अलग हो गया हो तो उसे स्कंध कहते हैं ।

४३. निम्नलिखित वाक्यों में से गलत वाक्य बताएं ।

अ. धर्मास्तिकाय द्रव्य नित्य हैं, स्थिर हैं अरूपी हैं ।

ब. अकाशास्तिकाय द्रव्य नित्य हैं, स्थिर हैं अरूपी हैं ।

क. पुद्‌गलास्तिकाय द्रव्य नित्य हैं, स्थिर हैं अरूपी हैं ।

ड. जीवास्तिकाय द्रव्य नित्य हैं, स्थिर हैं अरूपी हैं ।

४४. नीचे दिए गए कोष्ठक में सही विकल्प कौन सा हैं?

	द्रव्य	रुपीपना	अखंड/एक
अ	जीवास्तिकाय	रूपी	अखंड/एक
ब	पुद्‌गलास्तिकाय	रूपी	अखंड/एक
क	धर्मास्तिकाय	अरूपी	अनेक
ड	अधर्मास्तिकाय	अरूपी	अखंड/एक

४५. नीचे दिए वाक्यों में से गलत वाक्य कौन सा हैं?

अ. पुद्गलास्तिकाय एक द्रव्य है और सक्रिय है।

ब. धर्मास्तिकाय एक द्रव्य है और निष्क्रिय है।

क. अधर्मास्तिकाय एक द्रव्य है और निष्क्रिय है।

ड. आकाशास्तिकाय एक द्रव्य है और निष्क्रिय है।

४६. नीचे के कोष्ठक में दिए गए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत हैं?

	द्रव्य	प्रदेश	रुपीपना	नित्यता	अवस्थितता
अ	आकाशास्तिकाय	अनंत	अरूपी	नित्य	अवस्थित
ब	धर्मास्तिकाय	असंख्यात	अरूपी	नित्य	अवस्थित
क	अधर्मास्तिकाय	संख्यात	अरूपी	नित्य	अवस्थित
ड	जीवास्तिकाय	असंख्यात	अरूपी	नित्य	अनवस्थित

४७. अलोकाकाश और लोकाकाश के प्रदेश का परिमाण कितना है?

अ. असंख्यात प्रदेश और अनंत प्रदेश

ब. असंख्यात प्रदेश और संख्यात प्रदेश

क. संख्यात प्रदेश और असंख्यात प्रदेश

ड. अनंत प्रदेश और असंख्यात प्रदेश

४८. नीचे के वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही हैं?

अ. लोकाकाश का अन्य द्रव्य को अवगाहना देने का स्वभाव हैं इसलिए धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय लोकाकाश में रहते हैं, इसलिए जीव और पुद्गल भी लोकाकाश में रहते हैं।

ब. अलोकाकाश का अन्य द्रव्य को अवगाहना देने का स्वभाव नहीं इसलिए धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय लोकाकाश में नहीं रहते, इसलिए जीव और पुद्गल भी अलोकाकाश में रहते नहीं।

क. जीव और पुद्गल को गति करने में अधर्मास्तिकाय सहाय करता है।

ड. जीव और पुद्गल को स्थिति करने में धर्मास्तिकाय सहाय करता हैं।

४९. नीचे के वाक्यों में से कौन सा वाक्य गलत हैं?

अ. त्र्यणुंक - तीन परमाणु का स्कंध, एक, दो या तीन प्रदेश में रहता है।

ब. संख्यात प्रदेशों वाला स्कंध एक, दो, तीन यावत संख्यात प्रदेशो में रह सकता है ।

क. असंख्यात प्रदेशोंवाले स्कंध एक, दो, तीन यावत असंख्यात प्रदेशों में रह सकते हैं ।

ड. अनंत प्रदेशों वाले स्कंध एक, दो, तीन यावत अनंत प्रदेशों में रह सकते हैं ।

५०. नीचे दिए गए वाक्यों में से कौन सा वाक्य गलत हैं?

अ. सिद्ध जीवों की अवगाहना पूर्वना शरीर के २/३ भाग जितनी होती है क्यों कि वह पूर्व के शरीर का २/३ भाग शुषिर होता है ।

ब. पुद्‌गल द्रव्य का अवगाहना क्षेत्र कम से कम एक प्रदेश और अधिक से अधिक लोकाकाश प्रमाण असंख्यात प्रदेश है ।

क. जीव द्रव्य का अवगाहना क्षेत्र कम से कम अंगुल का असंख्यातवां भाग और अधिक से अधिक संपूर्ण लोक है ।

ड. धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय संपूर्ण लोक में व्यापित हैं । यानी की जितने प्रदेश धर्मास्तिकाय के हैं उतने ही प्रदेश अधर्मास्तिकाय और उतने ही आकाशास्तिकाय के भी हैं ।

५१. नीचे दिए गए वाक्यों में से कौन सा वाक्य गलत है?

अ. जो स्कंध जितने प्रदेश को हो उतने ही प्रदेश में रह सकता है, उससे अधिक नहीं, अंत: अनंत प्रदेशी पुद्‌गल स्कंध अनंत प्रदेशों में भी रह सकते हैं और उनसे कम प्रदेशों में भी रह सकते हैं ।

ब. असंख्यात प्रदेशी असंख्यात स्कंध एक प्रदेश में भी रह सकते हैं,उसी तरह संख्यात अथवा असंख्यात प्रदेशों में भी रह सकते हैं ।

क. संख्यात प्रदेशी संख्यात स्कंध एक प्रदेश में भी रह सकते हैं, वैसे ही संख्यात अथवा असंख्यात प्रदेशों में भी रह सकते हैं ।

ड. अनंत प्रदेशी अनंत स्कंध एक प्रदेश में भी रह सकते हैं, वैसे ही संख्यात अथवा असंख्यात प्रदेशों में भी रह सकते हैं ।

५२. नीचे दिए गए वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही हैं?

अ. आकाशास्तिकाय जीव और पुद्‌गल को स्थिर करने में सहायता करते हैं ।

ब. अधर्मास्तिकाय जीव और पुद्‌गल को गति करने में सहायता करते हैं ।

क. धर्मास्तिकाय केवल जीव और पुद्‌गल को अवगाहना प्रदान करते हैं ।

ड. जीव और पुद्‌गल का गति और स्थिति करने का स्वभाव हैं ।

५३. नीचे दिए गए वाक्यों में से कौन सा वाक्य गलत हैं?

अ. मछली में चलने और स्थिर रहने की शक्ति होने पर भी उसे चलने में पानी की सहायता चाहिए।

ब. मनुष्य को स्थिर रहने की शक्ति होने पर भी उसे स्थिर रहने हेतु पृथ्वी की सहायता चाहिए।

क. चक्षु में देखने की शक्ति होने पर भी देखने के लिए उसे प्रकाश की अपेक्षा हैं ।

ड. जीव और पुद्गल में गति और स्थिति की शक्ति होने पर भी चलने और स्थिर रहने हेतु आकाशास्तिकाय की सहायता लेनी पड़ती हैं ।

५४. नीचे दिए गए वाक्यों में से कौन सा वाक्य गलत हैं?

अ. धर्मास्तिकाय जीव और पुद्गल पर गति सहायक बनकर उपकार करता हैं ।

ब. अधर्मास्तिकाय जीव और पुद्गल पर स्थिति सहायक बनकर उपकार करता हैं ।

क. शरीर, वाणी, मन, श्वासोच्छवास, यह पुद्गल के उपकार हैं ।

ड. सुख, दुख, जीवन और मरण, यह जीव के उपकार हैं ।

५५. शरीर कितने प्रकार के हैं?

अ. जीव और अजीव ऐसे दो प्रकार के शरीर हैं ।

ब. अंडज, पोतज और गर्भज ऐसे तीन प्रकार के शरीर हैं ।

क. देव, मनुष्य, तीर्यंच और नरक ऐसे चार प्रकार के शरीर हैं ।

ड. औदेयिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस और कार्मण ऐसे पांच प्रकार के शरीर हैं ।

५६. जब जीव बोलता हैं तब कौन से वर्गणा के पुद्गलों को किस रूप से परिवर्तित करता हैं?

अ. भाषा वर्गणा वाणी रूप में ब. भाषा वर्गणा मन रूप में

क. मनोवर्गणा ध्वनि रूप में ड. मनोवर्गणा वाणी रूप में

५७. मैं एक द्रव्य हूँ। मैं अजीव हूँ। मुझ में स्पर्श, रस, गंध वगेरे गुण नहीं फिर भी कुछ विशेष व्यक्ति मुझे देख और जान सकते हैं। मेरे स्कंध, देश और प्रदेश ऐसे तीन भेद हैं। संख्या की दृष्टि से तो मैं एक हूँ पर मैं समग्र लोक में व्याप्त हूँ। मैं नित्य हूँ। मैं स्थिर हूँ। मुझ में चलने की शक्ति नहीं फिर भी मैं अन्य को चलने की शक्ति प्रदान करने में समर्थ हूँ। मुझे पहचानें ।

अ. आकाशास्तिकाय ब. धर्मास्तिकाय

क. अधर्मास्तिकाय ड. पुद्गलास्तिकाय

५८. नीचे दिए गए वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही हैं?

अ. शब्द जो पुद्गल हो तो शरीर की तरह दिखने चाहिए। पर वे शरीर की तरह दिखते नहीं इसलिए शब्द पुद्गल नहीं ।

ब. शब्द आंखो से दिखते हैं इसलिए वे रूपी पुद्गल हैं ।

क. शब्द आंखो से दिखते इसलिए ते अरूपी पुद्गल हैं ।

ड. शब्द के पुदगल अत्यंत सूक्ष्म होने से सुनाई देते हैं, पर दिखाई नहीं देते- वे मात्र श्रोत्रेन्द्रिय ग्राह्य ही हैं ।

५९. नीचे दिए वाक्यों में से सही वाक्य कौन सा है यह बताएं ।

अ. प्रवृत्ति करने की शक्ति यह लब्धिरूप भाव मन हैं । प्रवृत्ति करना यह उपयोगरूप भाव मन हैं ।

ब. विचार करने की शक्ति यह लब्धिरूप भाव मन हैं । आचार यह उपयोगरूप भाव मन हैं।

क. विचार यह लब्धिरूप भाव मन हैं । विचार करने की शक्ति यह उपयोगरूप भाव मन हैं।

ड. विचार करने की शक्ति यह लब्धिरूप भाव मन हैं । विचार यह उपयोगरूप भाव मन हैं।

६०. नीचे दिए विधानो में कौन सा विधान सही नहीं हैं बताएं ।

अ. हाथ आदि से मुख और नाक बंध करने से श्वासोच्छवास का प्रतिघात होता है ।

ब. गले में कफ भर जाने पर श्वासोच्छवास का अभिभव होता हैं ।

क. जीव जब सांस लेता हैं तब प्रथम श्वासोच्छवास वर्गणा के पुद्गलों का त्याग करता है ।

ड. श्वासोच्छवास यह पुद्गलद्रव्य हैं ।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक । (कुल १५ x २ = ३० अंक)

६१. नीचे दिए गए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत नहीं?

अ. संसारी जीव जन्म मरण लेते लेते अनेक प्रकार के शरीर को धारण करता है । हर शरीर के आकार, नाप आदि अलग होते हैं । अतः संसारी जीव में अवस्थितता नहीं ऐसा कहना योग्य नहीं पर सिद्ध जीवो में ऐसा कोई भेद न होने के कारणे वे अवस्थित कहलाते हैं ।

ब. 'आकाश द्रव्य एक ही हैं' यह विधान केवल लोकाकाश की अपेक्षा से ही कहते हैं, क्यों कि लोकाकाश अन्य द्रव्यों को अवगाहना देने में समर्थ हैं, अलोकाकाश नहीं ।

क. अरूपी द्रव्यको रूप नहीं ऐसा कहेते, उपलक्षण से उसे स्पर्श, गंध और रस आदि न होने के कारणे उनका ज्ञान इन्द्रिय के माध्यम से नहीं होता पर ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से आत्मा को प्रत्यक्ष रूप से हो सकता है, ऐसा अर्थ होता है ।

ड. जीवास्तिकाय नित्य द्रव्य है ऐसा जब कहते हैं तब केवल सिद्ध जीवों की ही अपेक्षा होती है क्यों कि संसारी जीव अलग अलग जन्म में अलग अलग अस्तित्व धराते हैं, इसलिए संसारी जीव अनित्य कहलाते हैं ।

६२. पुद्गल का स्वभाव संकोच और विकास पाने का है । यह समझाने हेतु नीचे दिए गए उदाहरणों में कौन सा उदाहरण योग्य नहीं?

अ. एक कमरे में फैले दीप के प्रकाश के पुदगल संपूर्ण कमरे में फैले होते हैं । उसी दीपक को जब एक डब्बे में रखा जाए तब उसके प्रकाश के किरण डब्बे तक ही सीमित होते हैं । इसमें प्रकाश के किरण कम-अधिक नहीं होते पर उनका संकोच और विस्तार होता हैं।

ब. रबर बेन्ड को जब खिंचा जाए तब वह लम्बा होता है और जब छोड़ दिया जाए तब वह छोटा होता है । इसमें भी उसके पुद्गलों की संख्या में कोई कमी-अधिकता नहीं होती पर संकोच और विस्तार होता हैं ।

क. एक तालाब में पानी वर्षा में भर जाए और ग्रीष्म आते तालाब में पानी कम रहे या सूख जाता हैं । यह भी संकोच विस्तार के कारणे ही होता है ।

ड. १२ इंच रूइ की गठरी को समेट लेते ही वह एक इंच से भी छोटी हों जाती है, यह पुद्गल के संकोच-विस्तार को सूचित करता है ।

६३. यौवन वय का एक मनुष्य रात को मुंबई से अमदावाद जाने ट्रेन में बैठा । थोडी देर में सो जाता है । जब आँखें खुलती हैं तब ट्रेन एक स्टेशन पर खड़ी थी । वह व्यक्ति प्रथम साँस लेते ही खड़ा होकर सोचता है कि वह कहाँ पंहुचा । उसके पश्चात् ऊँचे स्वर से बगलवाले यात्री को पूछता हैं कि कौन सा स्टेशन आया? जवाब मिलते ही उसे आनंद का अनुभव होता हैं कि वह अमदावाद पहुँच गया । अपना सामान लेकर वह स्टेशन के बाहर जाकर अपने मित्र की प्रतीक्षा करता खड़ा रहता है । इस दृष्टांत में व्यक्ति जगता है तबसे जिस क्रम में उस मनुष्य को विविध द्रव्य उपकार करते हैं उसके विकल्प नीचे दिए हैं । उनमें कौन सा विकल्प गलत नहीं?

अ. धर्मास्तिकाय - अधर्मास्तिकाय - पुद्गल (श्वासोच्छवास) - पुद्गल (मन) - पुद्गल (भाषा) - पुद्गल (सुख) -धर्मास्तिकाय -अधर्मास्तिकाय

ब. अधर्मास्तिकाय - धर्मास्तिकाय -पुद्‍गल (मन) - पुद्‍गल (श्वासोच्छवास) -पुद्‍गल (भाषा) - पुद्‍गल (सुख) - धर्मास्तिकाय -अधर्मास्तिकाय

क. धर्मास्तिकाय - अधर्मास्तिकाय - धर्मास्तिकाय - अधर्मास्तिकाय - पुद्‍गल (श्वासोच्छवास) - पुद्‍गल (मन) - पुद्‍गल (भाषा) - पुद्‍गल (सुख)

ड. धर्मास्तिकाय - अधर्मास्तिकाय -पुद्‍गल (भाषा) - पुद्‍गल (श्वासोच्छवास) - पुद्‍गल (मन) - पुद्‍गल (सुख) -धर्मास्तिकाय - अधर्मास्तिकाय

६४. नीचे दिए गए वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही हैं?

-अ ग्रामोफोन की रेकार्ड में रिकार्ड किए गए उन्ही शब्दों को मूल रूप से बार-बार सुन सकते हैं।

ब. ग्रामोफोन की रिकार्ड में रिकार्ड किए अलग अलग शब्द प्रथम के मूलरूप से बार-बार सुन सकते हैं ।

क. ग्रामोफोन की रिकार्ड में रिकार्ड किए उसके ही शब्द संस्कारित रूप से बार-बार सुन सकते हैं।

ड. ग्रामोफोन की रेकार्ड में रेकार्ड किए शब्द अलग अलग रूप में बार-बार सुन सकते हैं ।

६५. नीचे केवाक्यों में से कौन सावाक्यगलतनहीं है?

-अ एक ही काल में हर जीव के अवगाहना क्षेत्र का प्रमाण भिन्न भिन्न हो सकता है पर अलग अलग काल में एक जीव के अवगाहना क्षेत्र का प्रमाण तो एक ही होता है ।

ब. एक ही काल में अनेक जीव के अवगाहना क्षेत्र का प्रमाण एक हो सकता है पर अलग अलग काल में एक जीव के अवगाहना क्षेत्र का प्रमाण तो एक ही होता है ।

क. एक ही काल में अनेक जीव के अवगाहना क्षेत्र का प्रमाण भिन्न भिन्न हो सकता है पर अलग अलग काल में एक जीव के अवगाहना क्षेत्र का प्रमाण तो भिन्न भिन्न ही होता है।

ड. एक ही काल में अनेक जीव के अवगाहना क्षेत्र का प्रमाण भिन्न भिन्न हो सकता है पर अलग अलग काल में अनेक जीव के अवगाहना क्षेत्र का प्रमाण तो एक ही होता है ।

६६. नीचे दिए विकल्पों में पुद्‍गल द्रव्य के योग्य कौन सा विकल्प गलत नहीं है?

-अ संख्या: एक समय में अनंत - अलग अलग समय में अनंत; स्वभाव: संकोच-विस्तार; प्रदेशों का परिमाण: संख्यात, असंख्यात और अनंत; आधार क्षेत्र: लोकाकाश; स्थिति क्षेत्र की मर्यादा: एक प्रदेश से शुरू होकर लोकाकाश प्रमाण असंख्य प्रदेश तक; उपकार: शरीर, वाणी, मन, श्वासोच्छवास, सुख, दु:ख, जीवित, मरण; रूपीपना: परमाणु अवस्था में नहीं, बाकी की तीन अवस्था यानी - देश, प्रदेश और स्कंध अवस्था में है ।

ब. स्वभाव: संकोच-विस्तार; प्रदेशों का परिमाण: संख्यात अथवा असंख्यात; संख्या: एक समय में अनंत - अलग अलग समय में अनंत; आधार क्षेत्र: लोकाकाश; स्थिति क्षेत्र की मर्यादा: एक प्रदेशसे शुरू होकर लोकाकाश प्रमाण असंख्य प्रदेश तक; उपकार: शरीर, वाणी, मन, श्वासोच्छवास, सुख, दु:ख, जीवित, मरण; रूपीपना: हर समय में रूपी ही है।

क. स्वभाव: संकोच-विस्तार; संख्या: एक समय में अनंत - अलग अलग समय में अनंत; आधार क्षेत्र: लोकाकाश; स्थिति क्षेत्र की मर्यादा: एक प्रदेश से शुरू होकर लोकाकाश प्रमाण असंख्य प्रदेश तक; उपकार: शरीर, वाणी, मन, श्वासोच्छवास, सुख, दु:ख, जीवित, मरण; रूपीपना: हर समय में रूपी ही है । प्रदेशों का परिमाण: संख्यात, असंख्यात अथवा अनंत;

ड. स्वभाव: संकोच-विस्तार; संख्या: एक समय में अनंत - अलग अलग समय में अनंत; आधार क्षेत्र: अलोकाकाश; स्थिति क्षेत्र की मर्यादा: एक प्रदेश से शुरू होकर लोकाकाश प्रमाण असंख्य प्रदेश तक; उपकार: शरीर, वाणी, मन, श्वासोच्छवास, सुख, दु:ख, जीवित, मरण; रूपीपना: हर समय में रूपी ही हैं । प्रदेशों का परिमाण: संख्यात, असंख्यात अथवा अनंत ।

६७. क्या आप मुझे पहचान सकते हों? मेरा स्वभाव: नित्य, अवस्थित है, मेरी संख्या: एक ही है । मेरा आकार: कोई रूप, रंग या आकार नहीं । मेरे प्रदेश: अनंत हैं, मेरा आधार क्षेत्र: स्वप्रतिष्ठित हैं, मेरे भेद: स्कंध, देश, प्रदेश हैं, मेरे लक्षण: हर द्रव्य को जगह देना हैं ।

-अ लोकाकाश ब. अलोकाश

क. आकाश ड. धर्मास्तिकाय

६८. पुद्गल और जीव दोनों का स्वभाव संकोच और विस्तार पाना है । अनंत पुद्गलों का समूह एक आकाश प्रदेश में रह सकता हैं पर जीव द्रव्य एक आकाश प्रदेश में नहीं रह सहता । उसके कारणभूत विकल्प नीचे दिए हैं । उनमें कौन सा विकल्प अयोग्य नहीं है?

-अ जीव का संकोच-विस्तार स्वतंत्ररूप से होता नहीं किंतु उसके कार्मण शरीर के अनुसार ही होता है । कार्मण शरीर यह अनंतानंत पुद्गल का समूह है । अनंत पुद्गल वैसे तो एक आकाश प्रदेश में रह सकते हैं । परंतु जब वे जीव द्रव्य के साथ जुड़े हों तब उनको अगवाहना अधिक चाहिए, इसलिए जीव द्रव्य का अवगाहना क्षेत्र एक आकाश प्रदेश नहीं हो सकता।

ब. जीव का संकोच-विस्तार स्वतंत्ररूप से होता नहीं किंतु उसके कार्मण शरीर के अनुसार ही होता है । कार्मण शरीर असंख्य पुद्गल का समूह है । एक पुद्गल द्रव्य वैसे तो एक आकाश प्रदेश में रह सकता है । परंतु जब असंख्य पुद्गल द्रव्य साथ जुड़े हों तब उनको अगवाहना अधिक चाहिए, इसलिए जीव द्रव्य एक आकाश प्रदेश में नहीं रह सकते ।

क. जीव का स्वभाव ही ऐसा है की उसका संकोच एक आकाश प्रदेश जितना होता नहीं ।

ड. जीव का संकोच-विस्तार स्वतंत्ररूप से होता नहीं किंतु उसके कार्मण शरीर के अनुसार ही होता है । कार्मण शरीर यह अनंतानंत पुद्गलों का समूह है । अनंतानंत पुद्गल का अवगाहना क्षेत्र अंगुल के असंख्यातवें भाग जितना ही है । इसलिए जीव द्रव्य का न्युनतम अवगाहना क्षेत्र अंगुल के असंख्यातवें भाग जितना होता है ।

६९. जीव और पुद्गल में क्या भेद है वह नीचे लिखे हैं । उनमें कौन सा विकल्प गलत नहीं?

-अ जीव चेतन, अरूपी, असंख्यात प्रदेशोंवाला, अंगुल के असंख्यातवे भाग के प्रदेश से लेकर संपूर्ण लोकाकाश की अवगाहना वाला द्रव्य हैं, उसके प्रदेश मूल द्रव्य से अलग होते नहीं। वह अन्य जीवको सुख-दु:ख देने में निमित्त बन परस्पर उपकार करता है । जब कि पुद्गल अचेतन, अरूपी, और लोकाकाश के एक प्रदेश से लेकर लोकाकाश प्रमाण असंख्य प्रदेशों की अवगाहना वाला द्रव्य है । पुद्गल के प्रदेश मूल द्रव्य से अलग हो सकते हैं । पुद्गल जीव के सुख-दु:ख आदि में निमित्त बनता है ।

ब. जीव चेतन, अरूपी, असंख्यात प्रदेशोंवाला, अंगुल के असंख्यातवे भाग के प्रदेश से लेकर संपूर्ण लोकाकाश की अवगाहना वाला द्रव्य है, उसके प्रदेश मूल द्रव्य से अलग पड़ते नहीं। वह अन्य जीव को सुख-दु:ख देने में निमित्त बन परस्पर उपकार करता है । जब कि पुद्गल अचेतन, रूपी, और लोकाकाश के एक प्रदेश से लेकर लोकाकाश प्रमाण असंख्य प्रदेशों की अवगाहना वाला द्रव्य है । उसके प्रदेश मूल द्रव्य से अलग नहीं हो सकते । जीव के सुख-दु:ख आदि में निमित्त बनना यह उसका उपकार है ।

क. जीव यह चेतन, अरूपी, असंख्यात प्रदेशोंवाला, अंगुल के असंख्यातवे भाग के प्रदेश से लेकर संपूर्ण लोकाकाश की अवगाहना वाला द्रव्य है, उसके प्रदेश मूल द्रव्य से अलग पड़ते नहीं । वह अन्य जीव को सुख-दु:ख देने में निमित्त बन परस्पर उपकार करता है । जब कि पुद्गल यह अचेतन, रूपी, और लोकाकाश के एक प्रदेश से लेकर लोकाकाश प्रमाण

असंख्य प्रदेशों की अवगाहना वाला द्रव्य है। उसके प्रदेश मूल द्रव्य से अलग हो सकते हैं। जीव के सुख-दु:ख आदि में निमित्त बनना यह उसका उपकार है।

ड. जीव यह चेतन, अरूपी, असंख्यात प्रदेशोंवाला, अंगुल के संख्यातवे भाग के प्रदेश से लेकर संपूर्ण लोकाकाश की अवगाहना वाला द्रव्य हैं, उसके प्रदेश मूल द्रव्य से अलग पड़ते नहीं। वह अन्य जीव को सुख-दु:ख देने में निमित्त बन परस्पर उपकार करता है। जब कि पुद्गल अचेतन, रूपी, और लोकाकाश के एक प्रदेश से लेकर लोकाकाश प्रमाण असंख्य प्रदेशों की अवगाहना वाला द्रव्य हैं। उसके प्रदेशो मूल द्रव्य से अलग हो सकते हैं। जीव के सुख-दु:ख आदि में निमित्त बनना यह उसका उपकार हैं।

७०. धर्मास्तिकाय और आकाश में क्या भेद है यह नीचे लिखे हैं। उनमें कौन सा विकल्प गलत नहीं?

-अ धर्मास्तिकाय आकाश में रहने वाला असंख्यात प्रदेशोंवाला, लोक व्यापी, जीव और पुद्गल को गति में सहायता द्वारा उपकार करने वाला द्रव्य है, जब कि आकाश अनंत प्रदेशोंवाला, स्वतंत्ररूप से रहने वाला, लोक व्यापी, धर्मास्तिकाय आदि चार द्रव्य को अवगाह प्रदान करके उपकार करने वाला द्रव्य है।

ब. धर्मास्तिकाय आकाश में रहने वाला असंख्यात प्रदेशोंवाला, लोक व्यापी, जीव और पुद्गल को गति में सहायता द्वारा उपकार करने वाला द्रव्य है, जब कि आकाश अनंतप्रदेशोंवाला, स्वतंत्ररूप से रहने वाला, लोकालोक व्यापी, धर्मास्तिकाय आदि चार द्रव्य को अवगाह प्रदान करके उपकार करने वाला द्रव्य है।

क. धर्मास्तिकाय आकाश में रहने वाला असंख्यात प्रदेशोंवाला, लोक व्यापी, जीव और पुद्गल को स्थिति में सहायता द्वारा उपकार करने वाला द्रव्य है, जब कि आकाश अनंत प्रदेशोंवाला, स्वतंत्ररूप से रहने वाला, लोकालोक व्यापी, धर्मास्तिकाय आदि चार द्रव्यो को अवगाहना प्रदान करके उपकार करने वाला द्रव्य हैं।

ड. धर्मास्तिकाय आकाश में रहने वाला संख्यात प्रदेशोंवाला, लोक व्यापी, जीव और पुद्गल को गति में सहायता द्वारा उपकार करने वाला द्रव्य हैं, जबकि आकाश अनंत प्रदेशोंवाला, स्वतंत्ररूप से रहने वाला, लोकालोक व्यापी, धर्मास्तिकाय आदि चार द्रव्य को अवगाहना प्रदान करके उपकार करने वाला द्रव्य है।

७१. प्रदेश और परमाणु में क्या भेद है वह नीचे लिखे हैं। उनमें कौन सा विकल्प गलत नहीं?

-अ द्रव्य का अंतिम निर्विभाज्य अंश जो द्रव्य से बद्ध हो तो उसे प्रदेश कहते हैं। प्रदेश रूपी

अथवा अरूपी, जीव अथवा अजीव, हर द्रव्य के हो सकते हैं। जब कि द्रव्य का अंतिम निर्विभाज्य अंश जो अलग पड़ा हो तो उसे परमाणु कहते हैं। परमाणु केवल पुद्‌गल द्रव्य के ही हो सकते हैं इसलिए वे रूपी ही होते हैं और वे आंख से दिखते हैं।

ब. प्रदेश यह द्रव्य से बद्ध द्रव्य का अंतिम निर्विभाज्य अंश हैं। प्रदेश जीव अथवा अजीव पांचों द्रव्य के होते हैं। जब कि परमाणु यह भी द्रव्य से बद्ध द्रव्य का अंतिम निर्विभाज्य अंश हैं परवह आंख से देख नहीं सकते इसलिए अरूपी हैं।

क. द्रव्य का अंतिम निर्विभाज्य अंश जो द्रव्य से बद्ध हो वह प्रदेश और जो अलग हो तो परमाणु कहते हैं। प्रदेश रूपी अथवा अरूपी, जीव अथवा अजीव, हर द्रव्य के हो सकते हैं पर परमाणु केवल सभी अजीव द्रव्य के ही हो सकते हैं।

ड. प्रदेश द्रव्य से बद्ध द्रव्य का अंतिम निर्विभाज्य अंश हैं जब कि परमाणु यह द्रव्य से अलग हुआ द्रव्य का अंतिम निर्विभाज्य अंश हैं। प्रदेश जीव अथवा अजीव पांचों द्रव्य के होते हैं इसलिए रूपी भी और अरूपी भी होते हैं। जब कि परमाणु केवल पुद्‌गल द्रव्य के होते हैं इसलिए वे रूपी ही होते हैं।

७२. जीव और धर्मास्तिकाय की विशेषता नीचे दर्शाई हैं। उनमें कौन सा विकल्प सही नहीं है?

-अ स्कंध की अपेक्षा से जीव द्रव्य अनंत हैं जबकि धर्मास्तिकाय एक हैं। जीव द्रव्य का संकोच विस्तार हो सकता है जब कि धर्मास्तिकाय का संकोच विस्तार संभव नहीं। जीव कभी लोकाकाश के अंगुल के असंख्यातवे भाग के प्रदेशों में तो कभी संपूर्ण लोकाकाश में रहता है, जब कि धर्मास्तिकाय हमेशा संपूर्ण लोकाकाश में रहता है। जीव स्वतः गति करने में समर्थ है जब कि धर्मास्तिकाय स्वतः गति नहीं करता पर जीव और पुद्‌गल को गति करने में सहायक बनता है। जीव क्रियात्मक द्रव्य है जब कि धर्मास्तिकाय निष्क्रिय द्रव्य है।

ब. स्कंध की अपेक्षा से जीव द्रव्य अनंत है। जीव लोकाकाश के अंगुल के असंख्यातवे भाग के प्रदेशों से लेकर संपूर्ण लोकाकाश में रहता है। जीव धर्मास्तिकाय की सहायता से गति और स्थिति कर सकता है। जब कि स्कंध की अपेक्षा से धर्मास्तिकाय एक ही है। धर्मास्तिकाय का संकोच विस्तार संभव नहीं। धर्मास्तिकाय हमेशा संपूर्ण लोकाकाश में रहता है। वह जीव और पुद्‌गल को गति करने में सहायक बनता है। जीव क्रियात्मक द्रव्य है जब कि धर्मास्तिकाय निष्क्रिय द्रव्य है।

क. लोकाकाश के अंगुल के असंख्यातवे भाग के प्रदेशों से लेकर संपूर्ण लोकाकाश में जीव द्रव्य रहता है । जीव धर्मास्तिकाय की सहायता से गति कर सकता है । जीव का संकोच विस्तार संभव है । जब कि स्कंध की अपेक्षा से धर्मास्तिकाय एक ही हैं । धर्मास्तिकाय का संकोच विस्तार संभव नहीं । धर्मास्तिकाय हमेशा संपूर्ण लोकाकाश में रहता है । वह जीव और पुद्‌गल को गति करने में सहायक बनता है । जीव क्रियात्मक द्रव्य हैं जबकि धर्मास्तिकाय निष्क्रिय द्रव्य हैं । धर्मास्तिकाय के असंख्य प्रदेश हैं ।

ड. जीव का अवगाहना क्षेत्र अंगुल के असंख्यातवे भाग से लेकर संपूर्ण लोकाकाश है । जीव मूल स्वरूप से अरुपी है । जीवों की संख्या अनंत हैं । जीव के प्रदेशों का संकोच विस्तार संभव है । जीव स्वतः क्रिया करने में समर्थ है । जीव के प्रदेश असंख्य हैं । धर्मास्तिकाय की संख्या एक ही हैं । वह भी मूल स्वरूप से अरूपी है । वह संपूर्ण लोकाकाश में व्यापत है । वह सवतः निष्क्रिय होने पर भी जीव और पुद्‌गल को गति करने में सहायक बनता है ।

७३. पांच द्रव्यो में ४ द्रव्य अजीव हैं । उन सभी की विशेषता नीचे एक के बाद एक दिए गए है । उनमें एक विकल्प गलत हैं । कौन सा विकल्प गलत हैं वह बताएं ।

-अ पुद्‌गल: पुद्‌गल यह अचेतन, रूपी, और लोकाकाश के एक प्रदेश से लेकर लोकाकाश प्रमाण असंख्य प्रदेशों की अवगाहना वाला द्रव्य है । पुद्‌गल के प्रदेश मूल द्रव्य से अलग पड़ सकते हैं । पुद्‌गल जीव के सुख-दु:ख आदि में निमित्त बनता है ।

ब. धर्मास्तिकाय: धर्मास्तिकाय आकाश में अवगाहना करने वाला द्रव्य है । उसके असंख्यात प्रदेश हैं । वह लोकाकाश व्यापी है । वह जीव और पुद्‌गल को गति में सहायता के द्वारा उपकार करने वाला द्रव्य है ।

क. अधर्मास्तिकाय: अधर्मास्तिकाय निष्क्रिय द्रव्य हैं । उसका उपकार जीव और पुद्‌गल को स्थिति करने में सहायक बनना है । वह संपूर्ण लोकाकाश में व्याप्त है । उसकी संख्या एक ही है । उसके असंख्यात प्रदेश हैं ।

ड. आकाश: चार अरूपी द्रव्यों में आकाश एक ही द्रव्य है कि जिसके अनंत प्रदेश हैं । आकाश अरूपी है । उसका उपकार बाकी के चार द्रव्यों को अवगाहना प्रदान करना है। उसके दो भेद हैं - लोकाकाश और अलोकाकाश । जिस आकाश क्षेत्र में धर्मास्तिकाय आदि चार द्रव्य रहते हैं वह अलोकाकाश, बाकी लोकाकाश ।

७४. नीचे दिए गए कोष्ठक में कोई एक विकल्प गलत हैं । कौन सा विकल्प गलत हैं वह बताएं ।

	द्रव्य	मान्यता	उपकार	स्वभाव	संख्या	संकोच/ विस्तार	न्यूनतम अवगाहना क्षेत्र
अ.	आकाश	द्रव्य रूप प्रदान करना	अवगाहना	निष्क्रिय	एक	संभव नहीं होती ।	अवगाहना नहीं आकाश अन्य द्रव्य को अवगाहना देता है।
ब.	काल	कुछ लोग द्रव्यरूप मानते हैं, प्रस्तुत ग्रंथकार स्वीकार नहीं करते व खंडन भी नहीं करते ।	हर द्रव्य स्वतंत्ररूप से बरतते हैं उसमें निमित्त बनना	निष्क्रिय	एक	संभव नहीं	अवगाहना नहीं होती
क.	जीव	द्रव्य रूप	परस्पर सुख-दु:ख में निमित्त बनना	क्रियात्मक	अनंत	संभव है	अंगुलके असंख्यातवे भाग
ड.	पुद्गल	द्रव्य रूप	जीव को शरीर आदि उपादान रूप से और सुखादि निमित्त रूप से प्रदानकरना	क्रियात्मक	अनंत	संभव है	एक आकाश प्रदेश

७५. काल विषयक नीचे चार विकल्पों में जानकारी दी हैं । उनमें एक विकल्प सही नहीं । वह गलत विकल्प कौन सा हैं यह बताएं ।

अ. काल ग्रंथकार की दृष्टि से द्रव्य नहीं । फिर भी कुछ आचार्य काल को द्रव्य रूप से स्वीकार करते हैं । ग्रंथकार उनकी मान्यता का खंडन भी नहीं करते बल्कि माध्यस्थ भाव से वे अन्य लोगों काल को द्रव्यरूप से स्वीकार करते हैं इसलिए उसका द्रव्य रूप वर्णन करते हैं।

ब. काल के पांच उपकार बताए हैं - वर्तना, परिणाम, क्रिया, परत्व और अपरत्व । उनमें परत्व और अपरत्व एक-दूसरे से सापेक्ष हैं । काल के भूत, वर्तमान और भविष्य ऐसे तीन भेद हैं । काल क्रिया के लिए निमित्त हैं ।

क. काल का उपकार वर्तना है । हर द्रव्य प्रतिसमय उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य रूप स्वसत्ता से युक्त बरतते हैं उसमें काल निमित्त बनता हैं । साथ ही द्रव्य में होते स्वसत्ता के त्याग आदि के बदलाव अर्थात मूल द्रव्य में पूर्व के पर्याय का विनाश और उत्तर पर्याय की उत्पत्ति में भी काल निमित्त बनता है ।

ड. जीव अथवा अजीव के परिणमन के लिए होती क्रिया में भी काल ही निमित्त है । क्रिया के दो भेद बताए हैं । प्रयोग से और विस्रसा से । उसमें प्रयोग से अजीव पर क्रिया होती है और विस्रसा से जीव पर क्रिया होती है । प्रयोग में जीव की प्रेरणा से अजीव के उपर क्रिया होती हैं जैसे कि कुम्हार ने घड़ा बनाया । विस्रसा में स्वाभाविक रूप से जीव पर क्रिया होती है ।

▮

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-९	अध्याय-५	सूत्र २३-४४	जमा करने की अंतिम तारीख ता. १५/०६/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न के ½ अंक. (कुल ३० x ½ = १५ अंक)

१. स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, यह चारों गुण .... रहते हैं ।

अ. साथ ही ब. अलग क. कभी साथ ड. कभी अलग

२. परमाणु और स्कंध दोनों पुद्‌गल .... होने पर भी दोनों की उत्पत्ति के कारण .... होने से .... हैं ।

अ. भिन्न, समान, समान ब. भिन्न, भिन्न, भिन्न

क. समान, भिन्न, भिन्न ड. समान, समान, समान

३. .... स्पर्श, रस, गंध, वर्ण वाला होते हैं ।

अ. आकाश ब. पुद्‌गल क. काळ ड. जीव

४. जो द्रव्य को झुका नहीं सकता वह .... स्पर्श है ।

अ. स्निग्ध ब. मृदु क. गुरु ड. कठीन

५. दो वस्तुओं को चिपकाने का कार्य .... स्पर्श करता है ।

अ. स्निग्ध ब. मृदु क. गुरु ड. कठीन

६. तार की सहायता से उत्पन्न होते वीणा आदि के शब्द को .... कहते हैं ।

अ. तत ब. वितत क. घन ड. शुषिर

७. वायु भरने से बांसुरी द्वारा .... शब्द उत्पन्न होते हैं ।

अ. तत ब. वितत क. घन ड. शुषिर

८. धागे से बंधी सुई समान .... बंध है ।

अ. बद्ध ब. स्पृष्ट क. निधत्त ड. निकाचित

९. स्वच्छ द्रव्यों में मूल वस्तु के वर्ण आदि रूप में परिणाम पाए पुद्गलों को .... छाया कहते हैं।

अ. आकृति ब. तद्वर्ण परिणत क. द्रव्य ड. तदाकार

१०. सूर्य का प्रकाश .... और स्पर्श .... होता है।

अ. तेज, मृदु ब. उष्ण, शीत क. शीत, उष्ण ड. शीत, मृदु

११. स्कंध की उत्पत्ति.......... से होती है।

अ. भेद ब. संघात क. भेद, संघात और भेद-संघात यह तीनों ड. भेद-संघात

१२. परमाणु की उत्पत्ति .... के भेद से ही होती है।

अ. संघात ब. अव्यय क. पर्याय ड. स्कंध

१३. जिसमें उत्पाद, व्यय और ध्रुवता है उसे .... कहते हैं।

अ. सत् ब. असत् क. स्थिर ड. अस्थिर

१४. जैन दर्शन के सिद्धांतों का महल .... के आधार पर रचा है।

अ. जातिवाद ब. वर्णवाद क. एकांतवाद ड. अनेकांतवाद

१५. .... गुण वाले पुद्गलों का परस्पर बंध होता नहीं।

अ. समान ब. मध्यम क. उत्कृष्ट ड. जघन्य

१६. एक ही समय एक द्रव्य में पर्यायो की अनंतता .... के कारण है।

अ. द्रव्य के अनंत गुण ब. द्रव्यों की अनंतता

क. पुद्गल की अनंतता ड. द्रव्य की शाश्वतता

१७. काल का अंतिम अविभाज्य अंश .... है।

अ. आवलिका ब. समय क. मुहूर्त ड. स्तोक

१८. वर्तमान काल .... समय का है।

अ. अनंत ब. एक क. अडतालीस ड. संख्यात

१९. भूतकाल .... समय का है और भविष्यकाल .... समय का हैं।

अ. अनंत, एक ब. अनंत, अनंत क. एक, अनंत ड. एक, एक

२०. आंख के एक पलक में तो .... समय बह जाते हैं।

अ. एक ब. संख्यात क. असंख्यात ड. अनंतानंत

२१. .... नय की अपेक्षा से वर्तमान रूप काल नैश्चयिक काल है।

अ. ऋजुसूत्र ब. नैगम क. व्यवहार ड. संग्रह

२२. द्रव्यों के जो क्रम भावी धर्म हैं उन्हें .... कहते हैं।

अ. पर्याय ब. गुण क. स्वरूप ड. क्रमिक गुण

२३. स्वजाति का त्याग किए बिना द्रव्य का और गुण का जो विकार होता है उसे .... कहते हैं।

अ. परिणाम ब. धर्म क. पर्याय ड. गुण

२४. धर्मास्तिकाय के असंख्य प्रदेशत्व, लोकाकाश व्यपित्व, अगुरुलघुत्व आदि परिणाम .... हैं।

अ. सादि ब. अनादि क. अंतिम ड. आदिमान

२५. रूपी द्रव्यों में आदिमान परिणाम का कथन .... की अपेक्षा से है ।

अ. जाति ब. व्यक्ति क. प्रवाह ड. काल

२६. जीवों में योग और उपयोग यह दो परिणाम .... हैं ।

अ. आदिमान ब. अनादि क. ध्रुव ड. उपगृह

२७. पुद्गल के संबंध से आत्मा में उत्पन्न होते वीर्य का परिणाम विशेष .... हैं ।

अ. उपयोग ब. सवर्धक क. क्रमिक ड. योग

२८. जो वस्तु अपने भाव से अव्यय रहे वह .... है ।

अ. अनित्य ब. परिणत क. भावरूप ड. नित्य

२९. सूत्र में कही नित्यता की व्याख्या .... वस्तु में घटित होती है ।

अ. हर सत् ब. हर असत् क. कुछ सत् ड. सत् और असत् दोनों

३०. आत्मा में चैतन्य, वेदना, चारित्र आदि गुण की अपेक्षा से एक समय में .... पर्याय होते हैं।

अ. एक ब. असंख्य क. अनंत ड. अनंतानंत

विभाग : २. हर प्रश्न के १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१. कोष्ठक में काल के माप दिए हैं । उनमें नीचे दिए विकल्पों में सही विकल्प बताएं।

१ एक आवलिका	अ काल का अंतिम अविभाज्य अंश
२ एक समय	इ १० कोटाकोटी सागरोपम
३ एक सागरोपम	ई असंख्य समय
४ एक पूर्व	उ १० कोटाकोटी पल्योपम
५ एक मुहूर्त	ऊ दो घड़ी
६ एक उत्सर्पिणी	ऋ ७०५६० अरब वर्ष

अ. १-अ, २-इ, ३-ई, ४-उ, ५-ऊ, ६-ऋ ब. १-ई, २-अ, ३-उ, ४-ऊ, ५-ऋ, ६-इ

क. १-ई, २-अ, ३-उ, ४-ऋ, ५-ऊ, ६-इ ड. १-ई, २-अ, ३-उ, ४-ऋ, ५-इ, ६-ऊ

३२. कोष्ठक में स्पर्श के प्रकार और उनके वर्णन दिए हैं। उनमें नीचे दिए विकल्पों में सही विकल्प बताएं।

१	मृदु	अ	जिसके योगे द्रव्य नीचे जाय ते
२	गुरु	इ	जिस का स्पर्श होने से गरमी का अनुभव हो।
३	शीत	ई	जे वस्तु को परस्पर चोटवा न दे ते
४	उष्ण	उ	जिस का स्पर्श थवा से ठंडक का अनुभव थाय
५	रुक्ष	ऊ	जिसके योगे द्रव्य उपर जाय ते
६	लघु	ऋ	जे द्रव्य को नमावी शकाय ते

अ. १-ऋ, २-अ, ३-उ, ४-इ, ५-ऊ, ६-ई ब. १-ऋ, २-अ, ३-उ, ४-इ, ५-ई, ६-ऊ

क. १-ऋ, २-उ, ३-अ, ४-इ, ५-ई, ६-ऊ ड. १-ऋ, २-अ, ३-इ, ४-उ, ५-ई, ६-ऊ

३३. नीचे दिए वाक्यों में सही वाक्य बताएं।

अ. अंधकार यह श्वेत रंग में परिणमित पुद्गलों का समूह है।

ब. शास्त्र में जहाँ वस्तु के निरूपण में अपेक्षा का या जकार का प्रयोग न हुआ हो वहाँ भी अध्याहार से उसका प्रयोग समझना चाहिए।

क. वस्त्र का संस्थान अनित्थं लक्षण संस्थान है।

ड. उष्ण वस्तु के शीत प्रकाश को आतप कहते हैं।

३४. नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य बताएं।

अ. काल जैसी वस्तु जगतमें है उसमें मतभेद नहीं परंतु काल द्रव्यरूप अथवा गुण-पर्यायरूप है उसमें मतभेद है।

ब. जीव के योग और उपयोग यह दो आदिमान परिणाम हैं।

क. न्याय और वैशेषिक दर्शन आत्मा, परमाणु, आकाश आदि को ध्रुव (केवल नित्य) और घटादि पदार्थो को उत्पाद-व्ययशील मानते हैं।

ड. वस्तु में ज्ञेयत्व गुण है वह असाधारण गुण है।

३५. स्पृष्ट बंध की व्याख्या नीचे चार विकल्पों में दी है। उनमें कौन सा विकल्प सही हैं?

अ. विशेष फल दिए बिना सामान्य से (प्रदेशोदय से) भुगत के आत्मा से अलग हो जाय ऐसे बंध को स्पृष्ट बंध कहते हैं।

ब. थोड़ा फल देकर कर्म आत्मा से अलग पड़ जाय ऐसे बंध को स्पृष्ट बंध कहते हैं।

क. अधिक फल देकर कर्म आत्मा से अलग पड़े ऐसे बंध को स्पृष्ट बंध कहते हैं।

ड. अपना पूर्ण फल दिए बिना कर्म अलग पड़े ही नहीं, पूर्ण फल देकर ही अलग पड़े ऐसे बंध को निकाचित बंध कहते हैं ।

३६. परिणामी नित्य यानी क्या?

अ. जो वस्तु नित्य परिणाम पाने की प्रकृति वाली हो वह परिणामी नित्य ।

ब. परिणाम परिवर्तन पाने पर भी अपने मूल स्वरूप का त्याग न करें वह परिणामी नित्य ।

क. जो परिणाम पाने के बाद सदा उसी परिणाम रूप में नित्य रहे वह परिणामी नित्य ।

ड. जिस वस्तु का लगातार परीणमन होने का यानी नित्य परिणमन होने का स्वभाव हो वह परिणामी नित्य ।

३७. उद्योत यानी?

अ. शीत वस्तु के उष्ण प्रकाश को उद्योत कहते हैं ।

ब. उष्ण वस्तु के शीत प्रकाश को उद्योत कहते हैं ।

क. शीत वस्तु के शीत प्रकाश को उद्योत कहते हैं ।

ड. उष्ण वस्तु के उष्ण प्रकाश को उद्योत कहते हैं ।

३८. आतप यानी?

अ. शीत वस्तु के उष्ण प्रकाश को आतप कहते हैं ।

ब. उष्ण वस्तु के शीत प्रकाश को आतप कहते हैं ।

क. शीत वस्तु के शीत प्रकाश को आतप कहते हैं ।

ड. उष्ण वस्तु के उष्ण प्रकाश को आतप कहते हैं ।

३९. नीचे नैश्चयिक काल और व्यवहारिक काल में भेद दिए हैं । उनमें कौन सा विकल्प सही हैं?

अ. नैश्चयिक काल केवल लोक में हैं जब कि व्यवहारिक काल केवल लोकाकाश के अढी द्विप में है ।

ब. वर्तना आदि उपकार रूप काल के पर्यायो यह नैश्चयिक काल है जब कि एक दिवस से लेकर एक अवसर्पिणी यह व्यवहारिक काल है ।

क. नैश्चयिक काल वर्तमान, भूत और भविष्य रूप है जब कि व्यवहारिक केवल काल भूत और भविष्य रूप है ।

ड. नैश्चयिक काल जीव और अजीव उभय स्वरूप होने पर भी जीव द्रव्य से अजीव द्रव्य की सख्या अनेक गुना अधिक होने से नैश्चयिक काल को अजीव रूप पहचाना जाता है जब कि के व्यवहारिक काल अजीव स्वरूप ही है ।

४०. कोष्ठक में शब्द के प्रकार और उनके वर्णन दिए हैं। उनमें नीचे दिए विकल्पों में सही विकल्प बताएं।

१	भाषा	अ	वायु भरने से बांसुरी आदि द्वारा उत्पन्न होते शब्द
२	वितत	इ	तार की सहायता से उत्पन्न होते शब्द जैसे वीणा आदि के
३	घन	ई	डंडी आदि के परस्पर टकराने से उत्पन्न होते शब्द
४	शुषिर	उ	हाथ के प्रतिघात से उत्पन्न होते शब्द
५	तत	ऊ	कांसे आदि उपकरण के परस्पर टकराने से उत्पन्न होते शब्द
६	संघर्ष	ऋ	जीव के मुख के प्रयत्न से उत्पन्न होते शब्द

अ. १-अ, २-इ, ३-ई, ४-उ, ५-ऊ, ६-ऋ   ब. १-ऋ, २-इ, ३-ऊ, ४-अ, ५-उ, ६-ई

क. १-ई, २-अ, ३-इ, ४-ऋ, ५-उ, ६-ऊ   ड. १-ऋ, २-उ, ३-ऊ, ४-अ, ५-ई, ६-इ

४१. स्याद्वाद विषयक नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. किसी भी वस्तु को बराबर पहचाननी हो तो स्याद्वाद के सात वाक्यों से पहचान सकते हैं।

ब. हर वस्तु में अनेक धर्म रहे हैं, इस लिए एक धर्म के निरूपण के समय अन्य धर्मों का सर्वथा निषेध न हो वह स्याद्वाद से संभव बनता है।

क. वस्तु के एक धर्म का स्याद्वाद से निरूपण करते 'अपेक्षा' शब्द आने से वस्तु के अन्य धर्म भी हैं ऐसी समझ मिलती है।

ड. स्याद्वाद के सात भंगों में तीसरे भंग में वस्तु के हर धर्म का निरूपण हो सकता है, इस लिए चौथे भंग की जरूरत ही नहीं।

४२. परमाणु विषयक नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत हैं यह बताएं।

अ. परमाणु नित्य है, उसकी नाश या उत्पत्ति नहीं होती।

ब. परमाणु कारण रूप है, यानी के द्वयणुंक, त्र्यणुंक आदि कार्यो में कारण बनता है।

क. परमाणु आंखों से देख नहीं सकते, छद्मस्थ जीव अनुमान से परमाणु का ज्ञान कर सकते हैं।

ड. दो अथवा अधिक परमाणु जुड़ने से जो स्कंध बनता है वे हर प्रकार के स्कंध आंखों से देख सकते हैं।

४३. शब्द विषयक नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत हैं यह बताएं।

अ. शब्द पुद्‌गल का परिणाम है।

ब. शब्द की उत्पत्ति स्वाभाविक रूप से अथवा प्रयोग से हो सकती है।

क. जिन जीवों को श्रोत्रेन्द्रिय नहीं वे स्पर्श से शब्द को सुन सकते हैं ।

ड. शब्द के मूल दो भेदो में प्रयोग के कुल छ भेद बताए हैं ।

४४. पुद्गल विषयक नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत हैं यह बताएं ।

अ. पुद्गल के लक्षण स्पर्श, रस, गंध और वर्ण हैं ।

ब. पुद्गल के कुल दस परिणाम ग्रंथ में बताए हैं ।

क. पुद्गल के मुख्य तीन भेद ग्रंथ में बताए हैं, परमाणु, अणु और स्कंध.

ड. भेदादाणु: ।।५-२७।। इस सूत्र से परमाणु की उत्पत्ति बताई है वह अपेक्षा से है, मूल से परमाणु नित्य है, उसकी उत्पत्ति नहीं होती ।

४५. नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य सही हैं यह बताएं ।

अ. जिस वस्तु में उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य न हो वह वस्तु सत् है ।

ब. जो वस्तु अपने भाव से अव्यय रहे वह अनित्य है ।

क. किसी भी द्रव्य में प्रत्येक समय परिवर्तन होता ही है ।

ड. वस्तु में परस्पर विरुद्ध धर्मों की उपस्थिति संभव ही नहीं ।

४६. नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत हैं वह बताएं ।

अ. स्निग्ध और रुक्ष स्पर्श से पुद्गलों का बंध होता है ।

ब. द्विगुण स्निग्ध स्पर्श वाले पुद्गल और द्विगुण रुक्ष स्पर्श वाले पुद्गल को समान कहते हैं।

क. स्निग्ध गुणवाला पुद्गल अन्य स्निग्ध गुणवाले पुद्गल की अपेक्षा से समान है ।

ड. सदृश पुद्गलों में गुणवैषम्य होने उपरांत द्विगुण आदि स्पर्श से अधिक हो तो उनका परस्पर बंध होता है ।

४७. नीचे स्याद्वाद और संशयवाद विषयक जो विधान दर्शाए हैं उनमें कौन सा विधान गलत है?

अ. स्याद्वाद एक ही वस्तु में परस्पर विरुद्ध धर्म विद्यमान हैं उसका यथार्थ निर्णय कराता है।

ब. संशयवाद में वस्तु के किसी भी धर्म का निर्णय होता नहीं, मात्र कल्पना होती है ।

क. स्याद्वाद और संशयवाद दोनों में वस्तु विषयक निर्णय होते हैं ।

ड. स्याद्वाद में जकार इस्तेमाल कर सकते हैं, संशयवाद में नहीं ।

४८. नीचे सूक्ष्म और बादर परिणामी स्कंध विषयक जो विधान दर्शाए हैं उनमें कौन सा विधान गलत है?

अ. सूक्ष्म परिणामी स्कंध आंख से ग्राह्य नहीं, यानी के चक्षु द्वारा उसका ज्ञान नहीं होता ।

ब. सूक्ष्म परिणामी स्कंध में मृदु और लघु स्पर्श ही संभव हैं, बाकी के छ प्रकार के स्पर्श नहीं होते ।

क. बादर परिणामी स्कंध में आठों प्रकार के स्पर्श संभव हैं ।

ड. बादर परिणामी स्कंध आंख से अथवा अनुमान से ग्राह्य बनता है ।

४९. नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है वह बताएं ।

अ. अंधकार यह प्रकाश का अभाव नहीं परंतु कृष्ण रंग में परिणमित पुद्गलों का समूह रूप है ।

ब. जब अंधकार के पुद्गलों के ऊपर प्रकाश की किरणें फैलती है तब अंधकार के पुद्गल वस्तु को आच्छादित नहीं कर सकते ।

क. जब कि प्रकाश के किरणें हट जाए तब अंधकार के पुद्गलों का आवरण आ जाने से वस्तु दिखती नहीं ।

ड. अंधकार पुद्गल स्वरूप नहीं होने पर भी उससे दृष्टि का प्रतिबंध होता है ।

५०. कोष्ठक में पुद्गल के परिणाम स्वरूप भेद के प्रकार और उनके दृष्टांत दिए हैं । उनमें नीचे दिए विकल्पों में सही विकल्प बताएं ।

१	औत्कारिक	अ	कठोल आदि के दलने द्वारा होता भेद
२	खंड	इ	सब्जी की खाल उतारना आदि
३	चौर्णिक	ई	पत्थर आदि का उत्कीर्ण कर प्रतिमा का आकार बनाना आदि
४	अनुतट	उ	गोबी की पपड़ी उतारने द्वारा होता भेद
५	प्रतर	ऊ	गन्ने आदि के टुकड़े करना

अ. १-ई, २-ऊ, ३-अ, ४-उ, ५-इ   ब. १-ई, २-अ, ३-ऊ, ४-इ, ५-उ

क. १-अ, २-ऊ, ३-ई, ४-इ, ५-उ   ड. १-ई, २-ऊ, ३-अ, ४-इ, ५-उ

५१. नीचे दिए दृष्टांतो में बद्ध बंधका दृष्टांत कौन सा है?

अ. परस्पर छूई हुई सुईयों के समान ।

ब. इस्तेमाल बिना अधिक समय से पड़ी धागे से बंधी जंग खायी सुईयों के समान ।

क. कूट कर एक दूसरे से जुड़ी सुईयों के समान ।

ड. धागे से बंधी सुईयां जिस को अलग करने में थोड़ी मेहनत करनी पड़े उनके समान ।

५२. नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य बताएं ।

अ. दर्पण आदि स्वच्छ द्रव्यों में शरीर आदि के पुद्गलों की आकृति रूप प्रतिबिंब दिखता है उसे आकृति रूप छाया कहते हैं ।

ब. सूर्य के प्रकाश को आतप कहते हैं ।

क. संगीत आदि द्वारा अनुकूल असर होने से वृक्ष - वनस्पति जल्दी और अधिक विकसित होते हैं ।

ड. अन्य वस्तु से कोई वस्तु अधिक स्थूल लगे वह आपेक्षिक स्थूलता है ।

५३. पुद्गल के भेद, संघात और संघात - भेद विषयक दिए चार वाक्यों में कौन सा वाक्य सही है वह बताएं ।

अ. संघात में एकाणुक से लेकर अनंताणुक तक के भेद होते हैं ।

ब. अनंताणुक स्कंध में से एक अणु अलग पड़े तो असंख्याणुक स्कंध बनता है ।

क. संघात और भेद में एक-एक अणु जुड़े अथवा अलग पड़े ऐसा नियम नहीं है ।

ड. एक ही समय में एक अथवा अधिक परमाणु अलग पड़े और दूसरे एक अथवा अधिक अणु जुड़े उसे संघात अथवा भेद कहते हैं ।

५४. सत के लक्षण विषयक नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत हैं?

अ. हर वस्तु प्रति समय द्रव्य रूप से स्थिर होती है ।

ब. वस्तु के अस्थिर अंश को पर्यायांश कहते हैं ।

क. हर वस्तु जो पर्याय रूप में अस्थिर हो वह असत होती है ।

ड. वस्तु पर्याय रूप से उत्पाद-व्यय युक्त और द्रव्य रूप से ध्रुव हो उसे सत् कहते हैं ।

५५. नित्य के लक्षण विषयक नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत हैं?

अ. हर सत् वस्तु नित्य ही होती है ऐसा नियम है ।

ब. सत् वस्तु नित्य होने पर भी उसमें प्रत्येक समय परिवर्तन होता ही है ।

क. सत् वस्तु में प्रत्येक समय जो परिवर्तन होता है वह केवल तीर्थंकर भगवंत ही जान सकते हैं, सामान्य केवली नहीं ।

ड. छद्मस्थ केवल स्थूल परिवर्तन देख सकते हैं, सूक्ष्म परिवर्तन नहीं ।

५६. पुद्गल के बंध विषयक नीचे दिए वाक्यों में से सही वाक्य बताएं ।

अ. जघन्य गुण पुद्गल में और एक गुण पुद्गल में सौ से अधिक न्यून और समान गुण होते हैं इस लिए दोनों का अर्थ एक ही हैं ।

ब. स्निग्ध स्पर्श वाले पुद्गलों का स्निग्ध स्पर्श वाले और रुक्ष स्पर्श वाले पुद्गलों का रुक्ष स्पर्श वाले पुद्गलों के साथ बंध संभव नहीं ।

क. बंध केवल परमाणु में हो सकते हैं, स्कंध में तो भेद ही होते हैं ।

ड. गुण की समानता और सदृशता यह दोनों एक ही हैं ।

५७. नीचे दिए विकल्पों में कौन से विकल्प में पुद्‌गल का बंध नहीं होता बताएं ।
  अ. एकगुण रुक्ष स्पर्श वाले पुद्‌गल का द्विगुण रुक्षस्पर्श वाले पुद्‌गल के साथ ।
  ब. पंचगुण स्निग्ध स्पर्श वाले पुद्‌गल का पंचगुण स्निग्ध स्पर्श वाले पुद्‌गल के साथ ।
  क. पंचगुण स्निग्ध स्पर्श वाले पुद्‌गल का पंचगुण रुक्ष स्पर्श वाले पुद्‌गल के साथ ।
  ड. चतुर्गुण स्निग्ध स्पर्श वाले पुद्‌गल का द्विगुण रुक्ष स्पर्श वाले पुद्‌गल के साथ ।

५८. नीचे दिए बंध के बाद स्कंध के परिणाम में कौन सा विकल्प गलत है?
  अ. जब समान गुण हों और स्निग्ध और रुक्ष स्पर्श वाले पुद्‌गलों का बंध हो तो कभी स्निग्ध स्पर्श वाले रुक्ष स्पर्श वाले के रूप में तो कभी रुक्ष स्पर्श वाले स्निग्ध स्पर्श वाले के रूप में परिणाम पाते हैं ।
  ब. जब गुण में समानता हो और पुद्‌गल सदृश हो तब बंध नहीं होता इसलिए पुद्‌गलों के परिणाम में कोई बदलाव नहीं होता ।
  क. जब गुण में विषमता हो और पुद्‌गल असदृश हो तो परिणाम में अधिक गुण वाले पुद्‌गल न्यून गुण वाले पुद्‌गल को अपने रूप में परिणमित करते हैं ।
  ड. अगर असमान गुण वाले पुद्‌गल सदृश हो तो अवश्य बंध होता ही है और अधिक गुण वाले पुद्‌गल न्यून गुणवाले पुद्‌गल को अपने रूप में परिणमित करते हैं ।

५९. द्रव्य के लक्षण विषयक नीचे के विकल्पों में कौन सा विकल्प सही हैं?
  अ. द्रव्य के सहभावी गुणो को धर्म कहते हैं ।
  ब. द्रव्य के क्रम भावी गुण को द्रव्य के पर्याय कहते हैं ।
  क. हर द्रव्य में प्रति समय हर पर्याय नाश होकर नए पर्याय उत्पन्न होते हैं ।
  ड. द्रव्य में गुण व्यक्ति की अपेक्षा से तो पर्याय प्रवाह की अपेक्षा से सदा रहते हैं यानी दोनों रहते तो हैं हमेशा ।

६०. काल विषे नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत हैं वह बताएं ।
  अ. ऋजुसूत्र नय की अपेक्षा से वर्तमान समय रूप नैश्चयिक काल और भूत-भविष्य व्यवहारिक काल है ।
  ब. सूक्ष्म दृष्टि से विचार करें तो काल द्रव्य नहीं पर द्रव्य के वर्तना आदि पर्याय स्वरूप है ।
  क. नैश्चयिक काल जीव अजीव उभय स्वरूप है पर अजीव द्रव्य की संख्या की अधिकता के कारण काल को अजीव कहते हैं ।
  ड. एक काल चक्र में २० सागरोपम होते हैं ।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक । **(कुल १५ x २ = ३० अंक)**

६१. नीचे के वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं?

अ. स्पर्श के आठ प्रकार हैं, कठीन, मृदु, गुरू, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष । जिस द्रव्य को झुका नहीं सकते उस द्रव्य का स्पर्श कठिन, कठिन स्पर्श से विपरीत स्पर्श मृदु है । जिसके योग से द्रव्य नीचे जाए वह स्पर्श गुरु, जिसके योग से द्रव्य तिर्च्छा या उपर जाए वह स्पर्श लघु है । जिसके योग से दो वस्तुएं चिपक जाए वह स्पर्श स्निग्ध, स्निग्ध से विपरीत स्पर्श रूक्ष है । शीत यानी ठंडा स्पर्श, उष्ण यानी गरम स्पर्श । गंध के सुरभि और दुरभि ऐसे दो भेद हैं । चंदन आदि की गंध सुरभि हैं और लहसुन आदि की गंध दुरभि है।

ब. रस के पांच प्रकार हैं, तिकत, कटु, कषाय, खट्टा, मधुर । कुछ विद्वान खारे रस समेत छ रस गिनते हैं । कोई खारे रस का मुधर रस में अंतर्भाव करते हैं । तो कोई दो रस के संसर्ग से खारा रस उत्पन्न होता है ऐसा कहते हैं । वर्ण के कृष्ण (काला), नील (नीला), लाल, पीत (पीला), श्वेत (सफ़ेद) ऐसे पांच प्रकार हैं ।

क. वायु के स्पर्श को हम जान सकते हैं, पर रूप को जान सकते नहीं, क्यों कि वायु का रूप इतना सूक्ष्म हैं कि चक्षुमें उसे जानने की शक्ति नहीं । पर जब वैज्ञानिक पद्धति से यही वायु हाईड्रोजन और ओक्सिजन के मिश्रण से पाणी स्वरूप बन जाता है तब उसमें रूप देख सकते हैं । क्यों कि दो वायु के मिश्रण से वे अणु सूक्ष्म पना का त्याग कर स्थूल बन जाते हैं ।

ड. स्पर्श, रस, गंध और वर्ण यह चार जिस द्रव्य में हो वह द्रव्य पुद्‌गल है । स्पर्श आदि चारों गुण साथ ही रहते हैं । अत: जहाँ स्पर्श या अन्य कोई एक गुण हो वहाँ अन्य तीन गुण भी अवश्य होते हैं । अन्य गुण अव्यक्त हो ऐसा होता है और हो ही नहीं ऐसा भी होता है ।

६२. नीचे के वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं?

अ. १. ईत्थं लक्षण संस्थान - लंबा, गोल, चतुरस्र आदि रूप से जिसका वर्णन हो सकता है वह। जैसे मकान आदि का संस्थान ।

२. अनित्थं लक्षण संस्थान - लंबा, गोल आदि शब्दों से जिसका वर्णन नहीं हो सकता वह । जैसे मेघ आदि का संस्थान ।

ब. १. तद्वर्ण परिणत छाया - दर्पण आदि स्वच्छ द्रव्यों में शरीर आदि के पुद्‌गल, शरीर

आदि वर्ण आदि के रूप में परिणाम पाते हैं। स्वच्छ द्रव्यों में मूल वस्तु के वर्ण आदि के रूप में परिणाम पाए पुद्‌गल को तद्वर्ण परिणत छाया का प्रतिबिंब कहते हैं।

२. आकृति रूप छाया - अस्वच्छ द्रव्यों पर शरीर आदि के पुद्‌गलों की केवल आकृति (वर्ण न दिखे, मात्र आकृति दिखे ऐसा) प्रमाण होता परिणाम कि जो धूप में दिखे वह आकृति रूप छाया है।

क. १. तत - हाथ के प्रत्याघात से उत्पन्न होते ढोल आदि के शब्द।
२. वितत - डंडी आदि के परस्पर टकराने से उत्पन्न होती ध्वनि।
३. धन - कांसा आदि अधिकरण के परस्पर टकराने से उत्पन्न होते शब्द।
४. शुषिर - हवा भरने से बांसुरी आदि द्वारा उत्पन्न होते शब्द।
५. संघर्ष - तार की सहायता से उत्पन्न होते वीणा आदि के शब्द।
६. भाषा - जीव के मुख के प्रयत्न से उत्पन्न होते शब्द।

ड. १. औत्करिक - लकड़ी आदि का उत्कीर्ण आदि से होता भेद।
२. चौर्णिक - घेऊ आदि को दलने आदि से होता भेद।
३. खंड - लकड़ी आदि के टुकड़े = खंड करने से होता भेद।
४. प्रतर - अभ्रक आदि के होते पटल = पपड़ी वह प्रतर भेद।
५. अनुतट - बांस, गन्ना, खाल, चमड़ी आदि छेदने से होता भेद।

६३. नीचे के वाक्यों में से कौन सा वाक्य गलत नहीं?

अ. निघत्त बंध - धागे से बंधी सुई समान। जैसे धागे से बंधी सुई को अलग करनी हो तो धागा छोड़ने की जरा मेहनत करनी पड़ती है, वैसे कर्म थोड़ा फल देकर ही अलग पड़े ऐसे प्रकार का बंध निघत्त बंध है।

ब. स्पृष्ट बंध - परस्पर छूई सुई समान। जैसे परस्पर छूकर रही सुई को अलग करनी हो तो छूने मात्र से अलग कर सकते हैं, बिखेर सकते हैं, वैसे कर्म फल दिए बिना ही आत्मा से अलग हो जाय ऐसा बंध वह स्पृष्ट बंध है।

क. निकाचित बंध - कूट कर एक बनाई सुई समान। जिस तरह ऐसी सुई उपयोग में नहीं ले सकते, उनमें से नई सुई बनाने की मेहनत करनी पड़ती है, उसी तरह कर्म अपना पूर्ण फल दिए बिना अलग पड़े ही नहीं, पूर्ण फल देकर ही अलग पड़े ऐसे प्रकार का बंध निकाचित बंध है।

ड. बद्ध बंध - धागे से बंधी और इस्तेमाल के बिना लंबे समय से पड़ी रहने से जंग खा चुकी सुई

समान। जिस तरह ऐसी सुई को अलग करने को, उपयोग में लेने में अधिक मेहनत करनी पड़ती है, उसी तरह कर्म अपना अधिक फल देकर ही अलग पड़े ऐसा बंध बद्ध बंध है।

६४. नीचे के वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं?

अ. १. बजते हुए ढोल के पास में पड़े पैसे का सिक्का ढोल के शब्द से टकरा कर दूर फेंका जाता है। २. ज़ोरदार शब्द कान को टकराए तो कान फूट जाते हैं या बहेरे बन जाते हैं। ३. जैसे पत्थर आदि को पर्वतादि का प्रतिघात होता है वैसे शब्द का भी कुएं आदि में प्रतिपात होता है और उसे से उसकी गूंज पड़ती है। ४. वायु से शब्द तृण की तरह दूर दूर तक घसीटा जाता है। ५. प्रदीप के प्रकाश की तरह शब्द चारों ओर फैलते है। शब्द अगर पुद्गल न हों तो यह नहीं हो सकता हैं। ऐसे अनेक रूप से शब्द पुद्गल हैं यह सिद्ध होता हैं।

ब. सूर्य का प्रकाश पृथ्वी पर उष्ण होता है पर सूर्य विमान का स्पर्श शीत होता है, अग्नि आदि के और सूर्य के प्रकाश में यही भेद है। अग्नि आदि का स्पर्श उष्ण होता है और प्रकाश भी उष्ण होता है। जब कि सूर्य में ऐसा नहीं है। सूर्य का प्रकाश ही उष्ण होता है। स्पर्श तो शीत होता है। सूर्य के प्रकाश की उष्णता भी जैसे जैसे दूर हो वैसे वैसे अधिक होती है। अंत: देव को उसमें रहने में कुछ भी बाधा आती नहीं।

क. स्थूलता केवल स्कंध में ही होती है। ऐसा स्थूलता का निरूपण यह २४वे सूत्र में ही करना चाहिए. सूक्ष्मता स्थूलता के प्रतिपक्ष रूप में हैं और लोकव्यापी अचित्त महास्कंध आदि में होती नहीं यह बताने स्थूलता के साथ सूक्ष्मता का निरूपण इस २४वे सूत्र में किया गया है।

ड. २३वे सूत्र में कहे स्पर्श आदि पर्याय अणु और स्कंध दोनों में होते हैं। जब कि २४वे सूत्र में कहे शब्द आदि पर्याय मात्र स्कंध में ही होते हैं। स्कंधों में भी हर स्कंधो में शब्दादि पर्याय होते ही हैं ऐसा नियम है। जब कि स्पर्शादि पर्याय तो हर परमाणु में और हर स्कंध में अवश्य होते हैं। इस विशेषता को बयान करने यहाँ दो सूत्र की रचना की है।

६५. नीचे के वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं?

अ. परमाणु यानी पुद्गल का अंतिम अंश है। इसी लिए उसे परम = अंतिम अणु = अंश = परमाणु कहते हैं। ऐसे परमाणु पुद्गल का अविभाज्य (जिसके केवली भी दो हिस्से नहीं

कर सकते ऐसा) अंतिम विभाग है। उससे छोटा विभाग होता ही नहीं, उसके आदि, मध्य और अंत भी वह स्वयं ही हैं, अबद्ध अलग ही होते हैं। उसके प्रदेश होते नहीं, वह स्वयं ही एक प्रदेश रूप है।

ब. अकेला परमाणु कभी भी आंख से दिखता नहीं। और अनुमान आदि से भी जान नहीं पाते। जब अनेक परमाणु को इकट्ठा होकर कार्य के रूप में परिणाम पाते हैं, तब अनुमान द्वारा एक परमाणु का ज्ञान होता है। दृश्यमान घटादि कार्यों में परंपरा से अनेक कारण होते हैं, उनमें अंतिम जो कारण है वह परमाणु है।

क. परमाणु सूक्ष्म ही होता है, उसका कभी भी नाश होता नहीं। उसके पर्याय बदलते हैं, पर सर्वथा नाश कभी भी नहीं होता, उसमें किसी भी एक रस, किसी भी एक गंध, किसी भी एक वर्ण, चार स्पर्श (स्निग्ध, उष्ण, मृदु, लघु यह चार विकल्प में से कोई भी एक विकल्प के चार स्पर्श) होते हैं।

ड. परमाणु कारण रूप ही है। अर्थात् परमाणु से अन्य द्व्यणुक (दो अणु का स्कंध) आदि कार्य होते हैं। अतः वह कारण बनता है। पर वह किसी में से उत्पन्न होता नहीं होने से कार्य रूप बनता नहीं।

६६. नीचे के वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं है?

अ. स्कंध यानी परस्पर जुड़े दो आदि परमाणु की राशी। स्कंध सूक्ष्म परिणाम वाले और बादर परिणाम वाले ऐसे दो प्रकार के हैं।

ब. बादर परिणाम वाले स्कंध में आठों प्रकार के स्पर्श और सूक्ष्म परिणाम वाले स्कंध में चार प्रकार के स्पर्श (स्निग्ध-उष्ण-मृदु-लघु, स्निग्ध-शीत-मृदु-लघु, रूक्ष-उष्ण-मृदु-लघु, रूक्ष-शीत-मृदु-लघु) - इन चार विकल्प में से किसी भी एक विकल्प के चार स्पर्श) होते हैं। और दोनों प्रकार के स्कंध में कोई भी एक रस, कोई भी एक गंध, कोई भी एक वर्ण होते हैं।

क. दृश्यमान घटादि सभी स्कंध बादर परिणामी हैं।

ड. सूक्ष्म परिणाम वाले स्कंध आंखों से दिखते नहीं। बादर परिणाम वाले स्कंध ही आँखों से दिखते हैं।

६७. नीचे के वाक्यों में से कौन सा वाक्य गलत नहीं है?

अ. स्कंध में कुछ परमाणु जुड़े और उसी समय उनमें से जितने जुड़े उतने या अधिक कम अणु अलग पड़े तो नया जो स्कंध बनता है उसकी उत्पत्ति संघात-भेद से हुई है ऐसा कहते हैं।

ब. द्वयणुक स्कंध में एक साथ दो आदि अणु जुड़े तो त्र्यणुक स्कंध बने बिना सीधे चतुरणुक आदि स्कंध उत्पन्न होते हैं । वैसे ही अलग अलग तीन या चार आदि परमाणु एक साथ जुड़े तो द्वयणुक बने बिना सीधे ही त्र्यणुक या चतुरणुक आदि स्कंध उत्पन्न होते हैं । कभी अलग अलग संख्यात परमाणु एक साथ जुड़ने से द्वयणुकादि स्कंध बने बिना संख्याताणुक स्कंध बन जाते हैं । इस तरह असंख्याताणुक और अनंताणुक स्कंध के लिए भी जानें ।

क. जैसे संघात में एक साथ एक एक अणु ही जुड़ते हैं ऐसा नियम नहीं वैसे भेद में भी एक एक अणु ही अलग हो ऐसा नियम नहीं । अनंताणुक आदि स्कंध में से कभी एक, कभी दो, कभी तीन, ऐसे यावत् कभी एक साथ मात्र दो अणु को छोड कर सभी अणु अलग पड़ तो वह स्कंध द्वयणुक बन जाए ।

ड. उपर के अ, ब, क तीनों वाक्य सही हैं ।

६८. नीचे के वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं है?

अ. परमाणु के स्वतंत्र अस्तित्व पर्याय की उत्पत्ति को उपचार से परमाणु की उत्पत्ति कहते हैं । द्रव्यार्थिक नय की दृष्टि से वह परमाणु कार्य रूप है और पर्यायार्थिक नय की दृष्टि से वह परमाणु कारण रूप भी है ।

ब. यहाँ भेद से परमाणु उत्पन्न होते हैं इसका अर्थ इतना ही हैं कि परमाणु स्कंध में बद्ध था वह अलग-स्वतंत्र होता है । अतः उसमें स्वतंत्र अस्तित्व रूप पर्याय उत्पन्न होता है ।

क. जब परमाणु स्कंध में से अलग पड़े तब उसका स्कंध बद्ध अस्तित्व पर्याय नाश पाता है और स्वतंत्र अस्तित्व पर्याय उत्पन्न होता है । अतः पर्यायार्थिक नय से स्वतंत्र अस्तित्व पर्याय के रूप में परमाणु की उत्पत्ति होती है । बाकी स्कंध में जो परमाणु था वही अलग पड़ता है यानी कि कोई नया ही परमाणु उत्पन्न होता है ऐसा नहीं है ।

ड. द्रव्यार्थिक नय की दृष्टि से परमाणु को नित्य कहा गया है । यानी कि परमाणु पूर्व था ही नहीं और नए ही द्रव्य के रूप में उत्पन्न होता है ऐसा नहीं है । अतः द्रव्य के रूप में वह नित्य है पर कुछ पर्याय के रूप में वह नया ही उत्पन्न होता है ।

६९. नीचे के वाक्यों में से कौन सा वाक्य गलत नहीं है?

अ. भेद-संघात से उत्पन्न हुए सभी स्कंध दिख सकते हैं ऐसा नियम नहीं । पर जो स्कंध दिखता है वह स्कंध भेद-संघात से ही उत्पन्न हुआ होता हैं ऐसा नियम है ।

ब. अत्यंत स्थूल परिणाम वाले स्कंध ही आँखों से दिख सकते हैं । ये स्कंध केवल भेद या केवल संघात से उत्पन्न नहीं होते, किन्तु भेद-संघात से ही उत्पन्न होते हैं ।

क. सूत्र में भेद और संघात ऐसे उभय से उत्पन्न हुए स्कंध ही चक्षु से ग्राह्य बनते हैं ऐसा उपलक्षण होने से पांचों ईन्द्रिय से ग्राह्य बनते हैं, ऐसा समझिए । अर्थात् भेद-संघात से उत्पन्न हुए स्कंध इन्द्रिय ग्राह्य बनते हैं ।

ड. उपर के अ, ब, क तीनों सही हैं ।

७०. नीचे के वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं है?

अ. वेदांत दर्शन - वेदांती संपूर्ण जगत को ब्रह्म स्वरूप मानता है । चेतन या जड़ सभी वस्तु ब्रह्म के ही अंश हैं । जिस तरह एक चित्र में अलग अलग रंग और अलग अलग आकृति होती है, पर वह सभी एक ही चित्र के विभाग हैं, चित्र से अलग नहीं । वैसे ही यह संपूर्ण जगत ब्रह्म स्वरूप है । ब्रह्म ध्रुव = नित्य है । अतः वेदांत दर्शन ब्रह्म स्वरूप संपूर्ण सत् पदार्थ को केवल ध्रुव = नित्य ही मानता है ।

ब. न्याय दर्शन - न्याय दर्शन आत्मा परमाणु, आकाश आदि को ध्रुव - केवल नित्य और घटादि पदार्थो को उत्पाद-व्ययशील मानता है ।

क. बौद्ध दर्शन - बौद्ध दर्शन चेतन या जड़, वस्तु मात्र को क्षणिक - प्रति क्षण सर्वथा नाश पाने वाला मानता है । अतः उसके मत से सत का लक्षण क्षणिकता है । यत् सत् तत् क्षणिकम् - जो जो सत् हैं वे सभी क्षणिक हैं ।

ड. वैशेषिक दर्शन - वैशेषिक दर्शन जगत को पुरूष और प्रकृति स्वरूप मानता है । पुरूष यानी आत्मा । प्रकृति के संयोग से पुरूष का संसार हैं । दृश्यमान जड़ वस्तु में (परंपरा से) प्रकृति का परिणाम है । इस दर्शन के मत से पुरुष ध्रुव = कूटस्थ नित्य है । जब कि प्रकृति परिणामी नित्य = नित्यानित्य है ।

७१. नीचे के वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं है?

अ. जैन दर्शन के सिद्धांतों का महेल स्याद्वाद के आधार पर ही रचा है । स्याद्वाद जैन दर्शन का प्राण है । जहां स्याद्वाद नहीं वहाँ जैन दर्शन नहीं ।

ब. राजकीय, सामाजिक, धार्मिक, व्यावहारिक, शैक्षणिक आदि या बड़े सभी क्षेत्रों में स्याद्वाद की जरूरत हैं । स्याद्वाद बिना कोई क्षेत्र विकास पा सकता ही नहीं । जितने अंश से हम स्याद्वाद का भंग करते हैं उतने अंश से हमारी प्रगति रुकती है । अतः जैन दर्शन के हर सिद्धान्त में स्याद्वाद की झलक हैं ।

क. स्यात् यानी अपेक्षा । अतः स्याद्वाद यानी अपेक्षावाद । स्याद्वाद, अपेक्षावाद, अनेकांतवाद, एकांतवाद, नयवाद, प्रमाणवाद आदि शब्द एकार्थक हैं ।

ड. हर सत् वस्तु परिवर्तन पाती है यानी अनित्य है और परिवर्तन पाने पर भी अपने मूल स्वरूप का त्याग करती नहीं इसलिए नित्य है । इसे परिणामी नित्य कहते हैं । परिणाम (परिवर्तन) पाने पर भी नित्य रहे वह परिणामी नित्य ।

७२. नीचे के वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं है?

अ. जीव एक (समान) भी हैं, अनेक (भिन्न) भी हैं, क्यों कि हर वस्तु सामान्य और विशेष ऐसे उभय रूप में होती है । सामान्य (विवक्षित हर वस्तु में हो वह) स्वरूप ऐकता की बुद्धि कराता है । और विशेष (विवक्षित हर वस्तु में भिन्न भिन्न हो वह) स्वरूप भिन्नता की बुद्धि कराता हैं ।

ब. एक ही वस्तु सत् भी है और असत् भी है । हर वस्तु स्व के रूप में (अपने रूप में) सत् (विद्यमान) होती है और परके रूप में (अन्य के रूप में) असत् (अविद्यमान) होती है ।

क. हर वस्तु में दो अंश अवश्य होते हैं, १. द्रव्य अंश और २. पर्याय अंश । उनमें द्रव्यार्थिक नय द्रव्य अंश की ओर और पर्यायार्थिक नय पर्याय अंश की ओर दृष्टि करता है । द्रव्य अंश स्थिर = नित्य है और पर्याय अंश अस्थिर = अनित्य है और पर्यायार्थिक नय की दृष्टि से देखा जाए तो अनित्य दिखती है ।

ड. स्याद्वाद के सिद्धान्त में एक ही वस्तु नित्य भी है और अनित्य भी है, यानी वस्तु का कोई निर्धारित स्वरूप नहीं होने से स्याद्वाद यह संशयवाद है ।

७३. नीचे बताई सप्तभंगी में से कौन सी सप्तभंगी गलत नहीं है?

अ. १. आत्मा नित्य है ।

२. आत्मा अनित्य है ।

३. आत्मा नित्य है अनित्य है ।

४. आत्मा अवक्तव्य है ।

५. आत्मा नित्य है अवक्तव्य है ।

६. आत्मा अनित्य है अवक्तव्य है ।

७. आत्मा नित्य है अनित्य है अवक्तव्य है ।

ब. १. आत्मा नित्य ही है ।

२. आत्मा अनित्य ही है ।

३. आत्मा नित्य ही है । अनित्य ही है ।

४. आत्मा अवक्तव्य ही है ।

५. आत्मा नित्य ही है अवक्तव्य ही है ।

६. आत्मा अनित्य ही है । अवक्तव्य ही है ।

७. आत्मा नित्य ही है अनित्य ही है अवक्तव्य ही है ।

क. १. आत्मा अपेक्षा से नित्य है ।

२. आत्मा अपेक्षा से अनित्य है ।

३. आत्मा अपेक्षा से नित्य है अपेक्षा से अनित्य है ।

४. आत्मा अपेक्षा से अवक्तव्य है ।

५. आत्मा अपेक्षा से नित्य है अपेक्षा से अवक्तव्य है ।

६. आत्मा अपेक्षा अनित्य है अपेक्षा से अवक्तव्य है ।

७. आत्मा अपेक्षा से नित्य है अपेक्षा से अनित्य है । अपेक्षा से अवक्तव्य है।

ड. १. आत्मा अपेक्षा से नित्य ही है ।

२. आत्मा अपेक्षा से अनित्य ही है ।

३. आत्मा अपेक्षा से नित्य ही है अपेक्षा से अनित्य ही है ।

४. आत्मा अपेक्षा से अवक्तव्य ही है ।

५. आत्मा अपेक्षा से नित्य ही है अपेक्षा से अवक्तव्य ही है ।

६. आत्मा अपेक्षा से अनित्य ही है अपेक्षा से अवक्तव्य ही है ।

७. आत्मा अपेक्षा से नित्य ही है अपेक्षा से अनित्यज है । अपेक्षा से अवक्तव्य ही है ।

७४. नीचे बताए सप्तभंगी के अंशों में से कौन सा अंश गलत नहीं है?

अ. १. आत्मा नित्य है ।

२. आत्मा अनित्य है ।

ब. १. आत्मा नित्य ही है अनित्य ही है ।

२. आत्मा अवक्तव्य ही है ।

क. १. आत्मा अपेक्षा से नित्य है । अपेक्षा से अवक्तव्य है ।

२. आत्मा अपेक्षा से अनित्य है । अपेक्षा से अवक्तव्य है ।

ड. १. आत्मा अपेक्षा से नित्य ही है । अपेक्षा से अनित्य ही है ।

२. अपेक्षा से अवक्तव्य ही है ।

७५. नीचे बताए विकल्पों में से कौन सा विकल्प पुद्गल के बंध के लिए अयोग्य नहीं है?

अ. १. १० गुण स्निग्ध का १५ गुण स्निग्ध के साथ

२. ५० गुण स्निग्ध का ५० गुण रूक्ष के साथ

३. १०० गुण रूक्ष का १०१ गुण रूक्ष के साथ

ब. १. २० गुण स्निग्ध का २० गुण रूक्ष के साथ

२. ३० गुण रूक्ष का ३३ गुण रूक्ष के साथ

३. ६० गुण स्निग्ध का ६२ गुण स्निग्ध के साथ

क. १. १००० गुण रूक्ष का २००० गुण रूक्ष के साथ

२. १ गुण स्निग्ध का १ गुण रूक्ष के साथ

३. १ गुण रूक्ष का १० गुण रूक्ष के साथ

ड. १. १०८ गुण स्निग्ध का १०९ गुण स्निग्ध के साथ

२. १००८ गुण रूक्ष का १००९ गुण रूक्ष के साथ

३. १ गुण रूक्ष का ३ गुण रूक्ष के साथ

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-१०	अध्याय-६	सूत्र १-८	जमा करने की अंतिम तारीख ता. ३०/०६/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न के ½ अंक. (कुल ३० x ½ = १५ अंक)

१. आत्मा की शक्ति एक होने पर भी उसके उपयोग के साधन के आधार पर उसके .... भेद हैं ।

अ. एक ब. दो क. तीन ड. चार

२. औदारिक मिश्र योग में औदारिक और .... शरीर का मिश्र योग होता है ।

अ. वैक्रिय ब. आहारक क. तैजस ड. कार्मण

३. योग शुभ अथवा अशुभ .... के आधार से बनते हैं ।

अ. अच्छे वचन ब. अध्यवसाय क. काया की निर्मलता ड. मन के विचार

४. चार प्रकार के बंध में .... और .... यह मुख्य हैं ।

अ. प्रकृति, स्थिति ब. प्रकृति, रस क. स्थिति, रस ड. स्थिति, प्रदेश

५. समादान क्रिया यानी कर्मबंध हो ऐसी संयम की सावध्य क्रिया - यह व्याख्या .... के आधार से लिखी है ।

अ. तत्त्वार्थकारिका ब. श्लोकवार्तिक क. कर्मग्रंथ ड. राजवार्तिक

६. क्रोधावेश से होती क्रिया यह .... क्रिया है ।

अ. प्रादोषिकी ब. परितापिकी क. प्राणातिपात ड. प्रत्यय

७. पौद्गलिक सुख के लिए इन्द्रिय आदि की प्रवृत्ति .... है ।

अ. प्रशस्त ब. अप्रशस्त क. जिनेन्द्र की आज्ञा ड. अपेक्षित

८. द्रव्य आस्रव से भाव आस्रव की .... है ।

अ. मुख्यता ब. गौणता क. उपकारीता ड. महानता

९. निर्जरा .... से होती है ।

अ. शुभ आत्म परिणाम ब. शुभ योग

क. शुभ प्रवृत्ति ड. शुभ विचार

१०. कायायोग के ७ भेद में .... शरीर का समावेश नहीं होता ।

अ. कार्मण ब. आहारक क. तैजस ड. औदारिक

११. वीर्य का आधार .... पर हैं ।

अ. क्षेत्र ब. काल क. संघयण ड. भाव

१२. वर्तमान काल में भरत क्षेत्र में जीव को .... संघयण होता है ।

अ. तीसरा ब. चौथा क. पहला ड. छठा

१३. परिग्रह में .... कषाय कारणभूत है ।

अ. क्रोधरूप ब. मायारूप क. लोभरूप ड. मानरूप

१४. ईर्यापथ आस्रव से होते कर्म के बंध की स्थिति .... समय की है ।

अ. तीन ब. दो क. चार ड. एक

१५. चौदहवें गुणस्थान में .... का अभाव होने से आस्रव नहीं होता ।

अ. मिथ्यात्व ब. अव्रत क. कषाय ड. योग

१६. तीसरे संघयण वाला जीव .... नरक तक जा सकता है ।

अ. तीसरी ब. चौथी क. पांचवी ड. छठी

१७. .... जीव को इन्द्रिय से आस्रव नहीं होता ।

अ. प्रमत्त ब. अप्रमत्त क. अभव्य ड. मिथ्यात्वी

१८. स्त्री और पुरुष साथ जाते हों तब पुरुष जा रहे हैं ऐसा कहना .... भाषा हैं ।

अ. असत्यामृषा ब. असत्य क. सत्य ड. सत्यमृषा

१९. शुभ योग से .... होता है, ... नहीं ।

अ. पुण्य, पाप ब. पाप, पुण्य क. पुण्य, निर्जरा ड. पाप. निर्जरा

२०. लब्धिधारी मुनि को वैक्रिय और .... यह दो शरीर का मिश्र योग होता है ।

अ. औदारिक ब. आहारक क. तैजस ड. कार्मण

२१. सांपरायिक कर्म आत्मा के साथ .... तक रहते हैं ।

अ. एक समय ब. दो समय क. लम्बे काल ड. अल्प काल

२२. औदारिक शरीर रूप में पूर्ण तैयार न हो तब तक काया की प्रवृत्ति में औदारिक काययोग के साथ .... योग की मदद लेनी पड़ती है ।

अ. कार्मण ब. तैजस क. तैजस और कार्मण ड. वैक्रिय

२३. .... भाव यानी जानबूझकर ईरादे से आस्रव की प्रवृत्ति ।

अ. तीव्र भाव ब. ज्ञात भाव क. अज्ञात भाव ड. मंद भाव

२४. देखे और प्रमार्जन किए बिना वस्तु रखना यह .... क्रिया है ।

अ. निसर्ग ब. अनाभोग क. स्पर्शन ड. आनयनी

२५. स्पर्शेन्द्रिय की प्रवृत्ति में .... कारण है ।

अ. राग ब. द्वेष क. मिथ्या ड. प्रशस्त कषाय

२६. आत्मा की ओर कर्म का आगमन यह .... तत्त्व है ।

अ. आस्रव ब. संवर क. बंध ड. निर्जरा

२७. नए नए रास्ते बनाना .... क्रिया है ।

अ. अधिकरण ब. अप्रत्याख्यान क. प्रत्यय ड. अनाभोग

२८. सांपरायिक आस्रव के .... भेद हैं ।

अ. ३७ ब. ३८ क. ३९ ड. ४०

२९. अधिकरण यानी .... के साधन ।

अ. संवर ब. बंध क. निर्जरा ड. आस्रव

३०. जीव के शुभ या अशुभ अध्यवसाय यह .... आस्रव हैं ।

अ. द्रव्य ब. भाव क. द्रव्य-भाव उभय ड. कभी द्रव्य तो कभी भाव

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१. नीचे के वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत हैं?

अ. वैक्रिय मिश्र योग देवों को और लब्धिधारी मुनिओं को होता हैं ।

ब. छठे संघयण वाले जीव दूसरी नरक तक जा सकें ऐसे ही पाप कर सकते हैं ।

क. तीसरे संघयणवाले जीव पांचवी नरक तक जा सकें ऐसे ही पाप कर सकते हैं ।

ड. शुभ योग से पाप और पुण्य दोनों आस्रव होते हैं ।

३२. नीचे के वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत हैं?

अ. संसारी हर जीव को विर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से प्रगट हुई आत्मशक्ति का उपयोग करने के लिए पुद्‌गल की आवश्यकता होती है ।

ब. जीव जब पुद्‌गल के साथ होता है तब आस्रव नहीं होता ।

क. वचन योग के ४ भेद होते हैं - सत्य वचन योग, मृषा वचन योग, मिश्र वचन योग और असत्यामृषा वचन योग ।

ड. कमज़ोर संघयण वाले जीव तीव्र पाप कर्म नहीं बांध सकते और तीव्र पुण्य कर्म भी नहीं बांध सकते ।

३३. अनवकांक्षा क्रिया यानी?

अ. प्रमाद से तीर्थंकर द्वारा कही विधि का अनादर करना वह अनवकांक्षा क्रिया ।

ब. जहाँ मनुष्य अथवा तिर्यंच का आनाजाना होता है ऐसे प्रदेश में मल, मूत्र आदि अशुचि का त्याग करना वह अनवकांक्षा क्रिया ।

क. स्वतः पालन करने में असमर्थ होने से शास्त्र से विरुद्ध प्ररूपणा करना वह अनवकांक्षा क्रिया है ।

ड. पाप कार्य के नियम से रहित क्रिया ते अनवकांक्षा क्रिया.

३४. सांपरायिक आस्रव के विषय में नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. कषाय सहीत आत्मा का योग वह सांपरायिक आस्रव है ।

ब. सांपरायिक आस्रव में कर्म की स्थिति बहुत अधिक समय की होती है ।

क. सांपरायिक आस्रव १ से १० गुणस्थान में होता है ।

ड. सांपरायिक आस्रव मोक्ष का कारण है ।

३५. शुभ आस्रव के विषय में नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. आत्मा के शुभ परिणाम से होता योग वह शुभ आस्रव है ।

ब. हिंसा आदि व्रतो के पालन से शुभ आस्रव होता है ।

क. शुभ आस्रव आत्मा को मोक्ष में जाने में सहायक होता है ।

ड. शुभ आस्रव अशुभ आस्रव की अपेक्षा में इष्ट है ।

३६. तीव्र भाव से की प्रवृत्ति के विषय में नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. मंद भाव से की शुभ के अशुभ प्रवृत्ति से वही प्रवृत्ति तीव्र भाव से करने में आए तो अनेक गुना अधिक आस्रव होता है ।

ब. तीव्र भाव से की प्रवृत्ति में रस अधिक होता है इसलिए आस्रव भी अधिक ही होता है ।

क. अपने आजीविका के लिए शिकार कर एक शिकारी प्राण वध करें और मज़े के लिए एक राजा वन में शिकार करें, इन दोनों प्रवृत्ति में राजा से शिकारी के बहुत ही तीव्र भाव हैं क्यों कि शिकारी हर रोज हत्या करता है जब राजा क्वचित ही हत्या करता है ।

ड. तीव्र भाव से किए पाप से संसार बढ़ता है ।

३७. नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य सही है?

अ. बाह्य कारण समान हों और आंतरिक परिणाम में भेद हों तो कर्म बंध में भेद नहीं पड़ता।

ब. तीव्र भाव (प्रबल इच्छा अथवा अत्यंत आवेश के साथ), मंद भाव (मंद आवेश अथवा इच्छा), ज्ञात भाव (जानने पर भी), अज्ञात भाव (अनजाने में), वीर्य (आत्म शक्ति) और अधिकरण (साधन) यह सब आंतरिक परिणाम हैं, इसलिए उनके आधार से आचरण में आई क्रिया में कर्म बंध होता नहीं ।

क. कर्म बंध शुभ-अशुभ प्रवृत्ति के आधार से मुख्य रूप से और आत्मा के परिणाम के आधार से गौण रूप से होता है ।

ड. कर्म बंध होने का कारण आत्मा द्वारा किया गया आस्रव है ।

३८. योग के कितने भेद हैं, इस विषय में नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

अ. काययोग के ७, वचनयोग के ३ और मनोयोग के ५ ऐसे कुल १५ भेद हैं ।

ब. काययोग के ७, वचनयोग के ४ और मनोयोग के ४ ऐसे कुल १५ भेद हैं ।

क. ५ प्रकार के शरीर काययोग के ५ भेद, वचनयोग के सत्य और असत्य वचन ऐसे दो और मनोयोग के भी असत्य और सत्य विचार ऐसे कुल ९ भेद हैं ।

ड. काययोग के ४, वचनयोग के ४ और मनोयोग के ७ ऐसे कुल १५ भेद हैं ।

३९. इर्यापथ आस्रव यानी?

अ. किसी भी प्रकार के कषाय रहित आत्मा की प्रवृत्ति ।

ब. कषाय रहित आत्मा जिस प्रवृत्ति द्वारा लंबे काल की स्थिति का कर्म बंध करें वह इर्यापथ आस्रव ।

क. कषाय सहित आत्मा जिस प्रवृत्ति द्वारा अल्प काल की स्थिति का कर्म बंध करें वह इर्यापथ आस्रव ।

ड. कषाय रहित आत्मा जिस मन, वचन, काया की प्रवृत्ति द्वारा अल्प काल की स्थिति का कर्मबंध करें वह इर्यापथ आस्रव ।

४०. शुभ प्रवृत्ति द्वारा होते आस्रव के विषय में नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत हैं?

अ. शुभयोग से आत्मा की ओर पुण्य कर्मों का गमन होता है ।

ब. शुभ प्रवृत्ति द्वारा आत्मा निर्जरा नहीं कर सकता है ।

क. अहिंसा, अस्तेय, अब्रह्म, देवगुरुभक्ति आदि काययोग की शुभ प्रवृत्ति हैं ।

ड. शुभ प्रवृत्ति द्वारा आत्मा ज्ञानावरणीय आदि कर्म का भी आस्रव करता है, फिर भी ज्ञानावरणीय आदि कर्म का आस्रव रस रहित होने के कारण आस्रव अत्यंत अल्प होता हैं, इसलिए उसका निषेध करना अयोग्य नहीं ।

४१. आस्रव के भेदों के विषय में नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य सही हैं?

अ. आस्रव के मुख्य रूप से शुभ और अशुभ आस्रव, ऐसे दो भेद हैं और गौण रूप से साम्परायिक और इर्यापथ, ऐसे दो भेद हैं ।

ब. आस्रव के अलग-अलग दृष्टिकोण से दो-दो भेद बताए हैं, शुभ-अशुभ के दृष्टिकोण से पुण्य और पाप, द्रव्य-भाव के दृष्टिकोण से द्रव्य-भाव आस्रव, सकषाय-अकषाय के दृष्टिकोण से साम्परायिक और इर्यापथ आस्रव ।

क. शुभ-अशुभ भेद केवल प्रवृत्ति में होता हैं आस्रव में नहीं ।

ड. तेरहवें गुणस्थान में रहे केवली को आस्रव नहीं होता ।

४२. वैक्रियमिश्र काययोग के विषय में नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. वैक्रियमिश्र काययोग केवल देव को होता है ।

ब. वैक्रियमिश्र काययोग में वैक्रिय और कार्मण शरीर का योग होता है ।

क. वैक्रियमिश्र काययोग में वैक्रिय शरीर की प्रधानता होती है ।

ड. जीव जब वैक्रिय शरीर की रचना शरु करें तब से लेकर जहाँ तक वैक्रिय शरीर पूर्ण नहीं होता तब तक ही वैक्रियमिश्र काययोग होता है ।

४३. आहारकमिश्र काययोग के विषय में नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य सही है?

अ. आहारकमिश्र काययोग में आहारक और कार्मण शरीर का योग होता है ।

ब. आहारकमिश्र काययोग में आहारक और तैजस शरीर का योग होता है ।

क. आहारकमिश्र काययोग में आहारक शरीर की प्रधानता होती है ।

ड. जीव जब आहारक शरीर की रचना शुरु करें तब से लेकर जहाँ तक आहारक शरीर पूर्ण नहीं होता तब तक उसे आहारकमिश्र काययोग नहीं होता ।

४४. नीचे दिए वचनयोग के विकल्पों में कौन सा विकल्प सही हैं?

अ. पुण्य आस्रव सर्वथा हेय है, यह सत्यवचन योग है ।

ब. पाप आस्रव सर्वथा हेय है, यह असत्य वचनयोग है ।

क. बकरीओं के टोला में एक बकरा हो तो भी यह बकरीओं का टोला है ऐसा कहना सत्यामृषा वचनयोग है ।

ड. तत्त्वों को जानना चाहिए, यह वाक्य असत्यामृषा वचनयोग हैं ।

४५. काययोग के सात भेद विषयक नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत है?

अ. कार्मण काययोग में तैजस शरीर का योग होने पर भी उसकी मात्रा अल्प होने से उसमें तैजस योग का भेद नहीं बताया ।

ब. जीव जब औदारिक शरीर की रचना शुरू करें तब से जब तक औदारिक शरीर पूर्ण नहीं होता तब तक औदारिक मिश्र योग होता हैं ।

क. लब्धिधारी मुनिओं को वैक्रिय मिश्र योग के समय वैक्रिय और औदारिक शरीर इन दोनों का योग होता है ।

ड. आहारक मिश्र योग के समय आहारक और औदारिक शरीर इन दोनों का योग होता है ।

४६. योग के पंद्रह भेद विषयक नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही हैं?

अ. कार्मण काययोग के समय जीव को तैजस शरीर नहीं होता ।

ब. वचनयोग और मनोयोग के भेद समान हैं, वचनयोग में बोलना और मनोयोग में विचारना इतना ही अंतर है ।

क. पाप प्रवृत्ति छोड़ो, ऐसा बोलना सत्य वचनयोग है ।

ड. तीन प्रकार के योग में हर एक के ५-५ ऐसे मिलकर कुल पंद्रह भेद होते हैं ।

४७. आस्रव के भेद के विषय में नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत है?

अ. आत्मा की ओर शुभ अथवा अशुभ कर्मों का आगमन यह द्रव्य आस्रव है ।

ब. आत्मा की ओर शुभ अथवा अशुभ कर्मों के आगमन के हेतु रूप आत्मा के शुभ अथवा अशुभ परिणाम यह भाव आस्रव है ।

क. शुभ आस्रव से बंध नहीं होता ।

ड. आस्रव में योग गौण कारण है, मुख्य कारण आत्मा के अध्यवसाय हैं ।

४८. साम्परायिक आस्रव के भेद के विषय में नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत है?

अ. इन्द्रियों की राग-द्वेष युक्त प्रवृत्ति से ही साम्परायिक आस्रव होता है, राग द्वेष बिना नहीं।

ब. कषाय रहित चलने की क्रिया इर्यापथ आस्रव का कारण बनती है, साम्परायिक आस्रव का नहीं ।

क. अप्रमत्त जीव को साम्परायिक आस्रव होता नहीं ।

ड. साम्परायिक आस्रव तेरहवें गुणस्थान तक होता है ।

४९. समन्तानुपात क्रिया यानी?

अ. समता भाव से की गई क्रिया द्वारा आत्मा का उत्थान करना वह समन्तानुपात क्रिया ।

ब. जहाँ मनुष्य अथवा तिर्यंच का आवागमन होता है ऐसे प्रदेश में मल, मूत्र आदि अशुचि का त्याग करना वह समन्तानुपात क्रिया ।

क. जिस क्रिया के अंत में समता रहे वह समन्तानुपात क्रिया ।

ड. जहाँ मनुष्य अथवा तिर्यंच का आवागमन होता है ऐसे प्रदेश में आहार ग्रहण करना वह समन्तानुपात क्रिया ।

५०. अप्रत्याख्यान क्रिया यानी?

अ. प्रमाद से जिनेन्द्र भगवान ने कही विधि का अनादर करना अप्रत्याख्यान क्रिया है ।

ब. जीवों की हिंसा हो ऐसे प्रकार की क्रिया अप्रत्याख्यान क्रिया है ।

क. पाप कार्यों के नियम से रहित क्रिया अप्रत्याख्यान क्रिया है ।

ड. कषाय रहित की गई क्रिया अप्रत्याख्यान क्रिया है ।

५१. नीचे के वाक्यों में सही वाक्य कौन सा है?

अ. आस्रव से योग होता है, योग से बंध, बंध से कर्म का उदय, उदय से संसार, इसलिए संसार का मूलभूत कारण है आस्रव ।

ब. मन, वचन, काया का योग यह द्रव्य आस्रव हैं और जीव के शुभ अथवा अशुभ अध्यवसाय जिस के चलते वह प्रगट होता है वह शुभ आस्रव ।

क. आत्मा की शुभ प्रवृत्ति से निर्जरा होती है, शुभ आत्म परिणाम के द्वारा नहीं ।

ड. शुभ योग के समय ज्ञानावरणीय आदि घाती कर्म का आस्रव, बंध, पुण्य और निर्जरा ये सभी संभव हैं ।

५२. संघयण के विषय में नीचे दिए वाक्यों में से गलत वाक्य कौन सा हैं वह बताएं ।

अ. सातवीं नरक का आयुष्य बंधे ऐसे कर्मों छठे संघयण वाले जीव को बांधना संभव ही नहीं।

ब. प्रथम संघयणवाले जीव अवश्य मोक्ष में ही जाते हैं ।

क. वर्तमान काल में भरत क्षेत्र में किसी जीव को पहेले से लेकर पांचवां संघयण होता नहीं।

ड. जितना संघयण मजबूत उतना पाप और पुण्य करने का वीर्य अधिक और जितना संघयण कमज़ोर उतनी पाप अथवा पुण्य करने की शक्ति कम होती है ।

५३. संघयण के विषय में नीचे दिए वाक्योंमां से सही वाक्य कौन सा हैं वह बताएं ।

अ. वर्तमान काल में मृत्यु को प्राप्त होता मनुष्य पांचवें देवलोक तक ही जन्म ले सकते है, उसके ऊपर के देवलोक में नहीं ।

ब. उत्कृष्ट संघयण वाले जीव ही मोक्ष में जा सकते हैं, कमज़ोर संघयण वाले जीव के अध्यवसाय कितने भी शुभ हों वे उसी भव में मोक्ष में नहीं जा सकते हैं ।

क. वर्तमान काल में मनुष्य का संघयण ऐसे प्रकार का है की वे तीसरी नरक तक ही जा सकते हैं ।

ड. दूसरे संघयण वाले जीव दूसरी नरक तक ही जा सकते हैं ।

५४. नीचे के वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत हैं ?

अ. आस्रव के कारण समान होने पर भी जीव के आंतरिक परिणाम में अगर अंतर होता है तो कर्म बंध में अंतर पड़ता है ।

ब. तीव्र-मंद भाव, ज्ञात-अज्ञात भाव, वीर्य और अधिकरण में केवल तीव्र-मंद भाव ही मुख्य हैं, बाकी के चार आस्रव में निमित्त होने से सहायक हैं ।

क. कषायों की तीव्रता न हों तो अनजाने में हिंसा हो जाए उससे मंद कषाय युक्त इरादे से की गई हिंसा में अशुभ आस्रव कम होता है ।

ड. फांसी देने वाला और शिकारी दोनों हत्या करते होने पर भी फांसी देने वाला राज आज्ञा के वश हत्या करता है जब कि शिकारी संसारी स्वार्थ के कारण हत्या करता है, इसलिए शिकारी को अधिक अशुभ आस्रव होता है ।

५५. संसारी जीव के शरीर पांच प्रकार के होते हैं उन में काययोग के भेदों में केवल तैजस शरीर का योग बताया नहीं उसके पीछे कारण क्या है?

अ. तैजस शरीर अत्यंत सूक्ष्म होने से उसकी मात्रा अल्प होती है इसलिए ।

ब. तैजस शरीर केवल ऊर्जा रूप होने से उसकी गिनती शरीर रूप में होती है योग रूप में नहीं होती इसलिए ।

क. तैजस शरीर पुद्गल का बना नहीं होने से उसे काययोग की गिनती में नहीं ले सकते इसलिए।

ड. तैजस शरीर हमेशा कार्मण शरीर के साथ होने से कार्मण शरीर में उसका समावेश किया जाता है इसलिए ।

५६. शुभ योग के समय ज्ञानावरणीय आदि घाती कर्मों का भी आस्रव होता हैं । घाती कर्म अशुभ हैं इसलिए शुभ योग से पुण्य का आस्रव होता है ऐसा कहना अनुचित है क्यों कि...

अ. शुभ योग के समय घाती कर्मों की स्थिति अत्यंत अल्प ही होता है इसलिए ।

ब. शुभ योग के समय घाती कर्मों के आस्रव में रस अल्प होने से वे नहीं है' ऐसे कह सकते हैं इसलिए ।

क. शुभ योग के आठ प्रकार हैं और घाती कर्मों के चार प्रकार हैं इसलिए घाती कर्मों की मात्रा कम होती है इसलिए ।

ड. घाती कर्मों में शुभकर्म का भेद न होने से शुभ योग के समय उसकी गिनती नहीं की जाती लिए ।

५७. भाव आस्रव की व्याख्या क्या है?

अ. मन, वचन और काया का योग होने के कारणभूत जीव के शुभ अथवा अशुभ अध्यवसाय वह भाव आस्रव ।

ब. भाव से मन, वचन और काया की प्रवृत्ति करना वह भाव आस्रव ।

क. आस्रव तत्त्व में भावपूर्ण श्रद्धा वह भाव आस्रव ।

ड. जिस आस्रव से कर्मबंध अत्यंत अल्प होता है वह भाव आस्रव ।

५८. आस्रव सम्बंधित नीचे दिए वाक्यों में सही वाक्य कौन सा हैं?

अ. साम्परायिक आस्रव केवल १०वें गुणस्थान में ही होता है और ११वें गुणस्थान के बाद नहीं ही होता ।

ब. चौदहवें गुणस्थान में योग का अभाव होता है इसलिए तब केवल इर्यापथ आस्रव ही होता है ।

क. इर्यापथ आस्रव में कर्म की स्थिति केवल एक समय से अधिक होती है ।

ड. केवलज्ञान प्रप्त करने के बाद साम्परायिक आस्रव नहीं होता ।

५९. नीचे के वाक्यों में २५ प्रकार की क्रिया की व्याख्याएं दी है। इनमें कौन सी व्याख्या योग्य है?
 अ. जीवों की हिंसा हों ऐसी क्रिया को हिंसा क्रिया कहते हैं।
 ब. अधिक परिग्रह का सेवन करना पारिग्रहिकी क्रिया है।
 क. असत्य वचन का प्रयोग करना प्रयोग क्रिया है।
 ड. स्वाभाविक रूप से क्रिया करना निसर्ग क्रिया है।

६०. साम्परायिक आस्रव के भेदों में इन्द्रिय आदि चार का उल्लेख करना ज़रूरी है उसके कारण नीचे दर्शाए हैं। इनमें कौन सा कारण योग्य नहीं?
 अ. इन्द्रियों की पूर्णता केवल पंचेन्द्रिय जीव को ही होती है जब कि कषाय सर्व जीवों को होते हैं, इसलिए अपूर्ण इन्द्रियों में कषाय आदि अलग कारण दर्शाने ज़रूरी होते हैं।
 ब. कषाय से रहित इन्द्रियादि सांपरायिक आस्रव बनते नहीं यह बताने हेतु कषाय को अलग बताया है।
 क. अप्रमत्त जीवों में इन्द्रियों से आस्रव नहीं होता, केवल कषाय और योग से आस्रव होता है, इसलिए इन्द्रिय आदि का अलग उल्लेख करना ज़रूरी हैं।
 ड. अव्रत में इन्द्रिय आदि के परिणाम कारण हैं यह बताने के लिए अलग उल्लेख करना ज़रूरी है।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक। (कुल १५ x २ = ३० अंक)

६१ प्राण का कारण अन्न हैं वैसे कर्मादान के कारण को आस्रव कहते हैं, उसे समझाते दृष्टांतों में असंगत दृष्टांत कौन सा है?
 अ. जैसे जहाज में पड़ते छिद्र द्वारा जल प्रवेश से जहाज समुद्र में डूब जाता है, वैसे आत्मा में कर्म रूप जल का प्रवेश योग द्वारा होने से आत्मा संसार रूप सागर में डूब जाता है।
 ब. जैसे पवन से उड़कर आती धूल जल से भीगे कपड़ों में एक रूप चिपक जाती है, वैसे योग रूप पवन द्वारा कर्म रूप रज कषाय रूप पानी से भीगकर आत्मा में चिपक जाती है।
 क. जैसे कोई कुतूहल पूर्वक स्तंभ को छेदने बाण चलाने की क्रीड़ा करता है पर किसी प्राणी को लगते वह मर जाता है, ऐसे अहिंसक भाव होने पर भी हिंसा होने से कर्म का आस्रव होता है।
 ड. जैसे साधु से तिर्यंच और नारक अधिक कष्ट सहन करते होने से उन्हें आस्रव कम होता है, इसलिए काया को कष्ट देना यह आस्रव के लिए उपयोगी है।

६२ लब्धिधारी मुनि को कौन से काय योग हो सकते हैं?
- अ औदारिकमिश्र, वैक्रियमिश्र
- ब. वैक्रियमिश्र, आहारकमिश्र
- क. आहारकमिश्र, औदारिकमिश्र
- ड. उपर के सभी काय योग

६३ आस्रव के बाह्य कारण समान होने पर भी आंतरिक परिणाम भेद के कारण कर्म बंध में भेद पड़ते हैं, उन कारणों के विकल्प में सत्य जैसा दिखता असत्य विकल्प ढूंढने का प्रयत्न करें ।

अ- तीव्र-मंद भाव: राजा की या अन्य परतंत्रता से - आज्ञा से जीव को मारने में और अपने दुनियाई स्वार्थ के कारण जीव को मारने में क्रिया समान होने पर भी हिंसा के परिणाम में बहुत ही भेद होता है ।

वीर्य: अत्यंत दुर्बल संघयण वाला उत्कृष्ट पाप करने पर भी अधम से अधम नरक में जाता है, जब कि मध्यम संघयण वाला उत्कृष्ट पुण्य करने पर भी मोक्ष में नहीं जाता।

ब. ज्ञान-अज्ञान भाव: शिकारी जान कर इरादे से बाण द्वारा हिरन को मारता है जब कि अन्य से खेल-खेल में बाण चलाते सहसा प्राणी का वध हो जाता है ।

अधिकरण: एक व्यक्ति के पास तीक्ष्ण तलवार है और दूसरे व्यक्ति के पास बिना धार की तलवार है । दोनों की हिंसा की क्रिया समान होने पर भी परिणाम में भेद पड़ता है ।

क. तीव्र-मंद भाव: एक अधिक उल्सास में आकर जिन भक्ति करता है और एक सामान्य उल्सास से जिन भक्ति करता है, यहाँ भक्ति समान पर परिणाम में भेद है।

अधिकरण: तंदुलीया मत्स्य आदि को तलवारादि बाह्य अधिकरण का अभाव होने पर भी रौद्र ध्यान स्वरूप मन और कषायादि अभ्यंतर अधिकरण अति भयंकर होने से सातवीं नरक में जाते हैं ।

ड. वीर्य: छठे संघयण वाला उत्कृष्ट धर्म करने पर भी मोक्ष में जाता नहीं और प्रबल पाप करने पर भी सातवीं नरक में जाता नहीं ।

तीव्र-मंद भाव: एक पेटी भरने अनीति करता है और एक पेट भरने अनीति करता है । उन दोनों में समान प्रवृत्ति होने पर भी कर्म बंध में भेद पड़ते हैं ।

६४. आस्रव का मुख्य कारण योग है । योग शुभ और अशुभ अध्यवसाय के आधार से होता है तब आस्रव में योग गौण बन जाता है और अध्यवसाय के आधार पर आस्रव होता है, तो ढूंढें, कौन सी प्रवृत्ति आस्रव को बता नहीं सकती?

अ. रमेश प्रभु भक्ति में घंटों पसार करता है। दान देने में खुले हाथ वाला है। हर पर्युषण में अट्ठाई करता है। पर नव रात्रि में गरबा खेलना छोड़ नहीं सकता।

ब. महेश भारत का सब से नामचीन चोर है। लोगों को मारना उसने खेल बना दिया है। धनवानों को देख उसके पेट में ईर्ष्या की आग उभरती है, पर परिग्रह के नाम से शून्य है कारण कि लुटा हुआ तमाम धन वह गरीबों में बाँट के अथवा भूखों को भोजन करा के, आत्मसंतोष मानता है।

क. गणेश चलने में पूर्ण ईर्या समिति निभाता है, प्रतिक्रमण में भी सूत्र के शब्द, अर्थ, संपदा आदि निभाकर ही बोलता है, साधु के जैसे ही तमाम वस्तु को लेने-रखने में उपयोग बराबर संभालता है, यह सब उसके ज्ञान की और भगवान के वचनों पर श्रद्धा की उपयोग दशा दर्शाता है।

ड. नरेश को ४ बेटे और ३ बेटी ऐसे कुल ७ व्यक्ति का परिवार है। उसमें भी मात-पिता की जिम्मेदारी संभालता है, कर्तव्य समझते घर की व्यवस्था चलाने धंधा भी नीति पूर्वक करता है, पर यह सब करने में धर्म आराधना नहीं कर सकता।

६५ नीचे के चार नकारात्मक वाक्यों को सकारात्मक बनाए तो कौन सा वाक्य आस्रव बनता है ऐसा कहने में गलत नहीं?

अ. नाव में छिद्र पड़ते अंदर आया पानी अगर लोगों को गीला करने पर भी वे चिल्लाए नहीं तो वह आस्रव है।

ब. नाव में छिद्र पड़ते अंदर आया पानी अगर लोगों को गीला न करें तो वह आस्रव हैं।

क. नाव में छिद्र पड़ते अंदर आया पानी अगर नाव को डुबाए नहीं तो वह आस्रव हैं।

ड. नाव में छिद्र पड़ते अगर पानी अंदर न आए तो वह आस्रव है।

६६ योग से कर्म का आस्रव, कर्म के आस्रव से बंध, बंध से कर्म का उदय, कर्म के उदय से संसार; इसलिए संसार से मुक्ति पाने के लिए आस्रव को पहचान, उसे छोड़ने का प्रयत्न करना यही मनुष्य भव का सार है। नीचे के विकल्पों में से कौन सा विकल्प स्वीकारने से आस्रव पहचानने में भूल हो सकती है?

अ. कायादि प्रत्येक योग के शुभाशुभ भेद में से शुभ कर्मों का आस्रव है पुण्य और अशुभ कर्मों का आस्रव है पाप। जितने अंश शुभ योग उतने अंश पुण्य बंध, जितने अंश अशुभ योग उतने अंश पाप बंध।

ब. शुभ योग के समय ज्ञानावरणीयादि बहुत कर्मों का भी आस्रव होता है, परंतु उनमें रस अत्यंत अल्प होने से फल तुच्छ रूप होता है, इसलिए वह स्वकार्य करने समर्थ नहीं ।

क. शुभ योग के समय घाती कर्मों का बंध, पुण्य और निर्जरा यह तीनों होते हैं । पर घाती कर्मों में रस अति मंद, पुण्य में तीव्र रस और अधिक निर्जरा होती है ।

ड. योग का शुभ पना और अशुभ पना आत्मा के अध्यवसाय के आधार से होता है । अतः कह सकते हैं कि ज्ञानादि आत्मोपयोग से भी आस्रव होता है, वह पुण्य भी हो सकता है और पाप भी ।

६७ सूत्र के आधारित सांपरायिक आस्रव के भेदों की संख्या कोष्ठक के आड़े+खड़े गिनती के आधार से निर्धारित करें ।

अ.	०८	०९	०८	ब.	१३	०९	२०
	०८	०९	०८		०९	२४	०९
	०८	०९	०८		२०	०९	१३
क.	२०	०९	१०	ड.	१०	०९	१०
	०९	२१	०९		०९	११	०९
	१०	०९	२०		१०	०९	१०

६८ सांपरायिक आस्रव के भेद में उनके कारण में असंगत कारण को अलग करें ।

अ. अप्रमत्त जीव को ईन्द्रिय से कर्मों का आस्रव होता ही नहीं, मात्र कषाय और योग से ही आस्रव होता है ।

ब. स्थावर, विकलेन्द्रिय जीवों को पर्याप्त ईन्द्रिय और मन न होने पर भी आस्रव का कारण कषाय है । अतः सभी जीवों के सर्व सामान्य आस्रव का विधान होता है ।

क. कषाय, ईन्द्रिय आदि का ग्रहण तो अव्रत के ग्रहण से हो सकता है क्योंकि अव्रत में प्रवृत्ति ईन्द्रियादि के परिणाम से होती है ।

ड. मात्र कषाय का ग्रहण करने से ईन्द्रिय आदि का ग्रहण हो जाता है । क्योंकि सांपरायिक आस्रव में मुख्य तया कषाय ही कारण हैं । कषाय रहित ईन्द्रिय आदि सांपरायिक आस्रव बनते नहीं ।

६९ नीचे की व्याख्याओं में से कौन सी व्याख्या का एक विकल्प गलत नहीं?

अ- १. प्राणातिपात क्रिया: पृथ्वीकायादि जीवों की हिंसा हो ऐसी क्रिया ।

२. आरंभ क्रिया: हिंसा के साधन बनाना ।

३. अधिकरण क्रिया: जिससे कर्म बंध होता है ऐसी पाप वाली क्रिया ।

ब. १. पारितापिकी क्रिया: अन्य को या स्व को दुःख हो ऐसी क्रिया ।

२. पारिग्रहिकी क्रिया: अजीव का रक्षण करने की क्रिया

३. मिथ्यादर्शन क्रिया: भविष्य का सुखी फल पाने की इच्छा से की क्रिया ।

क. १. आरंभ क्रिया: षड्जीवनिकाय या प्राण नाश हो ऐसी क्रिया ।

२. पारिग्रहिकी क्रिया: कषाय के वश चीज, वस्तु का संग्रह करने की क्रिया ।

३. अनाभोग क्रिया: बेध्यान होकर लेने-रखने की प्रवृत्ति ।

ड. १. अधिकरण क्रिया: हिंसा के नए साधन ढूँढना ।

२. पारितापिकी क्रिया: स्व-पर को परिताप हो ऐसी क्रिया ।

३. मिथ्यादर्शन क्रिया: मिथ्यात्वी जीवों की पूजा, सन्मान, नमस्कारादि करना ।

७०. मुंबई स्थित एक धनाढ्य श्रावक-परिवार के तीन संतान योग्य उम्र होते अपनी-अपनी दुनिया में व्यस्त हो गए । परंतु तीनों की विविध क्रियाओं को देख मात-पिता बहुत दुखी होते हैं, मात-पिता की उमर होते पुत्रों को हित शिक्षा देने वे एक-एक पत्र लिखने का सोचते हैं । उन्हें पहले कौन से पुत्र को कौन सी क्रिया से रोकने के लिए लिखना उसकी सूचि बनाने में भूल हो गई वह ढूंढे जिससे मात-पिता योग्य हित शिक्षा लिख सकते हैं ।

पुत्र-१ (चिन्टु)

* साधु-साध्वी की भक्ति करने में तत्पर चिन्टु को सुबह जल्दी उठना पसंद नहीं होने से भगवान की पूजा करने से ऊब जाता है, फिर भी बहुत समझाने के कारण मात्र मात-पिता को अच्छा लगाने बिना मन के पूजा शुरू की, जल्दी उठना शुरू किया ।

पुत्र-२ (पिन्टु)

* मिसाईल के रो-मटेरीयल के उत्पादन के व्यवसाय में प्रगति करता पिन्टु दुनिया का सबसे धनवान आदमी बनने के लिए बैंक बैलेन्स बढ़ाते ही जाता है पर एक बार बहुत अधिक नुकशान होते अपने सम्पूर्ण स्टाफ को रूम में भर गेस लीक कर मार डालता है ।

पुत्र-३ (मोन्टु)

* शादी के १० वर्ष होने पर भी संतान न होने से मोन्टु ने मन्नत, धागा आदि तो किए पर एक बार बाबाजी ने बली चढ़ाने कहा तो उसमें भी मंजूरी दी, बात स्वीकारी । मात-पिता ने समझाया तो पुत्र प्राप्ति के राग वश सुना दिया कि ''आपको समझ नहीं पड़ती, मैं कर रहा हूँ वह बराबर है'' और मन ही मन प्रसन्न हुआ ।

	मोन्टु	चिन्टु	पिन्टु
अ.	सम्यक्त्व क्रिया	अधिकरण क्रिया	मिथ्यात्व क्रिया
	अनवकांक्षा क्रिया	पारिग्रहिकी क्रिया	निसर्ग क्रिया
	माया क्रिया	प्रादोषिकी क्रिया	आरंभ क्रिया
ब.	मिथ्यादर्शन क्रिया	सम्यकत्व क्रिया	अधिकरण क्रिया
	निसर्ग क्रिया	अनवकांक्षा क्रिया	पारिग्रहिकी क्रिया
	प्रयोग क्रिया	माया क्रिया	प्राणातिपात क्रिया
क.	अधिकरण क्रिया	मिथ्यादर्शन क्रिया	सम्यक्त्व क्रिया
	पारिग्रहिकी क्रिया	अनवकांक्षा क्रिया	मिथ्यात्व क्रिया
	प्रादोषिकी क्रिया	प्राणातिपात क्रिया	माया क्रिया
ड.	सम्यक्त्व क्रिया	सम्यक्त्वक्रिया	अधिकरण क्रिया
	आनयन क्रिया	निसर्गक्रिया	पारिग्रहिकी क्रिया
	माया क्रिया	आरंभ क्रिया	प्राणतिपात क्रिया

७१ नीचे के विकल्पों में से कौन सा विकल्प सही नहीं?

अ. १. सत्य वचनयोग - साहब ने कहा कि रात्रि भोजन का त्याग करना चाहिए ।

२. असत्य वचनयोग - पुण्य-पाप यहीं भुगता जाता है । नरक स्वर्ग जैसा कुछ नहीं यह बोलना ।

३. मिश्र वचनयोग - कार्यपत्रक थोड़ा खुद भरा और थोड़ा दूसरे को पूछ कर भरा फिर भी कहा मैंने ही पेपर भरा है ।'

४. असत्यामृषा वचनयोग - हे गौतम! यहाँ आओ ऐसे प्रभु वीर बोले ।

ब. १. औदारिक काययोग - औदारिक काया द्वारा होता शक्ति का उपयोग ।

२. औदारिकमिश्र काययोग - परभव में उत्पन्न होते ही जीव को जब तक औदारिक शरीर पूर्ण नहीं होता तब तक औदारिक और कार्मण का मिश्र काययोग होता हैं ।

३. वैक्रियमिश्र काययोग - वैक्रिय शरीर की रचना की शुरूआत से शरीर बनाना पूर्ण न करें तब तक वैक्रियमिश्र काययोग होता है ।

४. आहारक मिश्र - आहारक और औदारिक यह दो का मिश्र योग जिसमें हो उसे आहारक मिश्र काययोग कहते हैं ।

क. १. मिथ्यात्व क्रिया - मिथ्यादृष्टि जीव की सामान्य देवादि की पूजाभक्ति।
   २. प्रादोषिकी क्रिया - क्रोधावेश से होती क्रिया।
   ३. आनयनी क्रिया - स्वयं पालन नहीं कर सकने से शास्त्राज्ञा से अन्यथा प्ररूपणा करना।
   ४. प्रत्यय क्रिया - घातक शस्त्र बनाना, सुधारना आदि।

ड. १. तीव्र-मंदभाव: एक पेट भरने अनीति करें और एक पेटी भरने अनीति करें, यहाँ परिणाम के भेद से कर्म बंध में भेद पड़ते हैं।
   २. ज्ञात अज्ञातभाव: शिकारी द्वारा इरादे से हिरन की हिंसा, क्रीड़ा करते-करते होती हिरन की हिंसा - दोनों के कर्म बंध में भेद पड़ते हैं।
   ३. वीर्य - पांचवें संघयण वाला पुण्य करें तो छठे स्वर्ग तक और पाप करें तो तीसरी नरक तक जा सकता है।
   ४. अधिकरण - तंदुलीया मत्स्य - हिंसा के साधन नहीं, वासुदेव का बल नहीं, फिर भी अधम ध्यान से ही सातवीं नरक में जाता है।

७२ अधिकरण के विषय में कर्म बंध होने के कारणों में अनुचित कारण को ढूंढे।
   अ. जीव और अजीव यह दोनों को आस्रव के अधिकरण कहते हैं।
   ब. एक के पास तलवार तीक्ष्ण है और अन्य के पास सामान्य, इन दोनों की हिंसात्मक क्रिया में समानता होने पर भी परिणाम में भेद पड़ते हैं।
   क. तीव्र शक्ति वाला और मंद शक्ति वाला इन दोनों को एक ही प्रकार की हिंसा करने पर भी वीर्य भेद से परिणाम में भेद पड़ते हैं।
   ड. अधम ध्यान वाला मन और नीच कषायादि अभ्यंतर अधिकरण अति भयंकर होने से तंदुलीया मत्स्य सातवीं नरक जाता है, भले तलवारादि शस्त्र नहीं हों तो भी।

७३ नीचे की क्रियाओं में से कल्पित व्याख्या पहचानें।

अ १. समाधान क्रिया - जिससे कर्म बंध हो ऐसी संयम की सावद्य क्रिया।
   २. दर्शन क्रिया - राग से स्त्री आदि का दर्शन-निरीक्षण करना।
   ३. विदारण क्रिया - अन्य के गुप्त पाप कार्य को लोगों में जाहिर करना।

ब. १. ईर्यापथ क्रिया - चलने की ऐसी क्रिया जिससे आस्रव होता है।
   २. स्पर्शन क्रिया - राग से स्त्री आदि का स्पर्श करना।
   ३. अप्रत्याख्यान क्रिया - पाप कर्मों के नियम से रहित जीव की क्रिया।

क. १. समन्तानुपात क्रिया - मनुष्य, पशु आदि के आवागमन के स्थल में मल-मूत्र आदि अशुचि पदार्थ छोड़ना।

२. काम क्रिया - अनुपरत और दुष्प्रयुक्त कामिनी क्रिया काम क्रिया है ।

३. स्वहस्त क्रिया - अन्य का कार्य अभिमान से खुद करना ।

ड. १. प्रत्यय क्रिया - नए शस्त्र ढूंढकर बनाना ।

२. सम्यक्त्व क्रिया - शातावेदनीय, देवगति को पाने की इच्छा से साधना करना ।

३. मिथ्यादर्शन क्रिया - दुनियाई फल की कामना से मिथ्यादृष्टि की क्रिया

७४ आस्रव के संबंध में कौन सी वात सही लगती है?

अ. संसारी हर जीव को वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशमादि से प्रगट हुई आत्मशक्ति का उपयोग करने पुद्गल के आलंबन की जरूरत पड़ती ही है यह जरूरी नहीं क्योंकि आत्मा में रही शक्ति एक ही होने पर भी उसका उपयोग रत्नत्रयी और तत्त्वत्रयी की आराधना के लिए हो सकता है ।

ब. मन-वचन-काया यह तीन योग द्रव्य आस्रव हैं । जीव के शुभ या अशुभ अध्यवसाय भाव आस्रव हैं । उनमें योग की अपेक्षा से भी कषायों की भूमिका महत्त्वपूर्ण नहीं क्योंकि १३वे गुणस्थानक में वर्तमान केवली को मात्र काय आदि योग से ही शातावेदनीय कर्म का आस्रव होता है क्योंकि वहाँ कषाय होते नहीं ।

क. कषाय के सहयोग से होता शुभ या अशुभ आस्रव संसार का हेतु बनता है । प्रशस्त कषाय के सहयोग से होता कर्म बंध शुभ होता है, और अप्रशस्त कषाय के सहयोग से होता कर्म बंध अशुभ होता है । अतः कह सकते हैं कि प्रशस्त कषाय साक्षात् मुक्ति में साधक है ।

ड. सांपरायिक आस्रव के भेदों में कषाय के योग से जीव आस्रव की किस तरह प्रवृत्ति करता है उसका स्पष्ट बोध हो और उससे उस प्रवृत्ति को रोकने का प्रयत्न करें इसलिए, तथापि अव्रत में ईन्द्रिय आदि के परिणाम कारण हैं यह बताने के लिए ईन्द्रिय आदि का पृथक ग्रहण किया है ।

७५ नीचे के विकल्पों में से कौन सा विकल्प सही नहीं?

अ. कषाय रहित जीव को योग से रस रहित आस्रव होता है ।

ब. कषाय सहित जीव को कषाय से रस सहित आस्रव होता है ।

क. कषाय रहित जीव को अव्रत से रस रहित आस्रव होता नहीं ।

ड. कषाय सहित जीव को ईन्द्रिय से रस सहित आस्रव होता नहीं ।

▮

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-११	अध्याय-६	सूत्र ९-२६	जमा करने की अंतिम तारीख ता. १५/०७/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक । (कुल ३० x ½ = १५ अंक)

१. हिंसा आदि के संकल्प पूर्ण करने हेतु जरूरी सामग्री एकत्रित करना .... हैं ।
अ. निरारंभ ब. संरंभ क. समारंभ ड. आरंभ

२. विधि के बिना अभ्यास करने से .... नाम के ज्ञानावरणीय कर्म का आस्रव है ।
अ. प्रदोष ब. निह्नव क. अंतराय ड. आसादन

३. मित्र आपत्तिमां हो तब प्रीति से उसकी मदद करने कष्ट सहन करना .... है ।
अ. दर्शनमोहनीय कर्म का आस्रव ब. अकाम निर्जरा
क. सकाम निर्जरा ड. मित्रानुराग चारित्रमोहनीय कर्म का आस्रव

४. बालतप, अकाम निर्जरा, क्षमा, शौच, ये .... कर्म का आस्रव है ।
अ. शातावेदनीय ब. दर्शन मोहनीय क. चारित्र मोहनीय ड. अंतराय

५. भोग भूमि में उत्पन्न हुए .... नियम से देवलोक में ही उत्पन्न होते हैं ।
अ. नारक ब. देव क. युगलिक ड. संमूर्च्छिम मनुष्य

६. चारित्र मोहनीय का आस्रव .... हैं ।
अ. कषाय करना ब. अवर्णवाद करना क. कुगुरु का सेवन ड. आर्तध्यान

७. युगलिकों को .... के परिणाम का अभाव होता है ।
अ. भोग ब. सरलता क. मोह ड. शील

८. .... और .... कर्म के सरागसंयमादि चार आस्रव समान हैं ।
अ. अशातावेदनीय, मोहनीय ब. शातावेदनीय, देवायुष्य
क. अंतराय, नाम ड. गोत्र, देवायुष्य

९. नीति से बरतने वाले से अनीति करवाना .... है ।

अ. मनोयोग वक्रता ब. वचनयोग वक्रता

क. विसंवादन ड. काययोग वक्रता

१०. मुनि भगवंत के उपर संग्रह, उपग्रह, और अनुग्रह से वात्सल्य रखना .... है ।

अ. प्रवचन शक्ति ब. मोक्ष मार्ग प्रभावना

क. साधु-साध्वी वैयावच्च ड. प्रवचन भक्ति

११. .... यानी परसमुदाय के आए शिष्य का स्वीकार करना ।

अ. संग्रह ब. उपग्रह क. अनुग्रह ड. विग्रह

१२. .... की शुद्ध प्ररुपणा से बंधा तीर्थंकर नाम कर्म उत्सूत्र प्ररूपणा से चला गया ।

अ. मरीचि ब. लक्ष्मणा साध्वी क. सावद्याचार्य ड. जमाली

१३. विधिपूर्वक अन्न-पानी लाकर साधुओं को देना .... है ।

अ. प्रवचन ब. संग्रह क. उपग्रह ड. अनुग्रह

१४. .... कषाय का त्याग शौच है ।

अ. क्रोध ब. मान क. माया ड. लोभ

१५. परस्त्री अपहरण में .... कर्म का बंध होता है ।

अ. मोहनीय ब. दर्शनावर्णीय क. भोगांतराय ड. उपभोगांतराय

१६. किसी व्यक्ति को ज्ञानदान करने में अंतराय करने से .... कर्म का बंध होता है ।

अ. ज्ञानदानानंतराय ब. भोगांतराय क. उपभोगांतराय ड. लाभांतराय

१७. .... के तीव्र परिणाम यह दर्शन मोहनीय का आस्रव हैं ।

अ. सम्यकृत्व ब. मिथ्यात्व क. चारित्र ड. ज्ञानाभाव

१८. .... का अवर्णवाद महा पाप है ।

अ. केवली ब. मिथ्यात्वी क. अभव्य जीव ड. भव्य जीव

१९. हर रोज नए-नए श्रुत का अभ्यास करना यह .... भक्ति है ।

अ. बहुश्रुत ब. अरिहंत क. प्रवचन ड. आचार्य

२०. जाति आदि का मद करने से .... कर्म का बंध होता है ।

अ. उच्च गोत्र ब. नीच गोत्र क. नरक आयुष्य ड. अशाता वेदनीय

२१. कषाय के उदय से अतिसंक्लिष्ट परिणामों के द्वारा आत्मा .... कर्म बांधता है ।

अ. दर्शन मोहनीय ब. चारित्र मोहनीय क. भोगांतराय ड. देव आयुष्य

२२. .... के उपर अकृत्रिम स्नेह रखना प्रवचन वात्सल्य है ।

अ. मात्र साधु ब. मात्र तीर्थंकर क. मात्र श्रावक ड. साधर्मिक

२३. .... लेश्या के परिणाम नरक का आयुष्य बांधते हैं ।

अ. कृष्ण ब. नील क. कापोत ड. तेजो

२४. निर्वर्तना, निक्षेप, संयोग, निसर्ग ये चार .... हैं ।

अ. जीव अधिकरण ब. अजीव अधिकरण

क. मन के विकल्प ड. अशाता वेदनीय कर्म के उपभेद

२५. संज्वलन कषाय के उदयवाले मुनि का संयम .... संयम है ।

अ. सराग ब. विराग क. वीतराग ड. उपशम

२६. संयोग अधिकरण के .... और .... ये दो उपभेद हैं ।

अ. सहसा, नित्य ब. अप्रत्यवेक्षित, अप्रमार्जित

क. उपकरण, भक्तपान ड. उपकरण, निवृत्ति

२७. .... ध्यान से मनुष्य आयुष्य का बंध होता है ।

अ. आर्त ब. रौद्र क. धर्म ड. शुक्ल

२८. स्व के आश्रयी से मन-वचन-काया की प्रवृत्ति अलग पड़ती हो तो .... कहलाता है ।

अ. योगवक्रता ब. योगसरलता क. विसंवादन ड. अविसंवादन

२९. .... का मूल संसार हैं ।

अ. कर्म ब. पाप क. दुःख ड. पुण्य

३०. अधिकरण के कुल भेद .... बताए हैं ।

अ. १०४ ब. १०८ क. ११२ ड. ११९

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१. कौन सी क्रिया किस कर्म का आस्रव कराती है उसमें नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

क्रिया	कर्म का आस्रव
१ देव अवर्णवाद	अ शाता वेदनीय
२ सर्व जीवों के प्रति अनुकंपा	इ ज्ञानावरणीय
३ ज्ञानी अथवा ज्ञान के साधन के प्रति अनादर	ई नरक आयुष्य
४ कषाय के उदय से आत्मा के संक्लिष्ट परिणाम	उ दर्शन मोहनीय

५ प्रचुर मात्रा में परिग्रह ऊ तीर्थंकर नाम

६ श्रुत की भक्ति करना ऋ चारित्र मोहनीय

अ. १-अ, २-इ, ३-ई, ४-उ, ५-ऊ, ६-ऋ ब. १-ऋ, २-ऊ, ३-उ, ४-ई, ५-इ, ६-अ

क. १-उ, २-अ, ३-इ, ४-ऋ, ५-ई, ६-ऊ ड. १-उ, २-अ, ३-इ, ४-ऋ, ५-ऊ, ६-ई

३२. कौन सी क्रिया किस कर्म का आस्रव कराती है उसमें नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

क्रिया	आस्रव
१ माया करना	अ दर्शनावरणीय कर्म
२ शील, व्रत के परिणाम का अभाव	इ तिर्यंच आयुष्य
३ परस्त्री का अपहरण	ई उपभोगांतराय
४ निह्नव करना (छुपाना)	उ मनुष्य, तिर्यंच, नरक आयुष्य
५ वचनयोग वक्रता	ऊ लाभांतराय
६ अन्य के धन प्राप्ति में विघ्न डालना	ऋ अशुभ नाम

अ. १-इ, २-उ, ३-ई, ४-अ, ५-ऋ, ६-ऊ ब. १-इ, २-ई, ३-अ, ४-ऊ, ५-ऋ, ६-उ

क. १-इ, २-उ, ३-अ, ४-ई, ५-ऋ, ६-ऊ ड. १-उ, २-इ, ३-अ, ४-ई, ५-ऋ, ६-ऊ

३३. कौन सी क्रिया किस कर्म का आस्रव कराती है उसमें नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

क्रिया	आस्रव
१ अपनी प्रशंसा	अ उच्च गोत्र
२ पर प्रशंसा	इ दानानंतराय
३ बहुश्रुत की भक्ति	ई नीच गोत्र
४ किसी को दान देते रोकना	उ देव आयुष्य
५ अन्य की शक्ति को नाश करने का प्रयत्न	ऊ तीर्थंकर नाम
६ बाल तप	ऋ वीर्यांतराय

अ. १-इ, २-ई, ३-अ, ४-ऊ, ५-ऋ, ६-उ ब. १-ई, २-अ, ३-ऊ, ४-इ, ५-ऋ, ६-उ

क. १-उ, २-इ, ३-अ, ४-ई, ५-ऋ, ६-ऊ ड. १-ई, २-अ, ३-ऊ, ४-ऋ, ५-इ, ६-उ

३४. कौन सी क्रिया किस कर्म का आस्रव कराती है उसमें नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

क्रिया	आस्रव
१ अल्प परिग्रह सेवन	अ तीर्थंकर नाम
२ मन की सरलता	इ मनुष्य आयुष्य
३ अकाम निर्जरा	ई भोगांतराय
४ अतिचार रहित सम्यग्दर्शन का पालन	उ शाता वेदनीय
५ नौकर आदि को भोजन समय से न देना	ऊ अशुभ नाम
६ काया के परिवर्तन से अन्य को ठगना	ऋ शुभ नाम

अ. १-इ, २-ऋ, ३-उ, ४-अ, ५-ई, ६-ऊ ब. १-इ, २-उ, ३-ऋ, ४-अ, ५-ई, ६-ऊ

क. १-इ, २-ऋ, ३-अ, ४-उ, ५-ई, ६-ऊ ड. १-इ, २-ऋ, ३-उ, ४-अ, ५-ऊ, ६-ई

३५. कौन सी क्रिया को कौन सा अधिकरण कहते हैं उसमें नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

क्रिया	अधिकरण
१ दूध में शक्कर मिलाना	अ मनोनिसर्ग अजीव
२ वस्तु देखें बिना लेना / रखना	इ भक्तपान संयोग अजीव
३ धन के लोभ से अन्य जीव की हत्या करना	ई कषाययुक्त योगकृत आरंभ जीव
४ शास्त्र विरुद्ध विचार करना	उ अप्रमार्जित निक्षेप अजीव
५ वस्तु प्रमांर्जन किए बिना रखना	ऊ भाषानिसर्ग अजीव
६ शास्त्र विरुद्ध बोलना	ऋ अप्रत्यवेक्षित निक्षेप अजीव

अ. १-ऋ, २-इ, ३-ई, ४-अ, ५-उ, ६-ऊ ब. १-इ, २-ऋ, ३-अ, ४-ई, ५-उ, ६-ऊ

क. १-इ, २-ऋ, ३-ई, ४-अ, ५-ऊ, ६-उ ड. १-इ, २-ऋ, ३-ई, ४-अ, ५-उ, ६-ऊ

३६. कौन सी क्रिया को कौन सा अधिकरण कहते हैं उसमें नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

क्रिया	अधिकरण
१ क्रोध आने से हिंसा करने का विचार	अ मूलगुण निर्वर्तना अजीव
२ श्वासोच्छवास की रचना	इ कषाययुक्त योग अनुमत जीव
३ पुराना वस्त्र हटाकर नया पहनना	ई उपकरण संयोग अजीव
४ शस्त्र की रचना करना	उ कषाययुक्त योगकृत संरंभ जीव
५ अग्निस्नान द्वारा काया का त्याग	ऊ उत्तरगुण निर्वर्तना अजीव

६ द्वेष से हुई हिंसा की अनुमोदना ऋ कायानिसर्ग अजीव

अ. १-उ, २-अ, ३-ऋ, ४-ऊ, ५-ई, ६-इ ब. १-उ, २-अ, ३-ई, ४-ऊ, ५-ऋ, ६-इ

क. १-उ, २-ई, ३-अ, ४-ऊ, ५-ऋ, ६-इ ड. १-उ, २-अ, ३-ई, ४-ऊ, ५-इ, ६-ऋ

३७. असद्‌गुणोद्भावन यानी?

अ. खुद में गुण होने पर भी गुण नहीं ऐसा दिखाना वह असद्‌गुणोद्भावन ।

ब. खुद में गुण न होने पर भी गुण होने का दिखावा करना वह असद्‌गुणोद्भावन ।

क. खुद में गुणों का विकास करना वह असद्‌गुणोद्भावन ।

ड. खुद में दुर्गुण का विकास करना वह असद्‌गुणोद्भावन ।

३८. संवेग यानी?

अ. संसार का सुख दु:खरूप लगने से मोक्ष प्राप्ति की तीव्र ईच्छा के शुभ आत्मपरिणाम को संवेग कहते हैं ।

ब. संसार का दु:ख सुखरूप लगने से मोक्ष प्राप्ति की तीव्र ईच्छा के अभाव वाले अशुभ आत्मपरिणाम को संवेग कहते हैं ।

क. संसार का दु:ख सुखरूप लगने से मोक्ष प्राप्ति की कभी ईच्छा न हों ऐसे आत्मपरिणाम को संवेग कहते हैं ।

ड. संसार का सुख दु:खरूप लगने पर भी मोक्ष प्राप्ति की ईच्छा के अभाव को संवेग कहते हैं।

३९. अकाम निर्जरा यानी?

अ. सहन करने की ईच्छा से स्वतंत्र रूप से पाप प्रवृत्ति न करें, विषय सुख का सेवन न करें, आए दु:ख को शांति से सहन करें और उससे कर्म की निर्जरा हों वह अकाम निर्जरा ।

ब. सहन करने की ईच्छा न होने पर भी परतंत्रता, अनुरोध, साधन का अभाव, रोग आदि के कारणे पाप प्रवृत्ति न करें, विषय सुख का सेवन न करें, आए दु:ख को शांति से सहन करें और उससे अपने आप कर्म की निर्जरा हों वह अकाम निर्जरा ।

क. रोग आदि के कारणे पाप प्रवृत्ति न कर सकें अथवा विषय सुख का सेवन न कर सकें तब अपने पुरुषार्थ से कर्म की निर्जरा करें वह अकाम निर्जरा ।

ड. सहन करने की ईच्छा के साथ परतंत्रता के अभाव से, अपनी ईच्छा से पाप प्रवृत्ति न करें, विषय सुख का सेवन न करें, आए दु:ख को शांति से सहन करें और उससे अपने आप कर्म की निर्जरा हों वह अकाम निर्जरा ।

४०. उपघात यानी?

अ. सभान रूप से सत्य वचन को असत्य बताना, ज्ञान के साधनों का नाश करना आदि प्रवृत्ति को उपघात कहते हैं ।

ब. अज्ञानता आदि से असत्य वचन को सत्य बताना, ज्ञान के साधनों को संभाल के रखना आदि प्रवृत्ति को उपघात कहते हैं ।

क. अज्ञानता आदि से सत्य वचन को असत्य बताना, ज्ञान के साधनों का नाश करना आदि प्रवृत्ति को उपघात कहते हैं ।

ड. असत्य वचन को असत्य और सत्य वचन को सत्य बताना, ज्ञान के साधनों को संभाल के रखना आदि प्रवृत्ति को उपघात कहते हैं ।

४१. श्रुत यानी?

अ. अर्थ से गणधर द्वारा प्रणीत और सूत्र से तीर्थंकर द्वारा रचित अंग सूत्र, उपांग सूत्र, छेद सूत्र आदि को श्रुत कहते हैं ।

ब. सूत्र से तीर्थंकर द्वारा प्रणीत और अर्थ से गणधर द्वारा रचित अंग सूत्र, उपांग सूत्र, छेद सूत्र आदि को श्रुत कहते हैं ।

क. अर्थ से तीर्थंकर द्वारा रचित और सूत्र से गणधर द्वारा प्रणीत अंग सूत्र, उपांग सूत्र, छेद सूत्र आदि को श्रुत कहते हैं ।

ड. अर्थ से तीर्थंकर द्वारा प्रणीत और सूत्र से गणधर द्वारा रचित अंग सूत्र, उपांग सूत्र, छेद सूत्र आदि को श्रुत कहते हैं ।

४२. बालतप यानी?

अ. बालक द्वारा किए गए तप को बालतप कहते हैं ।

ब. अज्ञानता से, विवेक रहित किए तप को बालतप कहते हैं ।

क. केवल बालकों द्वारा विवेक रहित किए तप को बालतप कहते हैं ।

ड. अज्ञानतापूर्वक, विवेक रहित, केवल श्रावकों द्वारा किए गए तप को ही बालतप कहते हैं, साधुओं के तप को नहीं ।

४३. नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य कौन सा हैं?

अ. हिंसा आदि क्रिया का संकल्प करना यह संरंभ जीवाधिकरण हैं ।

ब. हिंसा आदि क्रिया में प्रवृत्त होना वह आरंभ जीवाधिकरण हैं ।

क. हिंसा आदि क्रिया के लिए शस्त्र आदि इकट्ठा करना वह समारंभ जीवाधिकरण हैं ।

ड. उपर लिखे गए तीनों वाक्य गलत हैं ।

४४. नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य कौन सा हैं?

अ. कोई अभ्यास करता हो उसे निरर्थक बुला के उसके अभ्यास में अंतराय करने से ज्ञानावरणीय कर्म का आस्रव होता है ।

ब. कोई अभ्यास करता हो उसे निरर्थक बुला के उसके अभ्यास में अंतराय करने से दर्शन मोहनीय कर्म का आस्रव होता है ।

क. अपने पासे ज्ञान होने पर भी और अन्य को अभ्यास कराने की ईच्छा होने पर भी प्रमाद के कारणे वह योग्य व्यक्ति को अभ्यास नहीं कराए यह ज्ञानावरणीय कर्म का आस्रव हैं।

ड. मात्सर्य के कारणे ज्ञानदान से वंचित रहना यह ज्ञानावरणीय कर्म का आस्रव हैं ।

४५. नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य कौन सा हैं?

अ. अनिष्ट वस्तु के संयोग अथवा इष्ट वस्तु के वियोग, ऐसे बाह्य निमित्त से अथवा अशाता वेदनीय के उदय ऐसे अभ्यंतर निमित्त से होने वाली पीड़ा को दु:ख कहते हैं ।

ब. उपकारी बंधु आदि के वियोग से बारंबार होता मानसिक खेद शोक है ।

क. दु:ख के समय में सर, हाथ, पैर पछारपीठिना, छाती फूटना, तीव्र अश्रुपात करना आदि को ताप कहते हैं ।

ड. अनुग्रह करने वाले बंधु आदि के वियोग में शोक करने को परिदेवन कहते हैं ।

४६. नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य कौन सा हैं?

अ. कर्म की प्रकृतिओ में आठों कर्म के शुभ और अशुभ ऐसे दोनों प्रकार के आस्रव होते हैं।

ब. कष्ट सहन करने से अशाता वेदनीय कर्म का आस्रव होता है फिर भी आध्यात्मिक मार्ग में कष्ट सहन करने का विधान है वह भावी सुख को लक्ष्य में रखके करने में आया है ।

क. सम भाव से सहन करने में आते दु:ख से भी अशाता वेदनीय कर्म का आस्रव होता हो तो दु:ख की परंपरा शुरू ही रहेगी, दु:ख का कभी अंत आएगा ही नहीं ।

ड. दु:ख के समये अगर मन बिगाड़े बिना दु:ख को सहन करने में आए तो नया कर्मबंध रुकता है, उदय में आए कर्म सम भाव से भोगा जाता है और परंपरा से सर्व कर्म का क्षय होता है ।

४७. नीचे दिए वाक्यों में से सही वाक्य कौन सा हैं यह बताएं ।

अ. रोग होने के कारणे वैद्य के कहने से मिठाई आदि का त्याग करना वह परतंत्रता से अकाम निर्जरा का दृष्टांत हैं ।

ब. जेल का कैदी सुंदर वस्त्र आदि का त्याग करता है और सरकार ने दिए वस्त्र ही धारण करता है वह साधनाभाव से अकाम निर्जरा का दृष्टांत हैं ।

क. अन्य व्यक्तिओं से भोजन ग्रहण करते भिखारी को कोई व्यक्ति दान न दें और उसे भूखा रहकर दु:ख सहन करना पड़े उसे परतंत्रता के कारण अकाम निर्जरा कहते हैं ।

ड. आपत्ति में रहे मित्र को बचाने कष्ट सहन करने वाला प्रीति से अकाम निर्जरा करता है ।

४८. नीचे दिए वाक्यों में से सही वाक्य कौन सा हैं यह बताएं ।

अ. अप्रत्यवेक्षित और दुष्प्रमार्जित यह दो अजीव अधिकरण विस्मृति से बने हैं ।

ब. सम्यग्द्रष्टि की अपेक्षा देशविरति और देशविरति की अपेक्षा सर्वविरति अधिक आस्रव करते हैं।

क. सर्वविरति की अपेक्षा देशविरति और देशविरति की अपेक्षा सम्यग्द्रष्टि अधिक संवर / निर्जरा करते हैं ।

ड. अपुनर्बंधक से लेकर दसवें गुणस्थान तक जीव मोक्ष के लिए धर्म करता है ।

४९. नीचे दिए वाक्यों में से गलत वाक्य कौन सा गलत है यह बताएं ।

अ. वचन योग वक्रता में केवल स्व के आश्रय से प्रवृत्ति अलग पड़ती है जब कि विसंवादन में केवल पर के आश्रय से प्रवृत्ति अलग पड़ती हैं ।

ब. वचन योग वक्रता में केवल अपनी ही प्रवृत्ति विरुद्ध बनती है जब कि विसंवादन में स्व की और पर की प्रवृत्ति विरुद्ध बनती है ।

क. वचन योग वक्रता में एक ही बात में एक प्रकार से असत्य वचन का प्रयोग होता है जब कि विसंवादन में उसी बात में अलग अलग व्यक्तिओं के साथ अलग अलग वचन का प्रयोग होता है ।

ड. उपर के वाक्यों में से एक वाक्य गलत है ।

५०. नीचे दिए वाक्यों में से सही वाक्य कौन सा हैं यह बताएं ।

अ. अनुग्रह करने वाले व्यक्ति के वियोग में बारंबार उसके वियोग के विचार द्वारा मानसिक चिंता - खेद आदि करें वह परिदेवन ।

ब. अनुग्रह करने वाले व्यक्ति के वियोग से आए दु:ख में दु:खी हो वह शोक ।

क. शोक में व्यक्ति अपने दु:ख का अनुभव करता हैं इसलिए दु:ख व्यक्त होता है ।

ड. परिदेवन में दु:ख की जानकारी अन्य को भी होती है इसलिए दु:ख को व्यक्त कहते हैं ।

५१. आस्रव संबंधी नीचे दिए चार वाक्यों में कौन सा वाक्य अयोग्य हैं?

अ. आस्रव का मुख्य कारण कषाय नहीं पर मन वचन काया की प्रवृत्ति है, प्रवृत्ति के समय रहे कषाय की शुभ अथवा अशुभ परिणति गौण कारण हैं ।

ब. प्रवृत्ति से आस्रव तो होता ही है पर प्रवृत्ति के समय राग द्वेष की परिणति कम हो तो आस्रव न्यून और संवर / निर्जरा अधिक होती है, जब संवर / निर्जरा हो तभी उस प्रवृत्ति को धर्म कहते हैं ।

क. संयम आदि प्रवृत्ति में प्रशस्त राग की शुभ परिणति होती है इसलिए संयम आदि प्रवृत्ति को व्यवहार नय से देवगति के आस्रव रूप कहा है ।

ड. संयम आदि प्रवृत्ति वैसे तो प्रशस्त राग है पर निश्चय नय से वह प्रशस्त राग परंपरा से संवर / निर्जरा द्वारा मोक्ष का कारण बनता है, इसलिए उसे धर्म कहा है ।

५२. नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

अ. अजीव अधिकरण के मुख्य चार भेद हैं, निर्वर्तना, निक्षेप, सहसा, अनाभोग ।

ब. कोई भी वस्तु रखनी हो तो जहाँ वस्तु रखनी है उस जगह का बराबर निरीक्षण कर के वस्तु रखने से वह प्रवृत्ति अजीव अधिकरण नहीं ही होगा ।

क. मूलगुण निर्वर्तना यानी बाह्य साधन की रचना करना, जैसे की शरीर आदि की रचना करना।

ड. भोजन को स्वादिष्ट बनाने दो वस्तुओं का संयोग करना उसे संयोग अजीव अधिकरण कहते हैं।

५३. ज्ञानावरणीय / दर्शनावरणीय कर्म के आस्रव सम्बंधित नीचे दिए चार वाक्यों में से गलत वाक्य कहें ।

अ. चारों निकाय के देवों के अस्तित्व, शक्ति, आचरण आदि विषे हठाग्रह रखने के उपरांत मिथ्यात्व के तीव्र परिणाम, उन्मार्ग देशना, कदाग्रह सेवन आदि से दर्शन मोहनीय कर्म का आस्रव होता हैं ।

ब. किसी ज्ञानी की प्रशंसा सुनते इर्ष्या आने से उसके प्रति बैर भाव रखने से प्रदोष रूप ज्ञानावरणीय कर्म का आस्रव होता हैं ।

क. आसादन और उपघात दोनों का अर्थ नाश होता हैं, किन्तु उपघात में अनादर की प्रधानता हैं और आसादन में दूषण की प्रधानता हैं ।

ड. झूठे मुंह बोलना अथवा अक्षर लिखे वस्त्र पहनने से ज्ञान की आशातना होती है और ज्ञानावरणीय कर्म का बंध होता है ।

५४. नाम कर्म के आस्रव सम्बंधित नीचे दिए चार वाक्यों में से सही वाक्य कहें ।

अ. मन में जिनपूजा प्रति भाव न होने पर भी सम्मान प्राप्ति के लिए जिनपूजा की प्रवृत्ति करना यह काययोग वक्रता है ।

ब. एक व्यक्ति को किसी विषय में कुछ कहेना और दूसरी व्यक्ति को उसी विषय में अन्य कुछ कहना और इस तरह उन दोनों को लड़ाना यह वचनयोग वक्रता है ।

क. अपने असत्य वचन उच्चारण के कारण अन्य की विरुद्ध प्रवृत्ति हों उसे विसंवादन कहते हैं ।

ड. वचनयोग वक्रता में अपनी और अन्य की प्रवृत्ति विरुद्ध बनती है ।

५५. चारित्र मोहनीय कर्म के आस्रव सम्बंधित नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही हैं?

अ. कषाय के उदय से आत्मा के तीव्र संक्लिष्ट परिणाम होने से चारित्र मोहनीय कर्म का आस्रव होता हैं ।

ब. चारित्र के प्रति मोह जगाने कर्म चारित्र मोहनीय कर्म हैं ।

क. चारित्र धारण किया हो ऐसे साधु की निंदा करने से ही चारित्र मोहनीय कर्म का आस्रव होता है, चारित्र धारण न किया हो ऐसे श्रावक की निंदा से तो नीच गोत्र कर्म का ही बंध होता है ।

ड. ऐसे प्रवृत्ति जिस से भवांतर में चारित्र की प्राप्ति हो उसे चारित्र मोहनीय कर्म का आस्रव कहते हैं ।

५६. तीर्थंकर नाम कर्म सम्बंधित नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही हैं?

अ. तीर्थंकर नाम कर्म तीर्थंकर बनने के पूर्व के तीसरे भव में ही बंधता है ।

ब. तीर्थंकर नाम कर्म बांधने के पश्चात् वह अवश्य तीर्थंकर बनने के बाद ही जाता है ।

क. तीर्थंकर नाम कर्म बांधने के १६ कारण एकत्रित हों तभी तीर्थंकर नाम कर्म बंधता है, प्रत्येक अलग अलग नहीं ।

ड. अरिहंत आदि बीस पदों की आराधना से तीर्थंकर नाम कर्म बांधने के पश्चात् वह निकाचित हो तो ही तीर्थंकर बन सकते हैं, अन्यथा नहीं ।

५७. सूत्र ६-१९ सम्बंधित चार विकल्पों में से कौन सा विकल्प सही हैं?

अ. शील का पालन साधु ही कर सकते हैं, श्रावक अव्रतधारी होने से शील का पालन नहीं कर सकते।

ब. शील और व्रत पालन द्वारा सर्व प्रकार के आयुष्य का बंध होता है ऐसा सूत्र में निर्देश है वह चारों प्रकार के आयुष्य के लिए है ।

क. साधु शील पालन के लिए गोचरी के अड़तालिस दोषों से बचना चाहिए ।

ड. शील और व्रत के परिणाम का अभाव नरक, तिर्यंच और मनुष्य आयुष्य कर्म का बंध कराता है।

५८. कर्म का फल भुगतने के विषय में नीचे दिए वाक्यों में से कौन सा वाक्य अयोग्य हैं?

अ. श्रावक को कर्म उदय में आने के पहेले ही तप और संयम द्वारा कर्म का नाश करन चाहिए जिससे उसका शुभ / अशुभ फल भुगतना न पड़े ।

ब. जो कर्म पूर्व में बंधे हैं वे कब उदय में आयेंगे वह कदाचित हमें पता न पड़े, परंतु वे उदय में आयेंगे वह निश्चित हैं ।

क. उदय में आए कर्म का फल सम भाव से सहन करने से भावि के नए कर्म बंध रुकते हैं।

ड. उदय में आए कर्म का फल सम भाव से सहन न करने से नए शातावेदनीय कर्म का बंध होता है ।

५९. कर्म बंध विषयक नीचे दिए वाक्यों में से कौन सा वाक्य योग्य हैं?

अ. आयुष्य का बंध हो तब जीव को आठों कर्म का बंध होता है ।

ब. जिस कर्म के जो आस्रव ग्रंथ में बताए हैं उस क्रिया करने के द्वारा केवल उन्हीं कर्मों का आस्रव और बंध होता हैं, अन्य कर्म का नहीं ।

क. शुभ क्रिया से होता आस्रव केवल संवर और निर्जरा ही कराता है, कर्म बंध नहीं ।

ड. चार प्रकार के बंध में मुख्यता स्थिति बंध की है क्यों कि जितनी लम्बी कर्म की स्थिति उतना संसार में परिभ्रमण अधिक होता है ।

६०. धर्म सम्बंधित नीचे दिए विधानों में कौन सा विधान सही हैं?

अ. अपुनर्बंधक जीव और सम्यग्द्रष्टि जीव एक ही धर्म क्रिया करें तो एक समान आस्रव होता है ।

ब. शुभ क्रिया द्वारा संवर और निर्जरा ही होती है, आस्रव तो अवश्य नहीं होता ।

क. संयम तो केवल निर्जरा का ही कारण बनता है ।

ड. धर्म तो उन्नति ही कराता है पर धर्मी जीव में दिखती त्रुटियाँ तो धर्मी में रही राग द्वेष की परिणति के कारणे ही होती है ।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक । (कुल १५ x २ = ३० अंक)

प्र.६१ धर्म का मुख्य काल मोक्ष है । अतः जीव को धर्म .... के लिए करना चाहिए ।
अ. संवर, पुण्य ब. पुष्प, निर्जरा क. निर्जरा, संवर ड. उपर्युक्त सभी

प्र.६२ निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य अपुनर्बधकादि जीवों के लिए गलत नहीं है ?

अ. राग-द्वेष की परिणति जितनी अल्प; पुण्यबंध, संवर और निर्जरा उतनी अधिक होती है ।

ब. देशविरति की अपेक्षा से सम्यग्दृष्टि को और सम्यग्द्दष्टि की अपेक्षा से अपुनर्बधक को आस्रव न्यून होता है ।

क. अपुनर्बंधक से सम्यग्द्दष्टि आदि में पूर्व-पूर्व में राग-द्वेष की परिणति अधिक होने से आस्रव अधिक होता है ।

ड. अपुनर्बंधक से सम्यग्द्दष्टि को और सम्यग्द्दष्टि से देशविरति को राग-द्वेष अधिक होने से संवर-निर्जरा अधिक होती है ।

प्र.६३ निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य आस्रव तत्त्व के परिप्रेक्ष्य में सही नहीं ?

अ. चारित्र संवर और निर्जरा का ही कारण है किंतु उसके साथ रहे हुए राग-द्वेष से आस्रव होता है, यह व्यवहार नय का कथन है ।

ब. जिस कर्म का जो आस्रव है, उस आस्रव से उसी कर्म का बंध होता है, ऐसा नहीं है किंतु उस आस्रव से ज्ञानावरणीयादि कर्मों का भी बंध होता है ।

क. विघ्न करने के अध्यवसाय होने पर अंतराय कर्म के साथ अन्य कर्मों का भी बंध होता है किंतु अंतराय कर्म के अधिक पुद्गलों का बंध होता है और अन्य कर्म के पुद्गल कम होते हैं ।

ड. सरागसंयम होने से साता वेदनीय और देव आयुष्य के तीव्र रस का बंध होता है किंतु ज्ञानावरणीय आदि अन्य कर्मों का बंध नहीं होता ।

प्र.६४ विषम विकल्प चुनें (आस्रव की अपेक्षा से)।

अ. संवेग-बहुश्रुतभक्ति-साधुवैयावत्त्य-सम्यग्दर्शन

ब. ज्ञान को छुपाना-ज्ञान की निंदा-ज्ञानी की आशातना-ज्ञान के साधन का नाश

क. सरलता-अल्पपरिग्रह-मृदुता-अल्पआरंभ

ड. क्षमा-दान-सरागसंयम-दया

प्र.६५ अधिकरण दो प्रकार के हैं - जीव, अजीव । निम्नलिखित विकल्पों में से कौन-सा विकल्प गलत नहीं है ?

अ. संरंभ - हिंसा आदि क्रिया का संकल्प ।
दूष्प्रमार्जित निक्षेप - भूमि का जैसे-तैसे प्रमार्जन करके वस्तु रखना ।
कायनिसर्ग - जलप्रवेश आदि से काया का त्याग ।
कृत - स्वयं हिंसा आदि क्रिया करता ।

ब. उत्तरगुण निर्वर्तना - तलवार आदि अभ्यंतर साधनों की रचना ।
कारित - हिंसा आदि क्रिया अन्य द्वारा कराना ।
आरंभ - हिंसा आदि की क्रिया करना ।
उपकरण संयोग - वेशभूषा आदि उपकरणों का संयोग करना ।

क. अनुमत - अन्य द्वारा की गई हिंसा आदि की अनुमोदना करना ।
अप्रत्यवेक्षित निक्षेप - भूमि को दृष्टि से जैसे-तैसे देखकर वस्तु रखना ।
मूलगुणनिर्वर्तता - शरीर, मन आदि की रचना ।
समारंभ - हिंसा आदि का संकल्प पूर्ण करना ।

ड. भक्तपान संयोग - भोजन स्वादिष्ट बनाने के लिए संयोग करना ।
संरंभ - हिंसा आदि क्रिया का संकल्प करना ।
अनाभोग निक्षेप - अचानक ही भूमि की प्रमार्जना किए बिना वस्तु नीचे रखना ।
भाषा निसर्ग - शास्त्र विरुद्ध भाषा वर्गणा के पुद्गलों का त्याग करना ।

प्र.६६ तिर्यंच आयुष्य और चारित्रमोहनीय कर्म के क्रमशः आस्रव कौन से हैं?

अ. माया, केवली की निंदा
ब. शील-व्रत का अभाव, अतिशय आरंभ
क. माया, आत्मप्रशंसा
ड. शील-व्रत का अभाव, माया

प्र.६७ निम्नलिखित कोष्ठक में कर्म और उनके आस्रव दर्शाए गए हैं । इनमें से कौन-सा विकल्प सही नहीं है ?

	कर्म	आस्रव
अ.	तीर्थंकर	मार्ग प्रभावना, निरतिचार चारित्रपालन, विनय, प्रवचनभक्ति
ब.	असाता वेदनीय	आक्रंदन, दुःख, संघ की निंदा, ताप, वध
क.	नरकायु	बहु आरंभ, बहु परिग्रह, पंचेन्द्रिय हत्या, रौद्रध्यान
ड.	उच्चगोत्र	परप्रशंसा, नम्रवृत्ति, स्वनिंदा, स्वयं के दुर्गुण प्रगट करना

प्र.६८ 'अहो ! मेरा बल तो देखो ! मेरा पराक्रम तो देखो ! मेरे सामने तो हजार योद्धा भी टिकने के लिए समर्थ नहीं हैं । मैं ऐसा सहस्रयोधी हूँ ...' इस प्रकार 'झ' जीव स्वयं के बल का मद करता है।

* 'यह बहुत अधिक धन कमाता है । मुझे कुछ उपाय ऐसा करना होगा जिससे इसे इतना धन प्राप्त नहीं हो । इसकी दूकान की बिजली का कनेक्शन बंद कर देने से इसे बहुत परेशानी होगी... 'ट' जीव ईर्ष्या से अन्य जीव को धन प्राप्त नहीं होने का बहुत उपाय सोचता है ।
* 'अहो ! संसार में सभी जीव अज्ञानता से मोक्ष का मार्ग नहीं जान सकते है । इसलिए सभी विषय में सुख मानकर दुःख की परंपरा में ही डूबे रहते हैं । अतः इन जीवों को मैं सुख का सच्चा मार्ग दर्शाऊँ' इस प्रकार 'ठ' जीव को विश्व के समस्त जीवों पर करुणा के भाव हैं ।
* 'हे दैव ! ये तूने क्या किया ? हे नाथ ! आप मुझे छोड़कर कहाँ चले गए? अरे ! मेरे स्वामी का मृतदेह देखकर भी मेरी आँखें फूट क्यों नहीं जाती?....' इत्यादि रूप से 'ड' स्त्री अपने पति की मृत्यु होने पर विलाप करती है ।

यहाँ चार जीवों (झ,ट,ठ,ड) की विचारधारा प्रगट की है । ऐसे विचारों से इन जीवों को कौन-से कर्म का आस्रव होता है? इसके समाधान में तत्त्वार्थसूत्र के चार विद्यार्थियों (अ, ब, क, ड) ने अपने-अपने मत प्रस्तुत किए । निम्नलिखित विकल्पों में से किस विद्यार्थी का मत गलत नहीं है ?

अ. झ - चारित्र मोहनीय (मानकषाय) ट - तिर्यंच आयुष्य
ठ - तीर्थंकर नामकर्म ड - अशुभ नामकर्म

ब. ट - भोगांतराय कर्म ठ - शुभ नामकर्म
ड - असातावेदनीय कर्म झ - चारित्र मोहनीय (मानकषाय)

क. ठ - तीर्थंकर नामकर्म ड - असातावेदनीय कर्म
झ - नीचगोत्र कर्म ट - लाभांतराय कर्म

ड. ड - अशुभ नामकर्म झ - नीचगोत्र कर्म
ट - भोगांतराय कर्म ठ - तीर्थंकर नामकर्म

प्र.६९ निम्नलिखित चार विकल्पों में चार भिन्न-भिन्न जीवों की क्रियाएँ दर्शाई गई हैं । इन चार जीवों (अ, ब, क, ड) में से कौन-सा संसार की वृद्धि कराने वाले कर्म का बंध कर रहा है ?

अ. जिनमंदिर में भोजन करना, थूंकना, चप्पल पहनना, लघुनीति-बड़ीनीति करना, मैथुन सेवन करना इत्यादि रूप जिनमंदिर की आशातना करना ।

ब. धर्म का प्रत्यक्ष फल नहीं दिखने से धर्म व्यर्थ है, साधु-साध्वी स्नान नहीं करने से बहुत गंदे होते हैं, इत्यादि रूप से जिनधर्म और संघ की निंदा करना ।

क. यह शत्रु मेरे कार्य में विघ्न करता है, इस काँटे को कैसे निकालूँ, इसे ऐसे मारना है कि किसी को पता न चले इत्यादि रूप तीव्र क्रोध और रौद्रध्यान करना ।

ड. धर्म में यथाशक्ति प्रवृत्ति न करना, तप में उद्यत अन्य व्यक्ति के उत्साह का भंग करना, तप में विघ्न करना इत्यादि ।

प्र.७० निम्नलिखित विकल्पों में से कौन-सा विकल्प गलत नहीं है ?

अ. परिदेवन - बंधु आदि के वियोग के बार-बार चिंता, खेद आदि करना ।
ताप - कठोर वचन आदि सुनकर हृदय में जलना ।

ब. दान - स्वयं की वस्तु अन्य को देना ।
उपभोग - अनेक बार भोग सके ऐसी आहारादि वस्तुओं का उपयोग ।
भोग - एक बार भोग सके ऐसी वस्त्र-पात्रादि वस्तुओं का उपयोग ।

क. सराग संयम - संज्वलन कषाय के उदयवाले मुनि का संयम ।
शौच - शरीरादि की स्नानादि से शुद्धि करना, पवित्रता ।
संयमासंयम - आंशिक संयम और आंशिक असंयम, देशविरति ।

ड. विसंवादन - पहले स्वीकारी हुई वास्तविकता को कुछ समय बाद बदलना ।
प्रदोष - तत्त्व के प्रति अरूचि, ज्ञानी के प्रति द्वेष, ज्ञान के उपकरण के प्रति अरुचि ।
अनुत्सेक - विशिष्ट श्रुत आदि प्राप्त होने पर भी अहंकार नहीं करना ।

प्र.७१ निम्नलिखित विकल्पों में कर्म और उनके आस्रव लिखे गए हैं । इनमें से कौन-सा विकल्प गलत नहीं है ?

अ. दर्शनमोह - श्रुतज्ञान की निंदा, संघ की निंदा, केवली का अवर्णवाद ।
दर्शनावरणीय - ज्ञान के प्रति अरुचि, ज्ञानी की आशातना, ज्ञान के उपकरण का नाश ।
शातावेदनीय - दान, संयमासंयम, अकामनिर्जरा, क्षमा ।

ब. मनुष्यायुष्य - मृदुता, अल्प आरंभ, अकामनिर्जरा, क्षमा ।
शुभनामकर्म - मन, वचन, काया की सरलता ।
तीर्थंकर नामकर्म - निरतिचार शील-व्रत का पालन, यथाशक्ति पंचाग्नि आदि तप, विनय।

क. उपर्युक्त दोनों (अ और ब) सही है ।

ड. उपर्युक्त में से कोई सही नहीं ।

प्र.७२ तीर्थंकर नामकर्म के आस्रव विवक्षा से २० भी होते हैं, जिन्हें वीसस्थानक कहा जाता है। निम्नलिखित विकल्पों में से कौन-सा विकल्प सही नहीं है ?

अ. श्रुत - अर्थ से तीर्थंकर प्रणीत और सूत्र से गणधर रचित अंग-उपांग आदि सूत्र।
अकामनिर्जरा - इच्छा बिना कर्म का नाश होना।
संवेग - संसार के सुख भी दुःख रूप लगने से संसार से उद्वेग, वैराग्य होना।

ब. बालतप - अज्ञानता से भृगुपात आदि तप करना।
अरिहंत - रागादि अठारह दोषों से रहित
विनय - मोक्ष के साधन और उपकारी आचार्यादि का बहुमान आदि।

क. संघ - श्रावक-श्राविका साधु-साध्वी रूप संघ।
आचार्य - इन्द्रियजय आदि ३६ गुणों के धारक।
शील - व्रतपालन के लिए आवश्यक पिंडविशुद्धि आदि।

ड. सकामनिर्जरा - इच्छापूर्वक होने वाली कर्मनिर्जरा।
केवली - रागद्वेष रहित और केवलज्ञान युक्त।
बहुश्रुत - बहुत श्रुत (शास्त्रों) को जानने वाला।

प्र.७३ निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य गलत नहीं है ?

अ. योगवक्रता में मात्र स्वयं की प्रवृत्ति विरुद्ध होती है तथा विसंवादन में मात्र पर की प्रवृत्ति विरुद्ध होती है।

ब. यद्यपि आसादन और उपघात का अर्थ नाश ही है तथापि जिसमें अनादर की प्रधानता हो, उसे उपघात तथा दूषण की प्रधानता वाले को आसादन कहा है।

क. हृदयस्थित वेदना को करुण शब्दों से प्रगट करना परिदेवन है तथा मन में ही चिंता करना शोक है।

ड. ज्ञान, ज्ञानी और ज्ञान के साधनों के प्रति द्वेष आदि भावों से ज्ञानावरणीय कर्म तथा केवली-श्रुत-संघ आदि के अवर्णवाद से दर्शनावरणीय कर्म का आस्रव होता है।

प्र.७४ २० स्थानक की आराधना से तीर्थंकर नामकर्म का आस्रव होता है। इस तीर्थंकर नामकर्म के परिप्रेक्ष्य में कौन-सा वाक्य गलत नहीं है ?

अ. इस कर्म का बंध पूर्व तीसरे भव में ही होता है तथा निकाचित भी उसी भव में होता है। दर्शनादि सभी पद मिलकर इस कर्म के आस्रव हैं।

ब. इस कर्म का बंध पूर्व के भवों में भी हो सकता है किंतु निकाचित तो पूर्व के तीसरे भव में ही होता है तथा निकाचित क्रिया कर्म पुनः क्षय भी हो जाता है ।

क. निकाचित कभी भी हो सकता है किंतु बंध मुख्यतया पूर्व के तीसरे भव में ही होता है तथा २० पद अलग-अलग भी आस्रव हैं ।

ड. निकाचित पूर्व के तीसरे भव में ही होता है किंतु बंध उससे पूर्व के भव में भी हो सकता है तथा निकाचित नहीं किया हुआ कर्म पुनः खिर भी जाता है ।

प्र.७५ गुणी व्यक्तियों के प्रति नम्रता तथा उपकारी आचार्यादि के विनय से अधिक-से-अधिक कितने और कौन-से कर्मों का आस्रव संभव है ?

अ. ३ कर्म - तीर्थंकरनामकर्म, सातावेदनीय कर्म, शुभनामकर्म ।

ब. ३ कर्म - तीर्थंकर नामकर्म, मनुष्यायुष्य, उच्चगोत्रकर्म ।

क. ४ कर्म - तीर्थंकर नामकर्म, सातावेदनीय, मनुष्यायुष्य, उच्चगोत्रकर्म ।

ड. ४ कर्म - तीर्थंकर नामकर्म, शुभनामकर्म, मनुष्यायुष्य, उच्चगोत्रकर्म ।

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-१२	अध्याय-७	सूत्र १-८	जमा करने की अंतिम तारीख ता. ३१/०७/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक । (कुल ३० x ½ = १५ अंक)

१. संवेग और वैराग्य की पुष्टि के लिए .... और .... का स्वरूप विचारना चाहिए।

अ. दीक्षा, काया ब. संसार, काया क. संसार, मोक्ष ड. संसार, दीक्षा

२. हर जीव को सामान्य से अन्य पदार्थों की अपेक्षा .... पर अधिक आसक्ति होती है ।

अ. नाम ब. यश क. काया ड. मन

३. शरीर और वस्त्र आदि संयम की साधना में सहायक बनते होने से साधु उनका रक्षण करते हैं । पर अगर उनमें आसक्ति उत्पन्न हो तो वे .... के बदले .... बन संसार परिभ्रमण बढ़ाते हैं ।

अ. उपकरण, अधिकरण ब. अधिकरण, उपकरण

क. वस्त्र, शरीर ड. अपकारी, उपकारी

४. संसार के स्वरूप को विचारते संसार .... है ऐसा प्रतीत होता है ।

अ. दु:खरूप ब. सुखरूप क. जीने लायक ड. फलदायक

५. सभी दुखों का मूल .... है ।

अ. पुण्य तत्त्व ब. संपत्ति का त्याग क. राग-द्वेष ड. शरीर का योग

६. सामायिक यानी समता । समता यानी .... का अभाव ।

अ. कषाय ब. हास्य क. योग ड. प्रवृत्ति

७. स्थूलप्राणातिपातविरमण व्रत में .... हिंसा का त्याग है ।

अ. सापेक्ष ब. निरपेक्ष क. स्थावर ड. अपराधी

८. अणु व्रतों के पालन करने वालों को .... व्रती कहते हैं ।

अ. आगारी ब. अणागारी क. साधु ड. महा

९. .... यह राग - द्वेष रूप शत्रु के हथियार हैं ।
अ. ४ कषाय ब. ३ योग क. ५ समिति ड. ३ गुप्ति

१०. .... यह चोरी का एक प्रकार है ।
अ. झूठा साक्षी बनना ब. अमानत परत न करना
क. परस्त्री गमन ड. रस्ते में पड़ा १ रुपये का सिक्का उठाना

११. द्विपद संबंधी अलीक बोलना वह .... अलीक है ।
अ. कन्या ब. गौ क. भूमि ड. ढोर

१२. व्रत की व्याख्या में व्रत को .... रूप बताया है ।
अ. पर अर्थापत्ति से व्रत .... स्वरूप है । ब. निवृत्ति, प्रवृत्ति
क. प्रवृत्ति, निवृत्ति ड. प्रवृत्ति, प्रवृत्ति-निवृत्ति उभय

१३. 'दु:खमेव वा' (७-५) इस सूत्र की भावना में हिंसादि पापों से .... दुख होता है ऐसे विचारों की प्रधानता है ।
अ. अपने आप को ब. अन्य को भी क. हरेक को ड. स्व को नहीं पर अन्य को

१४. 'हिंसादिष्विहामुत्र...'(७-४) इस सूत्र की भावना में हिंसादि पाप .... दुःख के कारण हैं ऐसे विचार की प्रधानता है ।
अ. अपने ब. अन्य के भी क. सभी के ड. अपने नहीं पर अन्य के

१५. अहिंसादि के पालन के लिए .... भाव अनिवार्य है ।
अ. मैत्री ब. ईर्ष्या क. असूया ड. बैर

१६. .... भाव आत्मा में रहे गुणों को प्रगट करने का अमोघ उपाय है ।
अ. ईर्ष्या ब. असूया क. बैर ड. प्रमोद

१७. शक्ति होने पर भी केवल भाव करुणा करने वाले श्रावक की भाव करुणा .... है ।
अ. उत्कृष्ट ब. शून्य क. सच्ची ड. बिन जरूरी

१८. आत्मा के गुणों का घात .... हिंसा है ।
अ. द्रव्य ब. द्रव्य-भाव उभय क. भाव ड. पर की

१९. जीव रक्षा के परिणाम रहित सर्व जीव सदा .... हिंसा का पाप बांधते हैं ।
अ. द्रव्य-भाव उभय ब. द्रव्य क. भाव ड. अन्य की

२०. अन्य को दु:ख देना यह .... हिंसा है और अन्य के द्रव्य प्राण का वियोग करना यह .... हिंसा है ।
अ. निश्चय, व्यवहार ब. व्यवहार, निश्चय
क. निश्चय, व्यवहार निश्चय उभय ड. व्यवहार-निश्चय उभय, निश्चय

२१. जगत के सर्व जीवों के प्रति स्नेह के परिणाम यह .... भावना है ।
अ. मैत्री ब. प्रमोद क. करुणा ड. माध्यस्थ

२२. पूर्व में जिस स्थल में साधु उतरे हों उस स्थल में उतरना हो तो .... याचना करनी चाहिए ।
अ. अवग्रह अवधारणा ब. अनुवीचि अवग्रह क. बारंबार अवग्रह ड. साधर्मिक अवग्रह

२३. अन्य के गुणों को दोष रूप प्रगट करना यह .... है ।
अ. ईर्ष्या ब. असूया क. प्रशंसा ड. अप्रशंसा

२४. अग्नि से अपने और पर के मात्र द्रव्य प्राणों का घात करना यह .... हिंसा है ।
अ. स्व-पर द्रव्य हिंसा ब. स्व-पर भाव हिंसा क. स्व द्रव्य हिंसा ड. स्व द्रव्य - परभाव हिंसा

२५. तंदुल मत्स्य की हिंसा को ग्रंथ में .... कही है ।
अ. द्रव्य हिंसा ब. भाव हिंसा क. द्रव्य-भाव उभय हिंसा ड. अहिंसा

२६. जगत में कोई जीव दुखी न हो, संपूर्ण जगत दुःख से मुक्त हो, यह .... भावना है ।
अ. मैत्री ब. प्रमोद क. करुणा ड. माध्यस्थ

२७. हर साधक को अपने से लघु पर गुण से अधिक गुणी के प्रति भी .... भाव रखना चाहिए।
अ. मैत्री ब. प्रमोद क. करुणा ड. माध्यस्थ

२८. अन्य की बाह्य / अभ्यंतर संपत्ति देखकर चित्त में उत्पन्न होती जलन .... है ।
अ. असूया ब. अग्नि प्रपात क. ईर्ष्या ड. गरमी

२९. .... भाव के बिना स्व में रहे गुणों की कोई कीमत नहीं ।
अ. मैत्री ब. प्रमोद क. करुणा ड. माध्यस्थ

३०. काया का सही स्वरूप समज सकें तो .... की पुष्टि होती है ।
अ. वैराग्य ब. ममत्व क. गुणों ड. आरोग्य

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१. नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य सही नहीं ?
अ. दु:ख देना यह भाव हिंसा है और प्राण वियोग यह द्रव्य हिंसा है ।
ब. अँधेरे में रस्सी को सांप मान उसे मारने का प्रयत्न करने में भाव हिंसा है ।
क. चौदहवें गुणस्थान में रहे केवली भगवंत अन्य जीवों की अपेक्षा से द्रव्य और भाव दोनों हिंसा से रहित हैं ।
ड. आर्तध्यान और रौद्रध्यान के त्याग पूर्वक मन को गुप्त रखना वह मनोगुप्ति ।

३२. नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. एक जीव अन्य जीव के भाव प्राण की हिंसा नहीं कर सकता ।

ब. रक्षा के परिणाम से रहित जब जीव अन्य का प्राणवध करता है तब द्रव्य और भाव उभय हिंसा होती हैं ।

क. साधुओं में केवल द्रव्य हिंसा ही होती है ।

ड. अधिकतर गृहस्थों में सदैव भाव हिंसा होती है ।

३३. नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. ग्रहस्थपने में सूक्ष्म जीवों की हिंसा का त्याग संभव ही नहीं ।

ब. किसी भी प्रकार की आसक्ति साधना में बाधक बनती है ।

क. महाव्रतों की अपेक्षा से अणुव्रतों में रुपए में ४ आने जितना अहिंसा का पालन होता है ।

ड. साधु केवल भाव करुणा ही करी सकते हैं ।

३४. कौन से व्रत के लिए कौन सी भावना होती है उनमें नीचे दिए कोष्ठक के लिए कौन सा विकल्प सही है?

व्रत	भावना
१ प्राणातिपात विरमण	अ अनुवीचि अवग्रह धारणा
२ मृषावाद विरमण	इ मैत्री भावना
३ अदत्तादान विरमण	ई एषणा समिति
४ मैथुन विरमण	उ मनोज्ञ स्पर्श त्याग
५ परिग्रह विरमण	ऊ पूर्व क्रीडा स्मरण वर्जन
६ सर्व व्रत पालन	ऋ भय प्रत्याख्यान

अ. १-ई, २-ऋ, ३-ऊ, ४-अ, ५-उ, ६-इ ब. १-ऋ, २-ई, ३-अ, ४-ऊ, ५-उ, ६-इ

क. १-ई, २-ऋ, ३-अ, ४-ऊ, ५-उ, ६-इ ड. १-ई, २-ऋ, ३-अ, ४-ऊ, ५-इ, ६-उ

३५. मैत्री भावना यानी?

अ. गुण से अधिक जीवो के गुणों को देखकर हर्ष व्यक्त करना, गुणों की प्रशंसा करना यानी मैत्री भावना ।

ब. जगत के सभी जीवों पर हार्दिक स्नेह के परिणाम होना यह मैत्री भावना ।

क. रोग आदि बाह्य दु:खों से घिरे जीवों को देखकर उनके प्रति दया के परिणाम होना यानी मैत्री भावना ।

ड. अज्ञानता आदि अभ्यंतर दु:खों से घिरे जीवों को देखकर उनके प्रति दया के परिणाम होना यानी मैत्री भावना ।

३६. प्रमोद भावना यानी?

अ. प्रमोद नाम के व्यक्ति को लगातार याद करते रहना वह प्रमोद भावना ।

ब. जगत के सभी जीवों पर हार्दिक स्नेह के परिणाम होना यह प्रमोद भावना ।

क. गुण से अधिक जीवों के गुणों को देख हर्ष व्यक्त करना, गुणों की प्रशंसा करना यानी प्रमोद भावना ।

ड. अपने से न्यून जीवों के गुणों की प्रशंसा न करनी यानी प्रमोद भावना ।

३७. द्रव्य करुणा भावना यानी?

अ. संवेग और वैराग्य की पुष्टि के लिए जगत के स्वरूप का विचार यह द्रव्य करुणा भावना।

ब. रोग आदि बाह्य दु:खों से घिरे जीवों को देखकर उनके प्रति दया के परिणाम होना यानी द्रव्य करुणा भावना ।

क. अज्ञानता आदि अभ्यंतर दु:खों से घिरे जीवों को देखकर उनके प्रति दया के परिणाम होना यानी द्रव्य करुणा भावना ।

ड. निरपराधी त्रस जीवों की संकल्पपूर्वक निरपेक्ष हिंसा का त्याग करने की विचारणा यानी द्रव्य करुणा भावना ।

३८. भाव करुणा भावना यानी?

अ. रोग आदि बाह्य दु:खों से घिरे जीवों को देखकर उनके प्रति दया के परिणाम होना यानी भाव करुणा भावना ।

ब. अज्ञानता आदि अभ्यंतर दु:खों से घिरे जीवों को देखकर उनके प्रति दया के परिणाम होना यानी भाव करुणा भावना ।

क. संसार के स्वरूप का विचार कर अन्य जीवों के लिए संसार सुख रूप है ऐसी विचारणा यह भाव करुणा भावना ।

ड. हर प्रकार की हिंसा का त्याग यानी भाव करुणा भावना ।

३९. स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत यानी?

अ. निरपराधी त्रस जीवों की संकल्पपूर्वक निरपेक्ष हिंसा का त्याग यानी स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत ।

ब. निरपराधी त्रस जीवों की संकल्पपूर्वक निरपेक्ष हिंसा यानी स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत।

क. केवल सूक्ष्म जीवों की संकल्पपूर्वक हिंसा यानी स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत ।

ड. केवल स्थूल जीवों की संकल्पपूर्वक हिंसा यानी स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत ।

४०. स्थूल मृषावाद विरमण व्रत यानी?

अ. कन्या, गौ, भूमि के अलावा अन्य सभी सम्बंधित असत्य का त्याग वह स्थूल मृषावाद विरमण व्रत ।

ब. कन्या अलीक, गौ अलीक, भूमि अलीक, न्यास-अपहार और कूटसाक्षी यह पांच प्रकार के सत्य का त्याग यानी स्थूल मृषावाद विरमण व्रत ।

क. कन्या, गौ, भूमि सम्बंधित अलीक तथा न्यास-अपहार और कूटसाक्षी यह पांच प्रकार के असत्य का त्याग यानी स्थूल मृषावाद विरमण व्रत ।

ड. सभी प्रकार के असत्य का त्याग वह स्थूल मृषावाद विरमण व्रत ।

४१. स्थूल अदत्तादानविरमण व्रत यानी?

अ. सभी प्रकार की चोरी का त्याग यानी स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत ।

ब. हर प्रकार की व्यवहार में कहलाती चोरी का त्याग यानी स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत ।

क. किसी के पासे से दान ग्रहण करना वह स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत ।

ड. स्व के रखरखाव के लिए ज़रूरी होने पर भी अन्य व्यक्ति पासे से दान ग्रहण न करना वह स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत ।

४२. स्थूल मैथुन विरमण व्रत यानी?

अ. स्वपत्नी से अन्य किसी भी स्त्री अथवा परस्त्री के साथ मैथुन का त्याग यानी स्थूल मैथुन विरमण व्रत ।

ब. स्वपत्नी सहित किसी भी स्त्री के साथ मैथुन का त्याग यानी स्थूल मैथुन विरमण व्रत ।

क. सभी प्रकार से मैथुन का त्याग यानी स्थूल मैथुन विरमण व्रत ।

ड. कोई मैथुन क्रिया करता हो तब उनके सामने नहीं देखने का संकल्प यानी स्थूल मैथुन विरमण व्रत ।

४३. स्थूल परिग्रह विरमण व्रत यानी?

अ. सभी प्रकार के परिग्रह का त्याग यानी स्थूल परिग्रह विरमण व्रत ।

ब. प्रमाण से अधिक नगद, आभूषण, घर, दुकान, आदि इकट्ठा करना यानी स्थूल परिग्रह विरमण व्रत ।

क. अनेक प्रकार का परिग्रह करना यानी स्थूल परिग्रह विरमण व्रत ।

ड. कुछ नियत प्रमाण से अधिक नगद पैसा, आभूषण, घर, दुकान, आदि का त्याग यानी स्थूल परिग्रह विरमण व्रत ।

४४. माध्यस्थ भावना यानी?

अ. उपदेश के योग्य विनीत प्राणी के प्रति राग बढ़ाना यह माध्यस्थ भावना ।

ब. उपदेश के अयोग्य अविनीत प्राणी के प्रति राग-द्वेष रहित समभाव बढ़ाना यह माध्यस्थ भावना ।

क. एक वृत्त के मध्य बिंदु पर ध्यान केन्द्रित करना वह माध्यस्थ भावना ।

ड. मध्यलोक में मोक्ष प्राप्त होता हैं ऐसे विचारणा यानी माध्यस्थ भावना ।

४५. ईर्यासमिति यानी?

अ. सभी पकार की हिंसा का त्याग वह ईर्यासमिति ।

ब. जीवरक्षा के लिए युग प्रमाण द्रष्टि रखकर गमनागमन करना वह ईर्यासमिति ।

क. हिंसा के भय से गमन न करना वह ईर्यासमिति ।

ड. गमन करते समय कुत्ते अथवा अन्य प्राणी पे पैर न आ जाए ऐसी विचारणा करते गमन करना वह ईर्यासमिति ।

४६. ग्रहणैषणा दोष यानी?

अ. साधुओं द्वारा गोचरी प्राप्ति में दस दोष लगे वह गृहणैषणा दोष ।

ब. साधुओं द्वारा श्रावक पासे से दोष युक्त गोचरी ग्रहण करना वह गृहणैषणा दोष ।

क. श्रावक पासे से गोचरी ग्रहण करने के बाद गोचरी लेकर जाते जो दोष का सेवन हो वह ग्रहणैषणा दोष ।

ड. साधुओं द्वारा आहार ग्रहण करते समय जो गृद्धी आदि दस दोष लगे वह गृहणैषणा दोष।

४७. मनोगुप्ति यानी?

अ. आर्तध्यान और रौद्रध्यान के त्यागपूर्वक धर्मध्यान में मन का उपयोग रखना वह मनोगुप्ति।

ब. मन में चलते विचारों को गुप्त रखना वह मनोगुप्ति ।

क. गुप्त मन का उपयोग करना वह मनोगुप्ति ।

ड. आर्तध्यान और रौद्रध्यान में मन का उपयोग रखना वह मनोगुप्ति

४८. स्व भाव हिंसा यानी?

अ. अपने मन के भाव की परवाह न करना वह स्व भाव हिंसा ।

ब. जीव को अपना स्वभाव बदलना वह स्व भाव हिंसा ।

क. अन्य जीवों को दु:ख देने का विचार करते अपने आत्मा के गुणों का घात करना यह स्व भाव हिंसा ।

ड. अन्य जीवों को सुख देने का विचार नहीं करते अपने आत्मा के गुणों का घात हो यह स्व भाव हिंसा ।

४९. पर द्रव्य हिंसा यानी?

अ. अन्य जीवों के भाव प्राण का वध करने में निमित्त बनना वह पर द्रव्य हिंसा ।

ब. अन्य जीवों के द्रव्य प्राण का वध करना वह पर द्रव्य हिंसा ।

क. अन्य जीव के स्वामित्व के द्रव्यों का नाश करना वह पर द्रव्य हिंसा ।

ड. अन्य जीवों को दु:ख देने का विचार करते अपने आत्मा के गुणों का घात करना यह पर द्रव्य हिंसा ।

५०. पर भाव हिंसा यानी?

अ. अन्य जीवों के भाव प्राण का वध करने में निमित्त बनना वह पर भाव हिंसा ।

ब. अन्य जीवों को दु:ख देने का विचार करते अपने आत्मा के गुणों का घात करना यह पर भाव हिंसा ।

क. अन्य जीवों के द्रव्य प्राण का वध करना वह पर भाव हिंसा ।

ड. पर भव में सुख प्राप्त करने हेतु अन्य जीव की हिंसा करना वह पर भाव हिंसा ।

५१. नीचे महाव्रत और अणुव्रत में अंतर दिए हैं । उन में कौन सा वाक्य अयोग्य है?

अ. महाव्रत में हिंसा आदि व्रत का संपूर्ण पालन होता हैं जब कि अणुव्रतो में आंशिक पालन होता है ।

ब. महाव्रत के पालन से अणुव्रत के पालन में कषाय की मंदता कम है ।

क. पांचों महाव्रत का स्वीकार एक साथ ही करना अनिवार्य है जब कि अणुव्रत में श्रावक अपनी ईच्छा और क्षमता से एक, दो अथवा अधिक व्रत का स्वीकार कर सकते हैं ।

ड. महाव्रत में करना, कराना और अनुमोदन करना इन तीनों द्वारा व्रत पालन होता है जब कि अणुव्रतो में करना और कराना ऐसे दो तरह से व्रत पालन होता है, अनुमोदन का पालन नहीं होता ।

५२. नीचे द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा में अंतर दिए हैं । उन में कौन सा वाक्य अयोग्य है?

अ. अन्य जीवों के प्राण का वियोग करना यह द्रव्य हिंसा है जब कि अन्य जीवों को दु:ख देना यह भाव हिंसा है ।

ब. द्रव्य हिंसा कर्म के आस्रव का गौण कारण है जब कि भाव हिंसा यह कर्म के आस्रव का मुख्य कारण है ।

क. द्रव्य हिंसा मन, वचन और काया की अशुभ प्रवृत्ति से होती है जब कि भाव हिंसा आत्मा के अशुभ अध्यवसाय से होती है ।

ड. द्रव्य हिंसा में अन्य के प्राण का वध है इसलिए द्रव्य हिंसा करने वाले जीव की दुर्गति निश्चित है परंतु भाव हिंसा में प्राण वियोग नहीं होने से भाव हिंसा करने वाला जीव दुर्गति में नहीं जाता ।

५३. देश से प्राणातिपात विरमण आदि पांच व्रतों को अणुव्रत कौन से कारणों से कहे जाते हैं वह नीचे दर्शाए हैं । उन में कौन सा विकल्प सही नहीं?

अ. महाव्रत की अपेक्षा देश से पालन होते व्रतो छोटे यानी के अणु समान होने के कारण ।

ब. साधुओं के गुण से श्रावक के गुण अपेक्षा से अणु समान छोटे होने से ।

क. महाव्रत स्थूल दृष्टि से धर्म होते हैं जब कि अणुव्रत सूक्ष्म दृष्टि से धर्म होते हैं इसलिए ।

ड. धर्म के उपदेश में प्रथम महाव्रतों का उपदेश देने में आता है तत्पश्चात अणुव्रत का उपदेश देने में आता है । ऐसे अणु = बाद उपदेशे गए व्रतों को अणुव्रत कहलाते हैं ।

५४. उपकरण और अधिकरण विषयक नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य आध्यात्मिक दृष्टिकोण से गलत है?

अ. संयम की साधना में उपयोगी होती वस्तु को उपकरण कहते हैं जब कि बिनज़रूरी और संयम की साधना में बाधक वस्तु को अधिकरण कहते हैं ।

ब. साधुओं के लिए शरीर, वस्त्र आदि वस्तु पर अनासक्ति हो तो वह उपकरण कहलाते हैं और आसक्ति हो तो वह अधिकरण कहलाते हैं ।

क. शरीर निरोगी हो तो वह उपकरण कहलाता है और रोगी हो तो वह अधिकरण कहलाता है ।

ड. साधक को अगर उपकरण के प्रति आसक्ति हो जाए तो उपकरण मिटकर अधिकरण यानी के पाप के साधन रूप से परिवर्तित हो जाता है ।

५५. काया विषयक नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत हैं?

अ. मोक्ष की साधना में काया बहुत ही ज़रूरी साधन है ।

ब. महाव्रतों के पालन में काया अत्यंत सहायक साधन है ।

क. काया के प्रति किसी भी प्रकार से आसक्ति उत्पन्न न हो उसके लिए काया का स्वरूप जानना अत्यंत ज़रूरी है ।

ड. काया सुंदर और नित्य है, ऐसा चिंतन करने से काया के प्रति आसक्ति दूर होती है ।

५६. द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा विषयक नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य योग्य है?

अ. किसी भी जीव का प्राण वियोग करने पर भी उसके आत्मा का नाश होता नहीं इसलिए द्रव्य हिंसा वास्तविक रूप से होती ही नहीं ।

ब. अन्य जीव को दु:ख पहुँचाने में भाव हिंसा होती है । अगर अन्य जीव की हिंसा की जाए तो उसे दु:ख होता है, इसलिए वह केवल भाव हिंसा ही होती है ।

क. प्राण वियोग गौण हिंसा अथवा द्रव्य हिंसा है और किसी को दु:ख देना ही मुख्य हिंसा अथवा भाव हिंसा है ।

ड. आत्मा का परिणाम अगर अन्य जीव की रक्षा का हो तब जीव मन, वचन अथवा काया से अन्य जीव की हिंसा हो ऐसी कोई भी प्रवृत्ति न करने पर भी भाव हिंसा का पाप तो करता ही है ।

५७. मृषावाद विषयक नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. अहिंसा व्रत मुख्य है, इसलिए अगर किसी को जीव बचाने हेतु असत्य वचन बोलना पड़े तो स्थूल मृषावाद विरमण व्रत का भंग होता नहीं ।

ब. मृषावाद यह प्रथम स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत की रक्षा हेतु यानी के अहिंसा पालन के हेतु की रक्षा के लिए पालन किया जाता है ।

क. अहिंसा व्रत मुख्य है, मृषावाद विरमण यह गौण व्रत है ।

ड. किसी जीव की हिंसा होने वाली हो उस समये अगर कोई व्यक्ति उसमें निमित्त बन सके ऐसा वचन बोले और उससे जीव हिंसा न रुके तो ऐसा असत्य वचन मृषावाद में समाविष्ट होता नहीं ।

५८. द्रव्य, भाव और द्रव्य-भाव उभय इन तीन प्रकार की हिंसा के दृष्टांत में नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य सही नहीं?

अ. गृहस्थावास के त्यागी मुनि भगवंत जब अप्रमत्त दशा में हो और उस समय आकस्मिक अगर कोई जीव की हत्या हो जाए तब उनके द्वारा केवल द्रव्य हिंसा होती है ।

ब. अगर मुनि प्रमाद करें यानी के जीव रक्षा के प्रति अगर उनका लक्ष्य न रखें तब अगर उनके द्वारा किसी जीव का प्राण वियोग न हो तो भी भाव हिंसा होती है ।

क. मुनि जब जीव रक्षा के प्रति लक्ष्य न रखें तब अगर उनके द्वारा कोई जीव का प्राण वियोग हो तो द्रव्य-भाव उभय प्रकार से हिंसा होती है ।

ड. उपर के तीन में से दो ही वाक्य आध्यात्मिक दृष्टि से सही है, एक वाक्य केवल लौकिक दृष्टि ए सही है ।

५९. संवेग और वैराग्य विषयक नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य सही हैं?

अ. संसार के प्रति ऊब जाना वह वैराग्य ।

ब. केवल संसार का सही स्वरूप संवेग का और केवल काया का सही स्वरूप वैराग्य का कारण बनते हैं ।

क. संसार का सही स्वरूप सुखमय और दु:खमय उभय स्वरूप है ।

ड. संसार का सुख अनित्य और दु:ख फलक होने से सही अर्थ में दु:ख रूप ही हैं ।

६०. चार भावनाओं के विषयक दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य उपयुक्त है?

अ. जिसके अधिक मित्र हो वह मैत्री भावना अधिक भा सकता है और कम मित्र वाला व्यक्ति कम भा सकता है ।

ब. प्रमोद भावना में स्व से अधिक गुण वाले व्यक्ति के गुणों की प्रशंसा होने से वह केवल साधु ही भा सकते हैं, श्रावक तो रागी होने के कारण यह भावना भा नहीं सकते ।

क. अरबपति सेठ रोज उनके बंगला के सामने एक गरीब भिखारी को भीख मांगते देख ईश्वर को प्रार्थना करते हैं कि उस भिखारी का दु:ख दूर हो, इस तरह उन्होंने सच्ची भाव करुणा भाई कह सकते हैं ।

ड. मुनि ने चोर को चोरी से कितना पाप बंधता है वह समझाया फिर भी वह चोरी करता रहा तब भी मुनि को उसके प्रति द्वेषभाव जागृत न हुआ, ऐसे मुनि माध्यस्थ भावना भाने वाले कहलाते हैं ।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक । **(कुल १५ x २ = ३० अंक)**

६१. निम्नलिखित विकल्पों में से कौन सा विकल्प सही नहीं?

अ. असत्यवादी लोक में अविश्वसनीय और अति प्रिय बन नहीं सकता ।

रोग रहित घोड़ा होने पर भी उसे गधा कहना यह गो-अलीक भेद संबंधी मृषा कथन है।

श्रमण की अपेक्षा श्रावक छोटे होने से उनके व्रतों को अणुव्रत कहते हैं ।

हमें दुखी करने वाले जीव पर भी हमेशा समभाव रखना चाहिए ।

ब. युग यानी बैलगाड़ी में जोते बैल के स्कंध पर रही उध / धोसरी ।
उद्गम यानी आहार की उत्पत्ति में होते दोष जो गृहस्थ के निमित्त से लगते हैं ।
हमेशा 'करेमि भंते' सूत्र का पाठ बोल कर ही सामायिक का उच्चारण होता है ।
अन्य के गुणों को दोष रूप कहना उसे ज्ञानी 'असूया' कहते हैं ।

क. दुखी को देखकर हृदय में उत्पन्न होती दया यह भाव करुणा है ।
वैराग्य की स्थिरता के लिए जरूरी वस्तु का उपयोग भी आसक्ति रहित करना है ।
२२ तीर्थंकरों के शासन में छठा रात्रि भोजन विरमण व्रत नहीं होता यह बात सच्ची है ।
किसी का प्राण बचाने झूठ बोलना पड़े तब नियम भंग नहीं होता ।

ड. अणु व्रतों में पापों का मन, वचन और काया से करने और कराने का अत्याग नहीं ।
न्यासापहार चोरी का ही एक प्रकार है पर असत्य की मुख्यता होने से उसका मृषावाद में समावेश किया है ।
गुरु की अनुज्ञा बिना भोजन-पानी लेने या वापरने में आए तो गुरु अदत्त दोष लगता है।
अगर प्रमोद भाव नहीं तो स्वमें सेंकडो गुण हो तो भी उसकी कीमत नहीं ।

६२. निम्नलिखित महा व्रत की भावनाओं में से किस महा व्रत की भावनाएं अयोग्य नहीं?

अ. दूसरा महा व्रत - विचारपूर्वक बोलना, भय का त्याग करना, हास्य को परिमित करना, लोभ का परिहार करना आदि ।

ब. पांचवां महा व्रत - अमनोज्ञ स्पर्श का अद्वेष, ईष्ट गंध की भी अद्वेषता, मनोज्ञ रूप में राग का अभाव, अमनोज्ञ शब्द में भी राग का अभाव आदि ।

क. पहला महा व्रत - तीन प्रकार की एषणा में उपयोग पूर्वक बरतना, युग प्रमाण दृष्टि रखे बिना न चलना, धर्म ध्यान में मन का उपयोग रखना, रजोहरण द्वारा प्रमार्जन कर वस्तु का आदान-निक्षेप करना आदि ।

ड. तीसरा महा व्रत = विचार किए बिना मंजूरी लेकर ही उस स्थान में रहना, अनुज्ञा बिना भोजन-पानी का अग्रहण, ईन्द्र, चक्रवर्ती, सांडलिक, गृह स्वामी आदि की याचना करना, गुरु को बताने के बाद ही आहार पानी का ग्रहण आदि ।

६३. निम्नलिखित दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही हैं?

अ. रक्षा के परिणाम सहित प्राण वध - द्रव्य भाव हिंसा ।
शिकारी का बाण हिरन को न लगे वहाँ - भाव हिंसा ।

मृत्यु के लिए दिया जाता श्राप वहाँ भी - भाव हिंसा ।
रस्सी को सर्प मान मारने का प्रयत्न - भाव हिंसा ।

ब. अप्रमाद प्राण वियोग - द्रव्य भाव हिंसा ।
अप्रमत्त दशा में हिंसा - द्रव्य हिंसा ।
अन्य को दुःख देना - व्यवहार हिंसा ।
प्राण का वियोग होना - निश्चय हिंसा ।

क. स्वयं राग-द्वेष करना - स्वभाव हिंसा ।
मात्र प्राण व्यपरोपण - भाव हिंसा ।
तंदुलीये मत्स्य को - लगातार भाव हिंसा ।
असावधानी - भाव हिंसा ।

ड. अधिकतर श्रावक के आश्रय से सदैव - भाव हिंसा ।
श्रमण के आश्रय से सदैव - द्रव्य हिंसा ।
अगर जीव के प्रति दुर्लक्ष हो तो - अवश्य भाव हिंसा ।
प्रमाद और प्राण वियोग दोनों अगर उपस्थित तो - द्रव्य और भाव दोनों हिंसा ।

६४. महा व्रतों की स्थिरता के लिए किस प्रकार की विचारणा सम्यक नहीं?

अ. संसार पर अरति होते धर्म और धार्मिक जन के प्रति बहुमान भाव प्रगट हो, महा पुरुषों के दर्शन से अत्यंत आनंद हो, मैत्री आदि भावनाओं की विचारणा एवं अविनित आदि के प्रति भी द्वेष भाव न प्रगट होने देना ।

ब. साधक को छोटे-बड़े, उच्च-नीच, स्व-पर आदि किसी भी किस्म के भेद भाव बिना जगत के सर्व जीव पर प्रेम भाव तथा हिंसा आदि द्वारा स्व-पर सर्व को दुःख होता है, मेरी तरह अन्य को भी दुःख प्रिय नहीं, और पापानुबंधी पुण्य से परलोक में तो अवश्य दुःख मिलता हैं ।

क. आसक्ति मात्र साधना में अंतराय भूत है, संसार के साथ काया के स्वरूप की विचारणा भी अनिवार्य और आवश्यक है, योग्य स्थान पर उपेक्षा भावना भी निषिद्ध नहीं और हृदय में जगत के सर्व जीव के प्रति हित की भावना होती है ।

ड. भौतिक सुख के साधन अनित्य, अशरण और अविनाशी हैं । सम्यक्त्व, ज्ञान-चारित्र आदि से अधिक ऐसे महात्मा के प्रति हमेशा उछलता अबहुमान भाव नहीं हो, संसार दुःख रूप, दुःख फलक और दुःखानुबंधी है और आवश्यक पदार्थों में अत्यासक्त न होना ।

६५. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य उचित नहीं?

अ. सामान्य से अवग्रह की याचना करने पर भी रोग आदि की अवस्था में भिन्न-भिन्न जगह का भिन्न-भिन्न तरह से उपयोग करना पड़े तो जब-जब जो-जो जगह का जिस-जिस तरह से उपयोग करना हो तब-तब उस-उस तरह से उपयोग करने की मांग करनी चाहिए ।

ब. हमें दुखी करने वाले जीव के ऊपर भी प्रेम भाव रखना चाहिए, इसलिए सकल प्राणी के प्रति आत्मवत दृष्टि खिलानी चाहिए, मैत्री भावना से भावित हृदय वाला साधक ही हिंसा आदि से रुक सकते हैं, मैत्री भावना युक्त साधक जगत के सर्व जीवों को अपने मित्र मानते हैं ।

क. प्राण के वियोग से आत्मा का नाश होता नहीं पर आत्मा को दुःख अवश्य होता है । जब कोई जीव प्राण वध करने का प्रयत्न करें, उसमें सफलता प्राप्त करें तो मात्र भाव हिंसा होती है, जैसे तंदुल मत्स्य विचारता है कि इसकी जगह मैं होता तो एक भी मछली को जिंदा न जाने दूँ आदि ।

ड. जहाँ नपुंसक रहते हो, पशु अधिक प्रमाण में हो, ऐसी जगह का त्याग करना उचित है । घी, दूध, दही आदि प्रणीत भोजन का तथा स्त्री के अंगोपांग दर्शन का त्याग करना चाहिए। सहसा दृष्टि पड़ भी जाए तो वहाँ से अपने आप वापस खिंच लेनी चाहिए और स्त्री क्रिया हमेशा त्यागनी यह हितकारी है ।

६६. गो-अलीक के संदर्भ में नीचे दिए चार दृष्टांतो में से कौन सा दृष्टांत गलत नहीं?

अ. कनुभा ने कतलखाने जाते बकरा भरी गाड़ी को पकड अपने प्रभाव से पुलीस वाले को जैसा-तैसा समझाकर झूठी फरियाद लिखवाकर सभी बकरों को पांजरापोल में ले जाकर नटुभा को सौंप दिए ।

ब. गटु मदारी ने अपना बंदर बूढ़ा हो जाने से खेल बताने असमर्थ मान उसे गाँव के भटु भोले को बेच घर आकर पत्नी को कहा कि मैंने तो उस भटु भोले को जाकर कहा कि ऐसा मजबूत और जवान बंदर तुझे आधी कीमत में देने तैयार हूँ । लेना हो तो ले, नहीं तो बिलकुल हाथ से जाएगा । वह मान गया, दो हजार की राशी मिल गई । बाद घरवाली ने कहा कि सही में आप तो दिल के एकदम साफ हो ।

क. कसाईखाने जाते बकरे को रास्ते में नागदत्त सेठ की दुकान दिखते ही जाति स्मरण ज्ञान हुआ कि यह तो मेरे पुत्र की ही दुकान है' ऐसा जान बचने की आशा से अंदर घुसकर छिपकर बैठ गया । खींचकर बहार निकलने पर भी जब बकरा बाहर नहीं निकलता तब

कसाई ने उस सेठ को कहा कि उसे रख लो और मुझे सिर्फ रू. ५०० दे दो । तब नागदत्त सेठ ने कहा कि 'यह कोई पांजरापोल नहीं, तु इस बकरे को लेकर चलता बन' । तब एकदम जोर से खींचकर धक्का मारकर कसाई ने बकरे को बहार निकला । सेठ ने सोचा 'ओह! बला टली' ।

ड. कंठीबाबु ने अपनी मुरझाई हुई गाय को अकाल ग्रस्त परिस्थिति के कारण संभाल नहीं सकने से लाइलाज बेची । घर के किसी की भी बताए बिना रात ही रात बाहर ही बाहर सौदा निपटाकर 'इसे ही गो-अलीक कहते हैं' ऐसा सोच बंटीबाबु को सारी ही हकीकत से अवगत कर अपनी मजबूरी के कारण ऐसा करना पड़ा हैं ऐसा कहे बिना ही घर आ गया।

६७. निम्नलिखित चार श्रावकों की विचारधारा पढ़कर किसकी विचारधारा धर्म के अनुरूप है, योग्य है?

अ. नंबर १ श्रावक सोचता है कि सभी आराधना प्रेम और वहम दूर करने के लिए ही करनी है । उससे ही अपनी आत्मा पाप से कलंकित होती है और इसी कारण कर्म का भार उठाना पड़ता है । फिर चौरासी के चक्कर में और दुःख दर्द के खप्पर में कूदना पड़ता है । इन सब से बचने नंदमणीयार की तरह तालाब और वस्तुपाल की तरह मस्जिद आदि बंधाना चाहिए। देखो फिर बेड़ा पार हुए बिना नहीं रहेगा ।

ब. नंबर २ श्रावक ऐसा सोचता है कि धर्म का सार राग और द्वेष को दूर करने में ही रहा है। इसलिए बन सकें तो बाबा बन घर में रहकर पृथक होकर जल कमलवत् रहना चाहिए । 'कर्म अच्छे करना और भ्रम तोड़ना' ऐसे भाव जगाने से कर्म बंध टूटता है । जल्दी मोक्ष मिलता है । आत्मा का कल्याण हो तो सब ठीक है ।

क. नंबर ३ श्रावक की परिणति ऐसी है कि इस सुलगते संसार से छूटने के लिए मुख्य साधना तो राग-द्वेष को दूर करने की है, इस बात पर खास भार रखने जैसा है । कर्मकांड कम-अधिक चल सकते हैं । हिंसा, चोरी, झूठ आदि बातें क्रियात्मक हैं, यह सब तो निश्चित रूप से करने जैसी ही है । नियम, व्रत के पालन की अपेक्षा समय की अमूल्यता मात्र और मात्र अभी मुझे जानकर ज्ञान-ध्यान में राग-द्वेष को मुख्यता देनी चाहिए, कारण एक बात निश्चित है कि 'ज्ञानी ने देखा वह होता है' फिर मुझे चिंता कैसी?

ड. नंबर ४ श्रावक को इस प्रकार समझता है कि इस संसार में सर्व जीवों के सभी दु:खों का, दर्द का, पीड़ा का कारण कषाय हैं । मेरे अंदर वे अत्यंत हैं, शुरूआत में उसे सर्वथा कदाचित जला ना सकूँ पर वे जिस से वृद्धि पाते हैं उसे तो पछाड़ दूं । अशुभ-असत् क्रिया पर अगर ब्रेक लगे तो मेरे कषायों पर निश्चित रुप से उसकी असर तो होगी ही । इसलिए

परिग्रह आदि के परिमाण स्वरूप व्रतादि का सेवन अनिवार्य रूप से आवश्यक है ऐसा मुझे लगता है। इसलिए मेरा आडंबर अटकाकर आत्मा की ओर मुड़कर बगैर भाव की बिन-उपयोगी द्रव्य क्रियाएं अब छोड़ दूँ। समाज क्या सोचेगा ऐसा डर निकाल दूँ।

६८. महाव्रतों के स्थिरीकरण के लिए इस लोक के अपाय और परलोक के विपाक की विचारणा स्वरूप निम्नलिखित भावनाओं में से कौन सी भावना अनुचित नहीं हो सकती?

अ. असत्यवादी को अवसर पे सहायता का अभाव, धन प्राप्त करने कष्ट करना पड़े, बैर का अनुबंध बिखर पड़े, अब्रह्म के कारण अपकीर्ति तथा चोरी करने वाला जीव सदा टेन्शन में और अशाता में रहे आदि।

ब. प्रचूर प्रमाण में पैसा प्राप्त हो तो भी प्रसन्नता-पवित्रता को गिरने न दे, वध-बंध आदि क्लेश पल पल मिले, चोरी के कारण सुखी सो भी नहीं पाता, संतोष से १०० गाउ की दूरी हो, और हमेशा भय में जीना पड़े आदि।

क. हिंसा आदि द्वारा परलोक में पराधीनता, पुण्य की निर्बलता, पीड़ा की परंपरा प्राप्त हो, इस लोक में अनिच्छा से भी अपमान का आदर करना पड़े, सज्जन-साधु का सत्संग स्वप्न में भी न मिले, अप्रियता-उद्विग्नता-अनादेयता आदि कदम-कदम पर प्राप्त हो आदि।

ड. हिंसा आदि पापों से अनर्थ की परंपरा इस भव में ही खड़ी हो और परभव में पाप का प्रचूर विपाक भुलाया जाए, सर्व प्रकार के कष्ट-दु:खों के बीच भी चिंतित न बने, समभाव को सदा साथ रखे जिससे महा व्रत शीघ्र स्वात्मा में स्थिर हो आदि।

६९. नीचे अलग-अलग चार मुनिवरों ने हिंसा के प्रकार समझाए हैं, उनमें किस मुनिवर द्वारा उत्सूत्र भाषण हुआ है वह स्पष्ट करें।

अ. प्रथम मुनिवर बताते हैं कि हिंसा स्थावर और सूक्ष्म, सापेक्ष और निरपेक्ष, अपराधी और निरपराधी, त्रस और स्थूल आदि भेद वाली है। प्राण वियोग यह व्यवहार हिंसा-मुख्य हिंसा है और प्रमाद यह भाव हिंसा है, आदि।

ब. द्वितीय मुनिवर बताते हैं कि आत्म गुणों का घात यह भाव हिंसा और द्रव्य प्राणों का घात यह द्रव्य हिंसा कहते हैं, तथा आरंभ जन्य, संकल्प जन्य, त्रस और सूक्ष्म आदि हिंसा के अनेक प्रकार हैं।

क. तृतीय मुनिवर बताते हैं कि अन्य को राग-द्वेष कराने में निमित्त बनना यह परभाव हिंसा और व्यक्ति स्वयं राग-द्वेष करें इसे स्वभाव हिंसा कहते हैं, हिंसा सापेक्ष और निरपेक्ष आदि अनेक भेद वाली है।

ड. चतुर्थ मुनिवर बताते हैं कि जहाँ प्राण वियोग नहीं और जीव रक्षा का परिणाम भी नहीं वहाँ मात्र भाव हिंसा घटित होती है और जहाँ प्रमाद और प्राण व्यपरोपण दोनों हैं वहाँ द्रव्य और भाव दोनों हिंसा जानना, तथा प्राण व्यपरोपण को द्रव्य हिंसा कहते हैं इत्यादि।

७०. नीचे महाव्रतों की भावना चार विकल्पों में दी है । उनमें कौन सा विकल्प गलत है?

अ. बारंबार अवग्रह याचना, अनुज्ञा युक्त पान भोजन, राग संयुक्त स्त्री कथा वर्जन, लोभ प्रत्याख्यान, मनोगुप्ति

ब. एषणा समिति, अनुवीचि भाषण, समान धार्मिक अवग्रह याचना, मनोहर इन्द्रिय अवलोकन वर्जन, अमनोज्ञ स्पर्श अद्वेष, अमनोज्ञ शब्द अद्वेष

क. आलोकित पान भोजन, पूर्व क्रीडा स्मरण वर्जन, अमनोज्ञ गंध अद्वेष, अनुवीचि भाषण, एषणा समिति, मनोज्ञ रस अद्वेष, मनोगुप्ति

ड. ईर्यासमिति, अनुवीचि अवग्रह याचना, मनोज्ञ रूप में राग का अभाव, स्त्री-पशु संस्तव वसति वर्जन, एषणा समिति, अवग्रह अवधारण

७१. अ, ब, क, ड इन चार विभाग में से नीचे किस विभाग के सूत्र अशुद्ध नहीं?

अ. मैत्री-प्रमोद-कारूण्य-माध्यस्थ्यानि सत्त्वगुणाधिक-क्लिश्यमाना-ऽविनयेषु।।श-ठ।।
हिंसा-नृतऽस्तेया-ऽब्रह्म-परिग्रहेभ्यो-विरतिर्व्रतम्।।श-न्य।।
दुःखमेव वा।।७-५।।
प्रमत्तयोगात् प्राणव्यापारोपणं हिंसा।।७-८।।

ब. देश-र्सवतोऽणु-महती।।७-२।।
तत्स्थैर्यार्थं भावना पञ्च पञ्च।।७-३।।
हिंसादिष्विहामुत्रा चापायवद्यदर्शनम्।।७-४।।
दुःखमेव वा।।७-५।।

क. तत्स्थैर्यार्थं भावना: पञ्च पञ्च।।७-३।।
मैत्री-प्रमोद-कारूण्य-माध्यस्थ्यानि सत्त्वगुणाधिक-क्लिश्यमाना-ऽविनयेषु।।७-४।।
हिंसा-ऽनृतस्तेया-ऽब्रह्म-परिग्रहेभ्यो-विरतिव्रर्तम्।।७-१।।
प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा।।७-८।।

ड. जगत्कायस्वभावौ च संवेगवैराग्यार्थम्।।७-७।।
दुःख मेव वा।।७-५।। मैं
त्री-प्रमोद-कारूण्य-माध्यस्थ्यानि सत्त्वगुणाधिक-क्लिश्यमाना-ऽविनयेषु।।७-६।।
प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा।।७-८।।

७२. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य अनुचित नहीं?

अ. पांच ईन्द्रिय, मन बल, वचन बल, योग बल यह तीन बल, श्वासोच्छवास और आयुष्य, ऐसे दस प्रकार के द्रव्य प्राण हैं । इन प्राणों का वियोग करने को हिंसा कहते हैं ।

ब. हिंसा, अनृत, अस्तेय, अब्रह्म, और परिग्रह यह पांच पाप हैं । उन्हें जानकर, श्रद्धा पूर्वक मन, वचन और काया द्वारा इन पांच पापों से विराम पाना उसे व्रत कहते हैं ।

क. महा व्रतों की स्थिरता के लिए सभी जीव पर मैत्री भाव, गुणाधिक प्राणीओं के प्रति प्रमोद भाव, दु:खी जीव पर करूणा भाव और विनय रहित जीव के प्रति उपेक्षा भाव खिलाना चाहिए ।

ड. आविर्भाव में रहे गुणों को आच्छादित करने प्रमोद भावना यह अमोघ उपाय है । इसके द्वारा साधक का हृदय ईर्ष्या, असूया या मात्सर्य रूप अग्नि से सुलगता है ।

७३. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य योग्य नहीं?

अ. स्थूल मृषावाद विरमण व्रत में पूर्व में अमानत रूप रखे ज़ेवर आदि लेने आए तब 'आप क्या बात कर रहे हो, मैं तो तुम्हें पहचानता भी नहीं - अरे ! आपने किसी अन्य को दिए होंगे' इत्यादि कहने पूर्वक अमानत का अस्वीकार आदि असत्य का त्याग किया जाता है।

ब. स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत में कोई व्यक्ति स्त्री के साथ असभ्य वर्तन करें, घर में घूस गए चोर को शिक्षा देनी पड़े ईत्यादि प्रसंग पर अपराधी को दंड देने में स्थूल हिंसा का त्याग नहीं होता ।

क. स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत में अपराध रहित होने पर भी पुत्री को, काम करते नौकर आदि को या खेती में जुड़े बैल को मारने के अवसर पर सापेक्ष भाव बिना मारे, निर्दयता बिना न मारे, आदि प्रवृत्ति करें ।

ड. स्थूल परिग्रह विरमण व्रत में नगद राशी, घर, ओफिस, शेर आदि कुछ प्रमाण से अधिक का त्याग तथा इस व्रत के पालन से जीवन में टेन्शन टिक सकता ही नहीं, स्वस्थता, संतोष, शान्ति इत्यादि सहज प्राप्त होती है ।

७४. निम्नलिखित विकल्पों में से कौन सा विकल्प असत्य नहीं?

अ. दो प्रकार के जीवों में से स्थावर जीवों को अभयदान देने पूर्वक श्रावक त्रस जीवों की संकल्पपूर्वक निरपेक्ष हिंसा का त्याग करें और अपराधी को निरपेक्ष रूप से मारने का अवसर उपस्थित हो तो दया रखे ।

ब. अणु व्रत धारी श्रावक अपराधी जीव को सापेक्ष रूप से अगर मारे तब संकल्प जन्य हिंसा का आसानी से त्याग हो सकता है और इससे अणु व्रत में रुपए में एक आना = सवा छ नए पैसे जितना अहिंसा का पालन हो जाता है ।

क. स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत में श्रावक पर अगर कोई हिंसक प्राणी हमला करें या घर में जो चोर घुस जाए तो ऐसे जीव को भी अनजाने में भी मारने की प्रवृत्ति नहीं करता और जानबूझकर संकल्पपूर्वक कभी मार ही नहीं सकता । इस तरह से अहिंसा का पालन हो जाता है ।

ड. श्रावक को स्थावर जीवों की हिंसा का वर्जन असंभव होने से वे निरपराधी ऐसे त्रस जीवों को संकल्प पूर्वक मारते नहीं और उसमें भी निरपेक्ष हिंसा का सर्वथा त्याग करते हैं, जिनके द्वारा उनके जीवन में सवा छ नए पैसे जितनी अहिंसा का पालन हो सकता है ।

७५. निम्नलिखित चारों भावना किस विकल्प में स्पष्ट तरह से समझाई गई हैं?

अ. करूणा भावना दो प्रकार से होती है १. द्रव्य और २. भाव । संसार से दु:खी जीवों को देखकर दिल में उत्पन्न होती दया यह द्रव्य करूणा है और गंवार प्राणी को देखते हृदय में उत्पन्न होती करूणा यह भाव करूणा है ।

ब. जगत के सर्व जीवों के प्रति हृदय में स्नेह के परिणाम को मैत्री कहते हैं (षोडशक) । विश्व के सभी प्राणी के प्रति स्वतुल्य दृष्टि खिलाने से और मात्र उपकारी का ही उपकार न भूलने से मैत्री भावना स्वयंभू प्रगट होती है ।

क. उपदेश के जो लायक नहीं ऐसे जीवों के प्रति समभाव धारण कर उनकी घोर उपेक्षा करने द्वारा, उन्हें उपदेश न देना इसे माध्यस्थ भावना कहते हैं । इससे अविनीत पर भी अद्वेष प्रगट नहीं होता ।

ड. जो गुण से अधिक हों अर्थात् सद्गुण संपन्न ऐसे सज्जन को देखकर या फिर उनके गुणों के श्रवण से हृदय में आनंद न उभरे अथवा अभ्युत्थान, वंदन आदि करने का मन न हो उनमें अभी प्रमोद भावना प्रगट नहीं हुई ऐसा कहते हैं ।

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित **तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन** घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम			
कार्यपत्रक-१३	अध्याय-७	सूत्र ९-१७	जमा करने की अंतिम तारीख ता. १५/०८/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक । (कुल ३० x ½ = १५ अंक)

१ साधक अगर .... मंजूरी के बिना कोई भी वस्तु ग्रहण करें तो तीसरे महाव्रत में स्खलना होती है ।

अ. स्वामी आदि चारों की ब. गुरु की क. तीर्थंकर की ड. स्वामी की

२ व्रती की व्याख्या में व्रती .... है । निःशल्यता .... है ।

अ. अंगी, अंग ब. अंगी, अंग रहित क. अंग रहित, अंगी ड. अंग सहित, अंगी

३ पौषधोपवास व्रत में .... त्याग के अलावा तीन प्रकार का त्याग सर्वथा करने में आता है ।

अ. आहार ब. सावध कर्म क. शरीर सत्कार ड. ब्रह्मचर्य

४ मृत्यु समीप हो तब व्रती जीवन तक आहार का त्याग कर .... व्रत का पालन करते हैं।

अ. उपवास ब. संलेखना क. पौषधोपवास ड. सामायिक

५ आज के रेडीयो, टीवी, होटल आदि व्यसन आत्मा को .... में ले जाते हैं ।

अ. स्वर्ग ब. दुर्गति क. चारों गति ड. शुभ अध्यवसाय

६ न देने की बुद्धि से सूझता होने पर भी असूझता कहना यह .... असत्य है ।

अ. भूतनिह्नव ब. अर्थांतर क. सद्भाव प्रतिषेध ड. अभूतोद्भावन

७ साधु के लिए तैयार किये आहार-पाणी अगर कोई साध्वी व्होरे तो .... लगे ।

अ. स्वामी अदत्त ब. जीव अदत्त क. तीर्थंकर अदत्त ड. गुरु अदत्त

८ निर्दोष रूप से आहार-पानी वापरने के पहले .... अनुज्ञा अवश्य लेनी चाहिए ।

अ. जीव की ब. स्वामी की क. तीर्थंकर की ड. गुरु की

९ अन्य से सुनी बात अन्य को थोड़ी बढ़ाकर कहना .... असत्य है ।

अ. अर्थांतर ब. भूतनिह्नव क. सद्भाव प्रतिषेध ड. गर्हा

१० .... अनर्थ दंड का भेद नहीं ।

अ. प्रमादाचरण ब. हिंसकार्पण क. अन्यद्रष्टि ड. अपध्यान

११ व्रतों को स्वीकारने के बाद उनमें .... न लगे उसका ध्यान रखना चाहिए ।

अ. पुण्य ब. अप्रमत्तता क. अतिचार ड. निर्जरा

१२ सुसाधु को संयम में जरूरी आहार, पानी, वस्त्र, पात्र आदि भक्ति से प्रदान करना .... व्रत है।

अ. देशावगासिक ब. अतिथि संविभाग क. शरीर सत्कार ड. पौषधोपवास

१३ हिंसा कम हों और लोभ मर्यादित बनें, यह दो फल .... व्रत से प्राप्त होते हैं ।

अ. अनर्थदंडविरति ब. दिग्विरति क. अविरति ड. अतिथि संविभाग

१४ मैथुन .... है ।

अ. अब्रह्म ब. जोड़ी क. आत्मा में रमणता ड. मात्र स्पर्श सुख

१५ राग-द्वेष पूर्वक शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्श का सेवन यह .... विरमण व्रत में दोष रूप हैं ।

अ. मृषा ब. मैथुन क. प्राणातिपात ड. परिग्रह

१६ .... दोष गुप्त रहकर आत्मा में विकार पैदा करते हैं ।

अ. क्रोध ब. मान क. शल्य ड. माया

१७ कामली रखने से काल या बरसात के समय में .... जीव की रक्षा हो सकती है ।

अ. अपकाय ब. त्रसकाय क. स्थावर काय ड. वायुकाय

१८ साधुओं को विधिपूर्वक .... वस्तु का दान करना चाहिए ।

अ. तीथी पे मात्र ब. मात्र दरवाजे पर क. न्यायगत ड. मात्र काल के योग्य

१९ नियम में छूट रखी हुई दिशा के प्रमाण का संक्षेप करना .... है ।

अ. दिग्विरति व्रत ब. देशावगासिक व्रत क. परिग्रह परिमाण व्रत ड. संलेखना व्रत

२० पौषध व्रत में .... का सर्वथा या शक्ति के अभाव में देश से त्याग करने में आता हैं ।

अ. अब्रह्म ब. आहार क. शरीर सत्कार ड. सावद्य कर्म

२१ क्रोधादि चारों कषायों में से .... को ही शल्य रूप में पहचाना है ।

अ. क्रोध ब. मान क. माया ड. लोभ

२२ .... शल्य रूप नहीं है ।

अ. माया ब. निदान क. मिथ्यात्व ड. लोभ

२३ रमेश अपना रूमाल चार बार इस्तेमाल कर फैंक सेता है तो उस रूमाल का उपयोग ....कहा जाए।

अ. उपभोग ब. परिभोग क. उपभोग-परिभोग ड. भोग

२४ .... व्रत से शरीर पर का ममत्व भाव अत्यंत अधिक प्रमाण में कम होता है ।

अ. सामायिक ब. अतिथि संविभाग

क. पौषधोपवास ड. उपभोग-परिभोग परिमाण

२५ .... वर्तमान में कौन सी वस्तु सुलभ है, कौन सी वस्तु दुर्लभ है, यह विचार करके वहोराना उसे .... से विचार कहा गया है ।

अ. देश ब. काल क. द्रव्य ड. भाव

२६ .... शिक्षा व्रत नहीं है ।

अ. देशविरति ब. दिगविरति क. सामायिक ड. अतिथिसंविभाग

२७ .... गुणव्रत नहीं है ।

अ. दिगविरति ब. पौषधोपवास

क. उपभोग-परिभोग परिमाण ड. अनर्थदंड विरमण

२८ वस्तु अचित्त हो तो .... अदत्त नहीं लगता ।

अ. स्वामी ब. जीव क. तीर्थंकर ड. गुरु

२९ आज्ञा लिए बिना वस्तु ग्रहण करने से .... अदत्त लग सकता है ।

अ. स्वामी ब. तीर्थंकर क. गुरु ड. स्वामी, जीव और तीर्थंकर तीनों

३० सुनने में अच्छा न लगे ऐसे वचन उच्चारना यह .... असत्य है ।

अ. भूतनिह्नव ब. पापप्रवर्तिका गर्हा क. अप्रिया गर्हा ड. आक्रोशवती गर्हा

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१ नीचेना वाक्यों में कौन सा वाक्य सही है?

अ हिंसा का कारण बनता सत्य वचन भी असत्य होता है ।

ब मैथुन शब्द द्वारा मिथुन की क्रिया ऐसा शब्दार्थ सूचित है ।

क केवल जड वस्तु पे आसक्ति यही मूर्छा है ।

ड अणुव्रतों के पालन के लिए घर = संसार का त्याग आवश्यक है ।

३२ नीचे के वाक्यों में कौन सा वाक्य सही है?

अ चार प्रकार की विकथा करनी यह पापकर्मोपदेश अनर्थदंड हैं ।

ब जुआ, मांस, मदिरा, वेश्यागमन, शिकार, चोरी, परस्त्रीगमन यह सात व्यासन आत्मा को दुर्गति में घसीट जाते हैं ।

क बार बार वस्तु का इस्तेमाल और भोग करना वह उपभोग ।

ड जिस वस्तु को शरीर के अंदर भोग सकें वह परिभोग ।

३३ भूत निह्नव असत्य यानी?

अ वस्तु का जो स्वरूप हो उसमें बदलाव करना वह भूत निह्नव असत्य ।

ब वस्तु का जो स्वरूप हो उस स्वरूप का निषेध अथवा अपलाप करना वह भूत निह्नव असत्य।

क वस्तु जिस स्वरूप में न हो उस रूप में प्रतिपादन करना वह भूत निह्नव असत्य ।

ड जो वस्तु जैसी नहीं है वैसी कहना वह भूत निह्नव असत्य ।

३४ अभूतोद्भावन असत्य यानी?

अ वस्तु जिस स्वरूप में न हो उस रूप में प्रतिपादन करना वह अभूतोद्भावन असत्य ।

ब वस्तु के मालिक की मंजूरी लिए बिना उस वस्तु को ग्रहण करना वह अभूतोद्भावन असत्य

क वस्तु के स्वरूप का अपलाप कर के वह अभूतोद्भावन असत्य ।

ड जो वस्तु जैसी नहीं हो वैसी कहना वह अभूतोद्भावन असत्य ।

३५ गर्हा असत्य यानी?

अ असत्य बोलते अन्य जीव की दु:ख रूप हिंसा हो ऐसा वचन बोलना वह गर्हा असत्य है।

ब अन्य को हिंसात्मक वचन कहना वह गर्हा असत्य ।

क हिंसा हो उस उद्देश्य से असत्य वचन का प्रयोग करना वह गर्हा असत्य ।

ड सत्य बोलने पर भी अन्य जीव की दु:ख रूप हिंसा हो ऐसा वचन गर्हा असत्य है ।

३६ स्वामी अदत्त यानी?

अ वस्तु के मालिक की मंजूरी लेने के बाद वस्तु को ग्रहण न करना वह स्वामी अदत्त ।

ब वस्तु के मालिक की मंजूरी लेने के बाद वस्तु को ग्रहण करना वह स्वामी अदत्त ।

क वस्तु के मालिक की मंजूरी के बिना उस वस्तु को ग्रहण करना वह स्वामी अदत्त ।

ड मंजूरी लिए बिना किसी के घर में प्रवेश करना वह स्वामी अदत्त ।

३७ जीव अदत्त यानी?

अ स्वामी की मंजूरी होने पर भी सचित्त वस्तु ग्रहण करना वह जीव अदत्त ।

ब स्वामी की मंजूरी लेने के बाद ही जो सचित्त वस्तु ग्रहण करें, तो वह जीव अदत्त, मंजूरी लिए बिना ग्रहण करें तो जीव अदत्त होता नहीं ।

क तीर्थंकर की आज्ञा लिए बिना सचित्त वस्तु ग्रहण करना वह जीव अदत्त, तीर्थंकर की आज्ञा मिली हो तो नहीं ।

ड गुरू की आज्ञा के विरुद्ध कोई भी वस्तु ग्रहण करना वह जीव अदत्त, गुरु की आज्ञा मिली हो तो नहीं ।

३८ दिग्विरति व्रत यानी?

अ दसों दिशाओं में गमन का परिमाण करना यानी कि मर्यादा बांधना वह दिग्विरति व्रत ।

ब चार दिशाओं में गमन का परिमाण करना यानी कि मर्यादा बांधना वह दिग्विरति व्रत, चार विदिशा में नहीं ।

क दसों दिशाओं में कभी भी गमन का परिमाण न करना यानी कि मर्यादा न बांधना वह दिग्विरति व्रत ।

ड चार दिशा और चार विदिशाओं में गमन का परिमाण करना यानी कि मर्यादा बांधना वह दिग्विरति व्रत ।

३९ देशविरति व्रत यानी?

अ दिग्विरति व्रत में दिशा में की गई मर्यादा का कुछ अंश से पालन करना वह देशविरति व्रत ।

ब दिग्विरति व्रत में मर्यादा की गई दिशा में हर रोज यथायोग्य कुछ भाग का संक्षेप करना वह देशविरति व्रत ।

क विदेश में कभी भी न जाना वह देशविरति व्रत ।

ड विदेश में जाकर कभी भी स्वदेश न लौटने का संकल्प करना वह देशविरति व्रत ।

४० सामायिक व्रत यानी?

अ सदा काल के लिए मन, वचन और काया से सावद्य क्रिया करने और कराने का त्याग वह सामायिक व्रत ।

ब दो घड़ी तक मन और वचन से सावद्य क्रिया के करने और कराने का त्याग वह सामायिक व्रत ।

क दो घडी तक मन, वचन और काया से सावद्य क्रिया के करने और कराने का त्याग वह सामायिक व्रत ।

ड दो घडी तक मन, वचन और काया से सावद्य क्रिया के करना और कराना वह सामायिक व्रत ।

४१ पौषधोपवास व्रत यानी?

अ संपूर्ण दिवस या रात या उभय समय तक देश से अथवा सर्व से आहार का और सर्व से शरीर, अब्रह्म और सावद्य कर्म का त्याग यह पौषधोपवास व्रत ।

ब संपूर्ण दिवस या रात अथवा उभय समय तक देश से आहार, शरीर, अब्रह्म और सावद्य कर्म का त्याग यह पौषधोपवास व्रत ।

क संपूर्ण दिवस या रात अथवा उभय समय तक सर्व से आहार और देश से शरीर, अब्रह्म और सावद्य कर्म का त्याग यह पौषधोपवास व्रत ।

ड संपूर्ण दिवस या रात अथवा उभय समय तक आहार और देश से शरीर, अब्रह्म और सावद्य कर्म ओछा करवा यह पौषधोपवास व्रत ।

४२ गुणव्रत यानी?

अ पांच महाव्रतों के गुणों में वृद्धि / लाभ करें ऐसे व्रत यानी गुणव्रत ।

ब पांच अणुव्रतों के गुणों में वृद्धि / लाभ करें ऐसे व्रत यानी गुणव्रत ।

क पांच अणुव्रत और चार शिक्षा व्रत के गुणों में वृद्धि / लाभ करें ऐसे व्रत यानी गुणव्रत ।

ड अन्य के गुण के बखान करना वह गुणव्रत ।

४३ शिक्षाव्रत यानी?

अ जिन व्रतों के पालन से संयम धर्म का अभ्यास हो उन व्रतों को शिक्षाव्रत कहते हैं ।

ब जिन व्रतों के पालन से संयम धर्म का अभ्यास न हो उन व्रतों को शिक्षाव्रत कहते हैं ।

क जिन व्रतों के पालन से अधर्म का त्याग हो उन व्रतों को शिक्षाव्रत कहते हैं ।

ड जिन व्रतों के पालन करने में आत्मा को दंड दिया जाए उन व्रतों को शिक्षाव्रत कहते हैं।

४४ ब्रह्म यानी?

अ अहिंसादि आध्यात्मिक गुणों की वृद्धि हो ऐसे व्रत के त्याग को ब्रह्म कहते हैं ।

ब जिनके पालन से अहिंसादि आध्यात्मिक गुण क्रम से घटते जाए वह ब्रह्म ।

क जिनके पालन से अहिंसादि आध्यात्मिक गुणों की वृद्धि हो वह ब्रह्म

ड ईश्वर की परिकल्पना यानी ब्रह्म ।

४५ उपभोग परिभोग परिमाण व्रत यानी?

अ अन्य जीवों की रक्षा हेतु आहार आदि एक बार इस्तेमाल की और वस्त्र आदि बार बार इस्तेमाल की वस्तुओं के मर्यादित उपयोग का नियम यह उपभोग परिभोग परिमाण व्रत।

ब अन्य जीवों की रक्षा हेतु आहार आदि का एक बार त्याग और वस्त्र आदि के सदा उपयोग का नियम यह उपभोग परिभोग परिमाण व्रत ।

क अन्य जीवों की रक्षा हेतु आहार आदि का एक बार त्याग और वस्त्र आदि का सदा काल त्याग यह उपभोग परिभोग परिमाण व्रत ।

ड अन्य जीवों की रक्षा हेतु आहार, वस्त्र आदि का सर्वथा त्याग यह उपभोग परिभोग परिमाण व्रत ।

४६ अतिथि संविभागव्रत यानी?

अ वीतराग प्रणित चारित्र धर्म की आराधना करते साधुओं को उनके चारित्र धर्म के पालन हेतु ज़रूरी आहार, पानी, वस्त्र आदि से वंचित रखना वह अतिथि संविभागव्रत ।

ब वीतराग प्रणित चारित्र धर्म की आराधना करते साधुओं को उनके चारित्र धर्म के पालन हेतु ज़रूरी आहार, पानी, वस्त्र आदि भक्ति से प्रदान करना वह अतिथि संविभागव्रत ।

क वीतराग प्रणित चारित्र धर्म की विराधना करते साधुओं को आहार, पानी, वस्त्र आदि न प्रदान करना वह अतिथि संविभागव्रत ।

ड चारित्र धर्म की आराधना करते साधुओं को उनके चारित्र धर्म के पालन हेतु ज़रूरी न हो तो भी आहार, पानी, वस्त्र आदि भक्ति से प्रदान करना वह अतिथि संविभागव्रत ।

४७ संलेखना यानी?

अ साथ बैठकर लेखन की क्रिया करना वह संलेखना ।

ब गुरु आदि किसी की भी मंजूरी बिना आर्त और रौद्र ध्यान त्याग समाधि पूर्वक आमरण चारों प्रकार के आहार का त्याग वह संलेखना ।

क गुरु आदि की मंजूरी लेकर जीवन के अंतिम चरण में आर्त और रौद्र ध्यान त्याग समाधि पूर्वक आमरण चारों प्रकार के आहार के त्याग द्वारा कषायों को दुर्बल करता तप वह संलेखना ।

ड संयम, तप आदि की वृद्धि हेतु पुस्तकों का लेखन करना वह संलेखना ।

४८ चोरी यानी?

अ स्वामी आदि की मंजूरी के बिना उनकी नहीं दी गई वस्तु को ग्रहण करना वह चोरी ।

ब स्वामी आदि ने दी हुई वस्तु ग्रहण न करना वह चोरी ।

क स्वामी ने दी वस्तु ग्रहण कर अन्य को दे देना वह चोरी ।

ड स्वामी आदि ने दी वस्तु ग्रहण कर उसे उपयोग में न लेना वह चोरी ।

४९ अगारी व्रती यानी?

अ घर अथवा संसार का त्याग किए बिना महा व्रत, गुण व्रत और शिक्षा व्रतों का पालन करते श्रावक को अगारी व्रती कहते हैं ।

ब घर अथवा संसार का त्याग कर एकांतवास में रहकर अणु व्रत, गुण व्रत और शिक्षा व्रतों का पालन करते श्रावक को अगारी व्रती कहते हैं ।

क घर अथवा संसार का त्याग किए बिना अणु व्रत, गुण व्रत और शिक्षा व्रतों का पालन करते श्रावक को अगारी व्रती कहते हैं ।

ड घर अथवा संसार का त्याग कर महा व्रतों के पालन करते साधु को अगारी व्रती कहते हैं।

५० अनगार व्रती यानी?

अ घर अथवा संसार का त्याग करने पूर्वक अणु व्रतों का पालन करते साधु को अनगार व्रती कहते हैं ।

ब घर अथवा संसार का त्याग करने पूर्वक महा व्रतों का पालन करते साधु को अनगार व्रती कहते हैं ।

क घर अथवा संसार का त्याग किए बिना महा व्रतों का पालन करते साधु को अनगार व्रती कहते हैं ।

ड ग्रहस्थावास में रहे साधु को अनगार व्रती कहते हैं ।

५१ अर्थदंड यानी?

अ जीवन के निर्वाह के लिए प्रयोजन पूर्वक पापसेवन करना वह अर्थदंड ।

ब जीवन के निर्वाह के लिए प्रयोजन बिना किसी भी प्रकार पाप सेवन करना वह अर्थदंड।

क जीवन के निर्वाह के लिए जरूरी न हो तो भी प्रयोजन पूर्वक पाप सेवन करना वह अर्थदंड।

ड जीवन के निर्वाह लिए जरूरी न हो तो भी प्रयोजन बिना किसी भी प्रकार पाप सेवन करना वह अर्थदंड ।

५२ हिंसकार्पण अनर्थ दंड यानी?

अ अन्य को हिंसात्मक वस्तु देना वह हिंसकार्पण अनर्थ दंड ।

ब अन्य की हिंसा हो ऐसी सलाह देना वह हिंसकार्पण अनर्थ दंड ।

क अन्य की हिंसा किसी के पास कराना वह हिंसकार्पण अनर्थ दंड ।

ड किसी की हिंसा हो तो अच्छा - ऐसा विचार करना वह हिंसकार्पण अनर्थ दंड ।

५३ अपध्यान अनर्थ दंड यानी?

अ अन्य के प्राण की हिंसा होनी चाहिए ऐसे विचार मात्र करना वह अपध्यान अनर्थ दंड ।

ब अन्य के प्राण की हिंसा प्रयोजन पूर्वक करना वह अपध्यान अनर्थ दंड ।

क अन्य की हिंसा किसी के पास कराना वह अपध्यान अनर्थ दंड ।

ड जीवन के निर्वाह के लिए प्रयोजन पूर्वक पाप सेवन करना वह अपध्यान अनर्थ दंड ।

५४ नीचे दिए अतिचार के दृष्टान्त के कोष्ठक के जोड़े जोड़ते विकल्पों में सही विकल्प कौन सा है?

१	अर्थांतर असत्य	A घोड़े को गाय कहना
२	गर्हा असत्य	B चरित्रवान स्त्री को वेश्या कहना
३	जीव अदत्त	C साधु द्वारा सचित्त वस्तु का ग्रहण
४	स्वामी अदत्त	D मालिक की मंजूरी बिना वस्तु का इस्तेमाल

अ. 1 - A 2 - B 3 - B 4 - C ब. 1 - B 2 - A 3 - B 4 - C

क. 1 - A 2 - B 3 - B 4 - C ड. 1 - C 2 - A 3 - B 4 - B

५५ किस व्रत का क्या लाभ होता है उनमें नीचे दिए कोष्ठक के जोड़े जोड़ते विकल्पों में सही विकल्प कौन सा है?

१	दिग्विरति व्रत	A दिग्विरति में जो हदें छूट गई हो उनका संकोच होता है
२	देश विरति व्रत	B मोक्ष सुख रूप समता का अनुभव
३	अनर्थदंड विरति व्रत	C तामस और राजस वृत्ति दूर हो, सात्विक वृत्ति प्रगट हो
४	सामायिक व्रत	D लोभ मर्यादित बने

अ. 1 - A 2 - B 3 - B 4 - C ब. 1 - B 2 - A 3 - B 4 - C

क. 1 - A 2 - B 3 - B 4 - C ड. 1 - C 2 - A 3 - B 4 - B

५६ किस व्रत का क्या लाभ होता है उनमें नीचे दिए कोष्ठक के जोड़े जोड़ते विकल्पों में सही विकल्प कौन सा है?

१ पौषधोपवास व्रत	A जीवन में सादगी और त्याग आता है
२ उपभोग परिभोग परिमाण व्रत	B साधु धर्म का अभ्यास, शरीर की ममता घटे
३ अतिथि संविभाग व्रत	C मोक्षमार्ग की अति सुंदर आराधना
४ संलेखना व्रत	D साधु के प्रति बहुमान जगे

अ. 1 - A 2 - B 3 - B 4 - C ब. 1 - B 2 - A 3 - C 4 - B

क. 1 - A 2 - B 3 - B 4 - C ड. 1 - C 2 - A 3 - B 4 - B

५७ नीचे दिए साधु द्वारा परिग्रह संबंधित वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ साधुओं को अल्प भी परिग्रह न होने पर भी वस्त्र आदि ग्रहण करना अनिवार्य हैं ।

ब साधु द्वारा वस्त्र आदि जरूरी उपकरण जो ग्रहण न किए जाए तो अनेक दोष लगते हैं ।

क कामली ग्रहण न करने में आए तो कामली काल दौरान अनेक अपकाय जीवों की विराधना होती है ।

ड साधुओं को अल्प भी परिग्रह न होना चाहिए इसलिए उन्हें किसी भी वस्तु का स्वीकार नहीं करना चाहिए ।

५८ शल्य यानी?

अ जिनके कारण आत्मा अस्वस्थ बने, आत्मा में विकार उत्पन्न हो उन्हें शल्य कहते हैं ।

ब पग में कांटा लगने से आत्मा को जो पीड़ा हो उसे शल्य कहते हैं ।

क जो कांटा शरीर में से बहार निकले ही नहीं उसे शल्य कहते हैं ।

ड जिनके कारण आत्मा स्वस्थ बने, आत्मा में विकार उत्पन्न न हो उसे शल्य कहते हैं ।

५९ सामायिक विषयक नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य सही है?

अ सामायिक व्रत में एक दिवस, एक रात अथवा एक दिवस/रात उभय समय तक करना और कराने द्वारा मन, वचन और काया के सावद्य योगों का त्याग करने में आता हैं ।

ब सामायिक में सावद्य योगो के त्याग से जीव आत्मा के मूल स्वभाव यानी कि समभाव में आता हैं ।

क सामायिक में पापव्यवहार रूपी सावद्य योगों का त्याग करने से शांति का अनुभव नहीं होता।

ड सामायिक यानी निर्वद्य योगो का त्याग ।

६० गुण व्रत और शिक्षा व्रत संबंधित वाक्यों में कौन सा वाक्य अनुचित है?

अ प्रस्तुत ग्रंथ में गुण और शिक्षा व्रतों का क्रम दिग्विरति, देशावगासिक, अनर्थदंड, सामायिक, पौषधोपवास, उपभोगपरीभोग परिमाण, अतिथि संविभाग व्रत इस तरह दिया गया हैं ।

ब आगम ग्रंथो में क्रम प्रथम तीन गुण व्रत और बाद चार शिक्षा व्रत ऐसे दिग्विरति, उपभोग-परीभोग परिमाण, अनर्थदंड, सामायिक, देश विरति (देशावगासिक), पौषधोपवास, अतिथि संविभाग व्रत इस तरह दिया है ।

क आगम ग्रंथ में देशावगासिक व्रत में दिग्विरति व्रत के उपलक्षण से सर्व व्रतों का सन्क्षेप करने का विधान हैं ।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक । (कुल १५ x २ = ३० अंक)

६१ असत्य के विषय में निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं है?

अ साधु ने रास्ते में हिरन जाते देखा, सामने से आते शिकारी ने साधु को पूछा कि हिरन कहाँ गया? साधु ने जिस दिशा में जाते देखा था उससे विपरीत दिशा बताई ।

ब आप के बेटे का मोबाइल राम ने लिया नहीं, तो भी बेटे ने सब को ऐसा ही कहा कि राम ने मेरा मोबाइल लिया है ।

क आप के गोडाउन में दो वर्ष पुराना माल पड़ा था तब एक ग्राहक माल खरीदने आया तो आपने कहा कि यह फ्रेश (नया) माल ही है ।

ड रास्ते में चालते आँख वाले पागल को देख आपने कहा कि यह तो मूर्ख और काना दिखता है ।

६२ तत्त्वार्थसूत्र में जो मैथुन की व्याख्या बताई है उस अर्थ के अनुसार नीचे दिए वाक्यों में से कौन सा वाक्य विषम नहीं?

अ मैथुन के पालन से अहिंसादि आध्यात्मिक गुणों का नाश नहीं होता ।

ब पुरूष या स्त्री को स्वहस्तादि संयोग से होने वाली काम चेष्टा से स्पर्श सुख का अनुभव नहीं होता ।

क काम भोग की तीव्र इच्छा यह स्थूल दृष्टि से अब्रह्म सेवन है जब कि शब्दादि किसी भी विषय सुख की क्रिया यह आध्यात्मिक दृष्टि से मैथुन दोष का सेवन है ।

ड इस व्रत के पालन से विजय सेठ-विज्या सेठानी ने देवादि सुख प्राप्त किए हैं ।

६३ निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य गोचरी व्होरने के दृष्टिकोण से दोषयुक्त नहीं?

अ प्रभु की आज्ञा शिरोधार्य कर, गुरू की आज्ञा लेकर गोचरी व्होरने के उद्देश्य से साधु भगवंत किसी एक गृहस्थ के घर धर्म लाभ कहकर प्रवेश करते हैं । वह सेठ व्होराने की भावना से साधु को अनार वहोराते हैं ।

ब गोचरी ग्रहण करने साधु गुरु की अनुज्ञा बिना शुद्ध श्रावक के घर निर्दोष आहार पानी ग्रहण करते हैं ।

क ग्लान साधु के लिए गुरु ने बताया हुआ आहार लेने गए साधु ने सेठ की कंजूस दासी (जिसकी इच्छा दान देने की नहीं थी फिर भी) के पास से साधु दान ग्रहण करते हैं ।

ड उपवास के तपस्वी साधु ने गुरु की आज्ञा लेकर ईर्या समिति पूर्वक श्रावक के घर धर्म लाभ कहकर प्रवेश किया और दातृत्व के उच्च भाव को धारण करने वाले ऐसे उनके पुत्र के पास निर्दोष पानी ग्रहण किया ।

६४ पांच अणु व्रतों का लाभ कराते गुणों को अथवा नुकसान कराते दोषों के विषय में कौन सा वाक्य गलत है?

अ लोभ अधिकतर प्रमाण में मर्यादित होता है ।

ब एक मिठाई के अलावा सर्व मिठाई का त्याग करना चाहिए ।

क मित्र के बेटे की शादी करवाई ।

ड वर्तमान प्रधानमंत्री से भूतकाल के प्रधानमंत्री अच्छे थे ऐसा कहना ।

६५ राम ने अपने भाई की बेटी की शादी कराने को कहा और उस शादी में संगीत संध्या रखी, देखने में बहुत आनंद का अनुभव किया, पश्चात् शादी के दिन मीक्सर-ग्राईन्डर, वोशिंग मशीन भेट दिए और शादी के बाद वह बेटी के रोगग्रस्त सास-ससुर न जीए ऐसे विचार किए । इस विषय में नीचे दिए विकल्पों में क्रम से कौन सा विकल्प सही है?

अ प्रमादाचरण - अपध्यान - पापकर्मोपदेश - हिंसकार्पण

ब पापकर्मोपदेश - हिंसकार्पण - अपध्यान - प्रमादाचरण

क पापकर्मोपदेश - प्रमादाचरण - हिंसकार्पण - अपध्यान

ड अपध्यान - प्रमादाचरण - हिंसकार्पण - पापकर्मोपदेश

६६ 'अ' नाम का व्यक्ति भविष्य में खुद को संयम की प्राप्ति हों ऐसे शुभ भाव से साधु को दान करता है । 'इ' नाम का व्यक्ति घर रखे उत्सव में से निर्दोष वस्त्र, पात्रादि व्होराता है । 'ई' नाम का व्यक्ति भाव पूर्वक घर ले जाकर साधु को अधिक बहुमान से व्होराता है । 'उ' नाम का व्यक्ति अकाल में ग्लान साधु को न प्राप्त होती कीमती औषध व्होराकर भक्ति करता है । निम्नलिखित भंगों में से कौन सा भंग आपको विषम नहीं लगता?

	अ	इ	ई	उ
अ	श्रद्धा	कल्पनीय	सत्कार	काल
ब	सत्कार	क्रम	कल्पनीय	श्रद्धा
क	देश	कल्पनीय	सत्कार	श्रद्धा
ड	श्रद्धा	कल्पनीय	सत्कार	देश

६७ कोई एक एकासना के तपस्वी साधु मध्याह्न समय श्रावक के घर व्होरने जाते हैं । श्रावक बहुत भाव से सचित्तपने का त्याग न किया हुआ सेब व्होराता है । साधु उसे निर्दोष और कल्पनीय जान ग्रहण करते हैं । बाद में श्रावक उन्हें निर्दोष-पीले वर्ण का कपड़ो (खेस) व्होराता है, साधु उसे ग्रहण कर उपाश्रय में आकर गुरु को बताते हैं । गुरु ऐसा कहते हैं के उनके गच्छ में पीले वर्ण का कपड़ो कल्पता नहीं, साधु उसे निर्दोष जान उत्साही ऐसे श्रावक के पास से व्होरा होने से उसे वापरते हैं । निम्नलिखित में से साधु ने कौन से दोषों का यानि अदत्त का सेवन नहीं किया?

अ जीव अदत्त - स्वामी अदत्त   ब तीर्थंकर अदत्त - गुरु अदत्त

क गुरु अदत्त - जीव अदत्त   ड स्वामी अदत्त - तीर्थंकर अदत्त

६८ 'मूर्च्छा: परिग्रह' इस अर्थ के साथ नीचे दिए वाक्यों में से कौन सा वाक्य असमानता नहीं दर्शाता?

अ धनाढ्य सेठ गरीबों को खुले हाथ दान देते हैं, देरासर बनाते हैं, कभी भी भी धन के प्रति ममत्व भाव धारण करते नहीं ।

ब कोई गरीब व्यक्ति ऐसे उच्च मनोरथ करता है कि जब मैं पैसा कमाऊंगा तब मेरा महल सोने का बनाऊँगा, हीरा के आभूषण बनाऊँगा, वे आभूषण कभी भी किसी को पहनने नहीं दूंगा, संभालकर रखूँगा ।

क जेठानी के बहुत कीमती सोने के ज़ेवर देवरानी से खो गए, पर भी जेठानी उस पर आक्रोश नहीं करती और वह ऐसा सोचती हैं यह सब तो पुद्गल है, उन्हें यहीं छोड़कर जाना है ।

ड कोई वृद्ध साधु अपने शरीर को टिकाने अनिच्छा से तीन बार आहार ग्रहण करते हैं । शरीर दुर्बल हो जाने से, एक से अधिक वस्त्र परिधान करते हैं ।

६९ महाव्रतों का स्वीकार किए हुए साधक अपनी जरूरत के मुताबिक अगर पात्र आदि न रखें तो उन्हें अधिक दोषों क सेवन होता है । नीचे दिए वाक्यों में से कौन सा वाक्य दोषों के पोषण के लिए सहायक नहीं बनता?

अ वस्त्र के अभाव से बहुत जीव जैन धर्म से विमुख होते हैं ।

ब कर पात्री होने से बहुत जीवों की विराधना होती है । कारण जयणा का अभाव दिखता है ।

क बहुत संयमीओं की सेवा करने का लाभ मिले, उससे वैयावच्च गुण की प्राप्ति हो ।

ड ठंड में अग्नि जलाकर उससे समाधि पाने की इच्छा प्रगट हो ।

७० निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य सही नहीं?

अ श्रावक को लोहे का जलता गोला जैसा कहा होने से; दिग्विरति व्रत के नियम धारण कर गृहस्थ बहुत जीवों को बचा सकता है। अनर्थ दंड विरति व्रत से अनेक प्रकार के बिन जरूरी पापों से बच जाता है और जीवन संस्कारों से खिल उठता है।

ब सामायिक व्रत से रत्नत्रयी की आराधना होती है और पूर्व में बंधे पाप का नाश करने पूर्वक समता रस आत्मसात होता है। उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत के पालन से जीवन त्यागमय बनता है, अध्यात्मिक परिवर्तन आता है, शरीर और मानसिक स्थिति के लिए लाभ दायी बनता है।

क अतिथि संविभाग व्रत से दातृत्व भाव हीन होता है, साधु भक्ति वृद्धि नहीं पाते, बहुत पापों का नाश होता हैं। पौषधोवास व्रत से कष्ट के प्रति साहस नहीं रहता, श्रावकाचार ग्रहण होते हैं। गरमी लगने से शरीर में आग बढ़ जाती है।

ड देशावगासिक व्रत से सात्त्विक वृत्ति बढ़ती है। बहुत पापों से बच सकते हैं, मोक्ष का अनुभव होता है। राग-द्वेष कम होते हैं। अनर्थदंड विरति व्रत से अनेक प्रकार के पापों से रुक जाते हैं, तामस-राजस भाव की वृत्ति घटती है और सात्त्विकता बढ़ती है, जीवन संस्कारमय बनता है।

७१ सूत्र ७-१७ के अर्थ के विषय में निम्नलिखित कौन सा वाक्य दूषित नहीं?

अ संलेखना करने के लिए आहार संपूर्ण रूप से त्याग करना पड़ता है इसलिए जीव का क्षुधा वेदनीय असह्य बनता है। अतः उसे तृप्त होने की इच्छा होती है और स्वीकारी हुई प्रतिज्ञा का स्मरण करते मन को समाधि युक्त रखते हैं।

ब अंतिम समय में अनित्यादि भावनाओं से भावित हुआ जीव जीवन में किए सुकृतों की अनुमोदना करता है और समाधि रस चखने का प्रयत्न करता है।

क अधिक तप करने से शरीर अधिक कृश हो जाने से अंतिम समय में ऐसा विचार करें मेरी सेवा कौन करेगा, मेरा शरीर दुर्बल हो गया है। सब स्वार्थ के सगे हैं। इसलिए मेरा शरीर मजबूत रखकर मोक्ष मार्ग पर गमन करना चाहिए'।

ड मरण नजदीक जान व्रती, सर्वथा त्याग करने द्वारा काया और कषायों को पुष्ट करके अनित्यादि भावनाओं से भावित होकर आर्त्त-रौद्र ध्यान के त्याग पूर्वक मोक्ष मार्ग की आराधना कर लेता है।

७२ निम्नलिखित में से कौन सा वाक्य निशल्यता रहित नहीं?

अ एक गरीब व्यक्ति अपना दु:ख दूर करने और अधिक धन कमाने के हेतु से शंखेश्वर पार्श्वनाथ का अट्ठम करता है ।

ब गृहस्थ ऐसा तर्क करता है कि आज के जमाने में रात को लाइट का प्रकाश दिवस जैसा होने से जीव दिखते हैं । उससे रात्रि भोजन करने में कोई दोष होता ही नहीं, पूर्व काल में लाइट का अभाव होने से रात में जीव दिखते न ठे ।

क जो प्रभु ने कहा है वही सत्य हैं । उसके सिवा सब मिथ्या है । ऐसा सत्य का आग्रह रखकर जीवन जीए ।

ड कोई दुकानदार अपनी दुकान में आए गंवार पुरूष को देख उसके साथ छल कर उसे मूर्ख बनाकर उसके पास से वस्तु की कीमत से अधिक पैसा ले लेता है ।

७३ निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य अयथार्थ नहीं?

अ 'असदभिधानमनृतम्' इस अर्थ के अनुसार जो कान से न सुनता हो उसे बहरा कहना, यह वाक्य असत्य कहने बराबर नहीं ।

ब 'अदत्तादानं स्तेयम्' इसका अर्थ जो बताया है उसके अनुसार निर्दोष आहार लाने के बाद उसको शास्त्राज्ञा विरूद्ध जान, गुरु आज्ञा बिना शिष्य गोचरी को परठ देता है, तो उसे अदत्तादान के त्याग रूप से गलत कहना नहीं ।

क ब्रह्मचर्य के पालन से शरीर की तेजस्विता वृद्धि नहीं पाती, इसलिए 'मैथुनमब्रह्म' यह सूत्र का अर्थ जो कहा वह गलत नहीं ।

ड राम नाम के व्यक्ति के पास पांच गाड़ी हैं । वह रोज चिंतन करता है कि 'मैं कब इनके त्याग रूप गाड़ी कम करूँगा', उससे सूत्र में बताए मूर्छा परिग्रह के अर्थ को राम सहायक न बनते उसके फलितार्थ का पोषक बनता है ।

७४ निम्नलिखित दृष्टांतो में से कौन सा दृष्टान्त व्रतों के परिप्रेक्ष्य में गलत नहीं?

अ राग-द्वेष से शब्द, रूप, रस, गन्ध और स्पर्श यह पांचों विषयों का सेवन करना वह मैथुन नहीं । इसलिए मैथुन = अब्रह्म का सर्वथा त्याग यह श्रेष्ठ नहीं है । महाव्रतों के पालन के लिए रखे उपकरण ममत्व रहित साधु उपभोग करते हैं । इसलिए वे अधिकरण नहीं बनते, यानी मूर्छा=परिग्रह अर्थ साधु लिए अयथार्थ हैं ।

ब घर में चोरी की हो वह नोकर जान बूझकर सेठ के सामने ऐसा बरताव करें कि वह कुछ जानता नहीं । तथा सेठ ऐसा विचारे कि जिसके नसीब में हो वही प्राप्त करता है, पर सेठानी

कहे कि जीवन भर की आराधना के फल स्वरूप यह चुराया हार मुझे मिल जाए तो अच्छा । ये तीनों शल्य रहित हैं ।

क संबोध प्रकरण ग्रंथ के अनुसार अणु व्रतों का और गुण व्रतों का सातवें व्रत में संक्षेप होता है । और तत्त्वार्थाधिगम सूत्र के मत से केवल दिग्विरति व्रत का ही संक्षेप उसमें होता है । क्योंकि शिक्षा व्रत तो संयम के अभ्यास स्वरूप होते हैं ।

ड राम कसरत करने के लिए घास पर खेलता है । साथ ही कान में म्युझीक सुनते जाता है । और साथ में चलनेवालों के साथ गपशप करता है । अतः उसके जीवन में तमस और राजस वृत्ति में इजाफा होता है । जबकि उसी समय का उपयोग उसका बंधु मोक्ष मार्ग की (ज्ञान-दर्शन-चरित्र) की आराधना में व्यतीत करता है । उससे शारीरिक-मानसिक-आर्थिक-सामाजिक दृष्टि से अधिक लाभ पाता है ।

७५ निम्नलिखित वाक्यों पढ़कर उनके अनुसार क्रम से सही विकल्प ढूंढें ।

क' नाम का व्यक्ति अपना परिवार समाधि से जी सकें इसलिए व्यापार करता है । ख' नाम का व्यक्ति सावद्य योगों का त्याग करने का नियम लेता है । ग' नाम का व्यक्ति स्नान करना, तेल रगड़ना, आदि रूप व्रत का स्वीकार करता है । घ' नाम का व्यक्ति इस व्रत के पालन से सुंदर जीवन तथा आध्यात्मिक और शारीरिक लाभ पाता है ।

	क	ख	ग	घ
अ	अनर्थदंड	सामायिकव्रत	पौषधोपवासव्रत	उपभोग परिभोगव्रत
ब	प्रमादाचरण	सामायिकव्रत	पौषधोपवासव्रत	अतिथि संविभाग व्रत
क	अर्थदंड	पौषधोपवासव्रत	अनर्थदंडव्रत	सामायिक व्रत
ड	अर्थदंड	सामायिक व्रत	पौषधोपवासव्रत	उपभोग-परिभोगव्रत

▮

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-१४	अध्याय-७	सूत्र १८-३४	जमा करने की अंतिम तारीख ता. ३१/०८/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक । (कुल ३० x ½ = १५ अंक)

१. विजय धारे हुए प्रमाण से अधिक देश में रहे पत्र मंगाए तो उसे ..... अतिचार लगता है ।
अ. क्षेत्रवृद्धि ब. आनयन क. प्रेष्यप्रयोग ड. देश से

२. ग्यारहवें उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत के अतिचार जिसे ..... का त्याग है उसके लिए है ।
अ. सचित्त आहार ब. मांसाहार क. विगई ड. मिठाई

३. देश से व्रत स्वीकारने केवल पांच नहीं पर .... व्रत लेने चाहिए ।
अ. ८ ब. ६ क. १९ ड. १२

४. परविवाहकरण को परमार्थ से ..... कराया ही कहा जाता है ।
अ. शुभकार्य ब. मैथुन क. अन्य के ब्रह्मचर्य व्रत का खंडन ड. परस्त्री गमन

५. पानी की एक बूंद में असंख्य जीव होंगे या नहीं ऐसा विचार .... शंका है ।
अ. देश से ब. सर्व से क. प्रमाद से ड. योग्य

६. सचित्त संबंद्ध आदि ...... व्रत के अतिचार हैं ।
अ. संलेखना ब. उपभोग परिभोग परिमाण क. अतिथि संविभाग ड. पौषधोपवास

७. किसी दो व्यक्ति की गुप्त बात तीसरा जाने, वह अन्य को प्रकाशित करे (बात करे) तो वह प्रकाशन ..... है ।
अ. साकार मंत्रभेद ब. रहस्याभ्याख्यान क. स्वदारा मंत्रभेद ड. विश्वस्त मंत्रभेद

८. कौत्कुच्य में हास्य वचन के प्रयोग के साथ ..... प्रयोग भी है ।
अ. मानसिक ब. वाचिक क. कायिक ड. मानसिक और कायिक

९. मनोयोग दुष्प्रणिधान आदि अनाभोग से हो तो .... स्वरूप है ।
अ. व्रतभंग ब. अनाचार क. आचार ड. अतिचार

१०. अनादर पूर्वक साधु को दान देने से .... अतिचार लगता है ।

अ. अनादर ब. सचित्तपिधान क. मात्सर्य ड. काययोग दुष्प्रणिधान

११. शंकारूप अतिचार में ..... शंका होती है ।

अ. धर्म की ब. धर्म के फल की क. परलोक की ड. मोक्ष की

१२. योगशास्त्र ग्रंथ में ..... अतिचार का नाम गुह्य भाषण है ।

अ. साकारमंत्रभेद ब. मिथ्या-उपदेश क. रहस्याभ्याख्यान ड. कूटलेखक्रिया

१३. आत्मा है या नहीं इस विषय की शंका .... से शंका है ।

अ. काल ब. सर्व क. शाखा ड. देश

१४. स्मृत्यनुपस्थान (स्मृत्यन्तर्धान) अतिचार ..... व्रत में नहीं लगता ।

अ. छठे ब. ९वें क. १०वें ड. ११वें

१५. विधि, द्रव्य, दाता और पात्र की विशेषता से ..... में भेद पड़ते हैं ।

अ. मैत्री भाव ब. करुणा भाव क. दान धर्म ड. प्रसन्न चित्त

१६. रहस्याभ्याख्यान अतिचार का दूसरा नाम .... है ।

अ. गुप्त ब. रहस्यमय प्रसंग क. गुह्य भाषण ड. साकार मंत्र भेद

१७. सामायिक में स्व और अन्य न समझ सके उस तरह सूत्र का अस्पष्ट उच्चार करने से स्वयं को ..... दोष लगता है ।

अ. अशुद्ध ब. अविनय क. गुणगुण ड. अस्पष्ट

१८. जरूरत न होने पर भी रमेश न स्वयं के घर में शो-पीस रूप तलवार रखी है तो उसे .... व्रत का अतिचार लगता है ।

अ. अनर्थदंड विरति ब. सामायिक क. देशावगासिक ड. उपभोग परिभोग परिमाण

१९. 'संयम के प्रभाव से अगले भव में मैं नलीनीगुल्म विमान में उत्पन्न होऊं' ऐसी भावना से ..... व्रत में अतिचार लगता है ।

अ. अनर्थ दंड विरति ब. अतिथि संविभाग क. संलेखना ड. उपभोग परिभोग परिमाण

२०. स्व उपकार ..... प्रकार से है ।

अ. प्रधान ब. आनुषंगिक क. दो ड. चार

२१. दान देने के पहेले, देते वख्त और देने क बाद भी ..... गुण आए तो विषाद दोष जाता है ।

अ. सरलता ब. आदर क. हर्ष ड. शुभाशय

२२. बीज युक्त आहार वापरने से ..... अतिचार लगता है ।
अ. तुच्छौषधि भक्षण ब. सचित्त आहार क. सचित्त संबंद्ध आहार ड. अभिषव आहार

२३. बिना उत्साह सामायिक करने से ..... दोष लगता है ।
अ. अविनय ब. अविवेक क. असदारोपरण ड. अबहुमान

२४. कार्योत्सर्ग में आंखें हिलाने से स्वयं को ..... दोष लगता है ।
अ. आकुंचन ब. चलदृष्टि क. कुदृष्टि ड. आलस

२५. आठवें व्रत के अतिचार में असंबंद्ध अधिक बोलने से स्वयं को .... अतिचार लगता है ।
अ. मौखर्च ब. कौत्कुच्य क. गुणगुण ड. कुवचन

२६. .... व्रत के अतिचार साधु या श्रावक दोनों को लागू होते हैं ।
अ. पौषध ब. सम्यक्त्व क. सामायिक ड. देशावगासिक

२७. आठवें व्रत में श्रावक को ..... अतिचार प्रमादाचरण रूप नहीं है ।
अ. उपभोगाधिकता ब. कंदर्प क. कौत्कुच्च ड. मौखर्य

२८. गलत दस्तावेज करने से .... अतिचार का दूषण लगता है ।
अ. साकार ब. मंत्र भेद क. कूटलेख क्रिया ड. रहस्य-अभ्याख्यान

२९. चोरी की हुई वस्तु अगर खरीदकर लाई हो तो .... अतिचार लगता है ।
अ. स्तेन प्रयोग ब. तदाहृतादान क. विरुद्ध राज्यातिक्रम ड. हीन मानोंमान

३०. 'मूल वस्तु जैसे कि आत्मा है या नहीं' इस विषय में शंका वह .... और 'वस्तु अमुक रूप से होगी या नहीं' इस विषय में होती शंका .... है ।
अ. मूलशंका, सर्वशंका ब. सर्वशंका, मूलशंका क. शाखाशंका, देशशंका ड. सर्वशंका, देशशंका

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१. नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य कौन सा है वह कहें ।
अ. स्वदारा संतोष व्रत ग्रहण करने वाले को इत्वर परिगृहिता गमन से अतिचार का दोष लगता है ।
ब. ग्रंथ में चोर के पांच प्रकार बताए हैं ।
क. अपने संतानों के विवाह की जिम्मेदारी भाई ने ली हो तो बारह व्रत स्वीकारने वाले को उसमें हिस्सा नहीं लेना चाहिए ।
ड. परिग्रह परिमाण व्रत में प्रमाण का अतिक्रम हो तो व्रत भंग ही होता है, अतिचार नहीं लगता।

३२. नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य कौन सा है वह कहें ।

अ. हीनाधिक मानोंमान यह ठग बाजी का कार्य होने से व्रत भंग का दोष लगता है पर 'डाका डालना ही चोरी कही जाती है' इस दृष्टिकोण से स्वयं की दृष्टि से वह चोरी नहीं पर वणिक कला है उस अपेक्षा से अतिचार बताया है ।

ब. सम्यक्त्वव्रत के अतिचार केवल श्रावक को ही लगते हैं, साधु को नहीं लगते ।

क. दिग्परिमाण व्रत में किसी भी दिशा में धारणा से अधिक गमन न करें तो अतिचार लग नहीं सकते ।

ड. असंबद्ध अधिक बोलने से मृषावाद विरमण व्रत का अतिचार लगता है ।

३३. नीचे दिए जोड़े जोड़ने के विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

व्रत	अतिचार
१. प्राणातिपात विरमण व्रत	A क्षेत्र-वास्तु प्रमाणातिक्रम
२. मृषावाद विरमण व्रत	B तीव्रकामाभिनिवेश
३. अदत्तादान विरमण व्रत	C बंध
४. मैथुन विरमण व्रत	D मिथ्योपदेश
५. परिग्रह विरमण व्रत	E ऊर्ध्व व्यतिक्रम
६. दिग्विरति व्रत	F हीनाधिक मानोंमान

अ. 1-A 2-B 3-C 4-D 5-E 6-F   ब. 1-B 2-A 3-D 4-C 5-F 6-E

क. 1- B 2-C 3-D 4-F 5-E 6-A   ड. 1-C 2-D 3-F 4-B 5-A 6-E

३४. नीचे दिए जोड़े जोड़ने के विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

व्रत	अतिचार
१. देशावगाशिक व्रत	A अप्रत्यवेक्षित अप्रमार्जित आदान निक्षेप
२. अनर्थदंड विरति व्रत	B आनयन
३. सामायिक व्रत	C मनोयोग दुष्प्रणिधान
४. पौषधोपवास व्रत	D मौखर्य

अ. 1-A 2-B 3-C 4-D   ब. 1-B 2-D 3-C 4-A

क. 1-B 2-C 3-D 4-A   ड. 1-B 2-A 3-D 4-C

३५. नीचे दिए जोड़े जोड़ने के विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

	व्रत		अतिचार
१.	उपभोगपरिभोग परिमाण व्रत	A	मित्र अनुराग
२.	अतिथि संविभाग व्रत	B	शंका
३.	संलेखना व्रत	C	सचित्त आहार
४.	सम्यग्दर्शन व्रत	D	मात्सर्य

अ. 1-A 2-B 3-C 4-D ब. 1-B 2-A 3-D 4-C

क. 1-C 2-D 3-A 4-B ड. 1-B 2-D 3-C 4-A

३६. शंका यानी?

अ. जीव की मति मंदता के कारण आगम के पदार्थों के प्रति संशय करना वह शंका ।

ब. जीव की मति मंदता के कारणे आगम के पदार्थों में श्रद्धा न होनी वह शंका ।

क. तीर्थंकर प्रणित धर्म सही है ऐसी श्रद्धा में संशय यानी शंका ।

ड. ज्ञानी होने पर भी तीर्थंकर प्रणित धर्म सही नहीं है ऐसी श्रद्धा यानी शंका ।

३७. तुच्छौषधिभक्षण यानी?

अ. तृप्ति हो ऐसी वस्तु वापरना वह तुच्छौषधिभक्षण ।

ब. तृप्ति न हो ऐसी वस्तु वापरना वह तुच्छौषधिभक्षण ।

क. तृप्ति हो या न हो वस्तु खुले आम वापरना वह तुच्छौषधिभक्षण ।

ड. तृप्ति होने के बाद भी वस्तु वापरना वह तुच्छौषधिभक्षण ।

३८. परव्यपदेश यानी?

अ. देने लायक वस्तु अन्य की होने पर भी नहीं देने की बुद्धि से अन्य की है अथवा न देने लायक वस्तु स्वयं की होने पर भी न देने की बुद्धि से पर की है ऐसा कहना वह परव्यपदेश।

ब. देने लायक वस्तु स्वयं की होने पर भी नहीं देने की बुद्धि से अन्य की है अथवा न देने लायक वस्तु अन्य की होने पर भी देने की बुद्धि से स्वयं की है ऐसा कहना वह परव्यपदेश।

क. न देने लायक वस्तु स्वयं की होने पर भी देने की बुद्धि से अन्य की है अथवा देने लायक वस्तु अन्य की होने पर भी देने की बुद्धि से स्वयं की है ऐसा कहना वह परव्यपदेश ।

ड. न देने लायक वस्तु स्वयं की होने पर भी न देने की बुद्धि से अन्य की है अथवा देने लायक वस्तु अन्य की होने पर भी न देने की बुद्धि से स्वयं की है ऐसा कहना वह परव्यपदेश ।

३९. सचित्त संबद्ध आहार यानी?

अ. बीज युक्त आहार वापरना वह सचित्त संबद्ध आहार ।

ब. बिना बीज का आहार वापरना वह सचित्त संबद्ध आहार ।

क. पकाए बगैर भोजन ग्रहण करना वह सचित्त संबद्ध आहार ।

ड. पकाया भोजन ग्रहण करना वह सचित्त संबद्ध आहार ।

४०. सामायिक संशय दोष यानी?

अ. सामायिक करते समय उसका अमुक फल मिलेगा ऐसी विचारणा वह सामायिक संशय दोष।

ब. सामायिक करते समय उसका फल मिलेगा ही ऐसी श्रद्धा होना वह सामायिक संशय दोष।

क. सामायिक का फल मिलेगा या नहीं उस विषय में शंका होने से सामायिक न करना वह सामायिक संशय दोष ।

ड. सामायिक करते समय उसका फल मिलेगा या नहीं उस विषय में शंका करना वह सामायिक संशय दोष ।

४१. सामायिक निरपेक्ष दोष यानी?

अ. सामायिक करते समय नींद आए वह सामायिक निरपेक्ष दोष ।

ब. सामायिक करते समय शास्त्र के आदर सहित वचन बोलना वह सामायिक निरपेक्ष दोष ।

क. सामायिक करते समय शास्त्र की परवाह किए बिना वचन बोलना वह सामायिक निरपेक्ष दोष ।

ड. नींद आती होने से सामायिक न करना वह सामायिक निरपेक्ष दोष ।

४२. स्तेन प्रयोग यानी?

अ. चोर को चोरी करने में किसी भी प्रकार से उत्तेजन देना वह स्तेन प्रयोग ।

ब. चोरी करने वाले चोर को पकड़ने में मदद करना वह स्तेन प्रयोग ।

क. मैथुन सेवन के अंगों के अलावा शरीर के अन्य अवयवों से काम क्रीड़ा करना वह स्तेन प्रयोग ।

ड. मैथुन सेवन के अंगों से ही काम क्रीड़ा करना वह स्तेन प्रयोग ।

४३. अनंगक्रीड़ा यानी?

अ. मैथुन सेवन के अंगों के अलावा शरीर के अन्य अवयवों से काम क्रीड़ा न करना वह अनंग क्रीड़ा ।

ब. मैथुन सेवन के अंगों से ही काम क्रीड़ा करना वह अनंगक्रीड़ा ।

क. मैथुन सेवन का त्याग करना वह अनंगक्रीड़ा ।

ड. मैथुन सेवन के अंगों के अलावा शरीर के अन्य अवयवों से काम क्रीड़ा करना वह अनंगक्रीड़ा ।

४४. प्रमाणातिक्रम यानी?

अ. धारी हुई संख्या में कटौती करना वह प्रमाणातिक्रम ।

ब. धारी हुई संख्या में इज़ाफा करना वह प्रमाणातिक्रम ।

क. धारी हुई संख्या में बदलाव यानी कि कटौती या इज़ाफा करना वह प्रमाणातिक्रम ।

ड. धारी हुई संख्या में कटौती न करना वह प्रमाणातिक्रम ।

४५. सामायिक गुणगुण दोष यानी?

अ. सामायिक करते समय सूत्र को समझ सकें ऐसा स्पष्ट उच्चारण वह सामायिक गुणगुण दोष।

ब. सामायिक करते समय सूत्र को समझ न सकें ऐसा अस्पष्ट उच्चारण वह सामायिक गुणगुण दोष ।

क. सामायिक में अगुणी के गुणगान करना वह सामायिक गुणगुण दोष ।

ड. सामायिक में गुणी के गुणगान करना वह सामायिक गुणगुण दोष ।

४६. चलदृष्टि दोष यानी?

अ. कायोत्सर्ग करते समय आँखें इधर उधर घुमाना वह चलदृष्टि दोष ।

ब. कायोत्सर्ग करते समय आँखें स्थिर रखना वह चलदृष्टि दोष ।

क. कायोत्सर्ग करते समय चलित वस्तु को देखना वह चलदृष्टि दोष ।

ड. कायोत्सर्ग करते समय इधर उधर हिलना वह चलदृष्टि दोष ।

४७. कालातिक्रम यानी?

अ. भिक्षा काल में साधु को भिक्षा के लिए निमंत्रण देना वह कालातिक्रम ।

ब. भिक्षा काल के पहले अथवा बीत जाने के बाद साधु को भिक्षा के लिए निमंत्रण न देना वह कालातिक्रम ।

क. भिक्षा काल के पहले अथवा बीत जान के बाद साधु को भिक्षा क लिए निमंत्रण देना वह कालातिक्रम ।

ड. भिक्षा काल में साधु को भिक्षा के लिए निमंत्रण न देना वह कालातिक्रम.

४८. निदानकरण यानी?

अ. संयम अथवा तप करने से क्या फल मिलेगा उसकी जानकारी प्राप्त करना वह निदानकरण।

ब. संयम अथवा तप के निश्चित फल की इच्छा करना वह निदानकरण ।

क. संयम अथवा तप के निश्चित फल की इच्छा न करना वह निदानकरण ।

ड. किसी भी फल की इच्छा बिना संयम अथवा तप की क्रिया करना वह निदानकरण ।

४९. कौत्कुच्य यानी?

अ. कामोत्तेजक वाक्य बोलने पूर्वक असभ्य कायिक चेष्टा करना वह कौत्कुच्य ।

ब. लगातार केवल कामोत्तेजक वाक्य बोलते रहना वह कौत्कुच्य ।

क. असभ्य कायिक चेष्टा कर किसी को लगातार परेशान करते रहना वह कौत्कुच्य ।

ड. भय पैदा करें ऐसे वाक्य बोलने पूर्वक असभ्य कायिक चेष्टा करना वह कौत्कुच्य ।

५०. अतिचार यानी?

अ. स्वीकारे व्रत में ऐसे दोषों का सेवन कि जिससे व्रत भंग न हो वह अतिचार ।

ब. स्वीकारे व्रत में व्रत भंग हो ऐसी क्रिया करते रहना वह अतिचार ।

क. स्वयं की क्षमता से अधिक चार व्रतों का स्वीकार वह अतिचार ।

ड. अन्य व्यक्ति के व्रत पालन देखकर स्वयं को व्रत पालन की इच्छा हो वह अतिचार ।

५१. अप्रत्यवेक्षित यानी?

अ. ध्यानपूर्वक देखकर वस्तु का व्यवहार करना वह अप्रत्यवेक्षित ।

ब. संयम अथवा तप के निश्चित फल की इच्छा करना वह अप्रत्यवेक्षित ।

क. बिलकुल प्रमार्जन किए बिना अथवा बराबर प्रमार्जन किए बिना वस्तु का व्यवहार करना वह अप्रत्यवेक्षित ।

ड. बिलकुल देखे बिना अथवा बराबर देखे बिना वस्तु का व्यवहार करना वह अप्रत्यवेक्षित।

५२. अप्रमार्जित यानी?

अ. ध्यानपूर्वक देखकर, जगह का प्रमार्जन कर के वस्तु का व्यवहार करना वह अप्रमार्जित ।

ब. बिलकुल देखे बिना अथवा बराबर देखे बिना वस्तु का व्यवहार करना वह अप्रमार्जित ।

क. बिलकुल प्रमार्जन किए बिना अथवा बराबर प्रमार्जन किए बिना वस्तु का व्यवहार करना वह अप्रमार्जित ।

ड. स्वयं की शक्ति का प्रमाण दिए बिना वस्तु का व्यवहार करना वह अप्रमार्जित ।

५३. दान यानी?

अ. स्व और पर के उपकार के लिए स्वयं की वस्तु पात्र व्यक्ति को देना वह दान ।

ब. केवल पर के उपकार के लिए स्वयं की वस्तु पात्र व्यक्ति को देना वह दान ।

क. केवल स्व के उपकार के लिए स्वयं की वस्तु पात्र व्यक्ति को देना वह दान ।

ड. स्व और पर के उपकार के लिए स्वयं की वस्तु पात्र व्यक्ति को देने की इच्छा मात्र करना वह दान ।

५४. साकारमंत्रभेद और रहस्याभ्याख्यान के भेद हैं वह नीचे दर्शाए हैं। उनमें कौन सा विकल्प गलत है वह बताएं ।

अ. साकारमंत्रभेद में विश्वासी बनकर किसी की गुप्त हकीकत का प्रकाशन होता है जब कि रहस्याभ्याख्यान में विश्वासी या अविश्वासी के भेद के बिना किसी की गुप्त हकीकत का प्रकाशन होता है ।

ब. साकारमंत्रभेद में गुप्त हकीकत जिसके पास से जानी हो उससे अन्य संबंधित होती है जब कि रहस्याभ्याख्यान में जिसके पास से जानी हो उसके संबंधित होती है ।

क. साकारमंत्रभेद में हकीकत जिसके संबंधित जानी होती है उसे ही कहनी होती है जब कि रहस्याभ्याख्यान में जिसके संबंधित हकीकत जानी हो उसे अथवा अन्य को कहनी होती है ।

ड. ऊपर के तीन में से एक वाक्य गलत है ।

५५. असमीक्ष्याधिकरण और उपभोगाधिकत्व संबंधित नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य सही है वह बताएं ।

अ. बिना ज़रूरत अधिकरण रखना वह उपभोगाधिकत्व ।

ब. ज़रूरत से अधिक अधिकरण रखना वह असमीक्ष्याधिकरण ।

क. असमीक्ष्याधिकरण में विचार किए बिना ही अधिकरण रखे जाते हैं ।

ड. उपभोगाधिकत्व में विचार किए बिना ही अधिकरण रखे जाते हैं ।

५६. आनयन और प्रेष्यप्रयोग संबंधित नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है वह बताएं ।

अ. आनयन में अन्य के पास से वस्तु मंगानी होती है ।

ब. प्रेष्यप्रयोग में वस्तु अन्य को भेजनी होती है ।

क. आनयन में वस्तु मंगाने अपने नौकर आदि का उपयोग नहीं होता ।

ड. प्रेष्यप्रयोग में वस्तु भेजने अपने नौकर आदि का उपयोग नहीं होता ।

५७. सम्यग्दर्शन के पांच अतिचार विषयक नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत है?

अ. कांक्षा - धर्म के फल रूप इस लोक अथवा परलोक में सुख की इच्छा करना ।

ब. विचिकित्सा - धर्म का निश्चित फल मिलेगा ही ऐसा समझकर धर्म करना ।

क. अन्य दृष्टि प्रशंसा - सर्वज्ञ प्रणित दर्शन के अलावा अन्य दर्शन की प्रशंसा करना ।

ड. अन्य दृष्टिसंस्तव - सर्वज्ञ प्रणित दर्शन के अलावा अन्य दर्शन के लोगों का परिचय बढ़ाना।

५८. व्रत दो प्रकार के होते हैं, बाह्य वृत्ति से और अंतर्वृत्ति से पालन किए जाते । उनके संबंधित नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

अ. प्राण वियोग वह बाह्य वृत्ति से अहिंसा व्रत है ।

ब. हृदय में व्रत के परिणाम वह बाह्य वृत्ति से अहिंसा व्रत है ।

क. जब दोनों वृत्ति से हिंसा हो तब वह बाह्य-अभ्यंतर व्रत कहा जाता है ।

ड. बंध आदि में प्राण वियोग का अभाव है पर आंतरिक वृत्ति से हिंसा के परिणाम हैं इसलिए अतिचार लगता है ।

५९. ब्रह्मचर्य व्रत विषयक नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत है?

अ. ब्रह्मचर्य व्रत के पालन में मुख्य आशय कामेच्छा दूर करना है ।

ब. जो भी प्रवृत्ति कामेच्छा प्रगट करें उस प्रवृत्ति में व्रत भंग का दोष लगता है ।

क. अनंग क्रीड़ा अथवा तीव्र कामाभिनिवेश से काम भोग की इच्छा नष्ट होती है ।

ड. अनंग क्रीड़ा अथवा तीव्र कामाभिनिवेश अतिचार रूप बताया गया है ।

६०. आठवें अनर्थदंड विरमण व्रत के अतिचार संबंधित नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत है?

अ. कंदर्प - जिससे मोह जागृत हो ऐसे राग सहीत, कामोत्तेजक, असभ्य वचन बोलना ।

ब. कंदर्प, कौत्कुच्य और मौखर्य (असंबद्ध अधिक बोलना) यह तीन प्रमादाचरणरूप अतिचार हैं ।

क. असमीक्ष्याधिकरण - ज़रूरत है या नहीं यह विचारे बिना पाप के साधन रखना ।

ड. असमीक्ष्याधिकरण और उपभोगाधिकत्व यह दोनों अनुक्रम से हिंसकार्पण और पापकर्मोपदेश रूप अतिचार हैं ।

६१. 'क' नाम के व्यक्ति को आलू में अनंत जीव न दिखने से 'आलू में अनंत जीव हैं' इस बात पर अश्रद्धा होने लगी ।

'ख' नाम के व्यक्ति को कंदमूल अति प्रिय होने से अजैन मित्रों के साथ मित्रता बढ़ा देता है, और इसलिए उसे किसी पर धर्म में भेद दिखता नहीं ।

'ग' नाम के व्यक्ति को ब्राह्मण ज्योतिष ने पुत्र की जन्म कुंडली का सुंदर फलादेश कहा, उससे उसने ज्योतिष को बहुत दान दिया । मित्र वर्तुल में उसकी वाह-वाह होती है । और वह इच्छा करता है कि दान देने से मेरी लक्ष्मी कभी भी कम न हों ।

'घ' नाम के व्यक्ति ने जीवन में खूब आराधना की थी, पर जीवन के अंत तक उसकी दरिद्रता दूर नहीं हुई, उससे उसे रोज ऐसा प्रश्न होता है कि 'मुझे मेरी आराधना का लाभ कब मिलेगा?' अतः उसे कभी ऐसा लगता है, 'साधु-साध्वी ने मुझे जो आराधना कही वह सब निरर्थक (मुधा) लगती है ।'

ऊपर दिए वाक्यों में से किस व्यक्ति को सम्यग्दर्शन के कौन से अतिचार लगते हैं उसके लिए नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प विपरीत नहीं?

	क	ख	ग	घ
अ.	शंका/कांक्षा	विचिकित्सा/शंका	अन्यदृष्टिसंस्तव/कांक्षा	कांक्षा/शंका
ब.	सर्वशंका/कांक्षा	अन्यदृष्टिसंस्तव/कांक्षा	अन्यदृष्टिप्रशंसा/कांक्षा	विचिकित्सा / देश शंका
क.	देशशंका/कांक्षा	अन्यदृष्टिसंस्तव/कांक्षा	अन्यदृष्टिप्रशंसा/कांक्षा	विचिकित्सा/सर्वशंका
ड.	देशशंका/कांक्षा	अन्यदृष्टिप्रशंसा/शंका	अन्यदृष्टिसंस्तव/शंका	शंका / वचिकित्सा

६२. शंका और विचिकित्सा के भेद में नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सम्यग्दर्शन के विषय में अयथार्थ न होने पर भी शंका और विचिकित्सा के विषय में अयथार्थ है ?

	शंका	विचिकित्सा
अ	राम को जिनशासन के प्रति शंका है ।	राम को जैन धर्म की आराधना से मोक्ष सुख प्राप्त होगा या नहीं उसके प्रति शंका है ।
ब	श्याम को केवली समुद्घात के समय केवली भगवंत अपने आत्म प्रदेश १४ राज लोक में फैलाते हैं उसके प्रति अस्वीकार नहीं है ।	श्याम को सामायिक आदि क्रिया से मोक्षमार्ग का लाभ होगा ही ऐसा दिमाग में फीट हो गया है ।

क	ईन्द्रभूति गौतम को महावीर स्वामी मिले उसके पहले रोज एक प्रश्न सताता रहता कि 'आत्मा है या नहीं' ।	श्रीपाल राजा ने साधु की दुर्गंच्छा कर कोढ को फल श्रुति रूप से पाया ।
ड	प्रदेशी राजा को जब तक आचार्य भगवंत नहीं मिले तब तक आत्मा के विषय में अश्रद्धा ही रही ।	श्याम, साधु के पसीने से तरबतर मैले वस्त्र देखकर उनके प्रति आक्रोश करने लगा । मित्र के समझाने से मित्रता के लिए रुक जाता है ।

६३. ऊपर दिए वाक्यों में से सूत्र ७-२० के अनुसार कौन सा वाक्य सही नहीं?

अ. क्रोधित हुए आचार्य अपने कुमार्ग गए शिष्य को मार्ग में लाने हेतु उसे मारने को शिष्य के पीछे दौड़ते हुए द्वयं खम्भे से टकरा कर मरण के शरण हुए, उससे उनसे प्राणातिपात विरमण व्रत का भंग हुआ कहा जाएगा ।

ब. खंधक मुनि को उस भव में गत भव के कर्मानुसार 'अपने शरीर की चमड़ी कोई उतारता है' ऐसा विचार आता है, उससे खंधक मुनि को प्राणातिपात विरमण व्रत का अतिचार लगता हैं ।

क. राग-द्वेष जिनके मंद हो गए हैं ऐसे आचार्य भगवंत अपने कुमार्ग गए कोमल हृदय वाले शिष्य को मार्ग पर लाने हेतु उसके ऊपर आक्रोश करते हैं और समय आने पर उसके ऊपर हाथ भी उठाते हैं । इससे आचार्य भगवंत को प्रथम व्रत का भंग हुआ ।

ड. ऋषभ देव प्रभु ने उनके पूर्व भव में बैल के मुंह पर कपड़ा बांधा, उससे उन्हें १३ महीने के उपवास करने पड़े, कारण उन्हें प्राणातिपात विरमण व्रत का अतिचार लगा था ।

६४. भरत १२ व्रत का स्वीकार करता है; फिर भी उससे नीचे दिए पापों का सेवन एक महीने में हो जाता है । तो भी निम्नलिखित में से कौन सा व्रत उसे निरतिचार रूप से पाला वह विकल्प चुने।

अ. भरत के घर में पड़ोसी का कुत्ता प्रवेश कर उसके बेटे के सामने भौंकने लगा । उससे भरत ने कुत्ते को आवाज़ कर बाहर निकाला और उसके मालिक ने कुत्ते को बांध दिया पर भरत को दया आने से उसके मालिक के पास कुत्ते को छुड़वा देता है, उसे बांधने को मना करता है ।

ब. भरत स्वयं ईमानदारी पूर्वक व्यापार करता है । उसके पास एक भी रुपया कर चोरी का नहीं है । वह कभी भी व्यापार में हलका माल अच्छे माल के साथ मिलाता नहीं, किसी के भी पास से लिया उधार तुरंत ही लौटाने का भाव रखता है ।

क. भरत ने सोना अधिक सस्ता हो जाने से स्वयं को परिग्रह परिमाण व्रत होने पर पत्नी के नाम सोना खरीदा । तत्पश्चात ज़ेवर बना के रखता है ।

ड. भरत कभी भी झूठ नहीं बोलता । उसने अपने मित्र को परस्त्री के साथ सभ्यता पूर्वक बातचीत करते देखा । यह बात उसने मित्र की शक्की पत्नी को कही । इससे मित्र और उसकी पत्नी के बीच बहुत बड़ा झगड़ा हुआ ।

६५. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प गलत नहीं? (सामायिक के दोषों के अनुसार)

अ. मन: भय, संशय, यश-वांछा, गर्व
वचन: निरपेक्ष, हास्य, संक्षेप, सहसात्कार
काया: चलासन, विमासन, अबहुमान, निद्रा

ब. काया: आसन, सावद्य क्रिया, आकुंचन, मल
वचन: कुवचन, गुनगुन, सावद्य क्रिया, अशुद्ध
मन: धन वांछा, कषाय, अविनय, भय

क. वचन: असदारोपण, संक्षेप, सहसात्कार, गुनगुन
मन: यशोवांछा, मोटन, गर्व, अबहुमान
काया: चलदृष्टि, आलस, आलंबन, आसन

ड. मन: कषाय, अविवेक, निदान, संशय
काया: मोटन, वस्त्र संकोच, सावद्य क्रिया, निद्रा
वचन: निरपेक्ष, अशुद्ध, क्लेश, हास्य

६६. निम्नलिखित विकल्पों में साकार मंत्र भेद और रहस्याभ्याख्यान के भेद दर्शाए हैं । कौन सा विकल्प अघटित नहीं?

	साकार मंत्र भेद	रहस्याभ्याख्यान
अ	विश्वास पात्र बनकर ऐसे प्रकार की कायचेष्टा से अथवा ऐसे प्रकार के प्रसंग से अन्य का गुप्त अभिप्राय जानकर अन्य को कहे और दूसरे का अभिप्राय तीसरे को कहे ।	एक दूसरे की परस्पर बातें एकांत में हुई प्रवृत्ति या बात अन्य को कहे ।
ब	अविश्वासी ऐसे नौकर आदि के अप्रकाशित सत्य को प्रकाशित कर सत्य बनाए ।	किसी भी व्यक्ति की सत्य घटना प्रकाशित करें ।

क	इसमें जिसके संबंधित अप्रकाशित घटना जानी हो, उससे अन्य के पास से समाचार मिले पर कहनी तो संबंधित व्यक्ति को ही होती है ।	इसमें जिसके संबंधित गुप्त हकीकत जानी हो उससे अन्य को कहनी होती है पर उसमें संबंधित व्यक्ति के पास से ही घटना प्रकाशित हुई होती है।
ड	जो हकीकत प्रकाशित हुई हो वह असत्य न होने से अतिचार का भंग होता नहीं कारण उससे महा अनर्थ होना संभव है ।	जो हकीकत गुप्त और असत्य नहीं वह प्रकाशित होने से बाह्य दृष्टि से निरतिचार रूप न होने पर भी तात्त्विक दृष्टि से अतिचार रूप है ।

६७. सामायिक ३२ दोषों से रहित करना चाहिए । उन दोषों को ध्यान में रखकर नीचे दिए हुए द्रष्टांत में कौन सा विकल्प गलत नहीं है?

कृष्ण को रोज सामायिक का नियम था क्योंकि उसे मिले धर्मी के ख़िताब को कलंक न लग जाए और उसे पत्नी भी अच्छे कुल की मिले । एक बार विष्णु भी उसके साथ सामायिक करने आया। विष्णु कृष्ण की मजाक करता है । इससे कृष्ण आक्रोश से उसे एकाएक ज्यों त्यों सुनाता है । तब विष्णु भी सोचे बिना कृष्ण पर झूठा कलंक चढ़ाता है । एक दूसरे से खफ़ा होकर दोनों एक ही खम्भे के दो विपरीत ओर सेठ की तरह बैठते हैं । विष्णु का मन चंचल होने से घड़ी-घड़ी देखने जाता है कि कृष्ण क्या करता है और कृष्ण तो अब बिना मन के स्वयं का सामायिक पूर्ण करता है ।

अ. कृष्ण: गर्व - भय - क्लेश - आलंबन
विष्णु: हास्य - सहसात्कार - आलंबन - चलासन

ब. कृष्ण: भय - सहसात्कार - कषाय - अबहुमान
विष्णु: असदारोपरण - हास्य - चलासन - आलंबन

क. कृष्ण: भय - कषाय - अबहुमान - आलंबन
विष्णु: हास्य - अबहुमान - आलंबन - असदारोपरण

ड. कृष्ण: गर्व - कलेश - सहसात्कार - चलासन
विष्णु: आलंबन - अबहुमान - चलासन - गर्व

६८. बारह व्रत के संदर्भ में नीचे दिए विकल्पों में कौन सा व्यक्ति तीन गुण व्रतों के आश्रय से निरतिचार रूप पालन इच्छा रखते हुए चार शिक्षा व्रत का निरतिचार रहित पालन करता है?

अ. राम रोज सुबह लिए नियम का स्मरण करने पूर्वक उनमें भूल न हो जाए उसका ख्याल रखकर साधु को न देने के भाव से फल (सचित्त) आहार, पकवान आदि सब एक ही मेज पर रखकर उन्हें निमंत्रण देता है ।

ब. श्याम को सामायिक के लिए बिलकुल बहुमान न होने से माता जब उसे सामायिक करने को कहती है तब शांत चित्त से उलटा न बोलते हुए घर के बाहर खेलने जाता है ।

क. लक्ष्मण पंचमी को पौषध करता है, और उसमें एकासणा में गोभी की कच्ची-पक्की सब्जी, पापड़ के साथ खाता है । और बाद में खेलने के लिए अपने मित्रों को इशारा कर के बुलाता है ।

ड. कैरव कभी भी व्यापार में सस्ता होने पर भी निर्धारित देश के बहार से नहीं मंगाता, और वह कभी भी अपनी जीभ की लालसा पूर्ण करें ऐसी शरीर को अलाभदायी वस्तु खाता नहीं।

६९. भरत ने पांचवां परिग्रह परिमण व्रत लिया है । नीचे में से कौन सा विकल्प निरतिचार रूप पालते ऐसे भरत को अतिचार रहित रखता है?

अ. भरत ने तीन ही जमीन रखने का नियम लिया था । उससे गवर्नमेन्ट का टेक्ष बचाने हेतु भरत उस जमीन को लगकर नई जमीन खरीद लेता है । उससे उसके पास एक बड़ी जमीन और दो छोटी ऐसे कुल तीन ही जमीन रहती है ।

ब. भरत को ५० किलो तक ही चाँदी रखने का नियम होने से पत्नी जब चाँदी का नया सेट पीहर से लाती है, तब वह पत्नी का होने से रख लेता है ।

क. भरत को पांच कोटि से अधिक पूंजी नहीं रखनी ऐसा नियम था, उससे जब उसका पुत्र उससे ब्याज पर लिए रुपए ५० लाख लौटाता है तब वह पुत्र को कहता है के तुम्हारे पास रहने दो, तुम्हें काम आएंगे, तुम्हारे और मेरे धन में भेद कैसा?

ड. भरत को २५ किलो सोना रखने का नियम था । उसके पास १२ सेट बनाए हुए थे । पत्नी के अधिक आग्रह से भरत उनमें से ३ सेट का एक बड़ा सेट बनाता है । भरत उसमें नया सोना बढ़ाता नहीं ।

७०. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प उसके अर्थ को अघटित नहीं?

अ. आनयन यानी दूर, अपने गाँव में छूटे हुए अपने कागज-पत्र अपना जो मित्र वहाँ रहता हो, उसके पास मंगवाना ।

ब. शब्दानुपात यानी भीड़ में जब आपका मित्र आपको न देखता हो तब किसी कलम पर अपना नाम अंकित कर अन्य व्यक्ति द्वारा पहुंचाकर उसे वहाँ खड़े रहने का इशारा करना।

क. अप्रत्यवेक्षित अप्रमार्जित - संस्तरोपक्रमण यानी पौषध व्रत में जब भी व्यक्ति बैठे या सोए तब वह नीचे बराबर प्रमार्जन न करे, चरवले का उपयोग केवल नाम मात्र के लिए करे, और देखे बिना मातरु, पानी आदि का त्याग करे ।

ड. तुच्छौषधि भक्षण यानी अचित्त, निर्दोष, पापरहित रोज मुखवास और सचित्त कच्चे आम, गुटकी, हरी सौंफ आदि वापरना ।

७१. अंतिम समय करीब आया है ऐसा जानकर जीव संलेखना करने लगता है । तब उस जीव की जो अवस्था होती है उसके अनुसार कौन सा विकल्प अतिचार रहित है?

अ. किसी एक व्यक्ति को अपनी पत्नी पर अधिक राग होने से अंत समय में साधना बढ़ाकर सोचे कि 'मुझे पुन: यही स्त्री पत्नी रूप मिले' ।

ब. भरत ने अधिक प्रामाणिक रूप से जीवन जीया था, इससे सभी स्वजन उसकी अच्छी सेवा करते हैं तब वह ऐसी इच्छा करता है कि 'ऐसा जीवन कितना अच्छा है । मुझे मरण करीब न आए तो अच्छा है' ।

क. सीता ने जीवन भर धार्मिक जीवन जीया था, वह अंतिम समय तक तप-त्याग-आराधना और साधना करती है, जब वह मरण शैया में पड़ती है तब उसके पूर्व में किए सुकृत को याद करती है ।

ड. द्रौपदी को पांच पति प्राप्त हुए उसमें कारण उसके पूर्व भव में की उसकी साधना और तप त्याग है ।

७२. तत्त्वार्थ सूत्र में जो दान धर्म में पड़ते भेद बताएं हैं उनके अनुसार नीचे दिए वाक्यों में से कौन सा वाक्य उसे दूषण रहित नहीं रखता?

अ. 'च' नाम का व्यक्ति अधिक खुले हाथ से दान देता है । उसे जरा भी धन की आसक्ति नहीं। केवल कब जन्म-मरण से मुझे छुटकारा मिले ऐसे भाव रखकर और मोक्ष न मिले तब तक इसके प्रभाव से मुझे मनुष्य जन्म, जिन शासन मिले ऐसा लगातार सोचता रहता है ।

ब. 'छ' नाम का व्यक्ति साधु को देखकर हतप्रभ हो जाता है । वह उनकी सभी ज़रूरतें पूरी करता है । उन्हें अन्न-वस्त्र-पात्रादि देने के लिए वह सदा उत्साही रहता है ।

क. 'ज' नाम का व्यक्ति दानेश्वर के रूप में प्रसिद्धि पाया है फिर भी रोज गर्व रहित किसी भी इच्छा रहित आदरपूर्वक सरल भाव से दान देता है ।

ड. 'झ' नाम का व्यक्ति साधु को अपने घर निमंत्रित करता है। बाद उनका वस्त्र-पात्रादि से सत्कार करता है। उन्हें योग्य निर्दोष आहार वहोराता है और फिर अपने किए हुए सुकृतों की अनुमोदन करता रहता है।

७३. सूत्र ७-३३ में दान की व्याख्या करते जो भेद बताए हैं उनके अनुसार नीचे दिए दृष्टांतो में से कौन सा दृष्टांत सही नहीं?

अ. श्रीपाल खूब दान देने से सुंदर ख्याति पाता है। और लगातार कर्म की निर्जरा करते मोक्ष सुख पाता है। यह भेद स्व-उपकार प्रधान नहीं है।

ब. कृष्ण सुंदर पात्रादि का दान साधु को देते मोक्ष लक्ष्मी को पाता है। यह भेद पर उपकार प्रधान का है।

क. राम सामायिक की नित्य आराधना करता है, उससे अपने चारित्र मोहनीय का क्षय होते उसे इस भव में ही चारित्र जल्दी उदय में आता है। यह भेद पर-अनुसंगिक, परलोक संबंधी है।

ड. सीता को सुंदर रूप से दान देते देखकर बहुत लोग उसकी प्रशंसा करते हैं। इससे वह और उसे देखने वाले दोनों, कर्म की निर्जरा करते हैं। यह भेद स्व और पर उपकार प्रधान का है।

७४. सूत्र में बताए पांच अणु व्रतों के अतिचार के अर्थ को ध्यान में रखकर नीचे दिए वाक्यों में से कौन सा वाक्य असत्य नहीं?

अ. तीन साल का कृष्ण स्कूल से अपने मित्र की पेन्सिल चुराकर लाता है यह जानकर क्रोधित हुई माता ने उसे खाना दिए बिना कमरे में बंध किया। उसमें कृष्ण को स्तेन प्रयोग अतिचार लगता है जब कि माता को अन्न-पान निरोध अतिचार लगता है।

ब. लक्ष्मी अपनी सखीयों की शादी हो इस हेतु से उसके लिए पति ढूंढती है पर एक सखी के साथ झगड़ा होने से लक्ष्मी उसे धक्का मार नीचे गिराती है। उसमें लक्ष्मी को परविवाह करण और वध अतिचार लगता है।

क. सीता और गीता दोनों एकांत में अपनी गुप्त बातें करती थी। वह बातें सुनकर रीटा सारी बातें मीता को कहती है। और गीता भी सीता की बातें मीता को कहती है। उसमें रीटा को साकारमंत्र भेद अतिचार लगता है। जब कि गीता को रहस्याभ्याख्यान अतिचार लगता है।

ड. अनाज लेने गए नौकर को भोला जान दुकान के मालिक ने हलका माल महेंगे दाम बेचा और उस नौकर के सेठ ने यह जानकर सेठ ने नौकर को उस दुकान मालिक के पास जाकर अपशब्द कहने को कहा। उसमें सेठ को मिथ्या उपदेश का अतिचार लगता है और दुकान मालिक को प्रतिरूपक व्यवहार अतिचार लगता है।

७५. शिक्षाव्रत के अतिचार के लिए कौन सा विकल्प अघटित नहीं?

'अ' नाम का व्यक्ति घर आए साधु जब ककड़ी (खीरा) के साथ रही रोटी नहीं वहोरते तब वह स्वयं ककड़ी खाने लगा।

'ब' नाम का व्यक्ति जंगल में फिरते सचित्त पने से युक्त ऐसे सेब पेड़ से लेकर उसके बिज निकालकर खाने लगा।

'क' नाम का व्यक्ति पंचमी को पौषध लेकर, दर्शन करने जाकर, रोजाना क्रमानुसार मंदिर से घर जाकर कच्ची-पक्की ककड़ी की सब्जी खाई।

'ड' नाम की श्राविका के घर साधु भगवंत वहोरने गए। वह सामायिक में थी तब अपने बनाए श्रीखंड के विषय में कहती है कि बगल वाले ने भेजा है इसलिए पता नहीं कि सचित्त है या अचित्त।

	अ	ब	क	ड
अ.	सचित्त निक्षेप	सचित्त आहार	दुष्पक्व आहार	अविनय
ब.	सचित्त आहार	सचित्त संबद्ध आहार	स्मृत्यनुपस्थापन	सचित्त विधान
क.	सचित्त विधान	सचित्त आहार	सचित्त संमिश्र आहार	परव्यपदेश
ड.	सचित्त आहार	सचित्त आहार	स्मृत्यनुपस्थापन	परव्यपदेश

▮

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-१५	अध्याय-८	सूत्र १-९	जमा करने की अंतिम तारीख १५/०९/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक । **(कुल ३० x ½ = १५ अंक)**

१ एकेन्द्रियों को ..... मिथ्यात्व होता है ।

अ. आभिगृहिक ब. अनाभोगिक क. सांशयिक ड. आभिनिवेशिक

२ रस बंध और स्थिति बंध ..... की सहायता से होते हैं ।

अ. अविरति ब. प्रकृति क. कषाय ड. मिथ्यात्व

३ तत्त्वार्थ सूत्र के भाष्य में मिथ्यात्व के संक्षेप में ..... और .... ऐसे दो भेद ही बताए हैं ।

अ. अभिगृहीत, अनभिगृहीत ब. आभिग्रहिक, सांशयिक

क. अनाभोगिक, अनाभिग्रहिक ड. आभिनिवेषिक, अनाभिग्रहिक

४ सांशयिक मिथ्यात्व ...... गुणस्थान में होता है ।

अ. पहले ब. चौथे क. तीसरे ड. पांचवे

५ नीम या गन्ने का रस स्वाभाविक हो तब .... होता है ।

अ. एक स्थानिक ब. द्विस्थानिक क. त्रिस्थानिक ड. चतु: स्थानिक

६ अव्याबाध सुख को रोके वह .... कर्म है ।

अ. नाम ब. वेदनीय क. गोत्र ड. अंतराय

७ ग्रंथ में आत्मा का सातवाँ गुण ..... बताया हैं ।

अ. अनंतवीर्य ब. अगुरूलघुता क. अनंतचारित्र ड. अक्षयस्थिति

८ निद्रावेदनीय आदि कर्म भी ..... आदि की तरह दर्शनावरण रूप है ।

अ. मतिज्ञान ब. चक्षुदर्शन आवरण क. श्रुतज्ञान ड. कषाय

९ सूक्ष्म दृष्टि से बंध के .... और .... यह दो ही मुख्य कारण हैं ।

अ. अविरति, कषाय ब. कषाय, योग क. योग, प्रमाद ड. मिथ्यात्व, योग

१० जीव के अतुल सामर्थ्य का .... प्रकृति से अभिभव हो गया है।
अ. वेदनीय ब. अंतराय क. नाम ड. आयुष्य

११ तत्त्वार्थसूत्र में ज्ञानावरण आदि आठ मूल प्रकृति के कुल ..... उत्तर भेद हैं।
अ. ९७ ब. ९९ क. १२० ड. १५८

१२ जीव ग्रहण किए पुद्‌गलों को आत्मा में ..... की तरह एकमेक करते हैं।
अ. दूध-घी ब. तेल-पाणी क. लोह-अग्नि ड. चूना-पानी

१३ प्रकृतिबंध से कर्म का ..... तय होता हैं।
अ. स्वभाव ब. रंग क. समूह ड. स्पर्श

१४ मिथ्याज्ञान यह ..... है।
अ. मिथ्यात्व ब. अविरति क. प्रमाद ड. योग

१५ आत्मा के स्वभाव में रमणता रूप चारित्र को दबाने वाला कर्म ..... है।
अ. वेदनीयकर्म ब. अंतरायकर्म क. मोहनीयकर्म ड. ज्ञानावरणीयकर्म

१६ निद्रा वेदनीय यह ..... कर्म प्रकृति का भेद है।
अ. वेदनीय ब. मोहनीय क. दर्शनावरणीय ड. विर्यांतराय

१७ ज्ञान के बोध में पाया जाता तारतम्य ..... को आभारी है।
अ. रसबंध ब. स्थिति क. प्रकृति ड. प्रदेश

१८ प्रमाद में ..... प्रमाद मुख्य है।
अ. अज्ञान ब. कषाय क. मिथ्याज्ञान ड. भक्तकथा

१९ आभिनिवेशिक मिथ्यात्व ..... को होता है।
अ. बौद्ध ब. जैन क. ब्राह्मण ड. हिंसक देव-देवी

२० प्रदेश बंध होते समय सब से अधिक परमाणु ..... कर्म के हिस्से में जाते हैं।
अ. वेदनीय ब. मोहनीय क. आयुष्य ड. गोत्र

२१ जिस कर्म के उदय से मानसिक सुख-दु:ख हो वह ..... कर्म।
अ. वेदनीय ब. मोहनीय क. आयुष्य ड. अंतराय

२२ किसी भी भौतिक अपेक्षा रहित सुख ..... सुख है।
अ. बनावटी ब. सहज क. तुच्छ ड. बेकार

२३ एक स्थानिक रस से आत्मा के गुण का अभिभव ..... हद तक होता है।
अ. अल्प ब. मध्यम क. तीव्र ड. उत्कृष्ट

२४ ..... कर्म के कारण हम शरीर धारी हैं ।

अ. मोहनीय ब. नाम क. आयुष्य ड. वेदनीय

२५ बैठे-बैठे नींद आए वह ..... है ।

अ. प्रचला ब. प्रचला प्रचला क. स्त्यानर्द्धि ड. निद्रा-निद्रा

२६ दो व्यक्ति को अशाता का उदय हो, एक को कम अनुभव हो, एक को अधिक, उसमें मुख्य कारण ..... की तरतमता है ।

अ. प्रकृति ब. ज्ञानावरणीय कर्म क. रस ड. नाम कर्म

२७ साधक को सर्व प्रथम ..... का नाश करना है ।

अ. प्रमाद ब. योग क. मिथ्यात्व ड. कषाय

२८ कर्मग्रंथ आदि ग्रंथो में ..... के सिवा चार का बतौर बंध हेतु निर्देश किया है ।

अ. प्रमाद ब. कषाय क. योग ड. अविरति

२९ अक्षय स्थिति गुण को रोककर जन्म-मरण का अनुभव कराने वाला कर्म ..... है ।

अ. वेदनीय ब. गोत्र क. आयुष्य ड. मोहनीय

३० कर्म के अणु का आत्मा के साथ संबंध हो तब कर्म के अणु की प्रकृतिओं में विभाजन तय होता है उसे और कर्म के अणु कितने समय आत्मा के साथ बद्ध रहेंगे उसका निर्णय हो उसे क्रमानुसार ..... कहते हैं ।

अ. प्रकृति बंध, स्थिति बंध ब. स्थिति बंध, प्रदेश बंध

क. प्रकृति बंध, प्रदेश बंध ड. प्रदेश बंध, स्थिति बंध

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१ नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य कौन सा है वह बताएं ।

अ. कदाग्रह रहित साधु अथवा श्रावक को विपरीत श्रद्धा रूप मिथ्यात्व होता है ।

ब. कम्मपयडी ग्रंथ में बंध के मिथ्यात्व, कषाय और योग यह तीन ही कारण बताए हैं ।

क. मनुष्य को यश और अपयश मिले वह गोत्र कर्म के आधीन है ।

ड. निद्रावेदनीय यह वेदनीय कर्म का उप-भेद है ।

३२ नीचे दिए कोष्ठक के संदर्भ में कौन सा विकल्प सही है वह कहें ।

	मिथ्यात्व		मुख्य कारण
१	आभिग्रहिक	A	विपरीत समझ तथा आग्रह
२	अनाभिग्रहिक	B	अहंकार
३	आभिनिवेशिक	C	समझ शक्ति का अभाव
४	सांशयिक	D	यथार्थ समझ का अभाव
५	अनाभोगिक	E	श्री सर्वज्ञ देव के ऊपर अविश्वास

अ. 1-A, 2-B, 3-C, 4-D, 5-E ब. 1-C, 2-B, 3-A, 4-D, 5-E

क. 1-B, 2-E, 3-C, 4-A, 5-D ड. 1-A, 2-D, 3-B, 4-E, 5-C

३३ नीचे कोष्ठक में कौन सा कार्य कौन से कषाय कराता है वह दिए हैं । उस में कौन सा विकल्प सही है?

	कौन सा कार्य		किस कषाय का
१	मिथ्यात्व	A	प्रत्याख्यानावरण
२	अविरति	B	अप्रत्याख्यानावरण
३	प्रमाद	C	अनंतानुबंधी
		D	संज्वलन
		E	अप्रत्याख्यानी और प्रत्याख्यानावरण

अ. 1-C, 2-B, 3-A ब. 1-C, 2-E, 3-D क. 1-C, 2-D, 3-E ड. 1-C, 2-B, 3-E

३४ नीचे दिए कोष्ठक में कौन सा कर्म आत्मा के किस गुण को रोकता है, उसमें कौन सा विकल्प सही है?

	कौन सा कर्म		आत्मा के किस गुण को रोके
१	ज्ञानावरणीय	A	स्वभाव में रमणता
२	दर्शनावरणीय	B	दर्शन
३	वेदनीय	C	ज्ञान
४	मोहनीय	D	अनंत अव्याबाध सुख

अ. 1-C, 2-B, 3-D, 4-A ब. 1-A, 2-D, 3-B, 4-C

क. 1-D, 2-A, 3-B , 4-C ड. 1-A, 2-B, 3-C, 4-D

३५ नीचे दिए कोष्ठक में कौन सा कर्म आत्मा के किस गुण को रोकता है उसमें कौन सा विकल्प सही है ।

	कौन सा कर्म		आत्मा के किस गुण को रोके
१	आयुष्य	A	अगुरु लघु
२	नाम	B	अक्षय स्थिति
३	गोत्र	C	अरूपी
४	अंतराय	D	अनंत वीर्य

अ. 1-A, 2-C, 3-D, 4-B   ब. 1-D, 2-A, 3-C, 4-B

क. 1-B, 2-C, 3-A, 4-D   ड. 1-A, 2-B, 3-C, 4-D

३६ नीचे कोष्ठक में दिए दृष्टान्त क्या समझाते हैं उसके दिए विकल्पो में कौन सा विकल्प सही है?

	क्या समझाने के लिए		शास्त्र में किसका दृष्टान्त है
१	शुभ कर्म का फल	A	मद्य-मदीरा
२	अशुभ कर्म का फल	B	मघु
३	प्रकृति बंध आदि चार भेद	C	नीम का रस
		D	गन्ने का रस
		E	मोदक

अ. 1-D, 2-C, 3-E   ब. 1-C, 2-E, 3-D   क. 1-C, 2-D, 3-E   ड. 1-A, 2-B, 3-E

३७ नीचे दिए कर्म की प्रकृति के भेदो की संख्या के कोष्ठक में कौन सा विकल्प सही है?

	मूल प्रकृति		उत्तर भेदो की संख्या
१	ज्ञानावरणीय कर्म	A	९
२	दर्शनावरणीय कर्म	B	२८
३	वेदनीय कर्म	C	५
४	मोहनीय कर्म	D	२

अ. 1-C, 2-A, 3-D, 4-B   ब. 1-C, 2-D, 3-B, 4-A

क. 1-D, 2-A, 3-B, 4-C   ड. 1-C, 2-D, 3-A, 4-B

३८ नीचे दिए कर्म की प्रकृति के भेद की संख्या के कोष्ठक में कौन सा विकल्प सही है?

	मूल प्रकृति		उत्तर भेदो की संख्या
१	आयुष्य कर्म	A	२
२	नाम कर्म	B	४२
३	गोत्र कर्म	C	४
४	अंतराय कर्म	D	५

अ. 1-C, 2-A, 3-D, 4-B ब. 1-C, 2-D, 3-B, 4-A

क. 1-D, 2-A, 3-B, 4-C ड. 1-C, 2-B, 3-A, 4-D

३९ बंध यानी?

अ. कार्मण वर्गणा के पुद्गलों का शरीर के साथ जुड़ने को बंध कहते हैं।

ब. कार्मण वर्गणा के पुद्गलों का आत्मा के साथ क्षीर-नीर की तरह एक होना वह बंध।

क. तैजस वर्गणा के पुद्गलों का आत्मा के साथ क्षीर-नीर की तरह एक होना वह बंध।

ड. आत्मा के कषाय का कारण वह बंध है।

४० प्रकृति बंध यानी?

अ. कर्माणु का आत्मा के किस गुण को रोकने का स्वभाव के निर्णय को प्रकृति बंध कहते हैं।

ब. बद्ध कर्माणु आत्मा के साथ कितने समय बद्ध रहेंगे उसका निर्णय वह प्रकृति बंध है।

क. प्राकृतिक रूप से आत्मा के साथ बंधे उसे प्रकृति बंध कहते हैं।

ड. आत्मा की प्रकृति के कारण जो बंध हो वह प्रकृति बंध।

४१ स्थिति बंध यानी?

अ. बद्ध कर्माणु आत्मा को कौन सी स्थिति प्रदान करेंगे उसका निर्णय वह स्थिति बंध।

ब. जिस परिस्थित में आत्मा के साथ कर्म का बंध हो उस परिस्थिति को स्थिति बंध कहते हैं।

क. बद्ध कर्माणु आत्मा के साथ कितने समय बद्ध रहेंगे उसका निर्णय वह स्थिति बंध।

ड. बद्ध कर्माणु में आत्मा के रस की स्थिति कैसी है उसका निर्णय वह स्थिति बंध।

४२ रस बंध यानी?

अ. कर्माणु द्वारा आत्मा के गुण रोकने की तरतमता के कारण वह क्या फल देंगे उसका निर्णय वह रस बंध ।

ब. कर्म बंध के समय आत्मा की प्रवृत्ति में कितने रस से कार्य किया है उसका निर्णय वह रस बंध हैं ।

क. आत्मा के रसिक गुण को रोकने वाला बंध रस बंध हैं ।

ड. रसपूर्ण परिस्थिति में होते कर्म बंध को रस बंध कहते हैं ।

४३ प्रदेश बंध यानी?

अ. कर्माणु के आत्मा के किस गुण को रोकने का स्वभाव के निर्णय को प्रदेश बंध कहते हैं।

ब. कर्म बंध के समय आत्मा की प्रवृत्ति किस प्रदेश में करने में आई है उसके आधार से जो कर्म बंधते हैं उसे प्रदेश बंध कहते हैं ।

क. शुभ प्रवृत्ति द्वारा होते बंध को प्रदेश बंध कहते हैं ।

ड. आठ प्रकार की प्रकृतिओ में कर्माणु का विभाजन वह प्रदेश बंध ।

४४ स्त्यानर्द्धि निद्रा यानी?

अ. जिस कर्म के उदय से चलते-चलते नींद आए वह स्त्यानर्द्धि निद्रा ।

ब. जिस कर्म के उदय से दिन में सोचा कार्य रातको नींद में कर सके वह स्त्यानर्द्धि निद्रा ।

क. जिस कर्म के उदय से बैठे-बैठे नींद आए वह स्त्यानर्द्धि निद्रा ।

ड. जिस कर्म के उदय से नींद से उठने में कष्ट पड़े वह स्त्यानर्द्धि निद्रा ।

४५ निद्रा-निद्रा यानी?

अ. नींद में से उठने में कष्ट पड़े ऐसी गहरी निद्रा आए वह निद्रा-निद्रा ।

ब. जिस कर्म के उदय से दिन में सोचा कार्य रात को नींद में कर सके वह निद्रा-निद्रा ।

क. जिस कर्म के उदय से चलते-चलते नींद आए वह निद्रा-निद्रा ।

ड. जिस कर्म के उदय से बैठे-बैठे नींद आए वह निद्रा-निद्रा ।

४६ निद्रा वेदनीय यानी?

अ. जिस कर्म के उदय से नींद से उठने में कष्ट पड़े ऐसी गहरी निद्रा आए वह निद्रा वेदनीय।

ब. जिस कर्म के उदय से उठने में कष्ट न पड़े, जल्दी से जाग सके वह निद्रा वेदनीय ।

क. जिस कर्म के उदय से चलते-चलते नींद आए वह निद्रा वेदनीय ।

ड. जिस कर्म के उदय से बैठे-बैठे नींद आए वह निद्रा वेदनीय ।

४७ प्रचला वेदनीय दर्शनावरण यानी?

अ. जिस कर्म के उदय से नींद से उठने में कष्ट पड़े ऐसी गहरी निद्रा आए वह प्रचला वेदनीय दर्शनावरण ।

ब. जिस कर्म के उदय से उठने में कष्ट न पड़े, जल्दी से जाग सके वह प्रचला वेदनीय दर्शनावरण ।

क. जिस कर्म के उदय से चलते-चलते नींद आए वह प्रचला वेदनीय दर्शनावरण ।

ड. जिस कर्म के उदय से बैठे-बैठे नींद आए वह प्रचला वेदनीय दर्शनावरण ।

४८ अनाभोगिक मिथ्यात्व यानी?

अ. अज्ञानता के योग से तत्त्वों के प्रति अश्रद्धा (श्रद्धा का अभाव अथवा विपरीत श्रद्धा) वह अनाभोगिक मिथ्यात्व ।

ब. श्री सर्वज्ञ देव ने कही बात की सत्यता के विषय में शंका करें वह अनाभोगिक मिथ्यात्व।

क. सभी दर्शन पर श्रद्धा रखने वाले जीव की तत्त्वों के प्रति अश्रद्धा वह अनाभोगिक मिथ्यात्व।

ड. तत्त्वों को जानते होने पर भी अभिमान आदि के कारण असत्य सिद्धांत को पकड़कर रखने वाले जीव की तत्त्वों के प्रति अश्रद्धा यानी अनाभोगिक मिथ्यात्व ।

४९ आभिनिवेशिक मिथ्यात्व यानी?

अ. अज्ञानता के योग से तत्त्वों के प्रति अश्रद्धा (श्रद्धा का अभाव अथवा विपरीत श्रद्धा) वह आभिनिवेशिक मिथ्यात्व ।

ब. श्री सर्वज्ञ देव ने कही बात की सत्यता के विषय में शंका करें वह आभिनिवेशिक मिथ्यात्व।

क. यथार्थ श्रद्धा के अभाव से सर्व दर्शन पर श्रद्धा रखने वाले जीव की तत्त्वों के प्रति अश्रद्धा वह आभिनिवेशिक मिथ्यात्व ।

ड. तत्त्वों को जानते होने पर भी अभिमान आदि के कारण असत्य सिद्धांत को पकड़ के रखने वाले जीव की तत्त्वों के प्रति अश्रद्धा यानी आभिनिवेशिक मिथ्यात्व ।

५० सांशयिक मिथ्यात्व यानी?

अ. अज्ञानता के योग से तत्त्वों के प्रति अश्रद्धा वह सांशयिक मिथ्यात्व ।

ब. श्री सर्वज्ञ देव ने कही बात की सत्यता के विषय में शंका करें वह सांशयिक मिथ्यात्व ।

क. यथार्थ श्रद्धा के अभाव से सभी दर्शन पर श्रद्धा रखने वाले जीव की तत्त्वों के प्रति अश्रद्धा वह सांशयिक मिथ्यात्व ।

ड. तत्त्वों को जानते होने पर भी अभिमान आदि के कारण असत्य सिद्धांत को पकड़ के रखने वाले जीव की तत्त्वों के प्रति अश्रद्धा यानी सांशयिक मिथ्यात्व ।

५१ अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व यानी?

अ. अज्ञानता के योग से तत्त्वों के प्रति अश्रद्धा वह अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व ।

ब. श्री सर्वज्ञ देव ने कही बात की सत्यता के विषय में शंका करें वह अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व।

क. यथार्थ श्रद्धा के अभाव से सभी दर्शन पर श्रद्धा रखने वाले जीव की तत्त्वों के प्रति अश्रद्धा वह अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व ।

ड. तत्त्वों को जानते होने पर भी अभिमान आदि के कारण असत्य सिद्धांत को पकड़ के रखने वाले जीव की तत्त्वों के प्रति अश्रद्धा यानी अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व ।

५२ प्रमाद यानी?

अ. आत्मा के स्वभाव से होती विरुद्ध प्रवृत्ति वह प्रमाद है ।

ब. आत्मा का स्वभाव प्राप्त करने हेतु आचरण में आती प्रवृत्ति यानी प्रमाद ।

क. आत्मा के स्वभाव में रहकर आचरण में आती प्रवृत्ति यानी प्रमाद ।

ड. केवली भगवंत द्वारा आचरण में आती प्रवृत्ति वह प्रमाद है ।

५३ नीचे आभिग्रहिक मिथ्यात्व और आभिनिवेशिक मिथ्यात्व में क्या भेद है उसके बताए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत है?

अ. आभिग्रहिक मिथ्यात्व विपरीत समझ जनित मिथ्यात्व है जब कि आभिनिवेशिक मिथ्यात्व अहंकार जनित मिथ्यात्व है ।

ब. आभिग्रहिक मिथ्यात्व में तत्त्व की सही समझ नहीं होती जब कि आभिनिवेशिक मिथ्यात्व में सही समझ होने पर भी अहंकार के कारण व्यक्ति अपनी पहले की मान्यता / प्ररूपणा बदलने को तैयार नहीं होता ।

क. आभिग्रहिक मिथ्यात्व वाले जैन के अलावा ईतर अन्य दर्शन को पाए होते हैं जब कि आभिनिवेशिक मिथ्यात्व वाले जैन दर्शन को पाए होते हैं ।

ड. आभिग्रहिक मिथ्यात्व में एकाध तत्त्व के प्रति ही विपरीत मान्यता होती है जब कि आभिनिवेशिक मिथ्यात्व में सभी तत्त्व के प्रति विपरीत मान्यता होती है ।

५४ नीचे शंका अतिचार और सांशयिक मिथ्यात्व में क्या भेद है उसके बताए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत है?

अ. अपनी मतिमंदता के कारण तत्त्व समझ न सकने से वस्तु का सही स्वरूप न समझ सके वह शंका अतिचार जब कि केवली भगवंत ने कहे जीव आदि तत्त्व की सत्यता के विषय में शंका वह सांशयिक मिथ्यात्व ।

ब. शंका अतिचार पहले उत्पन्न होता है जब कि शंका अतिचार में जीव यदि चौकन्ना न रहे तो सांशयिक मिथ्यात्व उत्पन्न होने की संभावना रहती है ।

क. शंका अतिचार वाला जीव चौथे गुणस्थानक में होता है जब कि सांशयिक मिथ्यात्व वाला जीव पहेले गुणस्थानक में होता है ।

ड. शंका अतिचार में जीव पाप कर्म नहीं बांधता जब कि सांशयिक मिथ्यात्व में जीव पाप कर्म बांधता है ।

५५ नीचे प्रकृति बंध और रस बंध में क्या भेद है उसके बताए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत है?

अ. प्रकृति बंध में कर्म आत्मा के किस गुण को दबाएंगे उसका निर्णय होता है जब कि रस बंध में वे गुण कितने हद तक दबेंगे उसका निर्णय होता है ।

ब. प्रकृति बंध के मूल आठ और उत्तर १२० भेद हैं जब कि रस बंध के चार भेद हैं ।

क. प्रकृति बंध में कर्म का स्वभाव यानी कि वह कर्म आत्मा के किस गुण को आवरण उत्पन्न करेंगे वह तय होता है जब कि रस बंध में उसके फल संबंधी तीव्रता/मंदता का निर्णय होता है ।

ड. प्रकृति बंध से आत्मा को कोई फल प्राप्त होता नहीं जब कि रस बंध से आत्मा को शुभ अशुभ फल प्राप्त होता है ।

५६ आस्रव और बंध का अलग वर्णन क्यों किया है यह समझाते नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य कौन सा है वह कहें ।

अ. आस्रव हो तब बंध न भी हो इसलिए दोनों का अलग वर्णन जरूरी है ।

ब. आस्रव के कारणों के क्रम में कोई खास हेतु नहीं होता परंतु बंध के कारणों के क्रम में उनके नाश के क्रम का हेतु होता है इसलिए अलग वर्णन जरूरी है ।

क. आस्रव और बंध यह दोनों कार्यरूप हैं । जो कार्य रूप होता है उसका कारण होना ही चाहिए यह सुगमता से समझाने दोनों का अलग विवरण जरूरी है ।

ड. आस्रव और बंध के कारण एक ही है फिर भी सामान्य व्यक्ति दोनों को बराबर समझ सके इसलिए दोनों तत्त्वों का अलग-अलग वर्णन किया है ।

५७ प्रकृति आदि चार भेदो को शास्त्र में मोदक के दृष्टान्त से समझाया है । उनमें नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य दृष्टान्त को सुगम है?

अ. जैसे अलग-अलग द्रव्य मोदक में डालने से मोदक वात, पित्त अथवा कफ को शांत करने के स्वभाव वाले बनते हैं वैसे स्थिति बंध आत्मा के गुणों को दबाने वाला बनता है ।

ब. जैसे अलग-अलग मोदक अलग-अलग दिन तक विकार आदि से टिक सकते हैं वैसे रस बंध में विविध प्रकार के कर्म भी अलग-अलग समय तक आत्मा के साथ बंधे रहते हैं ।

क. जैसे अलग-अलग मोदक की मिठास में तारतम्य होता है वैसे रस बंध के कारण अलग-अलग कर्म में फल देने में तारतम्य होता है ।

ड. जैसे भिन्न-भिन्न मोदक में कण-रूप प्रदेशों का प्रमाण भी न्यूनाधिक होता है वैसे किसी कर्म में कर्माणु अल्प तो किसी में अधिक ऐसे भिन्न-भिन्न कर्म में कर्माणु न्यूनाधिक होते हैं वह प्रकृति बंध को सूचित करता है ।

५८ नीचे दिए वाक्यों में सही वाक्य कौन सा है?

अ. आत्मा के अव्याबाध सुख को बाधित कर सुख दु:ख की अनुभूति उत्पन्न करने वाला मोहनीय कर्म है ।

ब. आत्मा को भौतिक वस्तु पाने, उसके राग-द्वेष सहित परिग्रह करने की बुद्धि उत्पन्न करने वाला ज्ञानावरणीय कर्म है ।

क. आत्मा मनुष्य भव में मनुष्य का देह धारण करता है वह आयुष्य कर्म के कारण होता है।

ड. आत्मा की अनंत शक्ति का अभिभव अंतराय कर्म के कारण होता है ।

५९ प्रमाद विषयक नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य अयोग्य है?

अ. मादक आहार ग्रहण करना, स्पर्शादि पांच इन्द्रियों के विषय का सेवन करना, क्रोधादि चार कषाय का सेवन करना, अति निद्रा करनी और चार विकथा (राज कथा, देश कथा, भक्त कथा और स्त्री कथा) यह पांच प्रकार के प्रमाद शास्त्र में बताए हैं ।

ब. प्रकारांतर से आठ प्रकार के प्रमाद कहे हैं वह अज्ञान, संशय, मिथ्याज्ञान, राग, द्वेष, मतिभ्रंश, धर्म का अनादर, योग दुष्प्रणिधान (अयोग्य प्रवृत्ति) हैं ।

क. प्रमाद द्वारा आत्मा को कर्म बंध होता है ।

ड. पंचसंग्रह, कर्मग्रंथ आदि में प्रमाद के अलावा चार कारण ही कर्म बंध के हेतु के रूप में बताए हैं वह योग्य नहीं ।

६० कर्म बंध के हेतु विषयक नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. हिंसा आदि पाप प्रवृत्ति से निवृत्ति का अभाव वह अहिंसा ।

ब. आलस, ऊबा अथवा भूल जाने के कारण अशुभ विचार अथवा प्रवृत्ति में कार्यरत रहना वह प्रमाद है ।

क. चार प्रकार से - क्रोध, मान, माया और लोभ से आत्मा की स्वभाव के विपरीत प्रवृत्ति वह कषाय है । मन, वचन और काया का व्यापार वह योग है ।

ड. तत्त्वों के प्रति विपरीत श्रद्धा अथवा श्रद्धा का अभाव वह मिथ्यात्व है । उसके पांच भेद हैं ।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक । (कुल १५ x २ = ३० अंक)

६१ नीचे लिखे वाक्यों में से कौन सा वाक्य बंध तत्त्व के संदर्भ में गलत नहीं?

अ. विश्रसा परिणाम से कार्मण वर्गणा ही जीव को चिपकती हैं ।

ब. किसी भी कारण के बिना चराचर जगत में रही कर्म सत्ता चेतन को आलिंगन करती है।

क. कार्मण वर्गणा के पुद्‌गलों का आत्मप्रदेशों के साथ कंचनोपलवत् क्षीर-नीरवत् तीव्र संबंध।

ड. जगत में अरूपी ऐसे अनंत कर्म पुद्‌गल दृष्टिगोचर होने से सहज रूप से जीव को लग कर रहते हैं ।

६२ नीचे लिखे वाक्यों में से किस विकल्प को उसके वर्णन के साथ अविरोध है (१) मेहुल वेद शास्त्र पढता है । उपनिषद को अनुसरता है । हिंदु मान्यता के मुताबिक जन्माष्टमी आदि पर्व की आराधना करता है । प्रतिदिन प्रतिक्रमण और सामायिक करता है । सिख रीति से भंडारा भी चलाता है । बाइबल के प्रति भी श्रद्धा है । कुरान पढ़कर भी श्रद्धा करता है । (२) चंचल गुस्सा कर के पीहर चली जाती है । अब जब स्मित बुलाएगा तब मैं ससुराल जाऊंगी नहीं तो संपूर्ण जीवन माता-पिता के घर ही रहूंगी पर मैं सामने चल कर तो नहीं जाऊंगी (३) माला स्नेह पूर्वक अपने पुत्र को खिलाती है । परंतु एक बार मलेरीया के कारण रसोई न बनाने से पुत्र साहिल कटु शब्द बोलकर 'अब से रोज होटल में खाऊँगा' ऐसा रुआब कर के निकल गया । (४) रमेश की मान्यता के मुताबिक जीव को जगत में स्वयं को विषय सुख प्राप्त हो ऐसे ही प्रयत्न करने चाहिए। जिनेश्वर भगवान का अन्य जीव को सुखी रखने स्वयं दुख सहन करना चाहिए' यह वचन उचित है या नहीं वह स्वयं समझ नहीं सकता । सुरेश को धर्म में रुचि है । बहुत ही भाव से वह व्रत पालन करता है । परंतु पुनर्जन्म है या नहीं उसके विषय में उसे शंका है क्योंकि जो भी जीव जन्म लेता है उसे पहले के भवों का कोई ज्ञान होता नहीं ।

अ. मेहुल कैसा घोर अभिग्रह मिथ्यात्वी है ।

ब. चंचल का जीव कैसा विषय लोलुप है ।

क. साहिल में कषाय का तीव्र परिणाम देखो ।

ड. रमेश को शंका अतिचार होने से वह पहले गुणस्थान में है और सुरेश को सांशयिक मिथ्यात्व होने से वह चौथे गुणस्थान में है ।

६३ नीचे लिखे वाक्यों में से कौन सा वाक्य बंध के भेदो के संबंध में सही नहीं?

अ. प्रकृति यानी स्वभाव । कर्म के जिन अणु का आत्मा के साथ संबंध हुआ वे अणु में कौन-कौन से अणु आत्मा के किन-किन गुणों को दबाएगा? आत्मा को किस तरह असर पहुँचाएगा? कर्माणु के स्वभाव-निर्णय को प्रकृति बंध कहते हैं ।

ब. कर्माणु का बंध हो तब वह आत्मा के किस गुण को दबाएगा यह निर्णय होने के बाद वह स्वभाव कब तक रहेगा, ऐसा कर्माणु में आत्मा को असर पहुँचाने के काल का निर्णय करना वह प्रदेश बंध है। कर्माणु का आत्मा के साथ संबंध होता है उस समय जैसे-जैसे वे कर्माणु में आत्मा के उन-उन गुणों को आवरण करने आदि का स्वभाव नियत होता है तब वे कर्म आत्मा में किस प्रकार असर करेंगे यह तय होता है।

क. उन-उन कर्मों में आत्मा के वे-वे गुणों को दबाने आदि का स्वभाव है। पर यह स्वभाव न्यून-अधिक रूप से होता है, समान नहीं। उदाहरण के लिए मिठास शक्कर, गुड आदि की अलग-अलग होती है, समान नहीं। किसी पदार्थ में अधिक मिठास होती है तो किसी पदार्थ में मंद मिठास होती है। इसे रस बंध कहते हैं।

ड. प्रदेश बंध के समय कर्मों में रस बंध आदि भी उत्पन्न होता है। कर्माणु का आत्मा के साथ संबंध होता है तब उन अणु का आठ कर्मों में न्यूनाधिक विभाजन होता है। नाम-गोत्र कर्म के हिस्से में समान कर्माणु विभाजित होते हैं।

६४ कर्म के आठ भेदो में से नीचे का कौन सा विकल्प गलत नहीं?

अ. १. जो कर्माणु आत्मा के ज्ञान गुण को दबाए वह दर्शनावरणीय कर्म।
   २. जो कर्माणु आत्मा के अनंत अव्याबाध सुख को रोककर बाह्य सुख-दुख देता है वह वेदनीय कर्म।
   ३. अनंत वीर्य गुण को दबाने वाला कर्माणु अंतराय कर्म।

ब. १. जो कर्माणु आत्मा के दर्शनगुण को दबाए वह ज्ञानावरणीय कर्म।
   २. जो कर्माणु स्व-रमणता रूप चारित्र गुण को दबाए वह मोहनीय कर्म।
   ३. अरूपी गुण को दबाकर मनुष्य आदि पर्यायों का अनुभव कराने वाला कर्माणु गोत्र कर्म।

क. १. अक्षय स्थिति गुण को रोककर जन्म-मरण का अनुभव कराने वाला कर्माणु आयुष्य कर्म।
   २. अगुरूलघुपना का अभिभव कर के उच्च कुल, नीच कुल का व्यवहार कराने वाला कर्माणु गोत्र कर्म।
   ३. जो कर्माणु चारित्र गुण को रोके वह चारित्र मोहनीय कर्म।

ड. १. जो कर्माणु अनंतवीर्य गुण को दबाए वह अंतराय कर्म।
   २. जो कर्माणु अक्षय स्थिति गुण को रोके वह नामकर्म।
   ३. जो कर्माणु क्षमा गुण को रोके वह मोहनीय कर्म।

६५ कंस तीव्र क्रोधी होने के कारण जो व्यक्ति उसके सामने आए उसे मार देता है । ऐसा कार्य उसने लगातार १२ महीनों तक जारी रखकर मोहनीय कर्म की ७० कोड़ाकोडी सागरोपम की स्थिति वाला कर्म बांधा । हिंसा करने के बाद वह आनंद से नाचता था । इस कारण कर्म दलिक आत्मा के साथ एक-मेक बन गए.... वैसे तो चारों प्रकार के कर्म बंध एक साथ होता है, फिर भी उपरोक्त वर्णन में मुख्य तया क्या सूचित करते हैं वह क्रम पूर्वक नीचे लिखे विकल्पों में से बताएं ।

अ. प्रदेशबंध रसबंध स्थितिबंध प्रकृतिबंध

ब. प्रकृतिबंध स्थितिबंध रसबंध प्रदेशबंध

क. स्थितिबंध प्रदेशबंध प्रकृतिबंध रसबंध

ड. रसबंध प्रदेशबंध स्थितिबंध प्रकृतिबंध

६६ सरिता और चेतन दोनों को केन्सर की व्याधि हुई, अशातावेदनीय कर्मोदय से दुख का अनुभव होने पर भी एक जीव अति प्रसन्नता से रहता है, और एक जीव अपार वेदना का अनुभव करता है । इसका कारण रस की तरतमता है । इसके मुताबिक नीचे के विकल्पों में से कौन सा विकल्प गलत नहीं है?

अ. अशुभ प्रकृति में तीव्र रस अल्प - शुभ फल अधिक मिले.

ब. अशुभ प्रकृति में मंद रस अधिक - अशुभ फल तीव्र मिले.

क. अशुभ प्रकृति में तीव्र रस अधिक - अशुभ फल अधिक मिले.

ड. अशुभ प्रकृति में मंद रस अल्प - शुभ फल मंद मिले.

६७ नीचे लिखे विकल्पों में से कर्म बंध के हेतु की अपेक्षा से कौन सा विकल्प विषम है?

अ. योग, अविरति, मिथ्यात्व, कषाय, प्रमाद

ब. अनाभोग, माया, धर्मध्यान, रसनेन्द्रिय, सत्य वचन योग

क. आभिग्रहिक, आर्तध्यान, मान, काययोग, चक्षु ईन्द्रिय

ड. लोभ, विकथा, संशय, असत्य मन योग, अव्रत

६८ नीचे के कोष्टक में अभिग्रह और अभिनिवेश मिथ्यात्व के हेतु भेद के अर्थ भेद बताए हैं । कौन सा विकल्प तात्विक नहीं?

अभिनिवेश	अभिग्रह
अ. जैन दर्शन प्राप्त करने वाले को ही अभिनिवेश मिथ्यात्व होता है । उदाहरण-जमालि	अ. जीव जैन दर्शन के सिवा कोई एक दर्शन सांख्य आदि के आग्रह वाला होता है ।

ब.	एक विषय में अथवा एकाध तत्त्व विषयक विपरीत मान्यता धराते हैं।	ब.	सभी तत्त्वों के प्रति विपरित मान्यता होती है।
क.	'हृदय से सही जानने पर भी मैंने स्वीकार किया है?' अथवा मैंने कहा है 'कैसे बदलूं ऐसा अहं भाव असत् कदाग्रह छोड़ता नहीं।'	क.	विपरीत बोध से हठाग्रह आभिग्राहिक मिथ्यात्व में हैं।
ड.	आत्म तत्त्व सत् है या नहीं।	ड.	सभी दर्शन सत् हैं ऐसी मान्यता धराते हैं।

६९ प्रकृति बंध के उत्तर भेदो की संख्या के अनुसार कौन सा विकल्प क्रम पूर्वक कर्म अनुसार विपर्यास नहीं?

अ. ४+१, ४, १+१, ४२, ९, ५, ४०-१२, २-०

ब. $३^{२}$, २+२, ७ X ६, ५, २, २, ५, ४२-१४

क. ४+१, $३^{२}$, २, ६०-३२, $२^{२}$, २८+१४, १+१, ५

ड. २, १४ X २, ३ X ३, ५, २१ X २, ४, ५, २

७० नीचे के विकल्पों में से कौन सा विकल्प विरोधाभास है?

अ. १. मतिज्ञान को रोके वह श्रुतज्ञानावरण प्रकृति नहीं।
 २. अवधिज्ञान को रोके वह अवधिज्ञानावरण प्रकृति है।

ब. १. श्रुतज्ञान को रोके वह श्रुतज्ञानावरण प्रकृति है।
 २. केवलज्ञान को रोके बह केवलज्ञानावरण प्रकृति है।

क. १. मन:पर्यवज्ञान को रोके वह मन:पर्यवज्ञानावरण प्रकृति है।
 २. श्रुतज्ञान को रोके वह मतिज्ञानावरण प्रकृति नहीं।

ड. १. मतिज्ञान को रोके वह मतिज्ञानावरण कर्माभाव प्रकृति है।
 २. श्रुतज्ञान को रोके वह श्रुतज्ञानावरण प्रकृति नहीं।

७१ नीचे के विकल्पों में से कौन सा विकल्प अवास्तविक नहीं?

अ. १. जिससे चक्षु द्वारा सामान्य रूप का ज्ञान नहीं कर सकते वह चक्षुदर्शनावरण।
 २. जिस कर्म के उदय से अवधिदर्शन रूप सामान्य ज्ञान नहीं हो सकता वह अवधिदर्शनावरण।

ब. १. मोना आँख के अभाव से सोने का मुकुट देख नहीं सकती वह अचक्षुदर्शनावरण ।
२. सीमा नाक से फूल की सुगंध लेती है उसका कारण चक्षुदर्शनावरण ।

क. १. जिस कर्म के उदय से अवधिदर्शनरूप विशेष ज्ञान नहीं हो सकता वह अवधिदर्शनावरण ।
२. जिससे केवलदर्शनरूप सामान्य ज्ञान नहीं हो सकता वह केवलदर्शनावरण ।

ड. १. जिससे स्पर्शनेन्द्रिय आदि क्रमश: चार इन्द्रिय तथा मन द्वारा सामान्य ज्ञान नहीं होता वह अचक्षुदर्शनावरण ।
२. वीणा रसगुल्लों से रसनेन्द्रिय पोषण करती है उससे मतिज्ञानावरण कर्म उपार्जन करती है ।

७२ (१) संगीता पाठशाला में पढ़ाने वाली नलिनी बहन की निंदा करती है । और खाते-खाते मोबाईल का उपयोग करती है । अतः वह सूत्र याद रख नहीं सकती । (२) एक बार चिन्टु अपने चाचा के घर गया । वहाँ उसे अचानक पेट में तीव्र दर्द हुआ । डाक्टर के पास जाँच कराते तीसरे स्टेज का केन्सर जान अधिक विलाप करता है । (३) रमण अपने मित्रों के साथ क्लब में जाकर धुम्रपान, मदिरा सेवन आदि करता है । वैसे ही भोग विलास में जीवन बिताता है । (४) क्रिना प्रतिदिन जिन वाणी श्रवण करती है परंतु आखरी आधा घंटा नींद आ जाने से प्रवचन सार पाती नहीं । उसमें किसे किस कर्म का उदय है उसका समावेश नीचे के किस विकल्प में घटता है?

	संगीता	चिन्टु	रमण	क्रिना
अ.	मोहनीयकर्म	दर्शनावरणीयकर्म	वेदनीयकर्म	ज्ञानावरणीयकर्म
ब.	दर्शनावरणीयकर्म	ज्ञानावरणीयकर्म	मोहनीयकर्म	वेदनीयकर्म
क.	ज्ञानावरणीयकर्म	वेदनीयकर्म	मोहनीयकर्म	दर्शनावरणीयकर्म
ड.	मोहनीयकर्म	दर्शनावरणीयकर्म	वेदनीयकर्म	ज्ञानावरणीयकर्म

७३ 'छ' जीव अधिक मेहनत करता है फिर भी १ गाथा रट नहीं सकता । अशुद्ध वर्ण उच्चारता है । देखकर भी पंक्ति समझ नहीं पाता । 'च' जीव को संसार में ऐसी विकट परिस्थिति उपस्थित होने पर भी विरक्त भाव जाग्रत नहीं होता, कितने ही मुनि भगवंत समझाने आए, फिर भी संसार निर्वेद प्रगट नहीं होता । 'झ' जीव 'मेरे दादा प्रधानमंत्री थे, मेरे पिताजी मुख्य व्यापारी थे और मैं अनेक संघों में ट्रस्टी हूँ । तु कौन है? मैं तुझे नहीं पहचानता । मेरी नजरों से दूर हो जा । तेरे जैसे मवाली बहुत ही आते रहते हैं' ऐसा कहता है । 'ञ' जीव धनवान होने पर भी साधु-

साध्वी भगवंत धर्मलाभ दें तो दरवाजा बंध कर देता है, भिखारीओं को तिरस्कृत कर दान दिए बिना निकाल देता है। गाय को घास भी नहीं खिलाता। स्वयं रूखा-सुखा भोजन करता है और घर के सदसयों को भी रूखा खिलाता है। फटे-मैले कपड़े पहनता है। शक्ति होने पर भी चौविहार नहीं करता।

नीचे के कोष्ठक में उन्हें किस कर्म का उदय है और कौन से गुण का अवरोध है इस विषय में अ, ब, क, ड, यह चार मेधावी विद्यार्थियों ने अपने विकल्प पसंद किए हैं। उनमें से किस विद्यार्थी का विकल्प गलत नहीं?

	छ	च	झ	ञ
अ.	अनंतवीर्य	ज्ञानगुण	अगुरुलघु	क्षायिकचारित्र
	अंतराय	ज्ञानावरणीय	गोत्र	मोहनीय
ब.	ज्ञानगुण	क्षायिकचारित्र	अनंतवीर्य	अगुरुलघु
	ज्ञानावरणीय	मोहनीय	अंतराय	गोत्र
क.	अगुरुलघु	चारित्ररमणता	अनंतवीर्य	ज्ञान
	गोत्रकर्म	मोहनीय	अंतराय	ज्ञानावरणीय
ड.	ज्ञानगुण	चारित्ररमणता	अगुरुलघु	अनंतवीर्य
	ज्ञानावरणीय	मोहनीय	गोत्र	अंतराय

७४ नीचे के चार विकल्पों में से किस विकल्प में रसबंध और स्थितिबंध की मुख्यता से कषाय का उदय दिखता है?

अ. १. रेश्मा को लाल रंग बहुत पसंद है।
   २. कमल अतिशय हर्षोल्लास पूर्वक जुआ खेलता है और उसमें ही सुख मानता है।
   ३. स्मिता अव्रत सेवन करती है।

ब. १. बाहुबली मान रूप गज पर चढ़कर लंबे समय तक घोर साधना करते हैं।
   २. पूर्व भव में मल्लीकुमारी का जीव छ मित्रों को ठगकर तप कर के स्त्री वेद बांधता है।
   ३. अर्जुन माली आवेश में आकर पत्नी के प्रति राग के कारण प्रतिदिन सात हत्या करता है। (जब तक यक्ष का शरीर में वास था)

क. १. मालती रोज बगीचे में फूलों की खुशबू लेने जाती है।
   २. मीनू कदाग्रह का त्याग नहीं करती।
   ३. प्रेक्षा प्रायः कर वचन का दुरुपयोग करती है।

ड. १. चिलाती पुत्र सुष्मा के प्रति आसक्त होने से उसका वध करती है ।
२. हाथी स्पर्शनेन्द्रिय में लीन बन प्राण गवाता है ।
३. रेखा धनवान की बेटी है फिर भी मैले-जीर्ण वस्त्र परिधान करती है ।

७५ नीचे के विकल्पों में कुछ विधान दिए हैं । साथ ही कौन सा विधान किसका दृष्टान्त है वह दर्शाया है । उनमें कौन सा विकल्प सुसंगत है?

अ. १. घेवर १५ दिवस तक कल्प्य है । - स्थिति बंध
२. मोदक में अल्प घी, अल्प चिकनापन होता है । - रस बंध
३. मेधाने ३०० ग्राम पेढे बनाए । - प्रदेश बंध
४. अधिक मिठाई वापरने से डायाबिटीस होता है । - प्रकृति बंध

ब. १. सूंठ की गोली अनुकूल प्राय: है । - प्रदेश बंध
२. सुष्मा ने १ किलो गोंद की पेथ बनाई हैं । - प्रकृति बंध
३. बूंदी के लड्डू १ महीने तक स्वादिष्ट रहते है । - स्थिति बंध
४. नीम का रस देसी गुड़ डालने से मीठा लगता है । - रस बंध

क. १. माधवी ५ किलो वेफर बनाती है । - प्रदेश बंध
२. चंदन लगाने से शरीर में गरमी लगती है । - प्रकृति बंध
३. बरास का प्रयोग करने से चींटी चली जाती है । - प्रदेश बंध
४. कोकीला ने पीना के साथ तीन वर्ष तक बैर रखा । - स्थिति बंध

ड. १. शांति सात दिन तक मलाई रखकर घी बनाती है । - स्थिति बंध
२. श्रीखंड खाने से मीन्टु को पेट में तीव्र जलन हुई । - रस बंध
३. लड्डू में घी अधिक डालने से रूक्ष बन जाते हैं । - प्रकृति बंध
४. १ कीलो आटे में से २०० ग्राम के ७ लड्डू बनते हैं । - प्रदेश बंध

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-१६	अध्याय-८	सूत्र १०-२६	जमा करने की अंतिम तारीख ता. ३०/०९/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक । (कुल ३० x ½ = १५ अंक)

१ जो आस्रव के कारण हैं वही ...... के कारण हैं ।

अ. नोकषाय ब. बंध क. मिथ्यात्व ड. स्वभाव

२ गति की प्राप्ति ...... के आधार से होती है ।

अ. आयुष्य बंध ब. परिणति क. आचार ड. कर्मोदय

३ कषाय की स्थिति ..... के आश्रय से है ।

अ. कषाय की तीव्रता-मंदता ब. जीव के परिणाम क. काल ड. निमित्त

४ संज्वलन कषाय के उदय से ..... चारित्र प्राप्त नहीं होता ।

अ. सामायिक ब. सर्वविरति क. यथाख्यात ड.विशुद्ध

५ जिनेश्वरों ने ..... चारित्र का पालन करने का उपदेश दिया है ।

अ. अल्प अतिचार वाले ब. निरतिचार क. अतिचार सहित ड. वीतराग

६ ..... जल रेखा समान है ।

अ. संज्वलन क्रोध ब. संज्वलन मान क. प्रत्याख्यान माया ड. संज्वलन लोभ

७ प्रत्याख्यानावरण ..... को रोकता है ।

अ. देशविरति ब. सर्वविरति क. श्रद्धा ड. यथाख्यात चारित्र

८ अप्रत्याख्यान कषाय का उदय अधिक से अधिक ..... तक रहता है ।

अ. १२ माह ब. १५ दिन क. चार माह ड. यावज्जीव

९ कषाय की परिणति अति मंद हो तो ..... गति का आयुष्य बंध होता है ।

अ. देव ब. नारक क. मनुष्य ड. तिर्यंच

१० जंतु-काष्ठ की तरह एक-मेक संयोग वह ..... है ।

अ. संघात ब. बंधन क. शरीर ड. संस्थान

११ नाम कर्म की ६७ प्रकृति ..... की अपेक्षा से है ।

अ. सत्ता ब. मात्र बंध क. बंध, उदय, उदीरणा ड. मात्र उदय निर्जरा

१२ किसी भी जीव को किसी भी समय अपने ..... के मुताबिक कर्म के प्रदेश बंधते हैं ।

अ. कषाय ब. योग क. कर्म की परिणति ड. कर्म

१३ कर्मग्रंथ आदि ग्रंथों में ..... पुण्य प्रकृति बताई है ।

अ. ४५ ब. ४२ क. ३७ ड. ५८

१४ ऊँगली आदि ..... हैं ।

अ. अंग ब. उपांग क. अंगोपांग ड. शरीर

१५ ..... शरीर को अंगोपांग नहीं होते ।

अ. औदारिक ब. वैक्रिय क. तेजस ड. आहारक

१६ जीव मृत्यु पाकर दूसरे भव में जाए तब दूसरे आदि समय में आकाश प्रदेश की श्रेणी अनुसार गमन करने में जो कर्म सहायक है वह ..... नाम कर्म ।

अ. गति ब. आनुपूर्वी क. विहायोगति ड. पर्याप्त

१७ विरूद्ध ज्ञान ..... कर्म से होता है ।

अ. ज्ञानावरणीय ब. मोहनीय क. आयुष्य ड. गोत्र

१८ बंध की अपेक्षा से मोहनीय कर्म की २६ प्रकृति ही है, क्योंकि बंध के समय ..... बंधते नहीं ।

अ. मिश्रमोहनीय ब. नपुंसकवेद क. सम्यक्त्व मोहनीय ड. मिश्र मोहनीय और सम्यक्त्व मोहनीय

१९ सूर्य विमान के पृथ्वीकाय जीव को ..... नामकर्म का उदय होता है ।

अ. उद्योत ब. आतप क. रक्तवर्ण ड. उष्ण

२० कर्म का विपाक उनके अपने ..... के मुताबिक होता है ।

अ. वर्ण ब. नाम क. रस ड. प्रदेश

२१ अनंतानुबंधी कषाय के उदय के समय जीव मृत्यु पाए तो ..... में जाता है ।

अ. नरक ब. तिर्यंच क. देव ड. मनुष्य

२२ नपुंसक वेद ..... समान है ।

अ. तृण की अग्नि ब. नगर के दाह क. गोबर की अग्नि ड. काष्ठ के दाह

२३ जिसमें नाभि के उपरी अवयव की रचना असमान और निचले अवयव की रचना समान होती हैं वह ..... संस्थान है।

अ. न्यग्रोधि ब. सादि क. कुब्ज ड. वामन

२४ इन्द्र विमान के पृथ्वीकाय जीव को ..... नाम कर्म का उदय होता है।

अ. पराघात ब. आतप क. उपघात ड. उद्योत

२५ एक आवलिका यानी ..... समय।

अ. संख्यात ब. असंख्यात क. अनंत ड. दो

२६ बड़े संग्रह को शास्त्र की भाषा में ..... कहते हैं।

अ. प्रदेश ब. स्कंध क. परमाणु ड. अणु

२७ ..... यह दर्शन मोहनीय का भेद नहीं।

अ. मिथ्यात्व मोहनीय ब. सम्यक्त्व मोहनीय

क. अनंतानुबंधी कषाय ड. मिथ्यात्व मोहनीय और सम्यक्त्व मोहनीय दोनों

२८ ..... कषाय मंद हैं।

अ. अनंतानुबंधी ब. अप्रत्याख्यान क. प्रत्याख्यान ड. संज्वलन

२९ ..... लोभ यह बैलगाड़ी के धुरी की मशि समान है।

अ. अप्रत्याख्यान ब. संज्वलन क. प्रत्याख्यान ड. अनंतानुबंधी

३० नोकषाय का विपाक ..... के आधार से है।

अ. कषाय ब. मिथ्यात्व क. उपयोग ड. प्रमाद

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१ मोहनीय कर्म यानी?

अ. जो कर्म तत्त्वों के प्रति मोह उत्पन्न कराए वह मोहनीय कर्म।

ब. जो कर्म तत्त्व में श्रद्धा उत्पन्न होने न दे अथवा उत्पन्न हुई श्रद्धा में दूषण उत्पन्न करें और तदनुसार प्रवृत्ति करने न दे वह मोहनीय कर्म।

क. जो कर्म आत्मा को लाभ हो ऐसी प्रवृत्ति के प्रति मोह उत्पन्न कराए वह मोहनीय कर्म।

ड. जो कर्म मोह का नाश करे वह मोहनीय कर्म।

३२ दर्शन मोहनीय कर्म यानी?

अ. जो कर्म जीव आदि तत्त्व में श्रद्धा उत्पन्न न होने दे या उनमें भ्रम पैदा करे वह दर्शन मोहनीय।

ब. जो कर्म प्रभु के दर्शन करने का मोह जगाए वह दर्शन मोहनीय ।

क. जो कर्म जैन दर्शन के प्रति मोह जगाए वह दर्शन मोहनीय ।

ड. जो कर्म तत्त्व का दर्शन कराए, तत्त्वों के प्रति मोह जगाए वह दर्शन मोहनीय ।

३३ सम्यक्त्व मोहनीय कर्म यानी?

अ. जो कर्म सम्यक्त्व पाने की प्रवृत्ति के प्रति मोह उत्पन्न कराए वह सम्यक्त्व मोहनीय ।

ब. जो कर्म उत्पन्न हुए सम्यक्त्व में मोह पैदा करे वह सम्यक्त्व मोहनीय ।

क. जो कर्म उत्पन्न हुए सम्यक्त्व में भ्रम पैदा करे वह सम्यक्त्व मोहनीय ।

ड. जो कर्म उत्पन्न हुए सम्यक्त्व के प्रति के मोह का नाश करे वह सम्यक्त्व मोहनीय ।

३४ मिथ्यात्व मोहनीय कर्म यानी?

अ. जो कर्म सुदेव, सुगुरु और सुधर्म के प्रति मोह उत्पन्न कराए वह मिथ्यात्व मोहनीय ।

ब. जिस कर्म से जीव को मिथ्यात्व के प्रति मोह जगे वह मिथ्यात्व मोहनीय ।

क. जिस कर्म से मिथ्यात्व का नाश हो वह मिथ्यात्व मोहनीय ।

ड. जिस कर्म से जीव को तत्त्व की यथार्थ श्रद्धा न हो यानी सुदेव, सुगुरु और सुधर्म को न माने और कुदेव, कुगुरु और कुधर्म के प्रति आस्था रखे वह मिथ्यात्व मोहनीय ।

३५ मिश्र मोहनीय कर्म यानी?

अ. जो कर्म तत्त्व ही सत्य है ऐसी श्रद्धा न होने दे और साथ ही वह असत्य है ऐसी अश्रद्धा भी न होने दे वह मिश्र मोहनीय ।

ब. जो कर्म सम्यक्त्व पाने और सुदेव, सुगुरु और सुधर्म के प्रति मोह उत्पन्न करे वह मिश्र मोहनीय ।

क. जिस कर्म से तत्त्व और पाप कर्म की निवृत्ति मोहनीय लगे वह मिश्र मोहनीय ।

ड. जो कर्म सम्यक्त्व पाने और मिथ्यात्व का त्याग करने में रस जगाए वह मिश्र मोहनीय ।

३६ चारित्र मोहनीय कर्म यानी?

अ. जो कर्म जीव को पापकर्म की निवृत्ति में भ्रमित करें और चरित्र में अतिचार अथवा अनाचार लगाए वह चारित्र मोहनीय ।

ब. जो कर्म सम्यक्त्व पाने और मिथ्यात्व का त्याग करने में प्रवृत्त करे वह चारित्र मोहनीय।

क. जिस कर्म से जीव को चारित्र पाने का मोह उत्पन्न हो वह चारित्र मोहनीय ।

ड. जो कर्म चारित्र पालने में मोह का नाश कराए वह चारित्र मोहनीय ।

३७ कषाय मोहनीय कर्म यानी?

अ. जिस कर्म से आत्मा के कषाय दूर हो वह कषाय मोहनीय।

ब. जिस कर्म से संसार का परिभ्रमण वृद्धि पाए वह कषाय मोहनीय।

क. जिस कर्म से संसार के परिभ्रमण का नाश हो वह कषाय मोहनीय।

ड. जो कर्म कषाय का नाश हो ऐसी प्रवृत्ति में कार्यरत बनाए वह कषाय मोहनीय।

३८ अनंतानुबंधी कषाय यानी?

अ. जिस कषाय के उदय से मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का उदय हो वह अनंतानुबंधी कषाय।

ब. जिस कषाय के उदय से मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का नाश हो वह अनंतानुबंधी कषाय।

क. जिस कषाय के उदय से सम्यक्त्व मोहनीय कर्म का सर्वथा नाश हो वह अनंतानुबंधी कषाय।

ड. जिस कषाय के उदय से जीव को चारित्र में अतिचार रूप दूषण लगे वह अनंतानुबंधी कषाय।

३९ अप्रत्याख्यान कषाय यानी?

अ. जिस कषाय के उदय से जीव को सर्वविरति का अभाव हो यानी कि जीव सभी पाप से विराम न पाए वह अप्रत्याख्यान कषाय।

ब. जिस कषाय के उदय से जीव को चारित्र में अतिचाररूप दूषण लगे वह अप्रत्याख्यान कषाय।

क. जिस कषाय के उदय से मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का उदय हो वह अप्रत्याख्यान कषाय।

ड. जिस कषाय के उदय से जीव को प्रत्याख्यान का अभाव हो यानी कि जीव पाप से आंशिक विराम न पाए वह अप्रत्याख्यान कषाय।

४० प्रत्याख्यान कषाय यानी?

अ. जिस कषाय के उदय से जीव को सर्वविरति का पालन करने का भाव हो यानी कि जीव को सभी पाप विराम करने की इच्छा हो वह प्रत्याख्यान कषाय।

ब. जिस कषाय के उदय से जीव को सर्वविरति का अभाव हो यानी कि जीव सभी पाप से विराम न पाए वह प्रत्याख्यान कषाय।

क. जिस कषाय के उदय से जीव को चारित्र में अतिचार रूप दूषण न लगे वह प्रत्याख्यान कषाय।

ड. जिस कषाय के उदय से सम्यक्त्व मोहनीय कर्म का सर्वथा नाश हो वह प्रत्याख्यान कषाय।

४१ संज्वलन कषाय यानी?

अ. जिस कषाय के उदय से जीव को सर्वविरति का पालन करने का भाव हो यानी कि जीव को सभी पाप विराम करने की इच्छा हो वह संज्वलन कषाय ।

ब. जिस कषाय के उदय से जीव को चारित्र पाने की इच्छा न हो वह संज्वलन कषाय ।

क. जिस कषाय के उदय से जीव को चारित्र में अनाचार रूप दूषण लगे वह संज्वलन कषाय।

ड. जिस कषाय के उदय से जीव को चारित्र में अतिचार रूप दूषण लगे वह संज्वलन कषाय।

४२ नोकषाय यानी?

अ. जिसके द्वारा कषायों का नाश हो वह नोकषाय ।

ब. जो कषाय के सहचारी बनकर कषाय के विपाकानुसार अपना फल दे वह नोकषाय ।

क. आत्मा में कषायो का न होना वह नोकषाय ।

ड. जिस प्रवृत्ति में राग और द्वेष का अभाव होता है वह नोकषाय ।

४३ पुरुष वेद मोहनीय कर्म यानी?

अ. जिस कर्म के उदय से स्त्री के साथ मैथुन सेवन की इच्छा उत्पन्न हो वह पुरुष वेद मोहनीय।

ब. जिस कर्म के उदय से पुरुष के साथ मैथुन सेवन की इच्छा उत्पन्न हो वह पुरुष वेद मोहनीय।

क. जिस कर्म के उदय से पुरुष को दर्द उत्पन्न हो वह पुरुष वेद मोहनीय ।

ड. जिस कर्म के उदय से पुरुष को वेद शास्त्र पढ़ने की इच्छा हो वह पुरुष वेद मोहनीय ।

४४ नपुंसक वेद मोहनीय कर्म यानी?

अ. जिस कर्म के उदय से स्त्री-पुरुष दोनों के साथ मैथुन सेवन की इच्छा उत्पन्न हो वह नपुंसक वेद मोहनीय ।

ब. जिस कर्म के उदय से स्त्री को पुरुष के साथ और पुरुष को स्त्री के साथ मैथुन सेवन की इच्छा उत्पन्न हो वह नपुंसक वेद मोहनीय ।

क. जिस कर्म के उदय से स्त्री-पुरुष दोनों के साथ मैथुन त्याग की इच्छा उत्पन्न हो वह नपुंसक वेद मोहनीय ।

ड. जिस कर्म के उदय से स्त्री-पुरुष दोनों के साथ मैथुन सेवन की इच्छा का नाश हो वह नपुंसक वेद मोहनीय ।

४५ विपाकज निर्जरा यानी?

अ. जिस कर्म की स्थिति का परिपाक होने से स्वाभाविक रूप से कर्म उदय में आए बिना आत्मा से अलग पड़ जाए वह विपाकज निर्जरा ।

ब. जिस कर्म की स्थिति का परिपाक होने से स्वाभाविक रूप से कर्म उदय में आकर अपना फल देकर आत्मा से अलग पड़ जाए वह विपाकज निर्जरा ।

क. जिस कर्म की स्थिति का परिपाक होने से स्वाभाविक रूप से कर्म उदय में आकर अपना फल दिए बिना आत्मा से अलग पड़ जाए वह विपाकज निर्जरा ।

ड. जिन कर्मों की स्थिति का परिपाक न हुआ हो ऐसे कर्म उदय में लाकर उसका फल भोगकर आत्मा से अलग किया जाए वह विपाकज निर्जरा ।

४६ अविपाकज निर्जरा यानी?

अ. जिस कर्म की स्थिति का परिपाक होने से स्वाभाविक रूप से कर्म उदय में आकर अपना फल देकर आत्मा से अलग पड़ जाए वह अविपाकज निर्जरा ।

ब. जिस कर्म की स्थिति का परिपाक होने से स्वाभाविक रूप से कर्म उदय में आए बिना आत्मा से अलग पड़ जाए वह अविपाकज निर्जरा ।

क. जिस कर्म की स्थिति का परिपाक होने से स्वाभाविक रूप से कर्म उदय में आए बिना आत्मा से अलग पड़ जाए वह अविपाकज निर्जरा ।

ड. जिस कर्म की स्थिति का तप आदि द्वारा परिपाक कराके, कर्म उदय में लाकर अपना फल देने सन्मुख करने द्वारा आत्मा से अलग करने में आए वह अविपाकज निर्जरा ।

४७ पर्याप्ति यानी?

अ. आत्मा को पुद्गल ग्रहण करने से मिलती शाता वह पर्याप्ति ।

ब. पुद्गल के उपचय से उत्पन्न हुए उन-उन पुद्गलों को ग्रहण करने की और उन पुद्गलों के परिणमन में कारणभूत शक्ति वह पर्याप्ति ।

क. आत्मा को जरूरी हो उतने भोजन की सामग्री मिलना वह पर्याप्ति ।

ड. भोजन ग्रहण किए बाद आत्मा को तृप्ति का जो अहसास हो वह पर्याप्ति ।

४८ किस कषाय का उदय निरंतर अधिक से अधिक कितने काल तक रहता है उसके विषय में नीचे दिए कोष्ठक के लिए कौन सा विकल्प सही है?

१.	अनंतानुबंधी	A	एक दिन
२.	प्रत्याख्यानावरण	B	एक पक्ष (१५ दिवस)
३.	अप्रत्याख्यान	C	एक माह
४.	संज्वलन	D	१२ माह
		E	संपूर्ण जीवन
		F	४ (चार) माह

अ. 1. E 2. F 3. D 4. B   ब. 1. E 2. B 3. A 4. C

क. 1. E 2. C 3. D 4. A   ड. 1. E 2. C 3. D 4. B

नीचे दिए कोष्ठक में हर कषाय की तुलना किसके साथ करने में आई है वह दर्शाया हैं। उसके आधार से प्रश्न ४९, ५०, ५१, ५२ के विकल्पों में सही विकल्प कौन सा है?

१.	संज्वलन क्रोध	A	वस्त्र में लगा कृमि रंग (कीरमजी का रंग)
२.	संज्वलन मान	B	नेतर
३.	संज्वलन माया	C	वस्त्र में लगा दीये का काजल
४.	संज्वलन लोभ	D	वस्त्र में लगा हल्दी का रंग
५.	अप्रत्याख्यान क्रोध	E	पर्वत में पड़ी खरोंच
६.	अप्रत्याख्यान मान	F	पृथ्वी में पड़ी खरोंच
७.	अप्रत्याख्यान माया	G	रेती में खिंची रेखा
८.	अप्रत्याख्यान लोभ	H	जल में पड़ी रेखा
९.	प्रत्याख्यानावरण क्रोध	I	काष्ठ
१०.	प्रत्याख्यानावरण मान	J	दावानल
११.	प्रत्याख्यानावरण माया	K	काष्ठ की अग्नि
१२.	प्रत्याख्यानावरण लोभ	L	अस्थि (हड्डी)
१३.	अनंतानुबंधी क्रोध	M	घन बांस के मूल
१४.	अनंतानुबंधी मान	N	भेड़ के सिंग
१५.	अनंतानुबंधी माया	O	बैल आदि के मूत्र की धारा
१६.	अनंतानुबंधी लोभ	P	इन्द्रधनुष की रेखा
		Q	पत्थर के स्तंभ
		R	वस्त्र में लगी बैलगाड़ी की धुरी की मषि

४९ अ. 1. K 2. B 3. P 4. D   ब. 1. H 2. B 3. P 4. D
क. 1. H 2. B 3. J 4. D   ड. 1. H 2. B 3. P 4. I

५० अ. 5. Q 6. L 7. M 8. K   ब. 5. K 6. L 7. N 8. M
क. 5. F 6. L 7. M 8. E   ड. 5. F 6. L 7. N 8. K

५१ अ. 9. H 10. I 11. O 12. C   ब. 9. G 10. J 11. O 12. C
क. 9. G 10. I 11. O 12. C   ड. 9. G 10. I 11. L 12. C

५२ अ. 13. L 14. Q 15. M 16. A   ब. 13. F 14. Q 15. M 16. A
क. 13. B 14. Q 15. N 16. A   ड. 13. E 14. Q 15. M 16. A

नीचे दिए कोष्ठक में हर कर्म की उत्कृष्ट स्थिति दर्शाई है । उसके आधार से प्रश्न ५३, ५४ के विकल्पों में सही विकल्प कौन सा है?

	कर्म		उत्कृष्ट स्थिति
१.	ज्ञानावरणीय	A	३३ सागरोपम
२.	दर्शनावरणीय	B	३० सोगरोपम
३.	वेदनीय	C	२० कोडाकोडी सागरोपम
४.	मोहनीय	D	२० सागरोपम
५.	आयुष्य	E	२० कोडाकोडी पल्योपम
६.	नाम	F	७० कोडाकोडी सागरोपम
७.	गोत्र	G	२० कोडाकोडी पल्योपम
८.	अंतराय	H	३० कोडाकोडी सागरोपम

५३ अ. 1. B 2. C 3. A 4. F   ब. 1. A 2. B 3. C 4. F
क. 1. H 2. H 3. H 4. F   ड. 1. H 2. F 3. H 4. F

५४ अ. 5. H 6. C 7. C 8. H   ब. 5. A 6. C 7. C 8. H
क. 5. A 6. H 7. C 8. H   ड. 5. A 6. G 7. C 8. G

नीचे दिए कोष्ठक में हर कर्म का फल दर्शाया है । उसके आधार से प्रश्न ५५, ५६ के विकल्पों में सही विकल्प कौन सा है?

	कर्म		विपाक – फल
१.	ज्ञानावरणीय	A	दानादि का अभाव
२.	दर्शनावरणीय	B	तत्त्वों पर श्रद्धा का तथा विरति का अभाव आदि
३.	वेदनीय	C	शरीर आदि की प्राप्ति
४.	मोहनीय	D	उच्च या नीच कुल में जन्म
५.	आयुष्य	E	दर्शन का (सामान्य ज्ञान का) अभाव
६.	नाम	F	विशेष बोध (५ ज्ञान) न हो
७.	गोत्र	G	नरक गति आदि जीवन की प्राप्ति
८.	अंतराय	H	दु:ख का अनुभव और सुख भी परिणाम से दु:ख देने वाला बने

५५ अ. 1. F 2. E 3. H 4. B   ब. 1. A 2. C 3. H 4. B
क. 1. E 2. F 3. B 4. H   ड. 1. F 2. A 3. C 4. B

५६ अ. 5. B 6. D 7. C 8. A ब. 5. G 6. D 7. C 8. A

क. 5. G 6. A 7. C 8. D ड. 5. G 6. C 7. D 8. A

नीचे दिए कोष्ठक में हर कर्म को क्या उपमा दी गई है वह दर्शाया है । उसके आधार से प्रश्न ५७, ५८ के विकल्पों में सही विकल्प कौन सा है?

	कर्म		उपमा
१.	ज्ञानावरणीय	A	कुलाल (कुम्हार)
२.	दर्शनावरणीय	B	बेड़ी
३.	वेदनीय	C	भंडारी
४.	मोहनीय	D	चित्रकार
५.	आयुष्य	E	आँख पर बंधे पट्टे
६.	नाम	F	प्रतिहार (द्वारपाल)
७.	गोत्र	G	सूर्य
८.	अंतराय	H	चन्द्र
		I	मदिरा
		J	मधु से लिप्त असि की तीक्ष्ण धार

५७ अ. 1. A 2. I 3. J 4. F ब. 1. F 2. E 3. J 4. I

क. 1. E 2. F 3. I 4. J ड. 1. E 2. F 3. J 4. I

५* अ. 5. B 6. D 7. F 8. A ब. 5. A 6. D 7. F 8. C

क. 5. B 6. D 7. A 8. C ड. 5. B 6. F 7. A 8. C

५९ नीचे के वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. वज्रऋषभनाराच - मर्कटबंध वाले यानी विशिष्ट प्रकार के बंधन वाले दो हड्डी के ऊपर पट्टे के समान लिपटी तीसरी हड्डी और उन तीनों को भेदकर रही चौथी हड्डी इस प्रकार का अत्यंत मजबूत शरीर ।

ब. ऋषभनाराच - मर्कटबंध वाले दो हड्डी के उपर पट्टे के समान लिपटी तीसरी हड्डी इस प्रकार के बंधन वाले शरीर ।

क. अर्धनाराच - केवल मर्कटबंध वाले दो हड्डी वाले बंधन वाले शरीर ।

ड. कीलिका - मर्कट बंध के बिना मात्र कील से बद्ध ऐसे बंधन वाले शरीर ।

६० नीचे के वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. कर्म की मूल आठ प्रकृतिओं के कुल ९७ भेद बताए हैं। उनमें १४ पींड प्रकृति के ५१ भेद और बंधन नाम कर्म के १० भेद जोड़कर कुल १५८ भेद होते हैं।

ब. केवल मोहनीय और आयुष्य कर्म के सिवा हर कर्म के भेद बंध में, उदय और उदीरणा में और सत्ता में एक ही बताए हैं।

क. नाम कर्म के बंध, उदय और उदीरणा में ६७ और सत्ता में १०३ भेद बताए हैं। मोहनीय कर्म के सत्ता, उदय और उदीरणा में २८ भेद बताए हैं।

ड. सम्यक्त्व मोहनीय और मिश्र मोहनीय का बंध नहीं होने से बंध में २६ भेद बताए हैं।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक। (कुल १५ x २ = ३० अंक)

६१ नीचे के विकल्पों में से कौन सा विकल्प मोहनीय कर्म के परिप्रेक्ष्य में गलत है?

अ. आत्मा को भ्रमित करे वह मोहनीय, स्वभाव का नाश करने वाला, जो आठ कर्म का महाराजा है। महाबलवान, दुर्जेय है, तत्त्वानुसारी विचार करे पर विपरीत आचरण आचरता है।

ब. जीवादि तत्त्वों के प्रति अश्रद्धा रखे, प्रगट हुई आस्था में विकलता पाए, विवेक दृष्टि में दूषण लगाए, भव राग प्रबल होता है। आस्था शून्य होती है।

क. हिंसादि पापाचरण में लीन बनकर आचरण में (सत्) लांछन लगाए, आस्रवों में लीन बनाकर अशुभ प्रवृत्ति सेवन कर तीव्र भाव से कर्म बंध करें।

ड. विरूद्ध धर्म माने नहीं, कुगुरु के प्रति अस्वीकृत मति रखे, व्यसन से दूर रहकर, हर्षोल्लास पूर्वक जिन चैत्य जुहारे, आचार-विचार में बिना भ्रम के तथा भाव पूर्वक धर्म क्रिया करे।

६२ चारित्र मोहनीय के भेद संबंधी कोष्ठक में कौन सा विकल्प असंगत नहीं?

	कषाय मोहनीय		नोकषाय मोहनीय
अ.	कोड़े का लाभ वह कषाय, संसार वृद्धि में अहेतुक।	अ.	कषाय का अभाव, १६ भेद हैं कषाय सहचारी है।
ब.	खुश्बु मिलन को बहुत चिढ़ाती है। पर खुद अस्त-व्यस्त होकर घुमने जाती है।	ब.	मेना अपने बालकों पर पढ़ाते समय गुस्सा करके चांटा मारती है।

क. मौली को गर्भपात होने से रुदन करती है। यह समाचार अन्य द्वारा जाने।

क. रमा को रमेश अपसंद है क्योंकि उसका बोयफ्रेंड तारक है। सदैव चटिंग करती है।

ड. भवपरंपरा की वृद्धि यानी कषाय। 'मीनल तुझे शादी में पीहर नहीं जाना है, ऐसा कोई निमंत्रण होता है? तु गई तो हंमेशा के लिए संबंध रद होगा' ऐसा मीनल के पति रमेश ने उसे कहा।

ड. कचरे की पेटी पड़ी होने से दुर्गंध आती है, नॉनवेज की मार्केट है। ऐसी विषम/विकट परिस्थिति में किस तरह रहा जाए ? इसलिए घर बदलो।

६३ नीचे कषाय मोहनीय के तीव्र-मंद भेदो में कौन सा भेद अकल्प्य नहीं?

	अप्रत्याख्यान	प्रत्याख्यानावरण	संज्वलन	अनंतानुबंधी
अ.	तीव्रतर	तीव्र	मंदतर	मंद
ब.	तीव्र	मंद	मंदतर	अधिक तीव्रतर
क.	मंदतर	तीव्रतर	मध्यममंद	तीव्र
ड.	अल्प मंदतर	अल्पमंद	सहजतीव्र	तीव्रतम

६४ नीचे कषाय कोष्ठक में कौन सा विकल्प अघटित है?

	कषाय	गुणघातक	स्थिति	उदय में मृत्यु हो तो कौन सी गति पाए
अ.	संज्वलन	यथाख्यात	चारित्र	१५ दिवस देव
ब.	अप्रत्याख्यान	देशविरति	१ वर्ष	तिर्यंच
क.	प्रत्याख्यानावरण	चारित्र	चार माह	मनुष्य
ड.	अनंतानुबंधी	निरतिचार	१ वर्ष	देव

६५ नीचे का कौन सा विकल्प सुघटित नहीं?

	कषाय प्रकार	दृष्टान्त (क्रोध)	दृष्टान्त (मान)	दृष्टान्त (माया)	दृष्टान्त (लोभ)
अ.	संज्वलन	पानी में रेखा	नेतर	इन्द्रधनुष रेखा	हल्दी का रंग
ब.	प्रत्याख्यानावरण	रेत में रेखा	काष्ट का स्थंभ	गोमूत्रधारा	काजल
क.	अप्रत्याख्यान	पृथ्वी में चीर	हड्डी	भेडिए के सींग	बैलगाड़ी की मषि
ड.	अनंतानुबंधी	पर्वत में चीर	पत्थर का स्थंभ	छोटे पेड़ के मूल	कीरमजी का रंग

६६ नीचे के वाक्यों में से कौन सा वाक्य अतथ्य है?

अ. भय मोहनीय कर्म के उदय से भय उत्पन्न होता है । दुर्गंछा करने से जुगुप्सा दोष प्रगट होता है । मस्ती-मजाक करने से हास्य मोहनीय कर्म का बंध होता है ।

ब. स्त्री के साथ विषय सेवन की अभिलाषा वह पुरूष वेदोदय, स्त्री पुरुष दोनों के सेवन का अभिलाष वह नपुंसक वेद मोहनीय ।

क. स्त्री वेद लकड़ी की अग्नि तुल्य है जो जल्दी सुलगे नहीं, स्त्री वेदोदय अक्षिप्र होती है । तृण अग्नि शीघ्र प्रदीप्त हो और शांत भी शीघ्र हो, घास की ज्वाला के समान पुरूष वेदोदय है ।

ड. कषाय का विपाक मंद तो नोकषाय का विपाक भी मंद, नोकषाय का परिणाम तीव्र तो कषाय का फल भी तीव्र, कषाय के उदय में प्रयोजन न बने वह नोकषाय ।

६७ नीचे के विकल्पों में से नरायु बांधने वाला कौन?

अ. 'क' नाम का व्यक्ति मांसाहार करता है, धन का लालची है, जीव का घात करता है । मदिरा पीकर, जुआ खेलकर, पर स्त्री सेवन करता है, स्व-पत्नी को अतिशय मारता है, और एक दिन ऐसा आता है दारू में मस्त पत्नी, पुत्र सब को मार देता है ।

ब. 'ख' नाम का व्यक्ति ज्ञानी का बहुमान करता है, जयणा पूर्वक रसोई बनाता है, जिन वाणी का श्रवण करता है । दान, शील, तप, भाव चार प्रकार के धर्म का सेवन करता है । कापोत लेश्या परिणामी है । आज्ञा (जिन और गुरु की) स्वीकारता है फिर भी आरंभ, समारंभ करता है और होटल में जाता है ।

क. 'ग' नाम का पुरुष तस्करी करता है, कूट से गकत तोल माप करता है । झूठ बोलता है, आहार लोलुप है । नील/कापोत लेश्या परिणामी है । अपने घरे रच-मच के रहता है, ससुराल में दुःखी दिल से रहता है । परिग्रह का शौक़ीन है । चर्च, मस्जीद में भी जाता है।

ड. धर्म श्रवण करता है, प्रभु भक्ति भाव विभोर बनकर करता है, शुभ लेश्या वाला जीव है। कल्याण मित्र की संगत करता है, दानादि धर्म आचरता है, सम्यग्दर्शन की विराधना वाला है ।

६८ दो कोलम में टेली होता कौन सा विकल्प निर्दोष है?

च. पिंड प्रकृति - १४	छ. त्रस दशक - १०
ज. प्रत्येक प्रकृति - ८	झ. स्थावर दशक - १०

अ. च - देवगति, एकेन्द्रिय, उपघात

छ - मधुर स्वर, स्वच्छंदी, योग्य अवयव

ब. झ - शुभ, निर्माण, औदारिक संघातन

ज - हलका-भारी रहित, तिरस्कार, काला वस्त्र

क. ज - सूक्ष्म, तीर्थंकर, पराघात

च - नरक का शरीर, हड्डी का बांध, सूर्य का प्रकाश

ड. छ - कीर्ति, दृष्टिगोचर, १ शरीर में १ जीव

ज - तीर्थंकर बनना, शरीर हलका या भारी नहीं लगता

६९ नीचे लिखी संख्या नाम कर्म के अवांतर भेदो की हैं। उनमें कौन सा विकल्प बंधन के पांच की गिनती की जाए तो असंगत नहीं?

अ. ४०+२ ; १२+८+२०+२ ; २३+२०+१०+२५+५+२०

ब. ५०x२-३३ ; १००-६०+२१+३२ ; २४+४०-२२

क. ३१x३ ; ५०x२-७ ; १०+५+५+१३+५०+२+८

ड. ६x७+२५ ; ४०x२-१३ ; ३००/१०x३-२३

७० निम्नलिखित विकल्पों में से नाम कर्म की अपेक्षा से कौन सा विकल्प अकथ्य नहीं?

अ. १. जीवन में प्रसिद्धि दिलाए वह अपयश।

२. स्वयोग्य पर्याप्ति अपूर्ण रहे वह पर्याप्त।

ब. १. जंतु-काष्ठ की तरह एक-मेक संयोग वह संघातन।

२. शरीर में हड्डी की विशिष्ट रचना वह संघयण।

क. १. जीव मृत्यु पाकर परभव में ऋजु-वक्र गति से जाए वह आनुपूर्वी।

२. आगिया (खद्योत) को आतप का उदय है। सूर्य विमान के पृथ्वीकाय जीव को आतप नाम कर्म।

ड. १. आकाश में गति करना वह विहायोगति दो प्रकार से - शुभाशुभ।

२. मधुर वचनों का उच्चारण करने पर भी अग्रहण हो वह अनादेय नामकर्म।

७१ कौन सा विकल्प अनिर्दोष नहीं?

अ. सज्जन को अरबपति जान लाखों गरीब आशा पूर्वक दान लेने आते हैं। दान यह कर्म क्षय का कारण है ऐसा जानने पर भी सेवा दान करने का अभाव वह भोगांतरायकर्म।

ब. मम्मण सेठ मात्र तेल-चोला का आहार करते थे, वहोराने के बाद आहार संज्ञा कर्मोदय से आहार वापस लेने गए वह उपभोगांतराय ।

क. ढंढण मुनि मासक्षमण के पारणे पर प्रतिदिन गोचरी वहोरने निकलते हैं, परंतु गोचरी प्राप्त होती नहीं वह लाभांतराय कर्म ।

ड. धनदत्त सेठ को लक्ष्मी देवी कहती है 'अब मैं बिदाई लेती हूँ. अगर ६ माह तक दान दिया जाए तो मैं नहीं जाऊँगी'. तो भी धनदत्त के भाव जाग्रत नहीं हुए वह वीर्यातराय ।

७२ नीचे स्थिति बंध संबंधी कोष्ठक में कौन सा विकल्प असम्यक् नहीं?

	प्रकृति	उत्कृष्टस्थिति	जघन्य स्थिति
अ.	मोहनीय	७० को.को.सा.	अंतर्मुहूर्त
	अंतराय	३० को.को.सा.	१२ मुहूर्त
ब.	ज्ञान. दर्शन.	१००/१०x७ को.को.सा.	अंतर्मुहूर्त
	वेदनीय	३० को. को. सा.	१२ मुहूर्त
क.	आयुष्य	३३ सा.	२५६ आवलिका
	वेदनीय	३० को.को. सा.	१२ मुहूर्त
ड.	नाम-गोत्र	१०x३ को.को.सा.	८ मुहूर्त
	मोहनीय	७० को.को.सा.	अंतर्मुहूर्त

७३ कौन सा विकल्प सूत्र के अनुसार अयथार्थ नहीं?

	कार्य	फल	उपमा
अ.	मेहुल ने स्वाध्याय किया	सामान्य ज्ञानाभाव	आंख पर पट्टी जैसा
	स्वाती देव-दर्शन करती है	विघ्नकर्ता बने	प्रतिहार जैसा
ब.	वह जीव मरकर देव हुआ	गति, संघतण संस्थान आदि विकृति मिले	बेडी जैसा
	मुझे दर्शन करने है	कुंडलपुर जाना पड़े	कुम्हार जैसा
क.	मुन्ना राग-द्वेष करता है	वीतरागता प्रगट न हो	दारू तुल्य
	महेश जिनवाणी सुनता नहीं	विशेष बोध का अभाव	आंख पर पट्टी जैसा
ड.	मैं दीक्षा की मंजूरी नहीं दूंगा	विघ्नकर्ता	मधु से लिप्त तलवार
	मेतार्य चंडाल है	सुख वेदन करता है	शृंखला समान

७४ नीचे के विकल्पों में से कौन सा विकल्प अकल्प्य है?

अ. नाम यानी स्वभाव । स्वभाव के मुताबिक ही कर्म के नाम हैं । वे स्वभाव के मुताबिक कर्मफल देते हैं ।

ब. प्रत्येक समय जीव का वीर्य/उत्साह व्यापार अल्प/अधिक रहता है । न्यून योग से अल्प पुद्गल ग्रहण करता है ।

क. अस्थित-गति वाले कार्मण वर्गणा के पुद्गलों का ही ग्रहण होता है । इसलिए अबंध गतिमान पुद्गलों का होता है ।

ड. रीना मटकी उठाती है तब हथेली के भाग में विशेष रूप व्यापार होता है । उसकी अपेक्षा से कलाई के भाग में अल्प व्यापार होता है । समग्र आत्म प्रदेशों से श्रृंखलावत् जीव कर्म पुद्गल ग्रहण करता है ।

७५ कर्म संबंधी नीचे दिया कौन सा विकल्प गलत नहीं?

	शुभ	अशुभ
अ.	साता, उच्च गोत्र, हास्य, रति, मनुष्य	सम्यक्त्व मोहनीय, देवआयु, नीच गोत्र
ब.	अशाता, अरति-शोक, तिर्यंच आयु	पंचेंद्रिय, प्रशस्त गति, मनुष्य आयु, उच्चगोत्र
क.	श्वेत, सुरभि, तीर्थंकर	उपघात, साधारण, एकेन्द्रिय, तिर्यंच
ड.	तैजस-कार्मण शरीर, नाराच, न्यग्रोध, तैजस संघातन	पुरूषवेद, देवानुपूर्वि, साता, नपुंसकवेद

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-१७	अध्याय-९	सूत्र १-७	जमा करने की अंतिम तारीख ता. १५/१०/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक । **(कुल ३० x ½ = १५ अंक)**

१ सर्व संवर ..... गुणस्थान में होता है ।

अ. चौदहवें ब. बारहवें क. दसवें ड. आठवें

२ शरीर में तथा साधना के उपकरणों में ममत्व का अभाव यह .... धर्म है ।

अ. त्याग ब. आकिंचन्य क. ब्रह्मचर्य ड. शौच

३ शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के विचार का त्याग यह .... है ।

अ. वचन गुप्ति ब. म का गुप्ति क. एषणा समिति ड. इर्या समिति

४ संवर का स्वरूप, संवर के हेतु, तथा संवर से होते सुख आदि का चिंतन करना यह .... भावना है ।

अ. आस्रव ब. निर्जरा क. संवर ड. लोक

५ मद और मान का निग्रह यह .... है ।

अ. क्षमा ब. आर्जव क. मार्दव ड. संयम

६ .... केवल प्रवृत्ति स्वरूप है ।

अ. समिति ब. गुप्ति क. निर्जरा ड. मोक्ष

७ .... प्रवृत्ति-निवृत्ति उभय स्वरूप है ।

अ. आस्रव ब. संवर क. मोक्ष ड. गुप्ति

८ युग यानी बैलगाड़ी में जोड़ने वाली उध / धोंसरी ... हाथ प्रमाण होती है ।

अ. ५ ब. ३ क. २ ड. ४

९ क्षमा ...... प्रकार की है ।

अ. चार ब. पांच क. तीन ड. छ

१० अव्रत, ईन्द्रिय, कषाय और क्रिया यह चार .... हैं ।

अ. संवर ब. निर्जरा क. आस्रव ड. संसार

११ बाह्य और अभ्यंतर उपधि में मूर्छा का त्याग यह .... धर्म है ।

अ. त्याग ब. आकिंचन्य क. संयम ड. तप

१२ भगवान ने क्षमा रखने को कहा है ऐसे जिनवचन को याद कर के क्षमा रखना वह .... क्षमा है।

अ. वचन ब. विपाक क. अपकार ड. उपकार

१३ अपनी आत्मा के सिवा जड-चेतन पदार्थ अन्य है ऐसा विचार यह .... भावना है ।

अ. एकत्व ब. संसार क. अन्यत्व ड. अशुचि

१४ तप में ...... की प्रधानता है । और गुप्ति आदि में .... की प्रधानता है ।

अ. संवर, निर्जरा ब. निर्जरा, संवर क. मोक्ष, संवर ड. निर्जरा, आस्रव

१५ ..... युक्त योग निग्रह सम्यक् कहते हैं ।

अ. ज्ञान-श्रद्धा ब. त्याग क. तप ड. क्षमा

१६ निरवद्य और स्पष्ट आदि गुणों से युक्त वचन बोलना वह .... समिति है ।

अ. इर्या ब. एषणा क. भाषा ड. पारिष्ठापनिका

१७ मैथुन वृत्ति का त्याग यह .... धर्म है ।

अ. मार्दव ब. ब्रह्मचर्य क. आकिंचन्य ड. आर्जव

१८ ..... भावना भाने से श्रद्धा गुण प्रगट होता है ।

अ. धर्मस्वाख्यात ब. बोधिदुर्लभ क. संसार ड. अनित्य

१९ तप से .... होता/होती/होते है/हैं ।

अ. संवर ब. निर्जरा क. मोक्ष ड. निर्जरा और संवर

२० शरीर और ईन्द्रियों को तपाने द्वारा आत्मविशुद्धि करना यह .... धर्म है ।

अ. सत्य ब. संसार क. शौच ड. तप

२१ शरीर में अपवित्रता का विचार करना यह .... भावना है ।

अ. आस्रव ब. अशुचित्व क. संसार ड. अशरण

२२ संयम टिकाए रखने दोष रहित आहार ग्रहण करना वह .... है ।

अ. एषणासमिति ब. कायगुप्ति क. आकिंचन्य ड. त्याग

२३ आस्रव का निरोध यह .... है ।

अ. संवर ब. निर्जरा क. मोक्ष ड. अशुभ

२४ गुप्ति, समिति धर्म, अनुप्रेक्षा, परीषह जय और चारित्र से .... होता/होती है ।

अ. संवर ब. निर्जरा क. मोक्ष ड. अशुभ गति

२५ मुक्ति मार्ग की दुर्लभता का चिंतन .... भावना है ।

अ. धर्मस्वाख्यात ब. बोधिदुर्लभ क. संसार ड. अनित्य

२६ संवर के हेतु, संवर के स्वरूप आदि का चिंतन .... है ।

अ. एषणासमिति ब. मनोगुप्ति क. संवर भावना ड. सम्यग्दर्शन

२७ अष्ट प्रवचन माता यानी .... का पालन ।

अ. मन वचन काया की गुप्ति और पांच प्रकार की क्षमा

ब. पांच प्रकार की समिति और मन वचन काया की सरलता

क. पांच प्रकार की क्षमा और मन वचन काया की सरलता

ड. मन वचन काया की गुप्ति और पांच प्रकार की समिति

२८ संसार में अपना कोई नहीं ऐसा विचार करना वह .... है ।

अ. एषणा समिति ब. काय गुप्ति क. अशरण भावना ड. आकिंचन्य

२९ .... का समावेश .... में हो जाता है फिर भी बाल जीवों को शीघ्र और स्पष्ट बोध के लिए अलग वर्णन करने में आया है ।

अ. परीषह, समिति ब. गुप्ति, समिति क. समिति, गुप्ति ड. भावना, परीषह

३० सर्वोत्कृष्ट क्षमा यानी .... क्षमा है ।

अ. विपाक ब. वचन क. धर्म ड. उपकार

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१ नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य कौन सा है?

अ. समिति प्रवृत्ति स्वरूप है जब कि गुप्ति निवृत्ति स्वरूप है ।

ब. उत्तम शौच धर्म यह शरीर की शुद्धता का पालन करना सूचित करता है ।

क. उत्तम संयम यानी केवल मन, वचन, काया की अशुभ प्रवृत्ति की निवृत्ति ।

ड. स्वाभाविक रूप से आत्मा में क्षमा के संस्कार उत्पन्न हो वह धर्म क्षमा ।

नीचे दिए कोष्ठक के आधार पर प्रश्न ३२ और ३३ के सही विकल्प कहें ।

	यतिधर्म		उसका स्वरूप
१.	क्षमा	A:-	ममत्व का अभाव
२.	मार्दव	B:-	मैथुन वृत्ति का त्याग
३.	आर्जव	C:-	लोभ का अभाव
४.	शौच	D.	क्रोध का अभाव
५.	आकिंचन्य	E.	माया का अभाव
६.	ब्रह्मचर्य	F.	ऋजुता का अभाव
		G:-	मान का अभाव

३२ अ. 1. B 2. D 3. E   ब. 1. D 2. B 3. E

क. 1. D 2. G 3. E   ड. 1. E 2. G 3. B

३३ अ. 1. B 5. A 6. C   ब. 4. C 5. A 6. B

क. 4. C 5. B 6. A   ड. 4. D 5. A 6. B

३४ गुप्ति यानी?

अ. मन वचन, काया इन तीन योगों का सम्यक निग्रह यह गुप्ति ।

ब. सम्यक् ज्ञान-दर्शन रहित मन, वचन, काया इन तीन योगों का निग्रह यह गुप्ति ।

क. शास्त्र निषिद्ध योगों में प्रवृत्ति और शास्त्र विहित योगों से निवृत्ति यह गुप्ति ।

ड. अन्य के विषय की बातों को गुप्त रखना वह गुप्ति ।

३५ समिति यानी?

अ. सम्यक् प्रकार से योगों की निवृत्ति यह समिति ।

ब. शास्त्रोक्त विधि के मुताबिक निवृत्ति यह समिति ।

क. शास्त्रोक्त विधि के मुताबिक प्रवृत्ति यह समिति ।

ड. सम=समता, इति=प्रवृत्ति. ऐसे समता पूर्वक की हुई प्रवृत्ति यह समिति ।

३६ सत्य यानी?

अ. ज़रूरत पड़े तब ही, स्व-पर को हितकारी, प्रमाणोपेत आदि गुणों से युक्त वचन बोलना वह सत्य ।

ब. ज़रूरत पड़े तब पर को हितकारी, प्रमाणोपेत आदि गुणों से युक्त वचन बोलना वही सत्य ।

क. स्व-पर को हितकारी, प्रमाणोपेत आदि गुणों से युक्त वचन ज़रूरत न हो तो भी बोलना वह सत्य ।

ड. स्व-पर को अहितकारी, दोष युक्त वचन का त्याग वह सत्य ।

३७ तप यानी?

अ. शरीर और इन्द्रियों को तपाए वह तप ।

ब. ठंडी में अग्नि जलाकर शरीर को शाता देना वह तप ।

क. शरीर और इन्द्रियों को तपाने द्वारा आत्म विशुद्धि करना वह तप ।

ड. शरीर और इन्द्रियों को कष्ट देना वह तप ।

३८ आकिंचन्य धर्म यानी?

अ. शरीर और साधना के उपकरणों में कम हद तक ममत्व का भाव यह आकिंचन्य धर्म ।

ब. शरीर और साधना के उपकरणों में अधिक हद तक ममत्व का भाव यह आकिंचन्य धर्म।

क. शरीर और साधना के उपकरणों से मुक्त होने की भावना भानी यह आकिंचन्य धर्म ।

ड. शरीर और साधना के उपकरणों में ममत्व का अभाव यह आकिंचन्य धर्म ।

३९ क्षमा यानी?

अ. शारीरिक अथवा मानसिक अनुकूलता के कारण क्रोध का होता त्याग यह क्षमा ।

ब. शारीरिक अथवा मानसिक प्रतिकूलता के समय क्रोध न करना, आए क्रोध को शांत करना यह क्षमा ।

क. सभी जीवों के साथ मैत्री करने का निर्धार यह क्षमा ।

ड. स्व का अहित करने वाले व्यक्ति को कटु वचन न कहना वह क्षमा ।

४० मार्दव यानी?

अ. मद और मान का निग्रह यानी मार्दव ।

ब. मद और मान का संग्रह यानी मार्दव ।

क. विनयी व्यक्ति के प्रति बहुमान जागृत हो वह मार्दव ।

ड. अविनयी व्यक्ति के प्रति अबहुमान जागृत न हो वह मार्दव ।

४१ आर्जव यानी?

अ. मन, वचन, काया की शास्त्र निषिद्ध प्रवृत्ति वह आर्जव ।

ब. भगवान के पास आत्मिक शांति की अर्ज करना वह आर्जव ।

क. मन, वचन, काया की प्रवृत्ति में सरलता वह आर्जव ।

ड. मन, वचन, काया की शास्त्र विहित प्रवृत्ति वह आर्जव ।

४२ संयम यानी?

अ. मन, वचन, काया की सभी प्रवृत्ति का संपूर्ण त्याग वह संयम।

ब. मन दंड, वचन दंड अथवा काया दंड यह तीन दंड से निवृत्ति यह संयम।

क. मुख्य रूप से मात्र काया की अशुभ से निवृत्ति और शुभ में प्रवृत्ति में वह संयम।

ड. इष्ट वस्तु पाने में विलंब होता हो तब समता पूर्वक राह देखना वह संयम।

४३ त्याग यानी?

अ. बाह्य या अभ्यंतर उपधि को छोड़ना वह त्याग।

ब. केवल जरूरी हो उतनी ही उपधि रखना वह त्याग।

क. बाह्य या अभ्यंतर उपधि की मूर्छा तोड़ना वह त्याग।

ड. कषायों को मंद करना वह त्याग।

४४ ब्रह्मचर्य यानी?

अ. इष्ट वस्तु में राग और अनिष्ट वस्तु में द्वेष इन दोनों का त्याग करने पूर्वक आत्मा में रमणता करना यह ब्रह्मचर्य।

ब. अन्य व्यक्ति के साथ संबंध न रखना वह ब्रह्मचर्य।

क. जगत के रचयिता ब्रह्मा की तरह रमणता करना वह ब्रह्मचर्य।

ड. राग और द्वेष रहित मैथुन की प्रवृत्ति करना वह ब्रह्मचर्य।

४५ अपहृत्य संयम यानी?

अ. जरूरी वस्तु मर्यादा रहित ग्रहण करना और बिन जरूरी वस्तु का यथाशक्ति त्याग करना यह अपहृत्य संयम।

ब. अन्य जीवों का अपहरण होते रोकना वह अपहृत्य संयम।

क. बिन जरूरी वस्तु अथवा जीव युक्त भिक्षा आदि का त्याग यह अपहृत्य संयम।

ड. बिन जरूरी वस्तु मर्यादा में ग्रहण करना यह अपहृत्य संयम।

४६ प्रेक्ष्य संयम यानी?

अ. आंखो से निरीक्षण करने पूर्वक बैठना आदि क्रिया करना वह प्रेक्ष्य संयम।

ब. इन्द्रियों के इस्तेमाल का त्याग करना वह प्रेक्ष्य संयम।

क. भविष्य में संयम लेने की भावना रखना वह प्रेक्ष्य संयम।

ड. परभव में सुख मिलेगा ऐसी अपेक्षा के साथ संयम पालना वह प्रेक्ष्य संयम।

४७ संसार भावना यानी?

अ. राग-द्वेष के कारण कर्म का संयोग होते जीव संसार में परिभ्रमण करता है यह भाना वह संसार भावना।

ब. संसार कैसा सुंदर है, हर जीव संसार में सुखी हो ऐसी भावना भाना वह संसार भावना।

क. शादी कर के अपनी वंश को आगे बढ़ाने की भावना भाना वह संसार भावना।

ड. संसार के सभी जीव दु:ख से रहित हो, सभी जीवों का कल्याण हो ऐसी भावना वह संसार भावना।

४८ अनित्य भावना संबंधित नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. आत्मा नित्य है। मृत्यु के बाद भी वही आत्मा अन्य गति में उत्पन्न होती है, इस प्रकार परंपरा चलती है।

ब. आत्मा का सुख नित्य नहीं. देव को भी अधिक से अधिक छ माह तक ही लगातार सुख रहता है। तत्पश्चात दुख अवश्य आता ही है।

क. अनित्य भावना से बाह्य पदार्थों पर ममत्व भाव टूटता है। इसलिए पदार्थों का संयोग हो तो भी दु:ख की अनुभूति होती नहीं।

ड. संसार में संयोग और वियोग लगातार चलता ही रहता है, इसलिए हर प्रकार का वियोग अनित्य है।

४९ समिति संबंधित नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य सही है?

अ. ज़रूरत पड़े तब ही, स्व-पर को हितकारी, प्रमाण रहित, सावद्य और स्पष्ट आदि गुणों से युक्त वचन बोलना भाषासमिति।

ब. संयम के निर्वाह के लिए जरूरी वसति, वस्त्र, उपकरण आदि वस्तुओं की शास्त्रोक्त विधि से जाँच करना वह एषणा समिति।

क. संयम के उपकरणों को चक्षु से निरीक्षण कर, रजोहरण से प्रमार्जन कर के ग्रहण करना और निरीक्षण-प्रमार्जन कर के रखना वह आदान उत्सर्ग समिति।

ड. शास्त्रोक्त विधि से भूमि का निरीक्षण-प्रमार्जन कर, मल आदि का त्याग करना वह आदान निक्षेप समिति।

५० क्षमा संबंधित नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य सही है?

अ. उपकारी व्यक्ति कोई अपकार करे तब जीव उसे क्षमा करे वह अपकार क्षमा।

ब. अपकारी व्यक्ति कोई उपकार करे तब जीव उस व्यक्ति को क्षमा करे वह अपकार क्षमा।

क. धार्मिक व्यक्ति भगवान के वचन पर श्रद्धा रखकर अन्य जीव को क्षमा करे वह धर्म क्षमा हैं ।

ड. 'जो मैं क्षमा नहीं करुं, अपकारी व्यक्ति के प्रति क्रोध और तिरस्कार रखूं तो परभव में दु:खी होना पड़ेगा' ऐसे विचार से क्षमा धारण करना वह विपाक क्षमा ।

५१ वनस्पतिकाय संयम यानी?

अ. वनस्पतिकाय जीवों को दु:ख हो ऐसी प्रवृत्ति का मन, वचन और काया से करण, करावन और अनुमोदन पूर्वक त्याग वह वनस्पतिकाय संयम ।

ब. वनस्पति गति में क्रोध आदि कषाय न करना, संयम रखना वह वनस्पतिकाय संयम ।

क. वनस्पति, सब्जी आदि इस्तेमाल में न लेना, उनका त्याग करना वह वनस्पतिकाय संयम।

ड. संयम धारण करने के बाद वनस्पति, सब्जी आदि के इस्तेमाल का त्याग करना वह वनस्पतिकाय संयम ।

५२ बारह भावना संबंधित नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य सही है?

अ. संसार भावना से संसार का तो अनित्य भावना से जीव की अनित्यता का भय उत्पन्न होता है ।

ब. एकत्व भावना से जीव स्वयं अकेला ही है ऐसा समझता है, इसलिए अन्य जीव के प्रति दुर्गंछा प्रगट होती है ।

क. अशुचित्व भावना भाने से आत्मा अशुचिओं का भंडार है ऐसा समझता है ।

ड. लोक भावना भाने से शंका आदि दोषो का निवारण होता है, जगत का सही स्वरूप समझ सकते हैं ।

५३ बोधिदुर्लभ भावना भाने संबंधित नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. मोक्षमार्ग दुर्लभ = अलाभकारी है ऐसा बोधिदुर्लभ भावना भाने से समझता है ।

ब. बोधिदुर्लभ भावना भाने से जीव को कितने परिश्रम और समय के बाद जिनवाणी प्राप्त होती है वह समझ सकते हैं ।

क. बोधिदुर्लभ भावना भाने से मोक्षमार्ग को आराधने की तत्परता बढ़ती है ।

ड. बोधिदुर्लभ भावना में अनादि काल से जीव ने अव्यवहार राशी में, अनंत काल तक निगोद के दु:ख सहन किए है ऐसी विचारणा होती है ।

५४ तप और परीषह जय करने से कर्मों का नाश होता है । सहन करने की वृत्ति से अशुभ कर्म भी जो उदय में आए तो 'मेरे कर्म खप रहे हैं' ऐसा शुभ ध्यान होता है । उस समय दु:ख की अनुभूति नहीं होती । जीव शुभ ध्यान में रत रहता है । यह सभी वाक्य कौन सी भावना को प्रदर्शित करते हैं?

अ. संवर ब. निर्जरा क. बोधिदुर्लभ ड. धर्मस्वाख्यात

५५ संयम के विषय में नीचे दिए वाक्यों में सही वाक्य कौन सा है?

अ. साधु द्वारा ग्रहस्थों की उपेक्षा करना वह उपेक्षा संयम ।

ब. अशुभ कायिक प्रवृत्ति में से निवृत्त होकर और शुभ कायिक प्रवृत्ति में जुड़ना वह मन संयम।

क. जरूरी न हो तो केवल अभ्यास हेतु पुस्तक ही ग्रहण करने से उपकरण संयम के पालन में विक्षेप नहीं होता ।

ड. दो इन्द्रिय वाले जीवों को मन, वचन, काया से करण, करावन और अनुमोदन रूप दु:ख देने के त्याग को बेइन्द्रिय संयम कहते हैं ।

५६ नौविध ब्रह्मचर्य पालन विषयक नीचे दिए विकल्पों में सही विकल्प कौन सा है?

अ. शरीर की विभुषा में काम वर्धक पदार्थ न वापरे तो ब्रह्मचर्य के पालन में विक्षेप पड़ता नहीं।

ब. जिस स्थान में स्त्री बैठी हो उस स्थान में उसके उठने के बाद पुरुष को तीन प्रहर तक बैठना नहीं चाहिए ।

क. पुरुष को जिस स्थान में स्त्री, पशु अथवा नपुंसक रहते हो ऐसे स्थान में नही रहना चाहिए।

ड. प्रणित आहार का त्याग करना चाहिए, अप्रणित आहार जितना लेना हो उतना ले सकते हैं ।

५७ रमेश लगातार चिंतन करता है कि नरक आदि चार गति में परिभ्रमण करने वाला हर जीव स्वजन है क्योंकि कोई न कोई भव में वे मेरे स्वजन बने होंगे । फिर भी वह सभी जीव परजन हैं । तो कहें कि रमेश कौन सी भावना भा रहा है?

अ. लोक ब. एकत्व क. संसार ड. अन्यत्व

५८ नीचे दिए गुप्ति / समिति विषयक वाक्यों में सही वाक्य बताएं ।

अ. सम्यग्ज्ञान और सम्यग्दर्शन के बिना किसी भी योग का निग्रह हो तो वह गुप्ति / समिति स्वरूप नहीं, मात्र कलेश रूप ही है ।

ब. आर्तध्यान और रौद्रध्यान से निवृत्ति कर धर्मध्यान और शुयलध्यान में प्रवृत्त होना वही मनोसमिति ।

क. गुप्ति केवल प्रवृत्ति स्वरूप है जब कि समिति प्रवृत्ति / निवृत्ति उभय स्वरूप है ।

ड. दोषरहित आहार ग्रहण करना वही आदान समिति ।

५९ मार्दव संबंधित नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. बड़ो के प्रति विनय और छोटों के प्रति वात्सल्य यह मार्दव की अभिव्यक्ति है ।

ब. प्रशमरति ग्रंथ में मद के आठ प्रकार में ऐश्वर्य की जगह वालभ्यक् बताया है ।

क. जीव इस लोक में अनर्थ हो ऐसे अनेक कर्म मान और मद के कारण बांधता है, परलोक में वही प्रकार के मान और मद न होने से उसकी असर होती नहीं ।

ड. जाति, कुल, रूप, ऐश्वर्य, विज्ञान, श्रुत, लाभ और वीर्य ऐसे कूल आठ मद तत्त्वार्थ सूत्र में बताए हैं ।

६० नीचे दिए कोष्ठक में बारह भावना संबंधित योग्य विकल्प पसंद करें ।

	भावना	किस प्रकार का चिंतन
१.	अशरणता	A- वीतराग ऐसे जिनेन्द्र भगवंत ने बताए धर्म में कोई स्खलना संभव नहीं।
२.	अन्यत्व	B संसार में मेरा रक्षण करने वाला देव-गुरु-धर्म के सिवा कोई नहीं ।
३.	धर्मस्वाख्यात	C इस संसार में बोधि = संज्ञीपन पाना अत्यंत दुर्लभ है ।
४.	बोधिदुर्लभ	D आत्मा के सिवा हर जड-चेतन पदार्थ पर है ।
		E माता, पिता, पत्नी और पुत्र के अलावा भाई-बहेन, मित्र आदि अन्य हैं।
		F जिनवाणी के प्रति श्रद्धा और चारित्र पालन अत्यंत दुर्लभ हैं ।

अ. 1-B, 2-E, 3-A, 4-D   ब. 1-E, 2-D, 3-A, 4-C

क. 1-B, 2-D, 3-A, 4-F   ड. 1-B, 2-D, 3-A, 4-C

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक । (कुल १५ x २ = ३० अंक)

६१ नीचे लिखे वाक्यों में से कौन सा वाक्य संवर के परिप्रेक्ष्य में मिथ्या नहीं?

अ. १. आस्रव का निरोध न करना वह संवर है ।

२. आस्रव से कर्म बंधन हो उसे संवर कहते हैं ।

ब. १. शुभाशुभ दोनों प्रकार के आस्रव का भाव संवर स्वरूप है ।

२. पुण्य तथा पाप का समावेश संवर में गिनने से सात तत्त्व होते हैं ।

क. १. संवर के दो भेद हैं। देश संवर तथा सर्व संवर।
   २. सभी आस्रव का निरोध करना वह सर्व संवर है। १४वें गुणस्थानक में सर्व संवर है और पूर्व के १३ (१ से १३) गुणस्थान में देश संवर है।

ड. १. सर्व संवर के बिना देश संवर होता नहीं, अतः प्रथम प्रयास सर्व संवर के लिए करना है।
   २. देश संवर यानी संपूर्ण आस्रव सेवन का निषेध।

६२ नीचे रहे संवर के भेदो की विशेषता संबंधी कोष्ठक में कौन सा विकल्प गलत नहीं?

	देश संवर		सर्व संवर
अ.	आने वाले कर्मों को विशेष प्रकार से रोकने का प्रयत्न करना।	अ.	कर्मों के आगमन को सामान्य तया रोकने का अभ्यास करना।
ब.	अंश: तया कर्म के आगमन को रोकना, प्रथम के १३ गुणस्थान में घटता है।	ब.	अयोगी गुणस्थान में हाजिर होता है। (स्वामीत्व), संपूर्ण कर्म के आवरण को भेदना।
क.	अल्पतर कर्म के आगमन को रोकता है। प्रमत्त गुणस्थान में ही होता है।	क.	सर्वोत्कृष्ट १५८ कर्म प्रकृति को अवरोधित करता है। संयोगी गुणस्थान में हाजीर होता है।
ड.	देश संवर का घात करने वाला आस्रव ५७ भेद वाला है, उसका स्वरूप प्रथम बार इस अध्याय में कहा है।	ड.	सर्व संवर के दो प्रकार नहीं किन्तु ४२ प्रकार हैं। उसका स्वरूप पहले कहने में नहीं आया।

६३ नीचे का कौन सा दृष्टान्त सर्व संवर का अनुसरण करता है?

अ. प्रतिदिन सात हत्या करने वाले दृढप्रहारी चोर वीरवाणी से प्रतिबोध पाकर संयम स्वीकारकर ६ महिने तक परीषह-उपसर्ग सहन कर क्षपक-श्रेणी पर आरोहण कर केवलज्ञान गुण प्रगट कर निर्वाण पद पाए।

ब. कालसौरीक ने (कषाय वश) श्रेणिक महाराजा के आदेश से १ दिन में ५०० भैसों का वध नहीं किया।

क. दाउद लुटेरे ने चोरी न करने का अभिग्रह धारण किया हैं। (१५ दिन तक)

ड. कपिला दासी ने राज हठ से अनिच्छा पूर्वक सुपात्र दान दिया।

६४ नीचे लिखा कौन सा दृष्टान्त देश संवर को अयुक्त नहीं?

अ. सोमील ने गजसुकुमाल मुनि के मस्तक पर अग्नि जलाई तो भी समता गुण धारण कर उसे उपकारी माना, कर्म खपाकर मोक्ष नगरी में प्रवेश किया।

ब. मेतार्य मुनि ने जवले नहीं चुराए थे फिर भी सोनी ने चोरी का आक्षेप कर भयंकर उपसर्ग किया तो भी सम भाव में रहकर मुनि मुक्तिपुरी को पाए।

क. अईमुत्ता मुनि आठ वर्ष की उम्र में केवलज्ञान पाकर शीवरमणी को पाए।

ड. पुणिया श्रावक परिवार पोषण के लिए सूत्रोक्त विधिपूर्वक और शुभ भाव पूर्वक प्रतिदिन सामायिक करते हैं। और न्यायपूर्वक व्यापार भी करते हैं।

६५ नीचे का कौन सा विकल्प दोनों प्रकार के संवरो के आश्रय से घटित है?

अ. सीमा १२ व्रत धारी श्राविका होने पर भी बहुत शौक़ीन है, रोज फ्रेंड सर्कल के साथ घूमने, होटल में खाना खाने, नाटक-सिनेमा देखने जाती है।

ब. मदन रोज जिन पूजा करता है पर अनंतकाय छोड़ सकता नहीं। साधु भगवंत का सत्संग भाता नहीं, मात्र त्रिकाल प्रभु पूजा करता है।

क. अनुपमा देवी जिनाज्ञा मयी सुश्राविका थी, वह देलवाड़ा के मंदिर बंधाने वाली थी। गरीबों की सेवा स्वयं करती थी, संयम स्वीकारकर आज महाविदेह क्षेत्र में केवली पर्षदा में बैठ जिन वाणी श्रवण करती है। भविष्य में सभी कर्म क्षय करके मोक्ष जाएंगी।

ड. आनंद सागर सूरीजी ने अनशन स्वीकारकर समाधिपूर्वक आत्मकल्याण साधा और पंडित मरण पाए।

६६ नीचे का कौन सा विकल्प अविरूद्ध है?

अ. देश संवर गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा, परीषह जय और चारित्र से होता है।

ब. मन, वचन, काया का संरक्षण करने से आश्रव निरोधरूप सर्व संवर होता है। हित-मित-प्रित बोलने से देश संवर का अभाव होता है।

क. इर्या समिति का पालन करने से कर्मक्षय स्वरूप आश्रव का अभाव होता है।

ड. स्वाध्याय द्वारा अंश तया संवर होता होने से कर्म का आगमन सर्वथा बंध हो जाता है।

६७ नीचे रहे समिति, गुप्ति के कोष्ठक में कौन सा विकल्प दोनों में संमिलित (टेली) होता है?

अ. रमण पौषध लेकर, जहाँ-तहां बातें करने बैठता है, दोपहर में २ घंटे सो जाता है।	अ. अजय मन से संसार संबंधी विचारणा करता है। क्रूर परिणाम वाले असभ्य वचन बोलता है।
ब. सारिका उपधान में अष्टप्रवचन माता का पालन करती है। जयणा पूर्वक चलना, बोलना, परठवना आदि बराबर पालन करती है।	ब. ध्रुविल ४७ दिवस मौन धारण करता है। मन की एकाग्रता पूर्वक शुभ भाव और शुभ आचरण पूर्वक मोक्ष माला पहनता है।
क. कल्पना नीचे देखे बिना चलती है। साधु-साध्वी के लिए रसोई बनाकर वहोराती है।	क. चेतन मन से मित्र लिए असत् विचार करता है। किन्तु बहार से संबंध सुंदर रखता है। पैसा, अच्छे कपड़े आदि देता है।
ड. मेघा घर में पवन आने से दरवाजा, खिड़की आदि पूंजे बिना बंध करती है। उससे छिपकली मर जाती है।	ड. रीटा टेका रखकर, पैर लंबे कर एकासना करती है, खाते-खाते बोलती है। रसोई की निंदा करती है।

६८ नीचे लिखे विकल्पों में से कौन सा विकल्प विषम है?

अ. सत्य, शोच, इर्यासमिति, मूर्च्छा, अकिंचन.

ब. एषणासमिति, भाषासमिति, वचनगुप्ति, सामायिक

क. क्षमा, मार्दव, आर्जव, मुक्ति, तप, मन गुप्ति।

ड. पारिष्ठापनिका समिति, देशविरति, सर्वविरति, मनगुप्ति, सूक्ष्मसंपराय

६९ नीचे का कौन सा विकल्प निर्जरा-संवर दोनों की क्रमिक प्रधानता सूचित करता है?

अ. कुमारपाल ने यावज्जीव ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया था।

ब. मालती मौन धारण कर पति का मार सहन कर गुस्से से आहार छोड़ती है।

क. गंगा ने मासक्षमण में गिरीराज की स्पर्शना की, प्रभु के अंग में सुवर्ण आभूषण भावपूर्वक चढाकर जीवन तक अलंकार का त्याग किया।

ड. मदन जयणा के लक्ष के साथ उपाश्रय में दरवाजा, खिड़की आदि बंध करता है।

७० नीचे का कौन सा विकल्प अयोग्य है?

अ. साधना प्रभु की आंगी करने में लीन है, आधा घंटा रूपस्थ ध्यान धरती है, संवर सापेक्ष निर्जरा मनोगुप्ति आदि से करती है ।

ब. तप से अधिक निर्जरा होती है, तप में निर्जरा की प्रधानता है और गुप्ति आदि में संवर का प्रधान हिस्सा है ।

क. निर्जरा मोक्ष का कारण है ।

ड. मेहुल ने अट्ठाई तप का उजमणा होटल में रखा, पर अनंतकाय भक्षण किया और कराया नहीं । वह उसका आनंद मनाता है ।

७१ नीचे लिखा कौन सा विकल्प गुप्ति के परिप्रेक्ष्य में कल्प्य नहीं?

अ. कैसे योगों से बंध, संवर, निर्जरा होती है यह जानने पूर्वक विश्वास करना वह सम्यक् है । ज्ञान-दर्शन युक्त योग निग्रह सही हैं ।

ब. सामान्य-विशेष बोध रूप होता योग निग्रह वास्तविक है परंतु तात्त्विक ज्ञान, दर्शन के बिना योग निग्रह क्लेश है, गुप्ति नहीं ।

क. आगम विहीत-निषिद्ध योगों में क्रमशः प्रवृत्ति-निवृत्ति को निग्रह कहते हैं । तीन योग होने के कारण गुप्ति तीन प्रकार की है ।

ड. दुर्ध्यान से काया की चेष्टा, शुभ भाव करना और सद्ध्यान द्वारा अशुभ कार्य-वचन से विराम न पाना वह त्रिगुप्ति हैं । शुभाशुभ दोनों प्रकार के विचारों का अत्याग वह मनोगुप्ति है ।

७२ नीचे कौन सा विकल्प अष्टप्रवचन माता के संदर्भ में विरोध रहित नहीं?

अ. समिति मात्र प्रवृत्ति स्वरूप है । गुप्ति प्रवृत्ति-निवृत्ति स्वरूप है । समिति का गुप्ति में समावेश हो जाता है ।

ब. सम्=सम्यग्, ईति=प्रवृत्ति. अच्छी तरह से करण द्वारा व्यापार करना वह समिति । गुप्ति उत्सर्ग मार्ग है, समिति अपवाद मार्ग हैं ।

क. नीचे देखकर चलने से उस बाला का अकस्मात हुआ. इसे मन-वचन-काया का अनिग्रह कहते है ।

ड. श्रमण की आठ माता रक्षणहार है, श्रावक को पौषध व्रत में अष्टप्रवचन माता है ।

७३ नूतन मुनि सूर्योदय के पश्चात युग प्रमाण भूमि का निरीक्षण करने द्वारा मंद गति पूर्वक गमन कर पाठशाला में पढ़ने जाते हैं। ओघा से पूंजकर-प्रमार्जनकर आसन पर बैठ के, मुहपत्ति रखकर श्लोक कंठस्थ कर पंडितजी को पाठ देते हैं। पाठ पूर्ण होने के बाद उसी तरह ३१/२ हाथ भूमि पर दृष्टि स्थापन कर वसति में आकर गुरू भगवंत की आज्ञा लेकर श्रावक के साथ मौन पूर्वक आहार गवेषणा के लिए निकलते हैं। कल्प्य आहार वहोरकर गोचरी के दोषों की आलोचना के बाद वापरने बैठने से पहले लघु नीति शंका निवारण हेतु दृष्टि प्रमार्जन पूर्वक जाते हैं। योग्य भूमि (स्थंडिल) निर्जीव जगह देखकर वचनानुसार परठवते हैं। ईरियावहि प्रतिक्रमण कर निंदा-प्रशंसा रहित अनासक्ति लक्ष्य के साथ वापरने बैठते हैं। पात्र, पडल जोडी की प्रमार्जना कर यथास्थान रखते हैं। मौनपूर्वक आहार चिंतन-मनन करने द्वारा ग्रहण करते हैं। इस दृष्टान्त में समिति को क्रम में समायोजित करते नीचे दिए विकल्पों में सही विकल्प कहें। (समिति नंबर में दी गई है)

अ. १-३-२-१-४-५-४-१-३-४-३

ब. १-४-२-१-३-१-५-१-३-४-३

क. १-२-३-१-५-४-४-१-३-४-३

ड. १-४-३-२-४-५-१-१-३-४-३

७४ क्षमा के पांच प्रकार में से नीचे का दृष्टान्त किस विकल्प में समाता हैं?

निलय अपने चाचा को बहुत याद करता है, भूतकाल में धंधे में कर्ज हुआ और उसी समय पिता का अवसान हुआ तब चाचा ने मदद की थी। अब उस चाचा की दुकान में बैठता है। चाचा का बेटा सतीश अक्कड़, व्यसनी, दुकान में पैर रखते ही तुरंत निलय पर अतिशय गुस्सा करता है और जैसे-तैसे हृदय घातक शब्द बोलता है। फिर भी निलय शांत रहकर चाचा को फरियाद किए बिना दुकान समय पर पहुंच जाता है और यह सोचकर सहन करता है कि मुझे नुकसान न हो। मेरा परिवार खुश रहे, पोषण हो इस लक्ष्य से हँसता रहता है। साथ ही ऐसा भी सोचता है कि 'गुस्सा मैं भी करूँगा तो नरक, तिर्यंच आदि दुर्गति में जाना पड़ेगा. हृदय रोग द्वारा स्वास्थ्य बिगड़ जाएगा, शरीर भी रोगग्रस्त बनेगा. और भगवान ने क्षमा धारण करने का कहा है, अतः क्रोध करना योग्य नहीं. आज प्रवचन में प्रभु वीर और प्रभु पार्श्व में कैसा क्षमा गुण था वह सुना।

तेजो लेश्या छोड़ने वाले अपने शिष्य के प्रति कैसी अपरंपार क्षमा धारण की? आत्मा का स्वभाव धर्म क्षमा है । चंदन अपनी सुवास कटने पर भी नहीं छोड़ता, कमल कीचड़ में उगने पर भी महेक छोड़ता नहीं तो मैं पंचेंद्रिय, संज्ञी, जैन कुल में जन्मा, मैं क्या क्षमा धारण न कर सकूं?'

अ. उपकार-अपकार-धर्म-वचन-विपाक ब. उपकार-धर्म-विपाक-अपकार-वचन

क. उपकार-अपकार-वचन-विपाक-धर्म ड. उपकार-अपकार-विपाक-वचन-धर्म

७५ संयम संबंधी कौन सा विकल्प समिचीन घटित नहीं?

अ. १. संयम के १७ भेद हैं । पांच अव्रत रूप आस्रव का त्याग । पांच इन्द्रियों का जय, चार कषायों का त्याग, मन, वचन, काया तीन दंड से निवृत्ति ।

२. दूसरे रूप से संयम के १७ भेद इस प्रकार हैं - पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, प्रेक्ष्य, उपेक्ष्य, अपहृत्य, प्रमृज्य, काय, वचन, मन और उपकरण संयम ।

ब. १. आंखो से निरीक्षण करने पूर्वक उठने-चालने की क्रिया करना वह प्रेक्षासंयम ।

२. बिन-ज़रूरी वस्तु छोड़ देना अथवा जीव संयुक्त गोचरी आदि वस्तु परठवना वह अपहृत्य संयम ।

क. १. पुस्तक, वस्त्र, पात्र आदि उपधि की अधिक देखभाल न करना, अधिक मात्रा में रखना वह उपकरण संयम ।

२. रजोहरण, दंडासण से प्रमार्जनकर क्रिया करना वह प्रमृज्य संयम ।

ड. १. पांच ईन्द्रियों का जय, चार कषायों का त्याग, तीन गुप्ति की प्रवृत्ति ।

२. साधु को शास्त्रोक्त विधि से रहित करने, स्व-क्रिया के व्यापार से युक्त श्रावक की उपेक्षा करना वह उपेक्ष्य संयम ।

▮

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-१८	अध्याय-९	सूत्र ८-२६	जमा करने की अंतिम तारीख ता. ३१/१०/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक । (कुल ३० x ½ = १५ अंक)

१ भरत और ऐरावत क्षेत्र में पहले और अंतिम तीर्थंकर के साधुओं को .... सामायिक होता है ।

अ. यावज्जीविक ब. ईत्वर कालिक क. परिहार विशुद्धि ड. सूक्ष्म संपराय

२ परिहार विशुद्धि चारित्री को .... में जघन्य - अट्ठम, मध्यम - चार उपवास, उत्कृष्ट - पांच उपवास तप का विधान है ।

अ. यावज्जीव ब. शिशिर क. वर्षा ड. ग्रीष्म

३ बाईस परीषह में से एक जीव को एक साथ एक आदि .... परीषह हो सकते हैं ।

अ. बाईस ब. बीस क. सत्रह ड. उन्नीस

४ सभी परीषह .... गुणस्थान में होते हैं ।

अ. चौदहवें ब. तेरहवें क. नौवें ड. दसवें

५ पांच चारित्रो में पूर्व-पूर्व के चारित्र से उत्तरोत्तर चारित्र अधिक-अधिक .... है ।

अ. अधिक ब. अशुद्ध क. हीन ड. विशुद्ध

६ आहार की अप्राप्ति आदि के कारण करने में आता तप ..... रूप है ।

अ. अनशन ब. कायक्लेश क. वृत्तिपरिसंख्यान ड. अवमौदर्य

७ मोक्षमार्ग की स्वयं आराधना करना यह .... विनय है ।

अ. तात्त्विक ब. उपचार क. ज्ञान ड. चारित्र

८ बाह्य और अभ्यंतर उपधि का त्याग ऐसे दो प्रकार से ..... है ।

अ. व्युत्सर्ग ब. स्वाध्याय क. ध्यान ड. वैयावच्च

९ दोषित के साथ जघन्य से .... माह और उत्कृष्ट से .... माह तक अन्न पानी का आदान-प्रदान, आलाप आदि का परिहार यह परिहार प्रायश्चित है।

अ. दो, एक ब. एक, छ क. नौ, छ ड. छ, एक

१० परिहार तप .... में समाप्त होता है।

अ. ९ महिने ब. १८ महिने क. ९ वर्ष ड. १८ वर्ष

११ परीषह आते राग-द्वेष के वश बन जाना और संयम बाधक प्रवृत्ति करना यह .... है।

अ. परीषह भोग ब. परीषह जय क. परीषह अजय ड. परीषह त्याग

१२ प्रज्ञा और अज्ञान यह दो परीषह .... कर्म के उदय से होते हैं।

अ. ज्ञानावरण ब. वेदनीय क. अंतराय ड. चारित्रमोहनीय

१३ जिन में उकृष्ट से .... परीषह संभावित हैं।

अ. ग्यारह ब. सात क. एक ड. दो

१४ उत्कृष्ट से ..... परीषह १२ वें गुणस्थानक तक संभावित हैं।

अ. १४ ब. ९ क. २ ड. १० १

१५ ..... उदय से अदर्शन परीषह और .... उदय से अलाभ परीषह संभवित हैं।

अ. दर्शनमोह के, चारित्रमोह के ब. दर्शनमोह के, लाभांतराय के

क. चारित्रमोह के, दर्शनमोह के ड. दर्शनमोह के, वेदनीय के

१६ परिहार विशुद्धि चारित्र ग्रहण करने वाले सभी साधु .... संपन्न होते हैं।

अ. ज्ञानातिशय ब. वचनातिशय क. श्रुतातिशय ड. अपायापगमातिशय

१७ परिहार विशुद्धि चारित्र के पालन में .... साधु का समुदाय होता है।

अ. सात ब. आठ क. नौ ड. दश

१८ सूक्ष्म संपराय चारित्र .... गुणस्थान में ही होता है।

अ. दसवें ब. नौवें क. बारहवें ड. ग्यारहवें

१९ यथाख्यात चारित्र .... गुणस्थान में रहे साधुओं को होता है।

अ. मात्र ११-१४वें ब. मात्र १२-१४वें क. मात्र १३-१४वें ड. मात्र १४वें

२० ग्यारहवें गुणस्थान में कषायों का .... होता है। बारहवें-तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में कषायों का .... होता है।

अ. क्षयोपशम, क्षय ब. क्षय, उपशम क. उपशम, क्षय ड. उदय, क्षय

२१ चारित्र .... है और समिति गुप्ति ..... है ।

अ. कार्य, कारण　　ब. कारण, कार्य　　क. हेतु, कार्य　　ड. हेतु, अहेतु

२२ जिनको ग्रहण शिक्षा और आसेवन शिक्षा देने की ज़रूरत हो वे नव दीक्षित साधु .... हैं ।

अ. गण　　ब. आचार्य　　क. उपाध्याय　　ड. शैक्षक

२३ जिनका परस्पर संभोग हो, अर्थात् गोचरी पानी आदि का परस्पर लेने-देने का व्यवहार हो वे मुनि .... हैं ।

अ. उपाध्याय　　ब. साधु　　क. समनोज्ञ　　ड. कुल

२४ दोषों की शुद्धि के लिए दीक्षा के पूर्व पर्याय का त्याग कर दूसरे नए पर्याय में उपस्थाप्ना करना अर्थात् फिर से प्रव्रज्या देना यह .... प्रायश्चित है ।

अ. उपस्थापन　　ब. विवेक　　क. तदुभय　　ड. आलोचना

२५ यावज्जीविक अनशन के तीन प्रकार में से किसी भी प्रकार के अनशन का स्वीकार करने वाला जीव अवश्य ..... में जाता है ।

अ. मात्र वैमानिक देवलोक　　ब. मात्र सर्वार्थसिद्ध विमान

क. मात्र मोक्ष　　ड. वैमानिक देवलोक या मोक्ष

२६ साधुओं को संयम के निर्वाह के लिए .... प्रकार की उपधि कल्पित है ।

अ. बारह　　ब. दस　　क. चौदह　　ड. ग्यारह

२७ परिहार विशुद्धि चारित्र में ..... साधु परिहार तप करने वाले की सेवा करते हैं ।

अ. ४　　ब. ३　　क. २　　ड. १

२८ महाविदेह क्षेत्र में सभी तीर्थंकर के साधुओं को तथा भरत और ऐरावत क्षेत्र में २२ तीर्थंकर के साधुओं को .... सामायिक होता है ।

अ. यावज्जीविक　　ब. छेदोपस्थाप्य　　क. ईत्वरकालिक　　ड. अनशन

२९ वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा, आम्नाय, धर्मोपदेश यह पांच प्रकार के .... हैं ।

अ. विनय　　ब. स्वाध्याय　　क. वैयावच्च　　ड. प्रायश्चित

३० थोड़ा काल रहने वाला सामायिक ..... है ।

अ. यावज्जीविक　　ब. ईत्वरकालिक　　क. छेदोपस्थाप्य　　ड. यथाख्यात

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१. नीचे दिए वाक्यों में से सही वाक्य कौन सा है वह बताएं ।

अ. लोच, उग्र विहार आदि द्वारा काया को कष्ट देना वह कायक्लेश अभ्यंतर तप है ।

ब. सातवें गुणस्थान तक ही सभी परीषह हो सकते हैं ।

क. जिन को केवल वेदनीय कर्म के उदय से होते परीषह ही सहन करने पड़ते हैं ।

ड. नौतत्त्व प्रकरण में प्रायश्चित के दस भेद बताए हैं जब कि के तत्त्वार्थ सूत्र में प्रायश्चित के नौ भेद बताए हैं ।

३२. नीचे दिए वाक्यों में से गलत वाक्य कौन सा है वह बताएं ।

अ. परिहार विशुद्धि चारित्र तीर्थंकर अथवा उनके पास दीक्षित हुए साधु के पास स्वीकार कर सकते हैं ।

ब. एक दूसरे साधुओं के बीच परस्पर गोचरी देने-लेने का संबंध हो वे साधु अमनोज्ञ साधु कहलाते हैं ।

क. साधुओं को केवल १४ प्रकार की उपधि स्वीकार्य है इससे अधिक उपधि के त्याग को बाह्योपधि व्युत्सर्ग कहते हैं ।

ड. ईंगिनी यह यावज्जीविक अनशन के तीन प्रकार में से एक प्रकार है ।

नीचे दिए कोष्ठक के आधार से प्रश्न ३३ और ३४ के सही विकल्प पसंद करें ।

	कौन से शब्द का?		क्या अर्थ है?
१.	आचार्य	A	मोक्ष की साधना करने वाले पंचमहाव्रतधारी मुनि
२.	उपाध्याय	B	जिन मुनि को परस्पर गोचरी पानी आदि लेने-देने का व्यवहार होता है।
३.	शैक्षक	C	साधुओं को चारित्र का पालन कराए वह
४.	ग्लान	D	साधुओं को श्रुत का प्रदान करे वह
५.	गण	E	अनेक गच्छों का समुदाय
६.	कुल	F	ज्वरादि रोग से पराभूत
७.	साधु	G	एक आचार्य का समुदाय
८.	समनोज्ञ	H	जिनको ग्रहण शिक्षा और आसेवन शिक्षा की ज़रूरत है वे नव-दीक्षित मुनि ।

३३ अ. 1-C, 2-A, 3-H, 4-F ब. 1-C, 2-D, 3-H, 4-F

क. 1-C, 2-D, 3-B, 4-F ड. 1-A, 2-D, 3-H, 4-F

३४ अ. 5-G, 6-E, 7-C 8-B　　ब. 5-G, 6-C, 7-A 8-B

क. 5-G, 6-E, 7-A 8-B　　ड. 5-G, 6-E, 7-A 8-H

३५ तप यानी?

अ. जो कर्म के रस को तपाए अथवा जला डाले वह तप ।

ब. अग्नि के पास खड़े रहकर ताप सहन करना वह तप ।

क. भोजन प्राप्त न होने से भूखा रहना वह तप ।

ड. शरीर को किसी भी प्रकार से कष्ट देना वह तप ।

३६ वृत्तिपरिसंख्यान यानी?

अ. आहार की लालसा को कम करने के हेतु से आहार में नियमन करना वह वृत्तिपरिसंख्यान।

ब. आहार संज्ञा को समाप्त करने हेतु आहार न लेना वह वृत्तिपरिसंख्यान ।

क. मर्यादित संख्या में आहार ग्रहण करना यानी कि भूख होने पर भी कम आहार ग्रहण करना वह वृत्तिपरिसंख्यान ।

ड. आहार की लालसा को मर्यादित करने का विचार करना वह वृत्तिपरिसंख्यान ।

३७ रसपरित्याग यानी?

अ. इन्द्रिय और संयम को विकृत करने वाली विगई का त्याग न करना वह रसपरित्याग ।

ब. इन्द्रिय और संयम को विकृत करने वाली विगई का त्याग करना वह रसपरित्याग ।

क. रस रहित यानी रुक्ष आहार ग्रहण करना वह रस परित्याग ।

ड. रस रहित यानी रुक्ष आहार का त्याग करना वह रस परित्याग ।

३८ विविक्तचर्या संलीनता यानी?

अ. संयम को बाधा पहुँचे ऐसे एकांत स्थल में रहकर ज्ञानादि आराधना में लीन रहना यह विविक्तचर्या संलीनता ।

ब. संयम को बाधा न पहोंचे ऐसे एकांत स्थल का त्याग कर ज्ञानादि आराधना में लीन रहना यह विविक्तचर्या संलीनता ।

क. साधुपना में रहकर ज्ञानादि आराधना में लीन रहना यह विविक्तचर्या संलीनता ।

ड. संयम को बाधा न पहुंचे ऐसे एकांत स्थल में रहकर ज्ञानादि की आराधना में लीन रहना यह विविक्तचर्या संलीनता ।

३९ बाह्योपधि यानी?

अ. साधुओं को संयम के निर्वाह के लिए जरूरी १४ प्रकार की उपधि वह बाह्योपधि ।

ब. साधुओं को संयम के निर्वाह के लिए बिन-जरूरी उपधि वह बाह्योपधि ।

क. साधूपना में उपाधि सहन करना वह बाह्योपधि ।

ड. साधु संयम के निर्वाह के लिए जरूरी १४ प्रकार की उपधि के सिवा अन्य उपधि रखे वह बाह्योपधि ।

४० अभ्यंतरोपधि यानी?

अ. काया को ढंकने मात्र के लिए वस्त्र रखना वह अभ्यंतरोपधि ।

ब. काया और कषाय यह अभ्यंतरोपधि ।

क. शरीर के अंदर ग्रहण कराता आहार वह अभ्यंतरोपधि ।

ड. साधुओं को संयम के निर्वाह के लिए जरूरी १४ प्रकार की उपधि वह अभ्यंतरोपधि ।

४१ उपस्थापन प्रायश्चित यानी?

अ. दोषों की शुद्धि हेतु दीक्षा के पूर्व पर्याय का त्याग कर नए पर्याय में स्थापना करना वह उपस्थापन प्रायश्चित ।

ब. साधु की दीक्षा के पूर्व पर्याय का त्याग कर उपाध्याय पद में स्थापना करना वह उपस्थापन प्रायश्चित ।

क. स्थापनाचार्य की आशातना का गुरु द्वारा दिया प्रायश्चित परिपूर्ण करना वह उपस्थापन प्रायश्चित ।

ड. स्थापनाचार्य की आशातना का स्वत: प्रायश्चित लेकर परिपूर्ण करना वह उपस्थापन प्रायश्चित।

४२ व्युत्सर्ग यानी?

अ. संयम के निर्वाह के लिए जरूरी न हो ऐसी बाह्य और अभ्यंतर उपधि का त्याग वह व्युत्सर्ग।

ब. संयम के निर्वाह के लिए जरूरी हो ऐसी बाह्य और अभ्यंतर उपधि का त्याग वह व्युत्सर्ग।

क. संयम के निर्वाह के लिए जरूरी न हो ऐसी अभ्यंतर उपधि का त्याग वह व्युत्सर्ग ।

ड. संयम के निर्वाह के लिए जरूरी न हो ऐसी बाह्य उपधि का त्याग वह व्युत्सर्ग ।

४३ प्रतिक्रमण यानी?

अ. लगे हुए दोषों का स्वीकार करने पूर्वक पश्चाताप कर दोबारा वही दोष करने का संकल्प न करना वह प्रतिक्रमण ।

ब. भविष्य में दोषों का सेवन नहीं करने का संकल्प करना वह प्रतिक्रमण ।

क. लगे हुए दोषों का स्वीकार करने पूर्वक पश्चाताप कर दोबारा वही दोषों का सेवन नहीं करने का संकल्प करना वह प्रतिक्रमण ।

ड. सुबह और शाम बहार जाकर घर वापस लौटना वह प्रतिक्रमण ।

४४ परिहार प्रायश्चित यानी?

अ. गुरु द्वारा दिया प्रायश्चित पूर्ण न हो तब तक दोष युक्त साधु के साथ जघन्य से एक माह और उत्कृष्ट से छ माह तक वंदन, अन्नपानी का आदान-प्रदान, आलाप आदि का त्याग करना वह परिहार प्रायश्चित ।

ब. गुरु द्वारा दिया प्रायश्चित पूर्ण न हो तब तक दोष युक्त साधु ने जघन्य से एक माह और उत्कृष्ट से छ माह तक स्वयं को दूषित घोषित करना वह परिहार प्रायश्चित ।

क. गुरु द्वारा दिया प्रायश्चित पूर्ण न हो तब तक दोष युक्त साधु के साथ जघन्य से एक सप्ताह और उत्कृष्ट से छ माह तक वंदन, अन्नपानी का आदान-प्रदान, आलाप आदि का त्याग करना वह परिहार प्रायश्चित ।

ड. गुरु द्वारा दिया प्रायश्चित पूर्ण करने के बाद दोष युक्त साधु के साथ जघन्य से एक माह और उत्कृष्ट से छ माह तक वंदन, अन्नपानी का आदान-प्रदान, आलाप आदि का त्याग करना वह परिहार प्रायश्चित ।

४५ परीषह यानी?

अ. विशिष्ट प्रकार की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता की अनुपस्थिति वह परीषह ।

ब. विशिष्ट प्रकार की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता की उपस्थिति वह परीषह ।

क. विशिष्ट प्रकार की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता की अनुपस्थिति में उसे टालने का प्रयास वह परीषह ।

ड. विशिष्ट प्रकार की अनुकूलता की उपस्थिति को टालने का प्रयास वह परीषह ।

४६ परीषह जय यानी?

अ. विशिष्ट प्रकार की अनुकूलता में राग और प्रतिकूलता में द्वेष करना अथवा संयम में बाधक हो ऐसी कोई प्रवृत्ति करना वह परीषह जय ।

ब. विशिष्ट प्रकार की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता की उपस्थिति में राग द्वेष न करना अथवा संयम में बाधक हो ऐसी कोई प्रवृत्ति न करना वह परीषह जय ।

क. विशिष्ट प्रकार की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता की उपस्थिति में राग द्वेष करना अथवा संयम में बाधक हो ऐसी कोई प्रवृत्ति करना वह परीषह जय ।

ड. आए परीषह को दूर करने शरीर के अनुकूल प्रयास में सफल होना वह परीषह जय ।

४७ परीषह अजय यानी?

अ. विशिष्ट प्रकार की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता की उपस्थिति में राग द्वेष करना अथवा संयम में बाधक हो ऐसी कोई प्रवृत्ति करना वह परीषह अजय ।

ब. विशिष्ट प्रकार की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता की उपस्थिति में राग द्वेष न करना अथवा संयम में बाधक हो ऐसी कोई प्रवृत्ति न करना वह परीषह अजय ।

क. आए परीषह को दूर करने शरीर को अनुकूल प्रयास में निष्फल होना वह परीषह अजय ।

ड. विशिष्ट प्रकार की अनुकूलता में द्वेष और प्रतिकूलता में राग करना वह परीषह अजय ।

४८ सामायिक यानी?

अ. जिस प्रवृत्ति से समता की हानि हो वह सामायिक ।

ब. किसी दो प्रवृत्ति को समान रूप से करने में आए उसे सामायिक कहते हैं ।

क. समान गुण वाले संसारी जीव अथवा पुद्गल को सामायिक कहते हैं ।

ड. जिस प्रवृत्ति से समता का लाभ हो यानी कि समता में वृद्धि हो वह सामायिक ।

४९ छेदोपस्थाप्य चारित्र यानी?

अ. जिस चारित्र में पूर्व के पर्याय का छेद कर नए पर्याय में स्थापना करने में आए वह छेदोपस्थाप्य चारित्र ।

ब. जिस चारित्र में छेद हुए वस्त्र का त्याग कर नए वस्त्र धारण करने में आए वह छेदोपस्थाप्य चारित्र ।

क. अमुक विशिष्ट प्रकार के तप द्वारा विशुद्धि वाला चारित्र पाना वह छेदोपस्थाप्य चारित्र ।

ड. जिस चारित्र में पूर्व के अंतिम पर्याय का छेद कर उसके पहले के पर्याय में स्थापना करने में आए वह छेदोपस्थाप्य चारित्र ।

५० परिहारविशुद्धि चारित्र यानी?

अ. अमुक विशिष्ट प्रकार की श्रद्धा द्वारा होता विशुद्धि वाला चारित्र वह परिहार विशुद्धि चारित्र।

ब. अमुक विशिष्ट प्रकार का ज्ञान पाकर विशुद्धि वाला चारित्र पालन करना वह परिहार विशुद्धि चारित्र ।

क. अमुक विशिष्ट प्रकार के तप द्वारा होता विशुद्धि वाला चारित्र वह परिहार विशुद्धि चारित्र।

ड. अमुक विशिष्ट प्रकार की आराधना द्वारा दोषों से विशुद्धि पाना वह परिहार विशुद्धि चारित्र।

५१ इत्वर कालिक और यावज्जीविक सामायिक विषयक नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य कौन सा है?

अ. इत्वर कालिक सामायिक अल्प काल तक ही रहता है जबकि यावज्जीविक सामायिक जीवन के अंत तक रहता है ।

ब. इत्वर कालिक सामायिक लेने वाले निरतिचार चारित्र पालन में निपुण न हो तब तक ही इत्वर कालिक सामायिक होता है, तत्पश्चात छेदोपस्थाप्य चारित्र होता है जबकि यावज्जीविक सामायिक जो पहले से निरतिचार चारित्र पालन में निपुण हो उसे ही देने में आता है ।

क. इत्वर कालिक सामायिक केवल भरत और ऐरावत क्षेत्र में होता है जबकि यावज्जीविक सामायिक भरत, ऐरावत और महाविदेह हर जगह हो सकता है ।

ड. भरत और ऐरावत क्षेत्र में यावज्जीविक सामायिक प्रथम और अंतिम तीर्थंकर के शासन काल में ही होता है जबकि इत्वर कालिक सामायिक बाकी के बाईस भगवान के शासन काल में ही होता है ।

५२ यावज्जीविक सामायिक और छेदोपस्थाप्य विषयक नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य कौन सा है?

अ. यावज्जीविक सामायिक भरत, ऐरावत और महाविदेह हर जगह हो सकता है जबकि छेदोपस्थाप्य केवल भरत और ऐरावत क्षेत्र में होता है ।

ब. यावज्जीविक सामायिक दूसरे से तेईसवें यानी कि बाईस तीर्थंकर के शासन काल में ही होता है जबकि छेदोपस्थाप्य प्रथम और अंतिम तीर्थंकर के शासन काल में ही होता है ।

क. यावज्जीविक सामायिक और छेदोपस्थाप्य दोनों में पूर्व में कोई पर्याय होता नहीं ।

ड. छेदोपस्थाप्य के पूर्व में इत्वर कालिक सामायिक पर्याय होता है जबकि यावज्जीविक सामायिक के पूर्व कोई चारित्र का पर्याय होता नहीं ।

५३ अज्ञान परीषह और अदर्शन परीषह विषयक नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य कौन सा है?

अ. अज्ञान परीषह में विशिष्ट ज्ञान की अप्राप्ति होती है जबकि अदर्शन परीषह में शास्त्र के रहस्य समझ नहीं सकते ।

ब. अज्ञान परीषह ज्ञानावरणीय कर्म के उदय के समय होता है जबकि अदर्शन परीषह दर्शन मोहनीय कर्म के उदय के समय होता है ।

क. अज्ञान परीषह में अज्ञानी होने का आक्षेप सहन करना पड़ता है जबकि अदर्शन परीषह में सम्यग्दर्शन चलित होता है ।

ड. अज्ञान परीषह बारहवें गुणस्थान तक होता है तो अदर्शन परीषह में सम्यग्दर्शन चलित होने से वह तीसरे गुणस्थान तक ही होता है ।

५४ भक्तप्रत्याख्यान अनशन और पादपोपगमन अनशन विषयक नीचे दिए वाक्यों में सही वाक्य कौन सा है?

अ. भक्तप्रत्याख्यान अनशन में चार प्रकार के आहार का त्याग होता है जबकि पादपोपगमन अनशन में तीन प्रकार के आहार का त्याग होता है ।

ब. भक्तप्रत्याख्यान अनशन में शारीरिक क्रिया का त्याग होता है ।

क. पादपोपगमन अनशन में शारीरिक क्रिया का कभी त्याग होता है, कभी नहीं भी होता ।

ड. भक्तप्रत्याख्यान अनशन और पादपोपगमन अनशन दोनों जीवन के अंत तक होते हैं पर भक्तप्रत्याख्यान अनशन पादपोपगमन अनशन से निम्न कक्षा का है ।

५५ विनय और वैयावृत्य विषयक नीचे दिए वाक्यों में सही वाक्य कौन सा है?

अ. आचार्य आदि महापुरुष के प्रति आदर भाव वह विनय ।

ब. गुण अथवा गुणी की सेवा वह वैयावृत्य ।

क. विनय में आदर भाव की प्रधानता है जबकि वैयावृत्य में बाह्य काय चेष्टा अथवा आहार आदि की प्रधानता है ।

ड. विनय में आदरभाव होने से अभ्यंतर तप है जबकि वैयावृत्य में बाह्य काय चेष्टा होने से बाह्य तप है ।

५६ बाह्य तप के भेद विषयक नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य कौन सा है?

अ. अनशन - अमुक समय तक अथवा यावज्जीविक आहार का त्याग ।

ब. अवमौदर्य (उणोदरी) - भूख हो उससे कम मात्रा में भोजन ग्रहण करना ।

क. विविक्त शय्यासन - एकांत में सोए रहना ।

ड. कायक्लेश - शरीर पर राग दूर करने के लिए काया को कष्ट देना ।

५७ अभ्यंतर तप के भेद विषयक नीचे दिए वाक्यों में सही वाक्य कौन सा है?

अ. प्रायश्चित - हुए अपराध की गर्हा करना ।

ब. स्वाध्याय - हर प्रकार के ज्ञान का अभ्यास करना ।

क. व्युत्सर्ग - साधना में बिन जरूरी वस्तु अन्य को देना ।

ड. ध्यान - विविध विषय में भटकते चित्त को किसी एक विषय में स्थिर करना ।

५८ परीषह विषयक नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत है?

	परीषह	किस कर्म के उदय से होता है
अ.	प्रज्ञा, अज्ञान	ज्ञानावरणीय
ब.	अदर्शन, अलाभ	दर्शनमोहनीय
क.	नागन्य, अरति, स्त्री, निषद्या, आक्रोश, याचना, सत्कार, पुरस्कार, क्षुधा, पिपासा, शीत, उष्ण, दंशमशक, चर्या, शय्या, वध, रोग	चारित्र मोहनीय
ड.	तृणस्पर्श, मल	वेदनीय

५९ नीचे दिए वाक्यों में कौन सा विकल्प गलत है?

अ. विशिष्ट बुद्धि से होता गर्व यह प्रज्ञा परीषह है ।

ब. अल्प बुद्धि से होता दीनता का परिणाम यह अज्ञान परीषह नहीं ।

क. विशिष्ट ज्ञान प्राप्त न होना वह अज्ञान परीषह है ।

ड. ११वे और १२वे गुणस्थान में मोहनीय कर्म का भले उदय न हो तो भी प्रज्ञा और अज्ञान परीषह संभव है ।

६० स्वाध्याय विषयक नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य कौन सा है?

अ. वाचना - शिष्य आदि को आगम आदि श्रुत का पाठ न देना पर स्वयं लेना ।

ब. पृच्छना - सूत्र और अर्थ संबंधी जो शंका हो उसके समाधान के लिए प्रश्न पूछना ।

क. अनुप्रेक्षा - पढ़े हुए श्रुत का परावर्तन और चिंतन करना ।

ड. आम्नाय - मुख के उच्चारण पूर्वक नया श्रुत कंठस्थ करना अथवा कंठस्थ किए श्रुत का परावर्तन करना ।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक । (कुल १५ x २ = ३० अंक)

६१ नीचे पांच भावना का वर्णन किया हुआ है । उसमें कौन सा विकल्प अयुक्त नहीं?

(१) युगबाहु की हत्या होने के बाद मदनसेना 'शरीर क्षणिक है, काया चंचल है,' आदि चिंतन कर अपने पति को भी स्थिर करती है । (२) नमिराजर्षि को दाहज्वर रोग घातक होने से पत्नी चंदन घिसती है । उनको कंगन की आवाज के कारण असह्य वेदना होती है । तब पत्नी सौभाग्य के प्रतिक स्वरूप एक कंगन रखकर चंदन घिसती है जिससे राजा को आनंद का अनुभव होता

है। (३) अग्निशर्मा-गुणसेन, यशोधर चरित्र में बैर की परंपरा देखने मिलती है। पिता, पुत्र, पत्नि आदि हर भव में अलग-अलग पात्र बन गुणी जीव को मारने का प्रयत्न करते हैं। (४) शांति को २५ वर्ष की उम्र में स्वयं को थर्ड स्टेज का केन्सर रोग हुआ है यह जानकर कल्पांत करती है, माता समझाती है कि तत्त्व-त्रयी की आराधना ही अमोघ-अगम्य उपाय है। (५) पुद्गल शरीर, स्वजन, पत्नी, कुटुंब, धन, जमीन, घर आदि पर पदार्थ हैं, अभोग्य हैं। प्रतिदिन पूर्वोक्त अनुप्रेक्षा करनी चाहिए।

अ. अशुचि-एकत्व-संसार-अनित्य-अन्यत्व

ब. अशरण-एकत्व-संसार-अशरण-अन्यत्व

क. अनित्य-एकत्व-संसार-अशरण-अशुचि

ड. अनित्य-एकत्व-संसार-अशरण-अन्यत्व

६२ नीचे फल सहित भावनाएं लिखी हैं। उसमें कौन सा विकल्प असंगत घटक वाला नहीं?

अ. धर्मस्वाख्यात - श्रद्धा, संवर - मोक्ष का अनंतरकारण,
बोधिदुर्लभ - चेतन पदार्थ पर वैराग्य, आस्रव - दुख का अनुभव होता नहीं।

ब. धर्मस्वाख्यात - विशुद्ध श्रद्धा, लोक - आत्म कल्याण भावना,
बोधि दुर्लभ - तात्विक बोध, निर्जरा - शाश्वत सुख

क. धर्मस्वाख्यात - मोक्ष प्रति निर्भयता, अशुचि - शरीर-उद्वेग,
आस्रव - चतुर्गति वेदना, संवर - कर्म वारणाभाव

ड. धर्मस्वाख्यात - उल्लसित भाव, बोधि दुर्लभ - मार्ग से अभ्रष्ट होता नहीं,
लोक - लोक षट् द्रव्य चिंतन, निर्जरा - सकाम दोष क्षय

६३ नीचे में ११ परीषह संबंधी कौन सा विकल्प सही नहीं?

अ. १. दर्शन-प्रज्ञा परीषह मोक्ष मार्ग में स्थिरता संबंधी है तथा अन्य २० परीषह निर्जरा सापेक्ष सहनशील हैं।

२. विशिष्ट प्रकार से अच्छे-बुरे प्रसंग की उपस्थिति वह परीषह है तथा उस समय राग-द्वेष पर विजय तथा संयम बाधक प्रवृत्ति का निषेध वह परीषह जय है और उससे विपरीत परीषह की हार है।

ब. १. आधाकर्मी आहार वापरने से परीषह की अपालना होती है। भूख-प्यास सहन होने पर भी न करना उसे परीषह से विमुख होना जानिए।

२. ठंडी हटाने अग्नि की वांछा करना अयुक्त है। प्रभु वीर निर्वस्त्र जंगल में साधना करते थे. परीषह को सामने चलकर आलिंगन करते थे।

क. १. मच्छर, खटमल आदि के उपद्रव से जो पीड़ा हो उसे सहन करना तथा अन्य स्थान में गमन न करना उसे दंशमशक परीषह जीता कहते हैं ।

२. अशुचि भावना से भावित आत्मा स्त्री परीषह से हारता नहीं ।

ड. १. विहार में पत्थर, कांटे, वाहन आदि की प्रतिकूलता वह अरति परीषह है । आगमानुसार विहार न करना वह परीषह जय है ।

२. शय्या यानी उपाश्रय आदि स्थान विपरीत मिलने पर भी रति-अरति करना उसे परीषह जीता कहते हैं ।

६४ नीचे कौन सा विकल्प विरोधी है?

अ. १. अज्ञानी जीव अथवा जिसके साथ शत्रुता है उसे डंडे आदि शस्त्र से मारे, रक्तपात करे वह आक्रोश परीषह है ।

२. ढंढण ऋषि निर्दोष भिक्षा न मिलने के कारण अदीन बन साधना करते हैं वह याचना परीषह अजय है ।

ब. १. श्रीपाल राजा को बाल्य वय में कोढ़ी की संगत से कोढ़ रोग संपूर्ण शरीर में व्याप्त हुआ वह रोग परीषह है ।

२. नूतन मुनि को गृहस्थ के घर वहोरने जाने के लिए लज्जा आती है । अतः वे याचना परीषह जीत न सके ।

क. १. माश्तुष मुनि को गुरू भगवंत की कृपा से दीनता रहित मा रुष मा तुष' मात्र दो शब्द रटते केवलज्ञान प्रगट हुआ, वे अज्ञान परीषह जयी बने ।

२. गच्छवासी मुनिओं को कोई प्रयोजन आने से खोखलापन रहित घास का उपयोग करने की अनुज्ञा है । घास पर संथारा+उत्तरपट्टा बिछाकर सो जाते हैं । उसमें अरति करते नहीं । वह तृणस्पर्श परीषह जय हुआ ।

ड. १. ध्यान में रहे, मैले वस्त्र परिधान किए मुनि को देख राहुल निंदा करता है । वह सुनकर मुनि को अपने अंग में मेल, धूल, जाल जमी देखकर दुर्गंछा होती है । उससे वह मल परीषह अजयी बने ।

२. स्व-दर्शन के रहस्य न समझते, पर-दर्शन के साक्षात् चमत्कार देख सम्यक् दर्शन से चलित हुए जीव को अदर्शन परीषह अजय कहा है ।

६५ नीचे का कौन सा विकल्प परीषह के गुणस्थान की विचारणा संबंधी विषम है?

	१०वां	११वां	१२वां गुणस्थान
अ.	१. क्षुधा	शीतोष्ण	प्रज्ञा, अज्ञान, अलाभ, चर्या
	२.पिपासा	दंशमशक	शय्या, वध, रोग, मल, तृण स्पर्श
ब.	१. पिपासा, क्षुधा	निषद्या	अलाभ, अज्ञान, वध, मल
	२. शीतोष्ण	प्रज्ञा, चर्या	तृण स्पर्श, दंशमशक
क.	१. शीतोष्ण, प्रज्ञा	अज्ञान, अलाभ	दंशमशक, रोग, वध, चर्या
	२. चर्या, वध	तृणस्पर्श, मल	पिपासा, क्षुधा
ड.	१. क्षुधा, पिपासा	प्रज्ञा, अज्ञान	रोग, मल, दंशमशक, तृण स्पर्श
	२. शीतोष्ण, चर्या	अलाभ, वध	रोग, मल, दंशमशक, तृण स्पर्श

६६ नीचे कोष्ठक में किस कर्म के उदय से कितने परीषह उदय में आते है वह बताया है। कौन सा विकल्प यथास्थित नहीं?

अ. चारित्र मोहनीय - ७, वेदनीय - ११, ज्ञानावरण - २, बादर संपराय - २२

ब. दर्शन मोहनीय - १, अनिवृत्तिकरण - २२, अंतराय - १, ज्ञानावरण - २

क. मोहनीय(दर्शन + चारित्र) ३+८=११, ज्ञानावरण - १, अंतराय - २, वेदनीय - ८

ड. मोहनीय - ८, वेदनीय - ११, ज्ञानावरण - २, अंतराय - १

६७ नीचे का कौन सा विकल्प उचित है?

अ. वृद्ध आर्या ग्रीष्म-शीत ऋतु में - युग्म ऋतु में विहार करती हैं। वसति में प्रवेश कर शय्या की प्राप्ति करती हैं। उपाश्रय के बगल में रहे गृहस्थ को घृणा होती है। उससे वह आक्रोश-गुस्सा करता है। इसपर आर्या भी सामने गुस्सा करती हैं। रजाई की याचना करने पर वह नहीं देता वह आर्या सहन करती हैं।

ब. श्रमण वैशाख-चैत्र महीने में प्रसन्नता से विहार करते हैं। मार्ग में गाँव कितना दूर है पूछते व्यक्ति मुंह बिगाड़ता है तो भी स्मित रखकर फिर पूछते हैं, लकड़ी दिखाता है तो भी हंसते मुख आगे गमन करते हैं, वहाँ वसति (उपाश्रय) में प्रशांत भाव से निसिही बोलते प्रवेश करते हैं। लघु नीति परठवने जाते हैं तो लोग फरियाद करते हैं। क्षमा याचना कर लौटते हैं। मच्छर, मख्खी, डांस आदि अधिक मात्रा में होने पर भी मच्छरदानी का इस्तेमाल नहीं करते, जप-ध्यान में लीन बन संथारा करते हैं।

क. आचार्य भगवंत को ७० वर्ष में घातक कैंसर व्याधि हुई। उपचार के समय तीव्र पीड़ा हुई उससे चीख निकल पड़ती है, आर्तध्यान करते हैं, आवश्यक क्रिया में प्रमाद सेवन करते हैं। एर-कंडीशन में स्वाध्याय, संथारा करते हैं।

ड. १५ वर्ष के संयम पर्याय वाले प्रवचन देते हैं। श्रोता प्रश्न पूछता है तो भी निडरता पूर्वक शास्त्रोक्त उत्तर देते हैं, गाँव-गाँव प्रशंसा हुई कि 'क्या अद्‌भुत प्रज्ञा है?'. सुनकर गर्व से झूम उठते हैं। 'मैं जहाँ विचरूं वहाँ लोग मेरे पास प्रवचन की मांग कर हर्षित होकर सुनते हैं। मेरी वाचा शक्ति, शैली अतिशय सुंदर हैं'।

६८ नीचे का कौन सा विकल्प मृषाकथक है?

सूक्ष्मसंपराय	यथाख्यात
अ. संपराय - लोभ, अति अल्प प्रमाण में। केवल सूक्ष्म लोभ १०वें गुणस्थान में ही होता है।	अ. जिनेश्वर ने कहा वैसा ही चारित्र। कषायोदय रहित संयम, सर्वथा कषाय के अभाव वाला है।
ब. इस चारित्र का उदय मात्र १०वें गुणस्थान में होता है क्योंकि मोहनीय की २७ प्रकृति का क्षय या उपशम हो चूका है। गुणस्थान के नाम के मुताबिक गुण हैं।	ब. अंतिम चार गुणस्थान में यह चारित्र विद्यमान होता है क्योंकि कषायों का उपशम भाव ११वें गुणस्थान में, कषायों का क्षय १२,१३,१४वें गुणस्थान में है।
क. स्थूल दृष्टि से अर्थात् व्यवहार नय से चारित्र और समिति-गुप्ति अभेद रूप हैं। समिति कार्य और चारित्र कारण है। ज्ञान नय से चारित्र और समिति गुप्ति में लय लीनता नहीं।	क. चारित्र मोक्ष का साक्षात् अकारण है। दस-विध यति धर्म में भी चारित्र धर्म का कथन किया है, चारित्र की अमुख्यता निर्देश करने के लिए फिर सूचित किया है।
ड. विशुद्धतर चारित्र है। १०वां गुणस्थान जीव को श्रेणि में होता है परंतु अवसर्पिणी के पंचम आरे में श्रेणि का विच्छेद है, अतः वर्तमान काल में उपरोक्त चारित्र नहीं है।	ड. विशुद्धतम चारित्र है। वर्तमान काल में अंतिम चार गुणस्थान के अभाव से यह चारित्र उपस्थित नहीं। संचित्त कर्म को रिक्त करना उसका नाम चारित्र।

६९ नीचे तप की व्याख्या उनके भेदो के साथ लिखी है, उसमें कौन सा विकल्प क्रमिक सत् है? (१) ममता ने मासक्षमण, सिद्धतप निर्मल भाव, आत्म स्वरूप प्रगट करने के लिए किया उसका अभी भी आनंद मना रही है। (२) संयमी ने तीन टंक से अधिक खाना नहीं तथा पांच तिथि आयंबिल, उपवास आदि तप करना ऐसा नियम लिया है, मुनि महात्मा ने जीवन तक चार/तीन प्रकार के आहार का त्याग किया है, मेरू जैसी अडग स्थिरता धराते हैं, स्वयं उठते-बैठते हैं। नियत स्थान में हिलना-चलना करते हैं। (३) साधना अब भूख से अल्प आहार ग्रहण करती है, अतः आलस, प्रमाद रहित सुखपूर्वक दिवस व्यतीत होता है। (४) अतुल ने आहार की लालसा कम करने अभिग्रह लिया है। ५ द्रव्यो से अधिक न खाना, परदेश में भी रात्रि भोजन न करना, बिना नमक का भोजन निंदना नहीं, चौमासा में एकासना-बियासना आदि तप करना। (५) जयदीप गुरू सत्संग के प्रभाव से प्रतिदिन एक विगई का त्याग करता है, उससे ईन्द्रिय मर्यादा में रहती है, लालसा कम हो चुकी है। (६) हसमुख पद्मासन मुद्रा में बैठ बांधी माला गिनता है, जिन मुद्रा में कर्म क्षय का काउस्सग्ग करता है। शरीर की मजबूती तथा सहनशीलता बढ़ी है। (७) शीतल को एकांत ही पसंद है उसके कारण ईन्द्रिय, कषाय की विजेता बनी है।

अ. रसपरित्याग-तप-अवमौदर्य-अनशन-संलिनता-कायक्लेश-वृत्तित्याग

ब. रसपरित्याग-अवमौदर्य-अनशन-संलिनता-तप-कायक्लेश-वृत्तिपरिसंख्यान

क. रसत्याग-तप-ऊणोदरी-कायक्लेश-वृत्तित्याग-संलीनता-अनशन

ड. तप-अनशन-उणोदरी-वृत्तिपरिसंख्यान-रसपरित्याग-कायकलेश-विविक्तशय्यासन

७० नीचे की २ कॉलम में कौन सा वाक्य सामायिक को अनुरूप नहीं?

ईत्वरकालिक	यावज्जीविक
अ. राग-द्वेष के अभाव रूप लाभ अल्प काल टिकता है।	अ. समता का लाभ यानी की सामायिक जीवन के अंतिम क्षण तक होता है।
ब. प्रथम-अंतिम तीर्थंकर के साधु ऋजु-प्राज्ञ होने से दोष रहित संयम पालते हैं, उससे निरतिचार सामायिक सेवन करते हैं।	ब. महाविदेह क्षेत्र में सभी तीर्थंकर प्रभु के साधुओं को तथा १५ कर्म भूमि में जड-वक्र स्वभाव के कारण सातिचार चारित्र होता है।
क. छोटी अथवा कच्ची दीक्षा भरत-ऐरावत क्षेत्र में २२ तीर्थंकर प्रभु के साधु भगवंत को नहीं होती।	क. भरत/ऐरावत क्षेत्र में प्रथम-अंतिम तीर्थंकर आदि के २२ तीर्थंकर साधु भगवंत को होता हैं।
ड. साधु जब दीक्षा के बाद योगोद्वहन कर दशवैकालिक सूत्र की अनुज्ञा पाकर निपुण चारित्रधारी बन जाता है तब कच्ची दीक्षा का छेद करने में आता है।	ड. महाविदेह क्षेत्र में हर तीर्थंकर के साधुओं को यावज्जीविक सामायिक ही होता है, छेदोपस्थाप्य नहीं होता है।

७१ परिहार विशुद्धि विषयक नीचे का कौन सा विकल्प योग्य है?

अ. परिहार तप से विशुद्धि वाला प्रव्रजितपना वह परिहारविशुद्धि, इस तप की परिपालना में १ वाचनाचार्य, चार तपस्वी, चार वैयावच्च करने वाले ऐसे नौ ही स्वीकारने वाले होते हैं। ज्ञान के अतिशय वाले होने पर भी आचार के कारण एक वाचनाचार्य स्थापित होते हैं। (नियुक्त किए जाते हैं)

ब. यह तप ९ महीने में पूर्ण होता है, ग्रीष्म काल में जघन्य से अट्ठम तप करे, पारने में एकासना करे और अभिग्रह रहित गोचरी वहोरने जाए।

क. जिनकल्प अथवा स्थविर कल्प स्वीकारे, इस कल्प में रहे आंख में पड़ा तृण स्वयं बहार निकाले, अपवाद सेवन करते हैं, प्रथम संघयण वाले १० वर्ष के चारित्र पर्याय वाले को यह चारित्र होता है।

ड. पूर्व के तपस्वी बाद के तपस्वी की सेवा करे, ४ महीने बाद वाचनाचार्य तप आदरे, चार माह तक कर के अन्य साधु प्रतिदिन निवि तप आचरे।

७२ नीचे के वाक्य वैयावच्च करने योग्य दस स्थानों में से किस स्थान से संबंधित हैं?

(१) वज्रस्वामी साधु भगवंत को वाचना देते हैं। (२) कूरगडु मुनि भाव तप करते हैं। (३) हरिभद्र सूरी पंचाचार का पालन करते हैं और आश्रितों को कराते हैं। (४) संप्रति महाराजा पूर्व भव में शूल रोग से बाधित हुए। (५) आचार्य का विशाल समुदाय है। (६) मोक्ष की साधना करते हैं। (७) अनेक गच्छों का समुदाय। (८) साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका चार मजबूत स्तंभ हैं। (९) ग्रहण शिक्षा - आसेवन शिक्षा लेने वाले मुनि। (०) आपस में गोचरी-पानी का संभोग होता है।

अ. १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

ब. २ ३ १ ५ ६ ९ ७ ८ ४ ०

क. १ ३ ६ २ ४ ९ ५ ० ७ ८

ड. ५ ३ २ ९ ८ ७ ० १ ४ ६

७३ नीचे का कौन सा विकल्प तप संबंधी अगम्य है?

अ. व्युत्सर्ग का अर्थ त्याग, साधना में अंतराय भूत पदार्थ त्यागना चाहिए। काया की ममता का त्याग आवश्यक है।

ब. गुण और गुणी की आशातना का वर्जन करना। आसन आदि अर्पण करना, बड़े आए तब स्व-स्थान से खड़े होकर सामने लेने जाना। भक्ति-बहुमान करना वह विनय अभ्यंतर भेद वाला तप है।

क. मन की चंचलता, हिंसा, संरक्षण आदि एकाग्रता पूर्वक करना वे भी ध्यान के प्रकार हैं। बंदर की तरह, अश्व की तरह भटकते/दौड़ते मन को बेकाबू रखना वह अध्यान नहीं। चित्त की दमनता स्थगित हो जाती है। १ घंटे से अधिक भी ध्यान एक विषय में हो सकता है।

ड. वैयावच्च अप्रतिपाती गुण है। प्रायश्चित शब्द में प्राय: और चित्त दो शब्द आते हैं। अपराध की शुद्धि करने वाले नौ भेद प्रथम अभ्यंतर तप के हैं।

७४ जोड़ों में से तात्विक विकल्प ढूंढे।

X.

अ.	पादपोपगमन	(१)	विविकत शय्यासन
ब.	कषायसंलीनता	(२)	तप साधना हेतु
क.	वृत्तिपरिसंख्यान	(३)	निश्चलता
ड.	संवर	(४)	मित आहार

Y.

अ.	प्रायश्चित	(१)	दस भेद
ब.	वैयावच्च	(२)	श्रुताभ्यास
क.	स्वाध्याय	(३)	चित्त शुद्धि
ड.	(सत्गुण प्रशंसा) प्रमोद	(४)	उपचार विनय

Z.

अ.	पारांचिक	(१)	महाव्रत निषेध
ब.	समनोज्ञ	(२)	परस्पर संभोग
क.	अनवस्थाप्य	(३)	विच्छेद
ड.	दर्शनविनय	(४)	आशातना का त्याग

अ.			ब.		
X	**Y**	**Z**	**X**	**Y**	**Z**
A-3	A-3	A-3	A-3	A-3	A-3
B-1	B-2	B-2	B-1	C-2	B-4
C-2	C-4	C-1	C-4	B-1	C-1
D-4	D-1	D-4	D-2	D-4	D-2

क.

X	Y	Z
A-4	A-3	A-3
B-1	B-1	B-4
C-3	C-2	C-2
D-2	D-4	D-1

ड.

X	Y	Z
A-3	A-3	A-3
B-1	B-1	B-2
C-4	C-2	C-1
D-2	D-4	D-4

७५ कौन सा विकल्प अर्थसंगत नहीं?

अ. सूत्रार्थ प्रवचन में देना, श्रावकों को जो व्याख्यान दिया जाए वह धर्मोपदेश और शिष्य मुमुक्षु आदि को श्रुत का पाठ देना वह वाचना तप है ।

ब. नया श्रुत कंठस्थ करना या कंठस्थ किया हुआ श्रुत परावर्तन न करना, मन में चिंतन करना, मुख से उच्चार न करना वह आम्नाय बाह्य तप भेद है ।

क. बाह्य, अभ्यंतर उपधि व्युत्सर्ग के दो भेद हैं । जीवादि से संसक्त आहार/पानी का त्याग वह बाह्य उपधि तथा कषाय/काया का त्याग अभ्यंतर उपधि है ।

ड. वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा आदि अभ्यंतर स्वाध्याय तप हैं । तप निर्जरा का कारण है । और निर्जरा मोक्ष का अनन्तर/अनन्य कारण है । अतः परंपरा से अथवा उपचार से तप मोक्ष है, ऐसा कह सकते हैं ।

▮

<table>
<tr><td colspan="4">आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित
तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन
घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम</td></tr>
<tr><td>कार्यपत्रक-१९</td><td>अध्याय-९</td><td>सूत्र २७-४९</td><td>जमा करने की अंतिम तारीख
ता. १५/११/२०२०</td></tr>
</table>

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक । (कुल ३० x ½ = १५ अंक)

१ ध्यान अधिक में अधिक .... तक रहता है ।
अ. एक मुहूर्त ब. अंतर्मुहूर्त क. दस मिनिट ड. एक घड़ी

२ शुक्लध्यान ...... संघयण वाले को ही होता है ।
अ. छठे ब. पांचवे तक के क. प्रथम ड. दूसरे तक के

३ धर्मध्यान ..... मोक्ष का कारण है । शुक्लध्यान .... कारण है ।
अ. परंपरा से, साक्षात् ब. परोक्ष से, साक्षात्
क. साक्षात्, परंपरा से ड. निरंतर, साक्षात्

४ प्रतिकूल मकान मिलते मकान को बदलने का विचार वह .... आर्त्तध्यान है ।
अ. वेदनावियोग चिंता ब. ईष्टसंयोग चिंता क. अनिष्टवियोग चिंता ड. निदान

५ धर्मध्यान .... को होता है ।
अ. देशविरत ब. अविरत क. अप्रमत्तसंयत ड. प्रमत्त

६ दोनों प्रकार की श्रेणी में यथासंभव ११-१२ गुणस्थान में पूर्वधर को .... ध्यान होता है ।
अ. धर्म ब. आर्त्त क. शुक्ल ड. रौद्र

७ .... प्रकार के निर्ग्रंथ सभी तीर्थंकर के तीर्थ में होते हैं ।
अ. चार ब. दो क. सभी ड. एक

८ पुलाक, बकुश, प्रतिसेवना कुशील इन तीनों को .... संयम होता है ।
अ. सामायिक और छेदोपस्थापनीय ब. यथाख्यात चारित्र
क. परिहार विशुद्धि और यथाख्यात चारित्र ड. परिहार विशुद्धि और सूक्ष्म संपराय

९ कषायकुशील, निर्ग्रंथ और स्नातक इन तीनों को .... लेश्या होती है ।

अ. कृष्ण ब. शुक्ल क. नील ड. कापोत

१० पुलाक ..... देवलोक में उत्कृष्ट स्थिति वाले देवों में उत्पन्न होता है ।

अ. अच्युत ब. आरण क. सहस्रार ड. सौधर्म

११ पांचों प्रकार के निर्ग्रंथ को ..... लिंग अवश्य होता है ।

अ. द्रव्य ब. भाव क. द्रव्य और भाव ड. नो

१२ अर्थ, व्यंजन और योग की संक्रांति यह .... है ।

अ. विचार ब. अविचार क. सुविचार ड. वितर्क

१३ व्युपरतक्रियानिवृत्ति .... गुणस्थान में होती है ।

अ. दसवें ब. बारहवें क. चौदहवें ड. ग्यारहवें

१४ यहाँ सूत्र में .... को ध्यान कहा है ।

अ. एकाग्र चिंता निरोध ब. एकाग्र निरोध क. चिंता निरोध ड. चिंता

१५ धर्मध्यान और शुक्लध्यान ...... के हेतु हैं ।

अ. संसार ब. मोक्ष क. नरक ड. कर्म

१६ आर्त्तध्यान .... हो सकता है ।

अ. अविरत को ब. अविरत और देशविरत को

क. अविरत, देशविरत और प्रमत्त को ड. केवल प्रमत्त को

१७ ईष्ट वस्तु पाने का और पाने के उपाय का एकाग्र चित्त से विचार वह .... आर्त्तध्यान है ।

अ. वेदनावियोग चिंता ब. अनिष्टवियोग चिंता क. ईष्टसंयोग चिंता ड. निदान

१८ हिंसा, असत्य, चोरी, विषय संरक्षण इन चार का एकाग्र चित्त से विचार वह ..... ध्यान है ।

अ. आर्त ब. रौद्र क. शुक्ल ड. धर्म

१९ आज्ञा विचय, अपाय विचय, विपाक विचय, संस्थान विचय यह चार प्रकार .... के हैं ।

अ. शुक्लध्यान ब. धर्मध्यान क. रौद्रध्यान ड. आर्तध्यान

२० लोक के तथा लोक में रहे द्रव्यों के आकार के स्वरूप का पर्यालोचन यह ..... धर्मध्यान है ।

अ. संस्थानविचय ब. अपायविचय क. विपाकविचय ड. आज्ञाविचय

२१ ...... ध्यान के अंतिम दो भेद केवली को होते हैं ।

अ. धर्म ब. शुक्ल क. आर्त ड. रौद्र

२२ दोनों प्रकार की श्रेणी में ८-९-१० गुणस्थान में ..... ध्यान ही होता है ।

अ. आर्त ब. धर्म क. शुक्ल ड. रौद्र

२३ ..... यानी आत्मा या परमाणु आदि किसी एक आलंबन सहित ।

अ. एकाश्रय ब. वितर्क क. विचार ड.एकाश्रय, वितर्क और विचार तीनों

२४ शुक्लध्यान के प्रथम के दो भेद ..... हैं ।

अ. एकाश्रय ब. सवितर्क क. एकाश्रय और सवितर्क ड. एकाश्रय और अवितर्क

२५ जो साधु ज्ञान, दर्शन चारित्र में अतिचार लगाने से ज्ञान, दर्शन, चारित्र के सार से रहित बनते हैं वे .... साधु हैं ।

अ. बकुश ब. कुशील क. पुलाक ड. स्नातक

२६ कितनों के मत से ..... कुशील को यथाख्यात के सिवा चार संयम होते हैं ।

अ. कषाय ब. प्रतिसेवना क. ज्ञान ड. दर्शन

२७ कषायकुशील और निर्ग्रंथ को ... पूर्व का श्रुत होता है ।

अ. नौ ब. साढ़े नौ क. चौदह ड. संपूर्ण दस

२८ कषायकुशील और निर्ग्रंथ .... विमान में उत्पन्न होते हैं ।

अ. विजय ब. सर्वार्थ सिद्ध क. वैजयंत ड. अपराजित

२९ प्रारंभ के सभी जघन्य संयम स्थान ..... को होते हैं ।

अ. पुलाक और कुशील ब. बकुश क. निर्ग्रंथ ड. बकुश और कुशील

३० ...... अंतिम एक संयम स्थान को प्राप्त कर मोक्ष पाते हैं ।

अ. निर्ग्रंथ ब. स्नातक क. बकुश ड. निर्ग्रंथ और स्नातक

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१ नीचे के वाक्यों में गलत विकल्प कौन सा है?

अ. प्रस्तुत ग्रंथ में धर्मध्यान अप्रमत्त संयत यानी कि सातवें गुणस्थान में रहे जीव को ही होता है ऐसा निर्देश है ।

ब. व्युपरतक्रियानिवृत्ति शुक्लध्यान में अनिवृत्ति का अर्थ क्रिया से निवृत्त नहीं होना ऐसा होता है।

क. शुक्ल ध्यान के केवल दूसरे भेद में ही जीव को एक योग होता है ।

ड. जैन दर्शन में ध्यान का अर्थ केवल चित्त का निरोध करना उतना ही नहीं पर मन वचन काया रूप योग का निरोध करना यह भी ध्यान है ।

३२ नीचे के वाक्यों में सही विकल्प कौन सा है?

अ. तप यह द्रव्य निर्जरा का कारण है, भाव निर्जरा का नहीं ।

ब. तिर्यंच गति में एकेन्द्रिय से लेकर को असंज्ञि पंचेन्द्रिय तक मन नहीं होने के कारण उनको किसी भी प्रकार का ध्यान नहीं होता ।

क. शुक्लध्यान का प्रथम भेद विचार सहित तो दूसरा भेद विचार रहित बताया है ।

ड. पुलाक तथा परिहार विशुद्धि चारित्र वाले कषायकुशील को कापोत, पद्म और शुक्ल लेश्याएं होती हैं ।

३३ नीचे के जोड़ों के विषय में दिए विकल्पों में सही विकल्प कौन सा है?

शुक्ल ध्यान में	योग की विचारणा
१. पृथयत्व वितर्क सविचार	A काय योग के व्यापार वाले को
२. एकत्व वितर्क अविचार	B मनो योग के व्यापार वाले को
३. सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती	C योग व्यापार रहित जीव को
४. व्युपरतक्रियानिवृत्ति	D मन आदि तीनों योग के व्यापार वाले को
	E मनादि तीन में से किसी भी दो योग के व्यापार वाले को
	F मनादि तीन में से किसी भी एक योग के व्यापार वाले को

अ. 1-D, 2-F, 3-B, 4-C ब. 1-D, 2-F, 3-A, 4-C

क. 1-A, 2-F, 3-B, 4-C ड. 1-D, 2-C, 3-A, 4-F

३४ पृथकत्ववितर्क सविचार ध्यान यानी?

अ. पूर्वगतश्रुत के आधार से आत्मा आदि किसी एक द्रव्य के आश्रय से उत्पादादि में से किसी एक पर्याय का एकाग्रतापूर्वक द्रव्य-पर्याय भेदप्रधान चिंतन हो और साथ द्रव्य पर्याय का परावर्तन हो वह पृथकत्ववितर्क सविचार ध्यान ।

ब. पूर्वगतश्रुत के आधार से आत्मा आदि अनेक द्रव्यों के आश्रय से उत्पादादि अनेक पर्यायों का एकाग्रतापूर्वक द्रव्य-पर्याय अभेदप्रधान चिंतन हो और साथ द्रव्य पर्याय का परावर्तन हो वह पृथकत्ववितर्क सविचार ध्यान ।

क. पूर्वगतश्रुत के आधार से आत्मा आदि किसी एक द्रव्य के आश्रय से उत्पादादि अनेक पर्यायों का एकाग्रतापूर्वक द्रव्य-पर्याय भेदप्रधान चिंतन हो और साथ द्रव्य पर्याय का परावर्तन हो वह पृथकत्ववितर्क सविचार ध्यान ।

ड. पूर्वगतश्रुत के आधार से आत्मा आदि किसी एक द्रव्य के आश्रय से उत्पादादि किसी एक पर्याय का एकाग्रतापूर्वक अभेदप्रधान चिंतन हो और साथ अर्थ-व्यंजन-योग के परावर्तन का अभाव हो वह पृथकत्ववितर्क अविचार ध्यान ।

३५ एकत्ववितर्क अविचार ध्यान यानी?

अ. पूर्वगतश्रुत के आधार से आत्मा आदि किसी एक द्रव्य के आश्रय से उत्पादादि किसी एक पर्याय का एकाग्रतापूर्वक अभेदप्रधान चिंतन हो और साथ अर्थ-व्यंजन-योग के परावर्तन का अभाव हो वह एकत्ववितर्क अविचार ध्यान ।

ब. पूर्वगतश्रुत के आधार से आत्मा आदि किसी एक द्रव्य के आश्रय से उत्पादादि अनेक पर्यायों का एकाग्रतापूर्वक अभेदप्रधान चिंतन हो और साथ अर्थ-व्यंजन-योग के परावर्तन का अभाव हो वह एकत्ववितर्क अविचार ध्यान ।

क. पूर्वगतश्रुत के आधार से आत्मा आदि किसी एक द्रव्य के आश्रय से उत्पादादि किसी एक पर्याय का एकाग्रतापूर्वक अभेदप्रधान चिंतन हो और साथ द्रव्य-पर्याय के परावर्तन का अभाव होता वह एकत्ववितर्क अविचार ध्यान ।

ड. पूर्वगतश्रुत के आधार से आत्मा आदि किसी एक द्रव्य के आश्रय से उत्पादादि अनेक पर्यायों का एकाग्रतापूर्वक द्रव्य-पर्याय भेदप्रधान चिंतन हो और साथ द्रव्य-पर्याय का परावर्तन हो वह एकत्ववितर्क सविचार ध्यान ।

३६ व्युपरतक्रियानिवृत्ति ध्यान यानी?

अ. मन आदि तीनों योगों की क्रिया सहित तथा मोक्ष प्राप्ति तक ध्यान की अवस्था से वापस न लौटना वह व्युपरतक्रियानिवृत्ति ध्यान ।

ब. मन आदि तीनों योगों की क्रिया से रहित तथा मोक्ष प्राप्ति तक ध्यान की अवस्था से वापस न लौटना वह व्युपरतक्रियानिवृत्ति ध्यान ।

क. मन की क्रिया से रहित तथा मोक्ष प्राप्ति तक ध्यान की अवस्था से वापस न लौटना वह व्युपरतक्रियानिवृत्ति ध्यान ।

ड. मन और वचन की क्रिया से रहित तथा मोक्ष प्राप्ति तक ध्यान की अवस्था से वापस न लौटना वह व्युपरतक्रियानिवृत्ति ध्यान ।

३७ पुलाक यानी?

अ. जो साधु ज्ञान, दर्शन और चारित्र में अतिचार लगाने पर भी ज्ञान, दर्शन और चारित्र के सार से रहित न बने वह पुलाक ।

ब. जो साधु ज्ञान, दर्शन और चारित्र में जरा भी अतिचार न लगाए तो भी ज्ञान, दर्शन और चारित्र के सार से रहित बने वह पुलाक ।

क. जो साधु ज्ञान, दर्शन और चारित्र में अतिचार लगाने से ज्ञान और दर्शन के सार से रहित बने पर चारित्र के सार से रहित न हो वह पुलाक ।

ड. जो साधु ज्ञान, दर्शन और चारित्र में अतिचार लगाने से ज्ञान, दर्शन और चारित्र के सार से रहित बने वह पुलाक ।

३८ कुशील यानी?

अ. उत्तरगुण के दोषों से या संज्वलन कषाय के उदय से भी जिसका चारित्र दूषित न हो वह कुशील ।

ब. मूलगुण के दोषों से या संज्वलन कषाय के उदय से जिसका चारित्र दूषित हो वह कुशील।

क. उत्तरगुण के दोषों से या संज्वलन कषाय के उदय से जिसका चारित्र दूषित हो वह कुशील।

ड. उत्तरगुण के दोषों से या अनंतानुबंधी कषाय के उदय से जिसका चारित्र दूषित हो वह कुशील ।

३९ अनंतानुबंधिवियोजक यानी?

अ. अनंतानुबंधि चार कषायों का वर्तमान में क्षय करने वाला अनंतानुबंधिवियोजक ।

ब. अनंतानुबंधि चार कषायों का वर्तमान में बंध करने वाला अनंतानुबंधिवियोजक ।

क. अनंतानुबंधि चार कषायों का भविष्य में जो क्षय करने वाला है वह अनंतानुबंधिवियोजक।

ड. अनंतानुबंधि चार कषायों का भूतकाल में जिसने क्षय किया हो वह अनंतानुबंधिवियोजक।

४० दर्शनमोहक्षपक यानी?

अ. दर्शन मोह की सात प्रकृति का जिसने भूतकाल में क्षय किया हो वह दर्शनमोहक्षपक ।

ब. दर्शन मोह की सात प्रकृति का भविष्य में क्षय करने वाला दर्शनमोहक्षपक ।

क. दर्शन मोह की तीन प्रकृति का वर्तमान में क्षय करने वाला दर्शनमोहक्षपक ।

ड. दर्शन मोह की सात प्रकृति का वर्तमान में क्षय करने वाला दर्शनमोहक्षपक ।

४१ मोहोपशमक यानी?

अ. मोहनीय कर्म की प्रकृतिओं का वर्तमान में बंध करने वाला मोहोपशमक ।

ब. मोहनीय कर्म की प्रकृतिओं का वर्तमान में क्षय करने वाला मोहोपशमक ।

क. मोहनीय कर्म की प्रकृतिओं का वर्तमान में उपशम करने वाला मोहोपशमक ।

ड. मोहनीय कर्म की प्रकृतिओं का भविष्य में उपशम करने वाला मोहोपशमक ।

४२ उपशांतमोह यानी?

अ. मोहनीय कर्म की सभी प्रकृतिओं का जिसने उपशम कर दिया हो वह उपशांतमोह ।

ब. मोहनीय कर्म की सभी प्रकृतिओं का जिसने क्षय कर दिया हो वह उपशांतमोह ।

क. मोहनीय कर्म की सभी प्रकृतिओं का जो उपशम करने वाला हो वह उपशांतमोह ।

ड. मोहनीय कर्म की अमुक प्रकृतिओं का जिसने उपशम किया हो और अमुक प्रकृतिओं का जिसे उदय हो वह उपशांतमोह ।

४३ मोहक्षपक यानी?

अ. मोहनीय कर्म की प्रकृतिओं का वर्तमान में उपशम करने वाला मोहक्षपक ।

ब. मोहनीय कर्म की प्रकृतिओं का भविष्य में क्षय करने वाला मोहक्षपक ।

क. मोहनीय कर्म की प्रकृतिओं का वर्तमान में बंध करने वाला मोहक्षपक ।

ड. मोहनीय कर्म की प्रकृतिओं का वर्तमान में क्षय करने वाला मोहक्षपक ।

४४ क्षीणमोह यानी?

अ. मोहनीय कर्म की सभी प्रकृतिओं का जिसने उपशम कर दिया हो वह क्षीणमोह ।

ब. मोहनीय कर्म की अमुक प्रकृतिओं का जिसने क्षय कर दिया हो वह क्षीणमोह ।

क. मोहनीय कर्म की अमुक प्रकृतिओं का जिसने उपशम कर दिया हो वह क्षीणमोह ।

ड. मोहनीय कर्म की सभी प्रकृतिओं का जिसने क्षय कर दिया हो वह क्षीणमोह ।

४५ जिन यानी?

अ. चार अघाती कर्म का संपूर्ण क्षय जिसने कर दिया हो ऐसे केवली को जिन कहते हैं ।

ब. आठों प्रकार के कर्म का संपूर्ण क्षय जिसने कर दिया हो ऐसे केवली को जिन कहते हैं ।

क. चार घाती कर्म का संपूर्ण क्षय जिसने कर दिया हो ऐसे केवली को जिन कहते हैं ।

ड. चार घाती कर्म का संपूर्ण क्षय जो करने वाले हो ऐसे साधु को जिन कहते हैं ।

४६ निर्ग्रंथ और स्नातक विषयक नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत है?

अ. निर्ग्रंथ ११वें अथवा १२वें गुणस्थान में होते हैं जबकि स्नातक १३वें अथवा १४वें गुणस्थान में होते हैं ।

ब. निर्ग्रंथ के चारों घाती कर्म का क्षय नहीं होता जबकि स्नातक के चारों घाती कर्म का क्षय हो चुका होता है ।

क. निर्ग्रंथ गुणस्थान में नीचे गिरे भी अथवा नहीं भी गिरे जबकि स्नातक गुणस्थान में नीचे कभी नहीं गिरते हैं ।

ड. निर्ग्रंथ और स्नातक दोनों को जिन कह सकते हैं ।

४७ प्रतिसेवना कुशील और कषाय कुशील विषयक नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

अ. प्रतिसेवना कुशील मूलगुणों में अतिचार लगाते हैं ।

ब. प्रतिसेवना कुशील के ज्ञान प्रतिसेवना, दर्शन प्रतिसेवना और चारित्र प्रतिसेवना ऐसे तीन ही भेद हैं ।

क. कषाय कुशील के चारित्र, लिंग और सूक्ष्म ऐसे तीन ही भेद हैं ।

ड. कषाय कुशील संज्वलन कषाय के उदय से चारित्र में दूषण लगाते हैं ।

४८ आर्तध्यान और रौद्रध्यान विषयक नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत है?

अ. आर्तध्यान दु:ख के कारण होता है जबकि रौद्रध्यान क्रूरता के कारण होता है ।

ब. आर्तध्यान में अन्य को दु:ख दिया जाए ऐसा हिंसक परिणाम नहीं होता जबकि रौद्रध्यान में अन्य को दु:ख हो ऐसे हिंसक परिणाम हो सकते हैं ।

क. आर्त और रौद्र दोनों प्रकार के ध्यान अनिष्ट करने वाले होने पर भी आर्त ध्यान अधिक कठोर फल देता है ।

ड. आर्तध्यान प्रमत्त संयतों को होता है जबकि रौद्रध्यान प्रमत्त संयतों को नहीं होता ।

४९ धर्मध्यान और शुक्लध्यान विषयक नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

अ. धर्मध्यान आंशिक भी कर्मक्षय नहीं करता ।

ब. शुक्लध्यान आंशिक कर्म क्षय करता है ।

ब. धर्मध्यान सातवें से बारहवें गुणस्थान में होता है ।

ड. शुक्लध्यान बारहवें और तेरहवें गुणस्थान में ही होता है ।

५० बाह्य तप और अभ्यंतर तप विषयक नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत है?

अ. बाह्य तप में मन की तो अभ्यंतर तप में शरीर की प्रधानता है ।

ब. बाह्य और अभ्यंतर दोनों प्रकार के तप में निर्जरा संभव है ।

क. बाह्य तप द्वारा इन्द्रिय जय, शारीरिक रोग नियंत्रण, आहार मूर्छा का त्याग आदि होता है जबकि अभ्यंतर तप में आत्मा के परिणाम विशुद्ध होते जाते हैं ।

ड. बाह्य तप बाह्य रूप से देख सकते हैं जबकि अभ्यंतर तप बाह्य रूप से दिखता नहीं ।

५१ द्रव्य निर्जरा और भाव निर्जरा विषयक नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत है?

अ. द्रव्य निर्जरा यह कर्मों का आत्मा से अलग पड़ना है जबकि भाव निर्जरा यह कर्म अलग पड़ने के निमित्त रूप आत्मा का शुद्ध परिणाम है ।

ब. द्रव्य निर्जरा बिना प्रयत्न सहजता से कर्म के काल का परिपाक होने से भी हो सकती है जबकि भाव निर्जरा आत्मा विशुद्ध परिणाम न करें तो नहीं होती है ।

क. द्रव्य निर्जरा यह भाव निर्जरा के कार्यरूप हो सकती है जबकि भाव निर्जरा यह द्रव्य निर्जरा का कार्य बन सकता है ।

ड. द्रव्य निर्जरा ही मोक्ष का कारण बनता है, भाव निर्जरा नहीं ही ।

५२ काल क विषयक नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. ९ समय से लेकर ४८ मिनिट तक का समय यानी अंतर्मुहूर्त ।

ब. एक मुहूर्त में असंख्य समय होते हैं ।

क. ९ समय में एक-एक समय जोड़ते जाएं और उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त तक पहुंचे उतने भेद अंतर्मुहूर्त के हो सकते हैं ।

ड. एक अंतर्मुहूर्त में असंख्य समय होते हैं ।

५३ ध्यान विषयक नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. घंटों तक ध्यान में रहने के मिलते समाचार स्थूल दृष्टि से कहे ध्यान हैं ।

ब. तत्त्वार्थ सूत्र में कहा ध्यान वह सूक्ष्म दृष्टि से बताया है । सूक्ष्म दृष्टि से अधिक से अधिक एक अंतर्मुहूर्त में ध्यान से चलित हो ही जाते हैं ।

क. एक बार ध्यान से चलित हो जाए तो भी दूसरे ही समय में एक अंतर्मुहूर्त काल के ध्यान में दोबारा जा सकते हैं ।

ड. एक समय अत्यंत सूक्ष्म काल है इसलिए उसे गिनती में लिए बिना घंटों तक ध्यान हो सकता है और ऐसा लगे घंटों तक ध्यान में रहा गया यह यथार्थ रूप से निश्चय से कह सकते हैं ।

५४ शुक्ल ध्यान के विषय में नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. शुक्ल ध्यान का तीसरा भेद केवल १३वें गुणस्थान रहे केवली को ही होता है ।

ब. जब केवली का आयुष्य एक अंतर्मुहूर्त जितना ही रहा हो तब केवली भगवंत अपने वचनयोग और मनयोग का निरोध करते हैं ।

क. केवली भगवंत को जब काया योग में केवल श्वासोच्छवास की सूक्ष्म क्रिया ही बाकी रहे उस समय वे शुक्ल ध्यान करते हैं ।

ड. केवली भगवंत जब सूक्ष्म काययोग में हो तभी उन्हें चौदहवें गुणस्थान में शुक्ल ध्यान का चौथा भेद होता है ।

५५ सेवा पुलाक के विषय में नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य सही है?

अ. ज्ञान पुलाक: काल में ही पढ़ते हैं, विनय पूर्वक पढ़ते हैं, गुरु के प्रति बहुमान सेवें, योगोंद्वहन कर शुद्ध उच्चार और अर्थ के साथ पढ़ते हैं ।

ब. दर्शन पुलाक: उत्तम प्रकार की श्रद्धा वाले होते हैं ।

क. चारित्र पुलाक: पांच महाव्रतों के मूल और उत्तरगुण में कोई अतिचार नहीं लगाते ।

ड. लिंग पुलाक: आदि के कारण शास्त्रोक्त लिंग से अन्य लिंग, यानी कि अन्य साधु वेश, धारण करते हैं ।

५६ बकुश साधु के विषय में नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. जिनको विशुद्धि के साथ अविशुद्धि रहे ऐसे साधु को बकुश कहते हैं ।

ब. बकुश साधु के सामान्य दो प्रकार हैं - शरीर बकुश और उपकरण बकुश ।

क. शरीर बकुश शरीर की विभूषा की ओर लक्ष्य रखते हैं जैसे कि हाथ-पैर धोना, शरीर पर से मैल उतारना, मुंह धोना, दांत साफ करना, बाल बनाना आदि ।

ड. उपकरण बकुश उपकरण की विभूषा करते हैं जैसे के दंड, पात्र आदि को रंग करना, चमकाना, उजले वस्त्र पहनना, सुविधा के लिए अधिक उपकरण रखना आदि । शरीर बकुश साधु शिथिलाचारी होते हैं, उपकरण बकुश साधु शिथिलाचार का सेवन नहीं करते।

५७ प्रतिसेवना द्वार के विषय में नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. प्रतिसेवना द्वार में किस निर्ग्रंथ द्वारा कैसे दोषों का सेवन होता है उसकी विचारणा की जाती है ।

ब. अपनी मरजी से दोष लगाते हैं या बलात्कार से? ज़रूरत से अधिक मात्रा में उपकरण रखते हैं? उपकरणों में श्रेष्ठतम उपकरण के प्रति उन्हें आसक्ति है? इस प्रकार की विचारणा प्रतिसेवना द्वार में होती है ।

क. कषायकुशील, निर्ग्रंथ और स्नातक निर्ग्रंथ को प्रतिसेवना का अभाव होता है ।

ड. पुलाक साधु को प्रतिसेवना की संभावना नहीं होती ।

५८ संवर और निर्जरा के विषय में नीचे दिए वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. सूक्ष्म दृष्टि से विचारणा हो तो गुप्ति और समिति द्वारा भी निर्जरा होती है, यानी कि संवर के कारण से भी निर्जरा होती है ।

ब. गुप्ति आदि चारित्र रूप हैं । चारित्र संयम और तप उभय स्वरूप है । संयम से संवर तो तप से निर्जरा होती है । अतः 'सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः' सूत्र में तप का उल्लेख नहीं किया है ।

क. जैसे-जैसे संवर बढ़े वैसे-वैसे निर्जरा भी बढ़े यह जरूरी नहीं ।

ड. सामान्य बुद्धि वाले जीव आसानी से समझ सके इसलिए संवर और निर्जरा का उल्लेख अलग-अलग करने पर भी 'जैसे-जैसे संवर बढ़े वैसे-वैसे निर्जरा भी बढ़ती है' यह समझाने के लिए एक ही अध्याय में दोनों का निरूपण किया गया है ।

५९ दिगंबर ग्रंथों में दोनों प्रकार की श्रेणी में (८ से १२ गुणस्थानक तक) किस-किस शुभ ध्यान का स्वीकार करने में आया है?

अ. धर्म ध्यान का ही

ब. शुक्ल ध्यान का ही

क. धर्म और शुक्ल दोनों का

ड. एक भी ध्यान का नहीं

६० संघयण के विषय में नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प सही है?

अ. प्रबल कोटि का धर्मध्यान केवल उत्तम संघयण वाले को ही संभावित है ।

ब. दिगंबर मत से प्रथम चार संघयण उत्तम हैं ।

क. शुक्ल ध्यान केवल प्रथम दो संघयण वाले को ही हो सकता है ।

ड. उत्तम संघयण वाले जीव को आर्तध्यान संभवित नहीं ।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक । (कुल १५ x २ = ३० अंक)

६१ निर्जरा करने के संबंध में कौन सा विकल्प गलत नहीं?

अ. सम्यग्दृष्टि सब से अल्प निर्जरा करते हैं, उनसे अधिक विरत निर्जरा करते हैं, उनसे असंख्यगुण उपशान्त मोह करते हैं और उनसे असंख्यगुण मोहउपशमक निर्जरा करते हैं।

ब. अनंतानुबंधि वियोजक, दर्शनमोहक्षपक, उपशान्तमोह, मोहोपशमक अनुक्रम से पूर्व-पूर्व से असंख्यगुण निर्जरा करते हैं ।

क. सब से अधिक निर्जरा जिन करते हैं, वे मोहक्षपक से असंख्य गुण निर्जरा करते हैं । और मोह क्षपक और उपशान्त मोह से क्षीणमोह असंख्यगुण निर्जरा करते हैं । पर वे जिन से हीन निर्जरा करते हैं ।

ड. मोहक्षपक, मोहोपशमक से असंख्यगुण निर्जरा करते हैं । मोहोपशमक उपशान्त मोह से असंख्यगुण निर्जरा करते हैं । उपशान्त मोह से क्षीणमोह असंख्यगुण निर्जरा करते हैं और सब से अधिक जिन निर्जरा करते हैं ।

६२ तत्त्वार्थसूत्र में निर्ग्रंथ के पांच भेद और उनके उप-भेद बताए हैं । उनके अर्थ के अनुसार कौन सा विकल्प अविपरीत नहीं?

अ. पुलाक - स्वयं श्रद्धावंत होने से दूसरे भी उनके प्रति श्रद्धा करें इसलिए चमत्कार बताते हैं।
बकुश - गांठ रहित होते हैं पर क्रिया से अरूचि धारण करते हैं ।
कुशील - अनंतानुबंधी कषाय के उदय का अभाव होता है ।

ब. स्नातक - जिन्होंने राग दूर कर दिया है पर द्वेष को दूर करना बाकी है ।
कुशील - जिनको संज्वलन कषाय का उदय होता है और भावना - मूलगुण और उत्तरगुणों में अतिचार लगाते हैं ।
पुलाक - निष्कारण शास्त्रोक्त लिंग से अन्य लिंग को धारण न करें ।

क. बकुश - ख्याति, आदर, सुखेच्छा के प्रति लक्ष्य नहीं होता है ।
निर्ग्रंथ - मोह की गांठ जिनकी नष्ट हो गई हो ।
स्नातक - १२वें गुणस्थान में संयोग स्नातक होते हैं ।

ड. निर्ग्रंथ - जिसने मोह का उपशम किया हो, और क्षय बाकी हो ।
स्नातक - १४वें गुणस्थानक में संयोगी स्नातक होते हैं, जिन्होंने रागादि दोषों को दूर किया हो।
पुलाक - चारित्र के परिणाम होने पर भी पण आत्मा को चारित्र के सार से रहित करें ।

६३ निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा विकल्प अयुक्त नहीं?

अ. महावीर स्वामी प्रभु घंटों तक ध्यान में से चलित न होते, क्योंकि उनका पहला संघयण था ।

ब. अभी भरत क्षेत्र में उत्तम संघयण का अभाव होने से स्थूल दृष्टि से ध्यान केवल अंतर्मुहूर्त तक ही होता है ।

क. बाहुबलि को शरीर बल, मजबूत संघयण और प्रबल मानसिक एकाग्रता के कारण एक वर्ष तक किए काउसग्ग ध्यान में सूक्ष्म भी मन चलित नहीं हुआ ।

ड. केवलज्ञान पाने पूर्व जीवों को योग निरोध रूप ध्यान का अभाव होने से चलचित्त का एक विषय में स्थिरतारूप ध्यान होता है ।

६४ ध्यान की व्याख्या और स्वामी के विषय में नीचे कौन सा विकल्प गलत नहीं

	धर्म	व्याख्या	स्वामी
अ.	धर्म	सर्वकर्म का क्षय हो	उपशान्तमोह और क्षीणमोह
ब.	शुक्ल	अत्यंत निर्मल	अयोगीकेवली और क्षीणकषाय
क.	रौद्र	हिंसा के परिणाम	प्रमत्तसंयमी और अविरत
ड.	आर्त	दु:ख का अनुबंध	अप्रमत्तसंयमी और देशविरत

६५ निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही नहीं?

	आर्तध्यान	शुक्लध्यान	धर्मध्यान	रौद्रध्यान
अ.	अनिष्ट संयोग चिंता	सूक्ष्मक्रिया निवृत्ति	विपाक अविचय	अस्तेयानुबंधी
ब.	हिंसानुबंधी	व्युपरतक्रिया प्रवृत्ति	अनाज्ञा विचय	विषयसंरक्षणानुबंधी
क.	ईष्ट वियोग चिन्ता	पृथकत्व वितर्क विचार	अपाय विचय	सत्यानुबंधी
ड.	वेदना, संयोग, चिंता	एकत्ववितर्क सविचार	संस्थान विचय	अहिंसानुबंधी

६६ राम श्याम का किंमती मोबाईल देखकर उस मोबाईल को चोरी करने के उपाय सोचता है। जब तक उसकी अप्राप्ति है तब तक लगातार उसे चोरी करने के विचार आते रहते हैं। आखिरकार कोई उपाय न मिलते श्याम को मार डालने के उपाय सोचता है। जबकि श्याम तो वह मोबाईल भाता न होने से उसे बदली कर नया पसंदीदा मोबाईल लाने का विचार करता है । इसलिए पिता को मोबाईल के लिए क्या ऐसा गलत बहाना बताना कि जिससे पिता नया मोबाईल दिलाए ऐसे विचार करता है। आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान के भेदो में क्रम से कौन सा भेद अयोग्य नहीं?

अ. राम - स्तेयानुबंधी अनिष्टवियोग चिंता - हिंसानुबंधी
शाम - ईष्ट संयोग चिंता - अनिष्ट वियोग चिंता - स्तेयानुबंधी

ब. राम - ईष्ट संयोग चिंता - स्तेयानुबंधि - हिंसानुबंधि
शाम - अनिष्ट वियोग चिंता - असत्यानुबंधि - ईष्ट वियोग चिंता

क. राम - स्तेयानुबंधी - ईष्ट वियोग चिंता - हिंसानुबंधी
शाम - अनिष्ट संयोग चिंता - ईष्ट वियोग चिंता - असत्यानुबंधी

ड. राम - स्तेयानुबंधी - ईष्ट वियोग चिंता - हिंसानुबंधी
शाम - अनिष्ट वियोग चिंता - ईष्ट संयोग चिंता - असत्यानुबंधी

६७ तीन प्रमत्त संयत ध्यान कर एक दूसरे के साथ परस्पर ध्यान में किए अपने चिंतन की चर्चा करते हैं। 'अ' नाम के साधु कहते हैं कि उन्होंने गर्भ में सहन किए दु:ख, अनादि काल से संसार परिभ्रमण के कारण और उदय में आते कर्मों के कारण का चिंतन किया, 'ब' नाम के साधु कहते हैं कि जीव स्वयं जो कर्म बांधे वे कर्म किस तरह भोग सकता है और इस कर्म के खेल को खतम करने हेतु ग्रहण किए संयम जीवन में प्रभु के आदेश अनुसार उनका क्या कर्तव्य है इस विषय में चिंतन किया। जबकि 'क' नाम के साधु कहते हैं कि इस जगत का स्वरूप कैसा है? जीव कहाँ-कहाँ भटककर आया है और १४ राज लोक के एक-एक प्रदेश को स्पर्शकर आए इस जीव के लिए प्रभु की क्या आज्ञा है तथा यह आज्ञा ही तारणहार है - इस विषय का चिंतन किया। हर एक के चिंतन के लिए नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत नहीं?

	साधु 'अ'	साधु 'ब'	साधु 'क'
अ.	अपाय विचय - आज्ञा विचय	आज्ञा विचय - संस्थान विचय	संस्थान विचय - विपाक विचय
ब.	विपाक विचय - विपाक विचय	विपाक विचय - आज्ञा विचय	संस्थान विचय - आज्ञा विचय
क.	विपाक विचय - संस्थान विचय	आज्ञा विचय - अपाय विचय	अपाय विचय - आज्ञा विचय
ड.	संस्थान विचय - विपाक विचय	विपाक विचय - आज्ञा विचय	आज्ञा विचय - संस्थान विचय

६८ हर ध्यान के भेदो के विषय में निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प योग्य है?

अ. आर्त्त - ईष्ट-संयोग-चिंता - निदान - वेदना-वियोग-चिंता
धर्म - अपायविचय - आज्ञाविचय - संस्थानविचय
रौद्र - स्तेयानुबंधी - हिंसानुबंधी - विषयसंरक्षणानुबंधी
शुक्ल - पृथकत्व-वितर्क-सविचार - व्युपरतक्रिय-निवृत्ति - एकत्व-वितर्क-अविचार

ब. धर्म - विपाकविचय - अपायविचय - अनाज्ञाविचय
शुक्ल - पृथकत्व-वितर्क-सविचार - व्युपरतक्रियानिवृत्ति - एकत्व-वितर्क-अविचार
रौद्र - अहिंसानुबंधी - असत्यानुबंधी - स्तेयानुबंधी
आर्त्त - वेदना-वियोग-चिंता - अनिष्ट-संयोग-चिंता - निदान

क. रौद्र - विषयसंरक्षणानुबंधी - स्तेयानुबंधी - असत्यानुबंधी
आर्त्त - ईष्ट-संयोग-चिंता - निदान - अनिष्ट-वियोग-चिंता
शुक्ल - व्युपरतक्रिय-अनिवृत्ति - सूक्ष्मक्रिय-अप्रतिपाती - एकत्व-वितर्क-अविचार
धर्म - आचार्यविचय - संस्थानविचय - विपाकविचय

ड. शुक्ल - सूक्ष्मक्रियाप्रवृत्ति - एकत्व-वितर्क-अविचार - पृथकत्व-वितर्क-सविचार
आर्त - ईष्ट-संयोग-चिंता - वेदना-वियोग-चिंता - अनिष्ट-संयोग-चिंता
धर्म - आज्ञाविचय - अपायविचय - संस्थानविचय
रौद्र - हिंसानुबंधी - स्तेयानुबंधी - विषय संरक्षणानुबंधी

६९ निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प अयोग्य नहीं?

	गुणस्थान	श्रेणी	मुनि	ध्यान	योग
अ.	१२	क्षपक	पूर्वधर	शुक्ल	काय योग के त्यागरूप अभाव
ब.	१४	क्षपक	पूर्वधर	शुक्ल	काय योग का व्यापार
क.	१३	उपशम	अपूर्वधर	धर्म	वचन योग और मनोयोग का अभाव
ड.	११	क्षपक	अपूर्वधर	धर्म	तीन योग का व्यापार

७० शुक्लध्यान के प्रथम दो भेदो के परिप्रेक्ष्य में कौन सा विकल्प योग्य नहीं?

अ. पृथकत्व - यह भेद विचार सहित होने से अर्थ-व्यंजन-योग के परिवर्तन के सद्भाव का अभाव है ।
एकत्व - यह भेद विचार रहित होने से अर्थ-व्यंजन-योग के परिवर्तन का अभाव है ।

ब. एकत्व - आत्मा के परमाणुं आदि कोई एक आलंबन रहित होने से अविचार है ।
पृथकत्व - आत्मा के परमाणुं आदि कोई एक आलंबन सहित होने से सविचार है ।

क. एकत्व - चौदह पूर्वधर को उपशम श्रेणी में इस भेद का अभाव होता है ।
पृथकत्व - चौदह पूर्वधर को क्षपक श्रेणी में इस भेद का सद्भाव होता है ।

ड. पृथकत्व - एक द्रव्य के आश्रय से एक पर्याय का एकाग्रतापूर्वक भेद प्रधान-चिंतन ।
एकत्व - एक द्रव्य के आश्रय से एक पर्याय का अभेद प्रधान चिंतन ।

७१ सूत्र ९-४९ में जो विचारणा बताई हैं उसके अनुसार कौन सा विकल्प सत्य है? (कुशील-कषाय कुशील- के आश्रय से और तीर्थ में मतांतर आश्रय से)

	साधु	श्रुत	तीर्थ-अतीर्थ	संयम
अ.	पुलाक	दसपूर्व	दोनों में	छेदोपस्थापनीय
	कुशील	चौदपूर्व	अतीर्थ में	छेदोपस्थापनीय
	स्नातक	चौदपूर्व	तीर्थ में	छेदोपस्थापनीय

ब.	कुशील	दसपूर्व	अतीर्थ में	यथाख्यात
	पुलाक	आठपूर्व	दोनों में	सामायिक
	स्नातक	श्रुतरहित	अतीर्थ में	यथाख्यात
क.	स्नातक	श्रुतरहित	अतीर्थ	परिहार विशुद्धि
	कुशील	अष्टप्रवचनमाता का	तीर्थ में	यथाख्यात
	पुलाक	दसपूर्व	तीर्थ में	सूक्ष्मसंपराय
ड.	कुशील	चौदह पूर्व	दोनों में	सूक्ष्मसंपराय
	स्नातक	श्रुतरहित	तीर्थ में	यथाख्यात
	पुलाक	दसपूर्व	तीर्थ में	छेदोपस्थापनीय

७२ सूत्र ९-४९ में बताए द्वारों के अनुसार कौन सा विकल्प संपूर्ण रूप से उचित है? (कुशील-प्रतिसेवना के आश्रय से)

	साधु	उपपात	स्थान	लेश्या
अ.	कुशील	अनुत्तरविमान	कषायकुशीलता के उससे अधिक संयम स्थान होते हैं	तीन शुभ
	निर्ग्रंथ	मोक्ष	स्नातक के संयम स्थान अधिक होते हैं	शुक्ल
	पुलाक	प्राणत	बकुश के संयम स्थान अधिक होते हैं	तीन अशुभ
ब.	निर्ग्रंथ	सर्वार्थ सिद्ध	एक संयम स्थान बाकी होते हैं	तीन शुभ
	पुलाक	नवमो देवलोक	बकुश से अधिक संयम स्थान होते हैं	शुक्ल
	कुशील	२२ सागरोपम की स्थिति वाले बारहवें देवलोक में	निर्ग्रंथ से अधिक संयम स्थान होते हैं	छ लेश्या
क.	पुलाक	सहस्रार	सब से जघन्य संयम स्थान होते हैं	तीन शुभ
	कुशील	सर्वार्थ सिद्ध	उनसे बकुश के संयम स्थान अधिक होते हैं	शुक्ल
	निर्ग्रंथ	१२मो देवलोक	एक कषाय संयम स्थान बाकी रहता है	छ लेश्या
ड.	कुशील	२२ सागरोपाम की स्थिति वाले १२मां देवलोक में	बकुश से असंख्य संयम-स्थान अधिक तक जाते हैं	छ लेश्या
	पुलाक	सहस्रार देवलोक	सबसे जघन्य संयम स्थान होते हैं	तीन शुभ
	निर्ग्रंथ	सर्वार्थ सिद्ध	एक ही संयम स्थान बाकी होता है	शुक्ल लेश्या

७३ किसी एक साधु को वेदनीय कर्म के उदय से शरीर में वेदना उत्पन्न होती है । उसे दूर करने के उपाय सोचते हैं । तब समझाने पर भी अपने किस कर्म से ऐसा दु:ख आया उसका चिंतन करते हैं । वेदना बढ़ने से संकल्प करते हैं कि 'मुझे संयम के प्रभाव से यह वेदना रहित शरीर बने । जो गुरु पूछेंगे तो कहूँगा कि मैं लोक के स्वरूप का चिंतन करता था । अतः गुरु को मेरे संकल्प का ख्याल नहीं आएगा ।' किंतु गुरु का वात्सल्य देख उन्हें पश्चाताप हुआ और सोचते हैं कि 'मैं प्रभु शासन का संयत हूँ, अतः मेरा कर्तव्य क्या है? मैं प्रभु-गुरु को समर्पित बन जाऊँ यही मेरे लिए श्रेयस्कर है ।' इस दृष्टान्त को प्रथम तीन ध्यान के भेद विपरीत क्रम से किस प्रकार से घटित होंगे वह विकल्प बताएं ।

अ. संस्थानविचय-निदान-अपायविचय-वेदना वियोग चिंता-विपाक विचय

ब. आज्ञाविचय-संस्थानविचय निदान-विपाकविचय-वेदना वियोग चिंता

क. आज्ञाविचय-असत्यानुबंधी निदान-विपाकविचय-वेदना वियोग चिंता

ड. संस्थानविचय-निदान-अपायविचय-वेदना वियोग चिंता-विपकविचय

७४ शुक्ल ध्यान को लक्ष्य में रखकर कौन सा वाक्य घटित नहीं?

अ. योग निरोध-रूप ध्यान जो शुक्ल ध्यान का भेद है वह केवली भगवंत को ही होता है । अतः वह ध्यान १३वें और १४वें गुणस्थान में होता ही है क्योंकि वे उत्तम संघयण वाले होते हैं ।

ब. अंतिम दो भेदो में अनुक्रम काययोग के और वाग्योग के व्यापार का अभाव होता है । प्रथम में श्वासोच्छवास रूप सूक्ष्म क्रिया होती है और दूसरे में क्रिया का अभाव है ।

क. प्रथम दो भेदो में आत्मा या परमाणु किसी एक द्रव्य का आलंबन होता है । और वह ध्यान पूर्वगत श्रुत के आधार से होने से अनुक्रम से उसमें तीनों योगों का व्यापार और तीन में से किसी भी एक योग का व्यापार होता है ।

ड. अंतिम दो भेदो में विपरीत क्रम से - एक में ध्यान मोक्ष में जाए तब तक रुकता नहीं और एक में परिणाम विशेष के पतन का अभाव है । और अनुक्रम से प्रथम ध्यान आयुष्य के अंतिम अंतर्मुहूर्त्त में होता और द्वितीय पांच ह्रस्व स्वर बोले जाए उतने समय तक होता है ।

७५ नौवें अध्ययन में संवर और निर्जरा का एक साथ निरूपण क्यों किया है और निर्जरा के अर्थ को बराबर समझकर निम्नलिखित विकल्पों में से उसके अर्थ को समर्थन न करता विकल्प बताएं।

अ. संयम से संवर होता है और तप से निर्जरा होती है। तप यह चारित्र का अंश अथवा चारित्र स्वरूप है। चारित्र का स्वरूप संयम और तप ऐसे उभय प्रकार से है। चारित्र का स्वरूप गुप्ति आदि जो संवर के कारण हैं उनसे युक्त है। फिर भी तप और चारित्र पद का अलग निर्देश किया है।

ब. आत्मा के शुद्ध परिणाम को प्रगट करता तप द्रव्य निर्जरा का कारण बनता है, काय-यलेश का नहीं, क्योंकि तप आत्मा से कर्म प्रदेशों को अलग करने वाला आत्मा का शुद्ध परिणाम है।

क. सम्यग् बाह्य तप देह के ममत्व भाव आदि दोषों के अभाव से उत्पन्न होता आत्मा का शुद्ध परिणाम है, इससे वह निर्जरा का कारण बनता है और इसलिए बाह्य तप से केवल काया कष्ट होता है यह बात बिलकुल असत्य है।

ड. तिर्यंच और नारक साधुओं से अधिक निर्जरा करते हैं क्योंकि उनका काय-क्लेश सब से अधिक है, इस लिए वे महान तपस्वी हैं। जैसे-जैसे काया कष्ट अधिक वैसे-वैसे निर्जरा भी अधिक यह बात बिलकुल असत्य है।

▮

आचार्यश्री सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला के द्वारा आयोजित

तत्त्वार्थसूत्र परिशीलन

घर बैठे तत्त्वज्ञान प्राप्त कराता एक वर्षीय पाठ्यक्रम

कार्यपत्रक-२०	अध्याय-१०	सूत्र १-७	जमा करने की अंतिम तारीख ता. ३०/११/२०२०

(कुल ७५ अंक)

विभाग : १. हर प्रश्न का ½ अंक । (कुल ३० x ½ = १५ अंक)

१ .... कर्मो के क्षय से मोक्ष होता है ।
अ. घाति ब. देश घाति क. अघाति ड. सर्व

२ औपशमिक भावों का अभाव भी .... में कारण है ।
अ. आस्रव ब. मोक्ष क. पुण्य ड. पाप

३ क्षायिक सम्यक्त्व, केवलज्ञान, केवलदर्शन, सिद्धत्व आदि .... भाव हैं ।
अ. औपशमिक ब. क्षायोपशमिक क. क्षायिक ड. औदेयिक

४ सिद्धों का पारिणामिक भाव में ..... का अभाव होता है ।
अ. भव्यत्व ब. अभव्यत्व क. जाति भव्यत्व ड. जीवत्व

५ क्षेत्र द्वार में संहरण सिद्धों से जन्म सिद्ध ..... हैं ।
अ. संख्यातगुना ब. असंख्यातगुना क. अनंतगुना ड. दोगुना

६ एक समय में जघन्य से .... और उत्कृष्ट से .... जीव सिद्ध होते हैं ।
अ. २, २२ ब. १००, १०८ क. १, १०० ड. १, १०८

७ जीव लगातार जघन्य से .... समय तक और उत्कृष्ट से .... समय तक सिद्ध होते हैं ।
अ. २, ८ ब. ७, १५ क. २, १६ ड. १, ८

८ .... स्वयंबुद्ध ही होते हैं ।
अ. केवली ब. तीर्थंकर क. गणधर ड. श्रुत केवली

९ उत्कृष्ट से .... धनुष अवगाहना वाले जीव सिद्ध हो सकते हैं ।
अ. ५०९ से ५१४ ब. ५०२ से ५०९ क. ५१४ से ५१८ ड. ५१८ से ५२१

१० दूसरों के उपदेश से बोध पाकर सिद्ध हो वे .... सिद्ध हैं ।

अ. प्रत्येक बुद्ध ब. स्वयं बुद्ध क. बुद्ध बोधित ड. अतीर्थ

११ सर्व कर्म क्षय, देह वियोग, ऊर्ध्व गति, लोकान्त गमन यह चारों .... समय में होते हैं ।

अ. एक ब. दो क. तीन ड. एक के बाद एक

१२ ..... होते जन्म मरण आदि दु:खों का विच्छेद होता है ।

अ. देव ब. इन्द्र क. मोक्ष ड. अनुत्तर देव

१३ मरूदेवी माता .... सिद्ध हैं ।

अ. तीर्थ सिद्ध ब. अतीर्थ सिद्ध क. जिन सिद्ध ड. स्वलिंग सिद्ध

१४ परिव्राजक आदि का वेष यह .... लिंग है ।

अ. स्व ब. गृहस्थ क. अन्य ड. श्रमण

१५ .... काल की दृष्टि से जीव नोचारित्री-नोअचारित्री रूप में सिद्ध होता है ।

अ. भूत ब. वर्तमान क. भविष्य ड. सर्व

१६ सिद्ध जीव और सिद्धशीला के बीच .... गाउ का अंतर है ।

अ. $३^{२}/_{३}$ ब. $३^{३}/_{२}$ क. $३^{५}/_{६}$ ड. $३^{६}/_{५}$

१७ पूर्व प्रयोग, असंग, बंध-विच्छेद तथा गति परिणाम इन चार हेतु से आत्मा सर्व कर्म क्षय होते ..... गति करता है ।

अ. तिर्च्छी ब. ऊर्ध्व क. अघो ड. दसों दिशा में

१८ अवसर्पिणी के .... आरे में जन्मे जीव ही सिद्ध होते हैं ।

अ. दूसरे ब. पहले क. पांचवें ड. चौथे

१९ उत्सर्पिणी में दूसरे, तीसरे और चौथे आरे में जन्मे जीव सिद्ध होते हैं पर .... से सर्व काल में सिद्ध होते हैं ।

अ. क्षेत्र ब. संहरण क. भाव ड. काल

२० .... में गति सहायक धर्मास्तिकाय नहीं ।

अ. सिद्धशीला ब. त्रसनाडी क. अलोक ड. लोक

२१ सिद्ध .... होने से ज्योति में ज्योति की तरह मिल जाते हैं ।

अ. अरूपी ब. रूपी क. रूपी तथा अरूपी ड. अगुरु

२२ केवली को अंतिम .... रूप ध्यान होता है ।

अ. अरिहंत ब. सिद्ध क. निराकार ड. योग निरोध

२३ .... यह भाव रोग है ।

अ. कषाय ब. कर्म क. संसार ड. केन्सर

२४ लोकाकाश की अंतिम प्रतर श्रेणी से .... धनुष प्रमाण भाग तक में सिद्ध जीव बसते हैं ।

अ. $३३३^{१}/_{३}$ ब. $३३३^{२}/_{३}$ क. $३३३^{३}/_{४}$ ड. $३३३^{३}/_{२}$

२५ मोहनीय कर्म के क्षय के बाद .... में ज्ञानावरणीय आदि तीन कर्म का क्षय होता है ।

अ. १ घडी ब. ६ आवलिका क. अंर्तमुहूर्त ड. देशोन पूर्व क्रोड वर्ष

२६ हर सिद्ध भगवंत के मस्तक का अंतिम प्रदेश .... के अंतिम प्रदेश को स्पर्श कर रहता है ।

अ. त्रसनाडी ब. लोकाकाश क. अलोकाकाश ड. सिद्धशीला

२७ सिद्धशीला .... नाम की पृथ्वी भी कहलाती है ।

अ. मोक्ष ब. सर्वार्थ सिद्ध क. सिद्ध क्षेत्र ड. इषत्प्रागभारा

२८ वर्तमान काल की दृष्टि से जीव अपनी काया के .... भाग की अवगाहना में सिद्ध होता है ।

अ. $^{१}/_{३}$ ब. $^{२}/_{३}$ क. $^{३}/_{४}$ ड. $^{४}/_{३}$

२९ .... का स्वभाव ऊर्ध्व, अधो और तिर्छी गति करना है ।

अ. पुद्गल ब. जीव क. मन ड. वचन

३० सभी कर्म का क्षय होते .... भाव का अभाव होता नहीं ।

अ. क्षायोपशमिक ब. क्षायिक क. औपशमिक ड. औदायिक

विभाग : २. हर प्रश्न का १ अंक (कुल ३० x १ = ३० अंक)

३१ नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य कहें ।

अ. औपशमिक आदि पांच भावों में से सिद्धों को केवल पारिणामिक भाव होता है ।

ब. आठ समय तक लगातार जीव मोक्ष में जा सकते हैं परंतु तत्पश्चात नौवें समय में अंतर तो पड़ता ही है ।

क. सिद्ध शिला के ऊपर केवल ५४ लाख योजन विष्कंभ विस्तार में ही सिद्ध जीव रहते हैं ।

ड. एक ही क्षेत्र में अनंत सिद्ध जीव होते वे भीड़ का अनुभव करते हैं ।

३२ नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य कहें ।

अ. भूतकाल में जन्म की अपेक्षा से उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी दो काल में सिद्ध संबंधी विचार किया गया है ।

ब. उत्सर्पिणी काल में तीसरे और चौथे आरे में जन्मे जीव ही मोक्ष में जा सकते हैं ।

क. अवसर्पिणी काल में तीसरे और चौथे आरे में जन्मे जीव मोक्ष में नहीं जा सकते ।

ड. मोक्ष में चारित्र का अभाव होने पर भी चारित्र का सर्वथा अभाव है ऐसा नहीं कह सकते।

३३ नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य कहें ।

अ. मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यव ज्ञान वाले जीव सिद्ध हो सकते हैं यह केवल भूतकाल की अपेक्षा से ही विचार हो सकता है वर्तमान काल की अपेक्षा से नहीं ही ।

ब. केवलज्ञान प्राप्त करने वाले जीव प्रथम ज्ञानावरणीय कर्म का संपूर्ण क्षय करते हैं ।

क. ज्ञानावरणीय कर्म के संपूर्ण क्षय के बाद अंतर्मुहूर्त में बाकी के तीन कर्म एक साथ नष्ट होते हैं ।

ड. जीव को केवलज्ञान पाने के बाद घाती कर्म बंधते नहीं पर पूर्व में बंधे घाती कर्मों का उदय तो शुरू ही रहता है ।

३४ नीचे के वाक्यों में से गलत वाक्य कहें ।

अ. सिद्ध होने के बाद फिर से जीव को जन्म लेना नहीं होता ।

ब. सिद्ध की लोकांत गति, मोक्ष और भव क्षय यह तीन भाव एक ही साथ होते हैं ।

क. मोक्ष सुख अनुमान अथवा उपमान से जान नहीं सकते । केवल श्रुत प्रमाण से ही जान सकते हैं ।

ड. जघन्य से छ माह में एक जीव मोक्ष में अवश्य जाता ही है ऐसा नियम है ।

३५ नीचे के वाक्यों में से सही वाक्य कहें ।

अ. तत्त्वार्थ सूत्र के रचयिता उमास्वाति महाराज के माता पिता का नाम क्रमशः मीनल देवी और नंदीघोष है ।

ब. तत्त्वार्थ सूत्र के रचयिता उमास्वाति महाराज की माता का जन्म कौभीषण गोत्र में हुआ था ।

क. लोकांत तक जीव धर्मास्तिकाय के कारण पहुंच जाता है ।

ड. अवसर्पिणी में तीसरे और चौथे आरे के ८९ पक्ष व्यतीत हो तब क्रमशः पहले और अंतिम तीर्थंकर निर्वाण पाते हैं ।

३६ किस दृष्टांत से जीव का कौन सा परिणाम ऊर्ध्वगति के कारण रूप है । उसके नीचे दिए जोड़ो का सही विकल्प बताएं ।

१. दीपक की ज्योति	A. बंध छेद
२. माटी से लिप्त तुंबा	B. गति परिणाम
३. अरंडी फल	C. पूर्व प्रयोग
४. कुम्हार का चक्र	D. असंग

अ. 1-B, 2-C, 3-A, 4-D ब. 1-B, 2-D, 3-A, 4-C

क. 1-D, 2- B, 3-A, 4-C ड. 1-B, 2-D, 3-C, 4-A

३७ नीचे के वाक्यों में कौन सा वाक्य सही नहीं?

अ. पांच प्रकार के भावों में मोक्ष में औपशमिक, औदेयिक और क्षायोपशमिक यह तीन भाव कर्म जनित होने से मोक्ष में उनका अभाव होता है ।

ब. लोकाकाश से ऊपर धर्मास्तिकाय का अभाव होने से हर सिद्ध भगवंत लोकाकाश के अंतिम प्रदेश को स्पर्श कर रहते हैं ।

क. सिद्धों की अवगाहना अपने पूर्व के शरीर के १/३ भाग जितनी ही होती है क्योंकि पूर्व के शरीर में १/३ भाग जितना वायु होता है, उतनी अवगाहना का भाग संकुचित होता है ।

ड. सिद्ध रूपी होने से जैसे ज्योति में ज्योति मिले वैसे एक ही क्षेत्र में मोक्ष में जहाँ एक सिद्ध परमात्मा हैं वहाँ दूसरे अनंत सिद्ध परमात्मा होते हैं ।

३८ नीचे के वाक्यों में कौन सा वाक्य सही नहीं?

अ. सिद्धशीला के ४५ लाख योजन भाग में एक-एक प्रदेश में अनंत सिद्ध भगवंत बिराजमान हैं क्योंकि ४५ लाख योजन प्रमाण ढाई द्वीप में एक भी हिस्सा ऐसा नहीं जहाँ से अनंत जीव सिद्ध न हुए हो ।

ब. सिद्ध अरूपी होने से जैसे ज्योति में ज्योति मिले ऐसे एक ही क्षेत्र में अनंत सिद्ध जीव होने पर भी भीड़ का अनुभव नहीं करते ।

क. साध्वी, अवेदी, परिहार विशुद्धि संयत, पुलाक, चौदह पूर्वधर, आहारक शरीरी और अप्रमत्त संयत इन सातों का संहरण होता नहीं ।

ड. सिद्ध जीवों को कर्म-जनित दु:ख का अभाव है इसलिए वे सुखी हैं ।

३९ नीचे संसारी सुख और मोक्ष सुख में भेद दिए हैं। उनमें कौन सा विकल्प गलत है?

अ. संसारी सुख पाने को क्रिया युक्त पुरुषार्थ करना पड़ता है जबकि मोक्ष सुख सहज और स्वभावगत होने से सुख पाने को प्रयत्न नहीं करना पड़ता।

ब. संसारी सुख विषय युक्त है जबकि मोक्ष सुख विषय रहित है।

क. संसारी सुख अशाश्वत है जबकि मोक्ष सुख शाश्वत है।

ड. संसारी सुख दु:ख के उपचार रूप नहीं जबकि मोक्ष सुख दु:ख सहित नहीं।

४० नीचे केवलज्ञान अवस्था और मोक्ष अवस्था में भेद दिए हैं। उनमें कौन सा विकल्प गलत है?

अ. केवलज्ञान अवस्था में चार घाती कर्मों का क्षय होता है जबकि मोक्ष अवस्था में आठों कर्म का क्षय होता है।

ब. केवलज्ञान अवस्था संसारी अवस्था है जबकि मोक्ष अवस्था असिद्ध अवस्था है।

क. केवलज्ञान अवस्था मन, वचन, काया के योग सहित अवस्था है जबकि मोक्ष अवस्था योग रहित अवस्था है।

ड. केवलज्ञान अवस्था में क्षायिक, पारिणामिक और औदेयिक यह तीन ही प्रकार के भाव होते हैं जबकि मोक्ष अवस्था में क्षायिक और पारिणामिक यह दो ही भाव होते हैं।

४१ नीचे केवलज्ञान अवस्था और मोक्ष अवस्था में भेद दिए हैं। उनमें कौन सा विकल्प गलत है?

अ. केवलज्ञान अवस्था में उत्कृष्ट अवगाहना ५०० धनुष्य अथवा अधिक हो सकती है जबकि मोक्ष अवस्था में उत्कृष्ट अवगाहना ३ धनुष्य ही होती है।

ब. केवलज्ञान अवस्था में जीव पंद्रह कर्म भूमि में ही होता है जबकि मोक्ष अवस्था में जीव सिद्धक्षेत्र में ही होता है।

क. केवलज्ञान अवस्था में मनुष्य गति होती है जबकि मोक्ष अवस्था में सिद्ध गति होती है।

ड. केवलज्ञान अवस्था चारित्री अवस्था है जबकि मोक्ष अवस्था अचारित्री अवस्था है।

४२ नीचे केवलज्ञान अवस्था और मोक्ष अवस्था में भेद दिए हैं। उनमें कौन सा विकल्प गलत है?

अ. केवलज्ञान अवस्था लिंग सहित अवस्था है जबकि मोक्ष अवस्था लिंग रहित अवस्था है।

ब. केवलज्ञान अवस्था में संख्यात जीव होते हैं जबकि मोक्ष अवस्था में अनंत जीव हैं।

क. केवलज्ञान अवस्था में चार घाती कर्म के बंध के हेतु का अभाव होता है जबकि मोक्ष अवस्था में आठों कर्म के बंध के हेतु का अभाव होता है।

ड. केवलज्ञान अवस्था में केवल चार घाती कर्म का संपूर्ण क्षय होता है जबकि मोक्ष केवल चार अघाती कर्म का संपूर्ण क्षय होता है।

४३ सर्व कर्म क्षय होते आत्मा मोक्ष में जाती है उसके कारण दिए हैं। इन बताए कारणों के अनुसार कौन सा विकल्प क्रमशः घटता है? १) आत्मा कर्म रूप लेप से अलग पड़ने से मोक्ष में जाती है। (२) आत्मा में योग निरोध के संस्कार होने से आत्मा ऊर्ध्व गति में जाती है। (३) आत्मा का स्वभाव ही ऊपर जाने का होने से योग निरोध किए बाद आत्मा मोक्ष में जाती है।

अ. असंग, पूर्व प्रयोग, तथागति परिणाम

ब. बंध विच्छेद, पूर्व प्रयोग, तथागति परिणाम

क. असंग, तथागति परिणाम, पूर्व प्रयोग

ड. असंग, पूर्व प्रयोग, बंध विच्छेद

४४ सिद्ध-शिला विषयक नीचे दिए विकल्पों में सही विकल्प बताएं।

अ. लोकाकाश के अंतिम हिस्से से एक योजन नीचे और सर्वार्थ सिद्ध विमान से बारह योजन ऊपर बीज के चंद्र के आकार वालि आठवीं पृथ्वी इषत्प्रागभारा नामक सिद्धशिला आई है।

ब. वह पृथ्वी स्फटिक जैसी सफेद है। थाली जैसी गोल पृथ्वी के ऊपर का हिस्सा गोलाकार है।

क. उसका विष्कंभ ४५ लाख योजन है। वह मध्य के हिस्से में नौ योजन चौड़ी है और क्रमश: उसकी चौड़ाई घटती जाती है।

ड. अंत में वह मक्खी के पंख से भी पतली है। उसके ऊपर ६ गाऊ के अंतर में सिद्ध जीव रहते हैं।

४५ नीचे दिए वाक्यों में गलत वाक्य कौन सा है?

अ. कर्मों का क्षय बंध के हेतु का अभाव होने से तथा निर्जरा से इन दो कारणों से होता है।

ब. रोग नियंत्रण करने और उसकी वृद्धि अटकाने रोग के हेतु का त्याग करना आवश्यक है, वैसे ही नए बंध अटकाने बंध के जो हेतु हैं उनका त्याग करना यानी संवर अनिवार्य है।

क. रोग दूर करने के लिए औषधि का सेवन जरूरी होता है वैसे कर्म रूप रोग दूर हो उसके लिए निर्जरा रूप औषधि आवश्यक बनती है।

ड. सर्व कर्म क्षय होते औपशमिक आदि तीन कर्म-जनित भावों का तथा पारिणामिक भाव में भव्यत्व का नाश होता है और क्षायिक सम्यक्त्व, केवलज्ञान, केवल दर्शन, सिद्धत्व, जीवत्व आदि क्षायिक भाव रहते हैं ऐसा निर्देश किया है।

४६ मोक्ष सुख को गहरी निद्रा में सोए व्यक्ति के सुख के साथ तुलना उचित नहीं उसके नीचे दिए कारण में कौन सा कारण अयोग्य है?

अ. निद्रा में सुख का तारतम्य होता है ।

ब. निद्रा में कोई व्यक्ति में क्रिया होती है । जो क्रिया रहित हैं वे निद्रा में भी मोक्ष का सुख पा सकते हैं परंतु जो क्रिया सहित है वे निद्रा में मोक्ष-सुख पा नहीं सकते ।

क. निद्रा दर्शनावरणीय कर्म के उदय से होती है ।

ड. निद्रा श्रम, खेद, मद, रोग और मैथुन क्रिया आदि मोह से युक्त होती है ।

४७ चार प्रकार के सुख में कौन सा सुख श्रेष्ठ है?

अ. जो विषय वस्तु को वापरने से आनंद आता है जैसे कि अत्यंत ठंडी में अग्नि ताप लेना ।

ब. कोई विशिष्ट दु:ख न होते सुख का अहसास होना ।

क. पुण्य कर्म के उदय से सुख के साधन पाने से ।

ड. कर्म से सर्वथा मुक्ति पाने से ।

४८ सिद्ध के क्षेत्र द्वार के विचार में कौन सा वाक्य अयोग्य है?

अ. वर्तमान काल की दृष्टि से सिद्ध जीव सिद्धशिला के ऊपर सिद्ध होता है ।

ब. भूतकाल की अपेक्षा से जन्म से पंद्रह कर्म भूमि में सिद्ध होता है ।

क. भूतकाल की अपेक्षा से संहरण से केवल जंबु द्वीप में सिद्ध होता है ।

ड. भूतकाल की अपेक्षा से संहरण से केवल ढाई द्विप में सिद्ध होता है ।

४९ प्रत्येक-बुद्ध बोधित द्वार के विचार में कौन सा वाक्य उचित है?

अ. तीर्थंकर बुद्ध बोधित होते हैं ।

ब. प्रत्येक-बुद्ध स्वयं बुद्ध नहीं होते ।

क. स्वयं बुद्ध होकर सिद्ध होने वालों से बुद्ध बोधित सिद्धों की संख्या अधिक होती है ।

ड. तीर्थंकर के अलावा अन्य जीव बुद्ध बोधित होते हैं ।

५० लिंग द्वार के विचार में कौन सा वाक्य उचित नहीं?

अ. परंपर काल की अपेक्षा से सर्व लिंग के जीव सिद्ध नहीं हो सकते ।

ब. वर्तमान काल की अपेक्षा से पुरुष लिंग में जीव सिद्ध नहीं हो सकते ।

क. वर्तमान काल की अपेक्षा से स्त्री लिंग में जीव सिद्ध नहीं हो सकते ।

ड. वर्तमान काल की अपेक्षा से नपुंसक लिंग में जीव सिद्ध नहीं हो सकते ।

५१ गति द्वार के विचार में कौन सा वाक्य उचित है?

अ. वर्तमान काल की अपेक्षा से सिद्धि गति में जीव सिद्ध होता है ।

ब. भूतकाल की अपेक्षा से अनंतर गति में चारों गति में जीव सिद्ध होता है ।

क. परंपर काल की अपेक्षा से सर्व गति के जीव सिद्ध नहीं होते ।

ड. वर्तमान काल के आश्रय से अनंतर और परंपर से ऐसे दो भेद पड़ते हैं ।

५२ अवगाहना द्वार के विचार में कौन सा वाक्य उचित है?

अ. सिद्ध जीवों को कर्म जनित काया नहीं होती इसलिए अवगाहना नहीं होती ।

ब. जघन्य से दो से नौ अंगुल वाले जीव सिद्ध होते हैं ।

क. उत्कृष्ट से ५०२ से ५०९ अंगुल वाले जीव ही सिद्ध होते हैं ।

ड. वर्तमान काल की दृष्टि से जीव अपनी काया के $^{१}/_{३}$ हिस्से की अवगाहना में सिद्ध होता है ।

५३ ग्रंथकार उमास्वतिजी के विषय में कौन सा विकल्प उचित है?

अ. उनके पिता और माता के नाम क्रमशः उमा और स्वाति हैं ।

ब. उनकी माता का गोत्र वात्सी और पिता का गोत्र न्यग्रोधिका था ।

क. वे कुसुमपुर में जन्मे थे ।

ड. वे मूल नामक वाचकाचार्य के शिष्य थे ।

५४ सिद्ध होते जीवों के विषय में कुछ प्रश्नों की चर्चा ग्रंथ में की है उनमें नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत है?

अ. सभी कर्म का क्षय करने वाली आत्मा ऊर्ध्व गति ही क्यों करती है?

ब. कर्म-बद्ध आत्मा किस लिए तीनों प्रकार की गति करती है?

क. इषत्प्रागभारा भूमि को सिद्धशिला क्यों कहते हैं?

ड. योग के बिना आत्मा गति किस तरह कर सकती है?

५५ केवलज्ञान पाने के विषय में कौन सा वाक्य उचित नहीं?

अ. जीव सब से प्रथम मोहनीय कर्म का संपूर्ण क्षय करता है ।

ब. मोहनीय कर्म का क्षय होने के बाद क्रमशः ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अंतराय कर्म का क्षय हो तब केवलज्ञान प्रगट होता है ।

क. घाती कर्मों का संपूर्ण क्षय हो तब केवलज्ञान प्रगट होता है ।

ड. चार घाती कर्मों में मोहनीय कर्म प्रधान होने से पहले उसका क्षय होता है ।

५६ नीचे दिए माप के विकल्पों में कौन सा विकल्प गलत है?

अ. २४ अंगुल = १ हाथ ब. २ हाथ = १ धनुष क. २००० धनुष = १ गाउ ड. ४ गाउ = १ योजन

५७ आत्मा की स्वभाव विरुद्ध गति होने में कौन सा कारण योग्य नहीं?

अ. कर्म (क्रिया) ब. प्रतिघात क. विस्रसा ड. प्रयोग

५८ नीचे दिए कौन सी तीन बातें एक साथ नहीं होती?

अ. मोहनीय कर्म क्षय, ज्ञानावरणीय कर्म क्षय, दर्शनावरणीय कर्म क्षय

ब. लोकांत गति, देह वियोग, ऊर्ध्व गति

क. सर्व कर्म-क्षय, ऊर्ध्व-गमन, लोकांत गमन

ड. ज्ञानावरणीय कर्म क्षय, दर्शनावरणीय कर्म क्षय, अंतराय कर्म क्षय

५९ गमन करने के सम्बन्ध में कौन सा वाक्य अयथार्थ है?

अ. आत्मा का ऊर्ध्व गति करने का स्वभाव है ।

ब. जीव और पुद्गल दो ही द्रव्य गति करने में समर्थ हैं ।

क. पुद्गल का ऊर्ध्व, अधो और तिर्छी तीन गति करने का स्वभाव है ।

ड. तीर्थंकर का अलोक में गति करने का सामर्थ्य है ।

६० चारित्र द्वार के विचार में कौन सा वाक्य गलत है?

अ. वर्तमान काल की अपेक्षा से जीव नोचारित्री-नोअचारित्री रूप में सिद्ध होता है ।

ब. भूतकाल की अपेक्षा से अनंतर और परंपर से ऐसे दो तरह से विचार होता है ।

क. परंपर काल की दृष्टि से जीव यथाख्यात चारित्र में ही सिद्ध होता है ।

ड. अनंतर काल से यथाख्यात चारित्र बिना सिद्ध नहीं ही होते ।

विभाग : ३. हर प्रश्न के २ अंक । (कुल १५ x २ = ३० अंक)

६१ निम्नलिखित में से कौन सा वाक्य काल द्वार के आश्रय से यथार्थ है?

अ. भूतकाल की दृष्टि से भरत-ऐरावत क्षेत्र में से ही जीव सिद्ध होते हैं, महाविदेह क्षेत्र में से नहीं हो सकते । कारण, वहाँ वैसा भेद नहीं है, वहाँ वर्तमान काल की दृष्टि से ही हो सकते हैं ।

ब. भूतकाल की दृष्टि से जंबूस्वामी पांचवें आरे में सिद्ध हुए वह एक अच्छेरा कहा जाएगा। कारण अवसर्पिणी में कोई भी जीव पांचवें आरे में सिद्ध नहीं ही हो सकते हैं।

क. अवसर्पिणी के तीसरे और चौथे आरा के ८९ पक्ष व्यतीत हो तब क्रमशः पहले और अंतिम तीर्थंकर जन्म लेते हैं और उत्सर्पिणी में तीसरे और चौथे आरे के ८९ पक्ष बाकी रहते हैं तब क्रमशः पहले और अंतिम तीर्थंकर निर्वाण पाते हैं।

ड. अवसर्पिणी में तीसरे-चौथे आरे में जन्मे और उत्सर्पिणी में दूसरे-तीसरे और चौथे आरे में जन्मे जीव सिद्ध हो सकते हैं। जबकि उत्सर्पिणी में पहले-पांचवें और छठे आरे में जन्मे तो उस भव में कभी सिद्ध नहीं हो सकते हैं।

६२ निम्नलिखित वाक्यों में कौन सा वाक्य भूतकाल और वर्तमान काल की दृष्टि से सिद्ध होता नहीं?

अ. ऋषभदेव प्रभु चौथा आरा शरू होने को ८९ पक्ष बाकी थे तब निर्वाण पाए थे।

ब. पद्मनाभस्वामी आती चौबीसी में दूसरा आरा पूर्ण होने के बाद ८९ पक्ष व्यतीत होने पर जन्म लेंगे।

क. वर्तमान में सीमंधर स्वामी महाविदेह क्षेत्र में विचरते हैं। वहाँ से अनंत्त आत्माएं सिद्ध होती है। इसलिए वर्तमान काल की दृष्टि से सिद्ध क्षेत्र कहा जाता है। वहाँ कोई काल नहीं होता।

ड. महावीर स्वामी और पद्मनाभ स्वामी दोनों का आयुष्य, उंचाई आदि सब समान हैं, केवल एक का जन्म, अवसर्पिणी में और दूसरे का जन्म उत्सर्पिणी में, एक का चौथे आरे में और दूसरे का तीसरे आरे में।

६३ मोक्ष सुख तो सिद्ध ही है। उसकी सिद्धि करने में निम्नलिखित वाक्यों में कौन सा वाक्य सिद्ध पना से रहित नहीं?

अ. मोक्ष सुख पुण्य-पाप कर्म से रहित है । जहाँ विषय-कषाय का अभाव है वहाँ मुक्ति का सुख है, इसलिए वह सर्वश्रेष्ठ सुख है।

ब. मोक्ष सुख किसी के समान नहीं; उसके जैसा अन्य कोई पदार्थ नहीं। उस सुख की तुलना कर सकते हैं। इसलिए वह सुख अनुपम है।

क. मोक्ष सुख अनुमान और उपमान से जानना असंभव है। क्योंकि उसके कोई लक्षण प्रसिद्ध नहीं, इसलिए वह अनुमान और उपमान का विषय बनता है।

ड. मोक्ष सुख केवली भगवंत को प्रत्यक्ष है। इसलिए वे उपदेश देते हैं। पंडित उसे तर्क से और परीक्षा से सिद्ध कर के स्वीकारते हैं।

६४ तत्त्वार्थधिगम सूत्र के रचयिता के लिए नीचे दी हकीकतों में कौन सी हकीकत सत्य से विपरीत नहीं?

अ. इस ग्रंथ के रचयिता के पिताश्री का नाम स्वाति और माताजी का नाम उमा होने से उनका नाम उमास्वातिजी ऐसा प्रसिद्ध हुआ, बाकी उनका नाम तो अलग है ।

ब. उमास्वातिजी के गुरू घोषनंदी थे और दादा गुरूदेव शिवश्रीजी थे ।

क. उमास्वातिजी के मामा का गोत्र वात्सी और पिता का गौत्र कौभीषण होने से वे वात्सी गोत्र वाले थे ।

ड. तत्त्वार्थ सूत्र के लेखक न्यग्रोधिका नगर में जन्मे थे और कुसुमपुर नाम के श्रेष्ठ ग्राम में विचरते उच्च नागर शाखा के वाचक थे ।

६५ तत्त्वार्थ सूत्र में जो अल्प-बहुत्व बताया है उसे ध्यान में रखकर निम्नलिखित वाक्यों में कौन सा वाक्य सही नहीं?

अ. अनुत्सर्पिणी-अनवसर्पिणी काल सिद्ध, अवसर्पिणी काल सिद्धों से संख्यात गुना हैं ।

ब. संहरण सिद्धों से जन्मसिद्ध संख्यात गुना हैं ।

क. अवसर्पिणी काल सिद्ध उत्सर्पिणी काल सिद्धों से विशेषाधिक हैं ।

ड. तीर्थ सिद्धों से अतीर्थ सिद्ध अधिक हैं ।

६६ सिद्ध जीवों के द्वारों के अनुसार कौन सा विकल्प अयथार्थ नहीं वह बताएं । (क्षेत्र, काल और गति भूतकाल के आश्रय से और चारित्र वर्तमान काल के आश्रय से लेना है)

अ. चारित्र - जीव नोचारित्री रूप से सिद्ध होता है ।

गति - सिद्धिगति में सिद्ध होता है ।

काल - पांचवें आरे में जन्मे पांचवें आरे में सिद्ध नहीं ही हो सकते हैं ।

क्षेत्र - पंद्रह कर्म भूमि में जन्मे जीव सिद्ध होते हैं ।

ब. काल - अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी रहित तीनों काल में जन्मे सिद्ध हो सकते हैं ।

चारित्र - मोक्ष में पाँच में से कोई चारित्र नहीं होता ।

क्षेत्र - संहरण से ढाई द्वीप प्रमाण क्षेत्र के बहार से जीव सिद्ध होता है ।

गति - अनंतरगति से मनुष्य गति में ही सिद्ध होता है ।

क. क्षेत्र - भरत और ऐरावत क्षेत्र में जन्मे जीव सिद्ध हो सकते हैं ।
काल - संहरण से सर्व काल में सिद्ध होते हैं ।
गति - परंपर गति से चारों गति में से सिद्ध होते हैं ।
चारित्र - जीव नोचारित्री-नोअचारित्री रूप से सिद्ध होता है ।

ड. गति - अनंतरगति और परंपरगति से ऐसे दो तरह सिद्ध होता है ।
क्षेत्र - महाविदेह क्षेत्र में जन्मे जीव सिद्ध होते हैं ।
चारित्र - जीव नोचारित्री सिद्ध होता है ।
काल - जीव जन्म से पहले, दूसरे और छठे आरे के सिवा सभी आरे में सिद्ध होता है ।

६७ सिद्ध जीव संबंधी बताए द्वारों में से तीर्थ-चारित्र-प्रत्येक बुद्ध बोधित द्वार को देखकर कौन सा वाक्य विषम नहीं?

अ. वर्तमान में केवलज्ञान और यथाख्यात का अभाव होने से कोई भी जीव सिद्ध होते नहीं क्योंकि मोक्ष होने से पहले और उसके बाद यथाख्यात चारित्र होना जरूरी है ।

ब. मरूदेवी माता तीर्थ की स्थापना हुई उसके पूर्व सिद्ध हुए, इस लिए उनमें पांच चारित्र में से एक भी चारित्र का अभाव न था परंतु तीर्थ में जो सिद्ध हो उनको मोक्ष में कोई एक चारित्र होता है ।

क. पार्श्वनाथ प्रभु नेमनाथ भगवान की बारात का दृश्य देख वैराग्य पाए । इसलिए वे स्वयं बुद्ध न थे पर बुद्ध बोधित थे ।

ड. गौतम स्वामी प्रभु महावीर स्वामी के उपदेश से वैराग्य पाकर दीक्षा ग्रहण करते हैं । इसलिए बुद्ध बोधित थे पर प्रत्येक बुद्ध न थे ।

६८ निम्नलिखित वाक्यों में कौन सा वाक्य मोक्ष के स्वरूप के साथ विषमता दर्शाता नहीं?

अ. सभी कर्मों का क्षय होते संसार का मूल कारण मोहनीय कर्म जब संपूर्ण रूप से नष्ट हो तब जीव मोक्ष में पहुँचता है ।

ब. कर्म-जनित तीन भाव औपशमिक, क्षायोपशमिक और मिश्र का मोक्ष में सर्वथा अभाव होता है । पारिणामिक भावों में जीवत्वादि रहते हैं ।

क. मोक्ष में क्षायिक भावों का अभाव होने से सम्यक्त्व, केवलज्ञान, केवल दर्शन, सिद्धत्व आदि क्षायिक भाव से बरतते हैं ।

ड. सर्व कर्म क्षय होते ही अनंतर समय में देह वियोग के बाद के समय में ऊर्ध्व गति और उसके बाद तुरंत ही लोकान्त गमन होता है ।

६९ सिद्ध-शिला, सिद्ध-क्षेत्र और सिद्धों की जो अवगाहना बताई है उसके मुताबिक निम्नलिखित वाक्यों में कौन सा वाक्य अयथार्थ नहीं?

अ. शत्रुंजय के ऊपर से अनंत आत्मा मोक्ष में गए इसलिए उस भूमि के ऊपर सिद्धशिला में बहुत भीड़ हो जाती है और लवण समुद्र और कालोदधि समुद्र के ऊपर से बहुत कम जीव मोक्ष में गए हैं इसलिए उस जगह के ऊपर कोई भीड़ नहीं ।

ब. अंत में योग निरोध करने के बाद पार्श्वनाथ प्रभु और महावीर स्वामी के आत्मा की क्रमशः ६ हाथ और ३ हाथ जितनी अवगाहना मोक्ष में है ।

क. सिद्ध-शिला की पृथ्वी सफेद स्फटिक रत्नमय, छत्री के आकार जैसी है और उस पृथ्वी के ऊपर सिद्ध बिराजमान हैं ।

ड. सिद्धशिला ४५ लाख योजन चौड़ी और ८ लाख योजन मोटी, मध्य हिस्से से क्रमश: घटते जाते बीज के चंद्र जैसा आकार होता है । इसलिए यहाँ बीज के दिन चन्द्र दर्शन का महत्व है ।

७० निम्नलिखित वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत नहीं?

अ. मोहनीय कर्म का क्षय होने के बाद अंतर्मुहूर्त बाद चार घाती कर्मों का क्षय होने के बाद ही अघाति कर्म क्षय हो सकते हैं ।

ब. चार घाती कर्मों से रहित महात्मा स्नातक और परमेश्वर बनते हैं क्योंकि वे यथाख्यात चारित्र पाए होते हैं और मोहनीय आदि कर्मों के बंधन से रहित नहीं होते ।

क. जब जीव चार अघाती कर्म के उदयवाला होता है तब भी वह केवल ज्ञानी होने से सर्वज्ञ होता है, मोह आदि मैल दूर होने से सिद्ध ही होता है ।

ड. चार घाती कर्म के क्षय के लिए और अघाति कर्म के क्षय के लिए संवर और निर्जरा अनिवार्य है ।

७१ निम्नलिखित वाक्यों में कौन सा वाक्य गलत नहीं लगता?

अ. भरत क्षेत्र और ऐरवत क्षेत्र में हंमेशा अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी रहित यह तीनों काल होते हैं । इसलिए वहाँ से जीव हमेशा सिद्ध हो सकते हैं ।

ब. अकर्म भूमि में हमेशा दूसरा और तीसरा आरा चलता रहता है, इसलिए अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी रहित काल लगातार होने से वहाँ से जीव सिद्ध हो सकते हैं ।

क. महाविदेह क्षेत्र में अनवसर्पिणी-अनुत्सर्पिणी काल होने से वहाँ से जीव को सिद्ध होने में अधिक से अधिक छ माह का अंतर पड़ता है ।

ड. दूसरे, तीसरे और चौथे आरे में जीव मोक्ष में जा सकते हैं और पहले-पांचवें और छठे आरे में मोक्ष का अभाव होता है ।

७२ च, छ, ज, झ नाम के व्यक्तिओं की उंचाई क्रमशः ४०० धनुष, २४० धनुष, १०० धनुष और १२५ धनुष है। वे जब निर्वाण पाते है तब योग निरोध होने से उनका कितना हिस्सा रहता है और कितना हिस्सा संकोच पाता है? उसके लिए क्रम से कौन सा विकल्प अघटित नहीं।

	च.	छ.	ज.	झ.
अ.	२६६²/₃, १३३¹/₃	८०, १६०	३३¹/₃, ६६²/₃	८३¹/₃, ४²/₃
ब.	२६६²/₃, १३३¹/₃	१६०, ८०	६६²/₃, ३३¹/₃	८३¹/₃, ४१²/₃
क.	१३३¹/₃, २६६²/₃	१६०, ८०	६६²/₃, ३३¹/₃	४१²/₃, ८३¹/₃
ड.	२६६²/₃, १३३¹/₃	१६०, ८०	६६¹/₃, ३३²/₃	८३²/₃, ४१¹/₃

७३ निम्नलिखित विकल्पों में कौन सा विकल्प अयथार्थ नहीं?

अ. पूर्व प्रयोग - कुम्हार का चक्र
बंध विच्छेद - अरंडी का फल
तथागति परिणाम - पवन की गति
असंग - माटी से लिप्त तुंबा

ब. असंग - अरंडी का फल
पूर्व प्रयोग - कुम्हार का चक्र
बंध विच्छेद - माटी से लिप्त तुंबा
तथागति परिणाम - अग्नि की गति

क. बंध विच्छेद - अरंडी का फल
तथागति परिणाम - पाषाण की गति
पूर्व प्रयोग - कुम्हार का चक्र
असंग - माटी से लिप्त तुंबा

ड. तथागति परिणाम - दीपक ज्योति
असंग - माटी से लिप्त तुंबा
पूर्व प्रयोग - कुम्हार का चक्र
बंध विच्छेद - अरंडी का फल

७४ १०वें अध्याय के १-६ सूत्र में सिद्धशिला का स्वरूप, मोक्ष गमन और उसके कारण तथा मोक्ष की व्याख्या बताई है उसे ध्यान में रखकर निम्नलिखित विकल्पों में कौन सा विकल्प विषम नहीं लगता?

अ. २००० हाथ की काया वाला जीव, योग निरोध करते एक ही समय में देह वियोग, ऊर्ध्व गति, लोकान्त गमन और सर्व कर्म क्षय कर, पवन की गति से, दीपक की भांति, लोक के बहार नहीं पर जहाँ तक धर्मास्तिकाय का अभाव नहीं होता वहाँ तक ऊर्ध्वगमन कर अपनी काया से $^{१}/_{३}$ हिस्सा न्यून हिस्से में वहाँ रहता है।

ब. सर्व कर्मों का क्षय होते, कर्मों का अभाव यह मोक्ष का कारण है इसलिए मोक्ष में पांच भावों का भी अभाव होता है। तथा कर्म रूप बीज नष्ट हो जाने से जन्म-मरण का भी अभाव होता है।

क. ज्ञान आत्मा का लक्षण होने से, घाती कर्म का प्रधान ऐसा कर्म मोहनीय कर्म क्षय होने के बाद - चार घाति कर्म का क्षय करने से केवलज्ञान प्रगट होता है। तत्पश्चात चार अघाति कर्मों का उदय होने पर भी जीव सर्वज्ञ, बुद्ध, जिन, केवली बनता है।

ड. सिद्ध तादात्म्य भाव से केवलज्ञान और केवल दर्शन से उपयुक्त होते हैं। सम्यक्त्व और सिद्धत्व में अवस्थित होते हैं। क्रिया का कारण न होने से क्रिया रहित नहीं होते तथा भव्यत्व भाव से निवृत्त होते हैं।

७५ तत्त्वार्थसूत्र में सिद्ध जीवों के संबंधी बारह द्वार बताए हैं। उन द्वारों को ध्यान में रखकर नीचे दिए विकल्पों में कौन सा विकल्प अविपरीत है?

अ. अंतर - हर नौवें समय में अंतर पड़ता है।
लिंग - भाव लिंग के आश्रय से स्वलिंग आदि तीनों लिंग से सिद्ध होते हैं।
चारित्र - परंपर चारित्र की अपेक्षा से सामायिक, सूक्ष्म संपराय और यथाख्यात चारित्र में सिद्ध हो सकते हैं।

ब. लिंग - वर्तमान काल की दृष्टि से द्रव्य लिंग रहित भाव लिंग से सिद्ध होते हैं।
चारित्र - वर्तमान काल की दृष्टि से अनंतर चारित्र और परंपर चारित्र दो भेद पड़ते हैं।
अंतर - हर छ माह में अवश्य कोई एक जीव सिद्ध होता है।

क. चारित्र - परंपर चारित्र की अपेक्षा से सामायिक छेदोपस्थानीय, परिहार विशुद्धि, सूक्ष्म संपराय और यथाख्यात इन चारित्रों में सिद्ध हो सकते हैं ।

लिंग - भूत काल की दृष्टि से भाव लिंग के आश्रय से (ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूप) स्वलिंग से सिद्ध होते हैं ।

अंतर - भरत क्षेत्र में लगातार आठ समय तक जीव सिद्ध होने के बाद अंतर पड़ते नौवें समय में महाविदेह क्षेत्र में से भी सिद्ध हो नहीं सकते ।

ड. चारित्र - अनंतर चारित्र की अपेक्षा से पांचों चारित्र में सिद्ध होते हैं ।

लिंग - द्रव्य लिंग के आश्रय से ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूप स्वलिंग सिद्ध होते हैं ।

अंतर - जीव अनंतर और अंतर से सिद्ध होते हैं ।

तत्त्वार्थ सूत्र
પરિશીલન
। तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥

तत्त्वार्थ सूत्र परिशीलन पाठ्यक्रम

–: कार्यकर्ता :–

पाठ्यक्रम निर्देशक

हितेश सवाणी - 96998 85544

पाठ्यक्रम संचालक

अमीष अजबाणी - 98201 50155

PRO

केतन शाह - 93263 23247

विरल लोलडिया - 98929 20104

पाठ्यक्रम खजानची

जीमित रातडिया - 80974 18658

-: *कार्यकर्ताओं* :-

अमदावाद	-	केयुर शाह	-	95122 34311
मुंबई	-	निमिश शाह	-	98300 62958
सुरत	-	मनीष जैन	-	78787 19009
सुरत	-	परेश शिरोइआ	-	92278 56066
कलकत्ता	-	योगेश महेता	-	86228 05531